श्री विजयलक्ष्मी सूरि महाराज विरचित

श्री

उपदेशप्रासाद भाषान्तर

भाग २ जो

स्थभ ५-६-७-८-९

व्याख्यान ६२ थी १२५

पांच अणुव्रत तथा त्रण गुणव्रतोनु स्वरुप

अनेक कथाओयुक्त

श्रावकवर्गने माटे खास उपयोगी

सस्कृत गद्यपद्यात्मक ग्रथनु भाषान्तर गुर्जर गीरामा

प्रसिद्ध कर्त्ता

श्रीजैनधर्म प्रसारक सभा—भावनगर

तथा

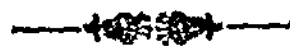
चीमनलाल साकलचंद मारफतीया—मुंबइ

मुंबइ-शाति सुधाकर प्रेस

विक्रम सवत १९६०, वीर सवत २४३०

मूल्य रु २

प्रस्तावना.



आ उपदेशप्रासादग्रंथना पहेला भागनी अंदर आपेली प्रस्तावना उपरथी वाचकवर्गने विदित थयु छे के, आ ग्रंथ श्री विजयलक्ष्मीसूरीए भव्यजीवोना हितने माटे रच्यो छे तेने एक प्रासाद–मकान–महेलनी–उपमा आपीने तेना २४ स्थंभ ठराव्या छे ते दरेक स्थंभमा मांये १५–१५ व्याख्यानो छे. एकदर आखा ग्रंथमा वर्षना दिवसो जेटला एटले ३६० व्याख्यानो छे. जेथी आखा वर्ष माटे सतत वाचवा योग्य आ ग्रंथ छे आ ग्रंथ संस्कृत गद्यपद्यात्मक सरल भाषामां रचेलो छे पद्यभाग तो मात्र प्रासंगीकज छे

आ ग्रंथना मुख्य त्रण खंड पाडेला छे प्रथम खंडमां सम्यक्तनुं स्वरूप, बीजा खंडमा देशविरतिनु स्वरुप ने त्रीजा खंडमा सर्वविरतिनुं स्वरूप छे. प्रथम भागमां प्रथम खंड पूरो आपेलो छे, परंतु बीजो खंड ते करता लगभग डबल होवाथी आ विभागमा संपूर्ण आपी शक्या नथी आ विभागमा पाचमाथी नवमा सुधी पाच स्थंभ आपेला छे तेमा कुल ७४ व्याख्यान छे अने पाच अणुव्रत तथा त्रण गुणव्रतनुं स्वरूप आपेलुं छे

पाचमा स्थंभमा ६२ थी ७४ सुधी (१३) व्याख्यानो छे. तेमा प्रथम व्रतनुं स्वरूप आपेलु छे छठ्ठा स्थंभमा ७५ थी ९० सुधी (१६) व्याख्यानो छे. तेमा बीजा त्रीजा, ने चोथा व्रतनुं स्वरूप आपेलु छे सातमा स्थंभमा ९१ थी १०५ सुधी (१५) व्याख्यानो छे. तेमा चोथा व्रतसंबंधीज विशेष स्वरूप आपेलु छे. आठमा स्थंभमा १०६ थी १२० सुधी (१५) व्याख्यानो छे. तेमा पाचमा, छठ्ठा ने सातमा व्रतनुं स्वरूप आपेलु छे. नवमा स्थंभमा १२१ थी १३५ सुधी (१५) व्याख्यानो छे तेमा सातमा व्रतनु शेष स्वरुप तथा आठमा व्रतनुं स्वरुप आपेलु छे एकदर ७४ व्याख्यानोमा पेहला व्रतना १३, बीजा व्रतना ५, त्रीजा व्रतना ९, चोथा व्रतना २१, पाचमा व्रतना ४, छठ्ठा व्रतना ४, सातमा व्रतना १७, अने आठमा व्रतना ५ व्याख्यानो छे

आ ग्रंथमा दरेक व्रतनु स्वरुप एटलु बधुं स्पष्ट समजाव्युं छे के, बाळबुद्धिवान् पण सहजे समजी शके तेम छे ते साथे दरेक वाचनारने आनंद उत्पन्न थाय तेम छे चोथाव्रतने बहु विस्तारथी वर्णव्युं छे सातमा व्रतमा बावीश अभक्ष तथा पंदर कर्मादानोनु स्वरूप बहु सारी रीते समजाव्यु छे ते साथे शुद्ध व्यवहार अ-

थवा शुद्ध व्यापारने माटे जे समजुती सविस्तर आपी छे ने पूरेपूरी उपयोगी माट अमे दरेक जैनबधुओने ते भाग खास लक्षपूर्वक वाचवानी भलामण करी आठमा मतमा प्रमादाचरण अनेक प्रकारना समजाव्या छे ते पण लायक छे. १०४ था व्याख्यानमा चोमासी कृत्यो बताव्या छे अषाढ ना प्रारंभमा अवश्य ए व्याख्यान वाचवा योग्य छे

आ ग्रथमा चरणकरणानुयोग साथे धर्मकथानुयोग पण एटलो बधो खल करेलो छे के, घने प्रकारना जीज्ञासुओना दिल तृप्त थई शके तेम छे व्याख्यानमा एक कथा तो छेज पण केटलाकमा एकथी वधारे छे एकदर पाच स्थभोमा १०० उपरात कथाओ, दृष्टातो ने प्रबंधो छे ते विषे विशेष लखी वाचकवर्गने न रोकता अनुक्रमणिका वाची जवानीज खास भलामण छीए जेथी आ विभागनु रहस्य तरतज ध्यानमा आवशे

आ ग्रथनी प्रतिओ माथे टबावाळीज मळे छे, परतु तेनु मुळ ने टबो बधो अशुद्ध देखाय छे के तेनु भाषातर करवामा पूरा अनुभवीनीज आ भाषातर शास्त्री पासे कराव्यॊ बाद असल प्रति साथे मेळवीने तेने एकदरे दुरस्त करवामा आव्युं छे के बनता सुधी भुल रहेवा दीधी नथी ते छता दोषथी अथवा दृष्टि दोषथी काइ पण भूल रही गयेली जणाय तो तेने माटे तरफ लखी मोकलाववा कृपा करवी, जेथी तेने सुधारवानो योग्य उपाय थइ

हवे पछीना त्रीजा विभागमा देशविरतिनु स्वरूप संपूर्ण आवशे एटले के माथी १४ मा सुधीं पाच स्थभोनु भाषातर आपवामा आवशे प्रथम विभागना णमा किंमत वास्तवीक राखेली होवाथी जैनबधुओ विशेष लाभ लेशे एवी आशा तेमज बाकीना विभागो पण बनती ताकीदे बहार पाडवानी इच्छा वर्ते छे

ग्रथकर्त्ताए खास उपयोगी जाणीने दाखल करेला स्वमत परमतना तथा गाथाओ पहेला विभागमा पुरता दाखल कोस नहीं, परतु आ विभागमा दरेक श्लोक दाखल करीने तेनी नीचे तेना अर्थ पण आपेला छे एम करवाथी ग्रथनी उपयोगीता वधारी छे

ग्रथकर्त्ताना चरित्रने माटे शोध चाले छे मळी शकशे एटले हवे पछीना विभागमा प्रगट करीशु

माहा शुद १५ } श्रीजैनधर्म प्रसारक सभा–भावनगर
संवत १९६० } चीमनलाल साकळचद मारफतीया–मुंबई

विपयानुक्रमणिका.

स्थंभ ८ मो पृष्ट १७७ थी २२९
व्याख्यान १०६ थी १२०
(पांचमा, छठा, सातमा व्रतनुं स्वरुप)

स्थंभ ९ मो· पृष्ट२३० थी २९२

व्याख्यान १२१ थी १३५

सातमा तथा आठमा व्रतनु स्वरुप.

आठमा व्रतना स्वरुपनी सपूर्णता.

॥ श्री जिनायनम'

॥ अथ ॥

॥ श्री उपदेशप्रासाद भाषान्तर ॥

भाग २ जो.

स्थंभ ५ मो.

वाख्यान ६२ मुं.

प्रथम खंडमां समकित संबधी वर्णन कर्यु, ते तत्त्व जाणवाथी प्राप्त थाय छे, अने ते सम्यक श्रद्धानरुप समकित जेने होय छे तेने माये व्रत पण प्राप्त थाय छे, ए सबधथी आवेलो व्रतो संबधी अधिकार आ बीजा खंडमा कहेवामा आवशे

अणुव्रतानि पचैव । गुणानां च व्रतत्रिकम् ॥
शिक्षाव्रतानि चत्वारि । द्वादशैते भिदा मिताः ॥ १ ॥

व्याख्या

पांच अणुव्रत, त्रण गुणव्रत अने चार शिक्षाव्रत–ए प्रमाणे व्रतना बार भेद छे तेमा पाच अणुव्रतोमानु पहेलु अणुव्रत **स्थूल जीवोनी हिंसानु निवारण** ते गृही श्रावकोए द्विविध त्रिविध भागाए ग्रहण करवु 'स्थूल जीव' ए शब्दथी द्वींद्रियादि त्रस जीवो ग्रहण करवा आदिशब्दथी निरर्थक स्थावर जीवोनी पण हिंसा द्विविध त्रिविधे न करवी ते प्रथम अणुव्रत गृहस्थ श्रावकोए इर्पथी ग्रहण करवु ते द्विविध त्रिविधनु स्वरूप आ प्रमाणे छे.–स्थूल जीवोनी हिंसा करवी नहि अने करावबी नहीं ए द्विविध, अने मन वचन कायाए करवी नहीं अने करावबी नहीं ए द्विविधत्रिविध आदिशब्दथी एकविध एकविध पण थाय छे अहि हिंसादिकनी विरति करे छे, ते स्थूल जीवनी हिंसा मन वचन कायाए करता नथी अने करावता नथी, पण तेने अनुमोदनानो प्रतिषेध नथी, कारणके गृहस्थने सतान विगेरे परिग्रह होय छे तेथी तेने अनुमोदनानो संभव छे अहि कोई शका करे के, श्रीभगवतीसूत्रमां गृहस्थने पण 'त्रिविध त्रिविधेन' एटले त्रिविधे त्रिविधे प्रत्याख्यान कहेल छे ते कथन आगमोक्त होवाथी निर्दोष होवुं जोईए, माटे ते प्रमाणे अहीं केम नथी कहेता ? तेना प्रत्युत्तरमा गुरू कहे छे के, ते प्रमाणे त्रिविध त्रिविध भगनु अविशेषपणु छे, एटले अल्प ठेकाणे तेमनुं व्यापकपणुं छे ते आ प्रमाणे'–जे पुरुष दीक्षा

लेवाने इच्छतो होय ते अथवा जे अंत्य समुद्रमां रहेला मत्स्यादिकना मांसनुं पच्चखाण करे के खास धारीने कोई अमुक प्रकारनी (बील्कुल अगवड विनानी) स्थूल जीवहिंसाथी विरति करे ते 'त्रिविध त्रिविधेन' एम उच्चरीने नियम ग्रहण करे, पण घणुकरीने 'द्विविध त्रिविध' भागे ग्रहण करे एमा आदिशब्द लीधेलो छे, तेथी 'द्विविध द्विविध' ए बीजो भागो, 'द्विविध एकविध' ए त्रीजो भागो 'एकविध त्रिविध' ए चोथो भागो 'एकविध द्विविध' ए पाचमो भागो अने 'एकविध एकविध ए छट्ठो भागो एम छ भागा पहेला अणुव्रतमा कहेला छे तेवी रीते बीजा व्रतोमा पण छ भागा जाणी लेवा पहेला व्रतमाना जे छ भागा कर्या तेने साते गुणीने तेमा छ उमेरवाथी अडतालीश भागा थाय छे तेवी रीते आगळना व्रतोना पण थाय छे एम बारमा व्रतसुधी जाणी लेवा एकदर एक सयोगी, द्विसयोगी, त्रिसयोगी, एम बारे व्रतना परस्पर सयोगी भागा करता सर्व भागानी सख्या तेरसेंने चोराशी कोटी, बार लाख, सत्याशी हजार अने बसोनी थाय छे अहींया आ विषे घणुं जाणवानु छे ते "श्रावक व्रतभग प्रकरण" तथा "धर्मरत्न" विगेरे ग्रथोथी जाणी लेवुं

अहिं शिष्य प्रश्न करे छे के, "जे मुनिओ गृहस्थ तथा राजादिकना अभियोग (आगार) विना स्थूल प्राणीओनी हिंसाथीज निवृत्ति करावे तेमने स्थावर हिसा सबधी अनुमतिनो दोष लागे अने तेथी मुनिओने सर्वविरतिपणानी हानिनो प्रसग आवे, अने गृही श्रावकोने ए प्रकारे पच्चखाण करता पोतानी करेली प्रतिज्ञामा अतिचार प्राप्त थाय, केमके जे स्थावर जीव छे ते त्रसपणे उत्पन्न थाय छे अने त्रस जीव स्थावरपणे उत्पन्न थाय छे, तो करेलो नियम न सचवायाथी तेमनी प्रतिज्ञानो भग थाय छे जेमके कोईए **नगरना वासी जनने मारी नाखवो नहीं** * एवी जे काळे प्रतिज्ञा करी ते काळे जे कोई नगरमा होय अने पछी उद्यानमा जाय ते माणसने नगरवासी नहीं गणीने जो ते हणी नाखे तो तेने प्रतिज्ञा भग कर्यानो दोष केम नहीं लागे? एम श्रावके त्रसपणामा रहेला जीवने मारवानी निवृत्ति करी, पण ज्यारे ते जीव स्थावरपणाने प्राप्त थयो, त्यारे तेने मारवाथी तो उपर प्रमाणे दोष केम न लागे? अवश्य लागवो जोईए तेथी पच्चखाण करनार अने करावनार बनेनी प्रतिज्ञानो लोप थाय छे" तेना प्रत्युत्तरमा गुरु कहे छे-अरे शिष्य, तने आ शो व्यामोह थयो छे, के जेथी आवो अणसमजभरेलो पक्ष करे छे गृही श्रावको ज्यारे साधु पासे व्रत लेवा आवे छे, त्यारे ते कहे छे के, हे मुनिवर्य!

* अहिं नगरमा होय तेने न मारवो, पण उद्यानमा होय तेने मारवो एवो अर्थ नीकळे छे

थमे अणगारपणुं (साधुपणुं) लेवाने शक्तिमान् नथी, पण अमे निरपराध त्रस काय जीवनो वध करवानु पचखाण पाळवाने शक्तिमान् छीए आवी धारणा करीने तेओ व्रत ले छे, तेथी तेमनी प्रतिज्ञानो भग थतो नथी वळी तेओ रायाभियोगेणं विगेरे छ छींडीओ सहित व्रत अंगिकार करे छे, तेथी राजादिकना अभियोगथी कदी त्रस जीवनो वध करवो पडे, तोपण तेमना व्रतनो भग थतो नथी आ संबधमा एक कथा छे ते आ प्रमाणे—

गृहस्थने अणुव्रत ग्रहण करावतां साधुने स्थावर जीवोनी हिंसानी अनुमोदना लागती नथी ते उपर कथा.

रत्नपुर नामना नगरमां रत्नशेखर नामे राजा हतो एक दिवस तेणे पोताना अंतःपुरनी स्त्रीओने अने नगरना लोकोने स्वेच्छाए क्रीडा करवाने माटे कौमुदी महोत्सव करवानी आज्ञा आपी, अने नगरमा एवी आघोषणा करावी के, 'राजा विगेरे सर्व पुरुषोए उद्यानमा आववु, कोईए नगरमा न रहेवु आथी सर्वेए तेम कर्युं ए वखते एक वणिकना छ पुत्रो क्रयविक्रय विगेरे व्यापारमां व्यग्र होवाथी नगरमाज रही गया अने राजसेवकोए शहेरना दरवाजा बध करी दीधा त्यां नीकळी गया पछी राजाए पुररक्षकोने कह्यु के, तपास करो के नगरमा कोइ पुरुष छे के नहीं? तपास करता ते छ वणिक पुत्र तेमना जोवामा आव्या, तेथी तेमने दोरडावडे बांधीने रक्षको राजा पासे लाव्या. राजाए कोप करीने तेमनो वध करवानी आज्ञा करी कह्यु छे के,—

आज्ञाभंगो नरेंद्राणां। महतां मानमर्दनं ॥
मर्मवाक्यं च लोकाना। मशस्त्रवधमुच्यते ॥ १ ॥

"राजाओने आज्ञानो भंग, मोटा लोकोने अपमान अने लोकोने मर्मवचन ते शस्त्र वगरनो वध कहेवाय छे"

राजाए करेला हुकमनी वात साभळीने ते छ पुत्रोनो पिता शोकाकुल थई राजापासे आवीने कहेवा लाग्यो के, हे देव! मारा कुळनो क्षय करो नहीं मारु सर्व धन लई ल्यो, पण मारा पुत्रोने छोडी मुको तथापि राजाए कोई रीते तेमने छोड्या नहीं पछी पिताए सर्वनो घात थतो जोई तेमाथी पाच पुत्रोने छोडवानी प्रार्थना करी राजाए तेम पण कर्युं नहीं पछी चार पुत्रोने माटे मागणी करी, तो पण राजाए मान्यु नहीं पछी त्रण, बे अने छेवटे एक पुत्रने छोडवानी प्रार्थना

सवत्सरेण यत्पाप । कैवर्तस्येह जायते ॥
एकाहेन तदाप्नोति । अपूतजलसग्रही ॥ ३ ॥
यः कुर्यात् सर्वकार्याणि । वस्त्रपूतेन वारिणा ।
स मुनिः स महासाधु । स योगी स महाव्रती ॥ ४ ॥
म्रियते मिष्टतोयेन । पूतराः क्षारसंभवा ॥
क्षार तोयेन मिष्टाना । न कुर्यात् सकलं तत ॥ ५ ॥

"वेदना पारंगत ब्राह्मणने समग्र त्रण लोक आपवाथी जेटलुं पुण्य थाय छे, तेनाथी कोटीगुणु पुण्य वस्त्रवडे गळीने पाणी पीवाथी थाय छे वळी सात गाम बाळवाथी जेटलु पाप थाय छे, तेटलु पाप अणगळ पाणीनो घडो वापरवाथी थाय छे मच्छीमारने एक वर्षमा जेटलु पाप लागे छे तेटलुं पाप गळ्या वगरना जलने सग्रही राखनारने एक दिवसमा लागे छे जे गळेला जळथी सर्व कार्य करे, ते मुनि ते महासाधु, ते योगी अने ते महाव्रती कहेवाय छे खारा पाणीना उत्पन्न थयेला पूरा मीठा पाणीमा मरी जाय छे अने मीठा पाणीना पूरा खारा पाणी थी मरी जाय छे, तेथी खारू अने मीठु पाणी एकठु करवु नहीं"

आवा पुराणना श्लोको साभळीने कुमारपाळे ते श्लोको लखावी तेना पत्र लई लइने पोताना सेवकोने पोताना राज्यमा दरेक शहेरे शहेरे अने गामे गाम जीवदयान माटे मोकलाव्या वळी राजा कुमारपाळे जीवदयाने माटे गुप्त बातमीदारोने राख्या हता के "कोई हिंसा करे छे के नहीं"! तेओ गुप्त रीते तेना विशाळ राज्यमा सर्वत्र फरता हता एक वखते एवु बन्यु के, कोई गाममा 'महेश्वर' नामना कोई वणिकना केशमाथी तेनी स्त्रीए एक जु काढीने ते श्रेष्ठीना हाथमा मुकी, एटले ते महेश्वर शेठे तेने मारी नाखी ते राजाना गुप्त चरोना जोवामा आव्यु तेथी तत्काळ ते श्रेष्ठीने जुना कलेवर साथे पकडीने पाटण कुमारपाळ पासे लई गया राजाए पूछ्यु, अरे शेठ, आवी दुष्ट चेष्टा केम करी? श्रेष्ठीए कह्यु, महाराज, आ जु मारा मस्तकमा मार्ग करीने मारू रुधिर पीती हती, ते अन्यायथी में तेने मारी छे कुमारपाळे कह्यु, अरे दुष्ट, केश तो जुने रहेवानु स्थान छे त्याथी ते जीवने तें स्थान भ्रष्ट कर्यो तेथी तु पोतेज अन्यायी छु. कदि तु जीवहिंसाथी बीनो नहीं, पण शु मारी आज्ञाथी पण बीनो नही? एम कही तेनो घणो तिरस्कार कर्यो पछी ते महेश्वरे जीवितरूप भिक्षा मागी एटले दयाळु राजाए कह्यु के, जा, तने छोडी मुकु छु, पण तु तारू सर्व द्रव्य खर्चीने आ जुना पापनु प्रायश्चित करवा माटे "यूकाविहार" नामे एक प्रासाद कराव्य, के जेने जोईने कोई पण तेवो जीववध न करे महेश्वर शेठे तेम करवु स्वीकार्यु कह्यु छे के—

अमारि कारणं तस्य । वर्ण्यते किमतःपरं ॥
द्युतेपि कोपियन्नोचे । मारीरीत्यक्षरद्वय ॥ १ ॥

"अहो, कुमारपाळ राजाना अमारी कर्तव्यनुं शुं वर्णन करीए के जेना राज्यमा द्युतक्रीडामा पण कोई 'मारी' एवा ए बे अक्षर बोली शकतुं नहीं "

एक वखते राजा कुमारपाळे सात व्यसनने हिंसाना कारणभूत जाणी माटीना सात पुरुषोना रूप बनाव्या तेमना मुख उपर मषी लगाडी गधेडे बेसाडी तेनी आगळ काहल विगेरे तुच्छ वाजीत्रो वगाडतां तेने पाटण नगरना चोराशी चौटामा फेरवी लाकडी तथा मुष्टी विगेरेना ताडन करावी तेने पोताना नगरमाथी अने पोताना देशमाथी पण बहार काढी मुकाव्या इत्यादि घणा वृत्तातो श्रीजिनमंडनसूरिए रचेला कुमारपाळ चरित्रमाथी जाणी लेवा.

श्रीकुमारधरणीभृत कथां । कथ्यतेऽत्र महिमा प्रमातिगः ॥
य· कृपाव्रतमिहाश्रित· स्वयं । तन्मयं च निखिलं जगदव्यधात् ॥१॥

" आ श्रीकुमारपाळ राजानी कथानो महिमा वचनथी अगोचर छे, ते राजाए पोते दयाव्रत लइने सर्व जगतने पण दयामय करी दीधुं हतु "

इत्यब्ददिनपरिमितोपसंग्रहव्याख्यायामुपदेशप्रासाद
ग्रंथस्य वृत्तौ प्रथमाणुव्रतदयाविषये द्विषष्टितमः
प्रबंधः ॥ ६२ ॥

व्याख्यान ६३ मुं.

हवे गृहस्थ श्रावकोने मुनिथी सवाविश्वा (सवावसा) नी दया होय ते बतावे छे

आद्यव्रते गृहस्थानां । सहपादा विशोपका ।
दया हि दर्शिता पुज्यै । नाधिका तु प्रकाशिता ॥ १ ॥

व्याख्या

"पूज्य पुरुषोए गृहस्थ श्रावकोने प्रथम दयाव्रतमां मुनिथी सवावसा दया दर्शावी छे, तेथी अधिक दर्शावी नथी"

अहिं सवावसो दया केवीरीते थाय ते उपर प्राचीन सूरिओ आ प्रमाणे कहे छे

थूला सुहुमा जीवा, संकप्पारंभओ भवे दुविहा ।
सावराह निरवराहा, साविक्खा चेव निविक्खाय ॥

स्थूल अने सूक्ष्म एम बे प्रकारना जीवो सकल्प अने आरभथी एम बे प्रकारे हणाय छे ते जीवो वळी सापराधी अने निरपराधी एम बे प्रकारनां होय छे तथा तेनी हिंसा सापेक्ष अने निरपेक्ष एम बे प्रकारे थाय छे

तेनो भावार्थ एवो छे के, प्राणीओनी हिंसा प्राणीना स्थूल अने सूक्ष्मपणाथी बे प्रकारे कहेली छे तेमा स्थूल एटले त्रस जीवो अने सूक्ष्म एटले एकेंद्रिय जीवो जाणवा तेना पृथ्वीकाय विगेरे पाच भेद छे, पण तेमा ते नहीं के जे सूक्ष्म नामकर्मना उदयथी सर्व लोकमा व्यापी रह्याछे, कारणके तेना वधनो अभाव छे तेओ तो पोताना आयुष्यना क्षयवडेज मृत्यु पामे छे, तेथी ते जीवो सबधी अविरति जन्य पापबध छे, पण हिंसाजन्य पापबध नथी साधुओ ते बने प्रकारना (स्थूल अने सूक्ष्म जीवना) वधथी निवृत्त छे तेथी तेमनामा विशवसानी दया होय छे अने गृहस्थने मात्र स्थूल जीवना वधथी निवृत्ति छे, कारणके ते पृथ्वी, जल विगेरेनो सदा आरभी छे, तेथी दशवसा ओछा थया हवे ते स्थूल जीवनो वध पण बे प्रकारे छे सकल्पथी अने आरभथी तेमा सकलपथी एटले 'आने हु मारु' एवा मन'सकलपथी जे हिंसा थाय ते तेनाथी गृहस्थ निवृत्त थई शके छे. पण आरभथी ते निवृत्त थई शकतो नथी, कारणक खेती विगेरेना आरभमा त्रसजीवनो पण घात थाय छे ते शिवाय पोतानो तथा स्वजननो निर्वाह थई शकतो नथी एथी दशवसामाथी वळी पाच गया एटले पाच बाकी रह्या हवे संकलपथी त्रस जीवनी हिंसामा पण सापराधी अने निरपराधी जीव आश्री बे भेद छे तेमा गृहस्थ निरपराधीनी हिंसाथी

निवृत्त थई शके छे, पण सापराधीने माटे तो तेना अपराधना नाना मोटापणा संबंधी विचार करवो पडे छे; तेथी तेना गुरु अपराधमा तेना वधनो सकल्प पण करे छे तेथी पाच वसामाथी अढीवसा गया ते निरपराधीना वधना त्यागमा पण बे प्रकार छे सापेक्ष अने निरपेक्ष, तेमा गृहस्थ निरपेक्ष हिंसाथी निवृत्त थइ शके छे, पण सापेक्ष हिंसाथी निवृत्त थइ शकतो नथी एटले निरपराधी एवा पण भारवहन करनारा पाडा, बळद, घोडा विगेरेने तेमज पठन करवामा प्रमादी एवा पुत्रादिकने सापेक्षपणे वध बंधनादि करे छे, तेथी अढीवसामाथी अर्ध जता बाकी सवावसो रहे छे तेथी गृहस्थ श्रावकने सवा वसो दया कहेली छे

ए प्रमाणे श्रावकनुं पहेलु अणुव्रत छे ते प्रथम अणुव्रतना पाच अतिचार त्याग करवा योग्य छे ते कहे छे

क्रोधाद् वंध छविच्छेदोऽ धिकभाराधिरोपणं ।
प्रहारान्नादि रोधश्चा ऽहिसाया परिकीर्त्तिता· ॥

"क्रोधथी आकरुं बधन बाधवु, कर्णादिकनो छेद करवो, अधिक भार मुकवो, प्रहार करवो अने अन्न तथा जलनो निरोध करवो, ए प्राणातिपात विरमण व्रतना पाच अतिचार छे "

तेनुं विवेचन करे छेके, रज्जु विगेरेथी गाय वा मनुष्यने बाधवा पोताना पुत्रोने पण विनय शिखववा माटे तेवी शिक्षा करवी तेमा क्रोधथी एटले प्रबल कषायथी जे बधन बाधवु ते पहेलो अतिचार छे शरीरनी त्वचानो अथवा कान विगेरेनो क्रोधथी जे छेद करवो ते बीजो अतिचार छे क्रोधथी वा लोभथी वहन करी शकाय नहीं तेटलो (प्रमाणथी अधिक) बोजो वृषभ, ऊट, गधेडा तथा मनुष्यादिकनी पीठपर आरोपण करवो ते त्रीजो अतिचार छे क्रोधथी निर्दयपणे चाबुकादिवडे प्रहार करवो ते चोथो अतिचार छे अने क्रोधादिकथी भात पाणीनो या घासचारानो अटकाव करवो ते पाचमो अतिचार छे

अहिं शिष्य प्रश्न करे छे के, " आ वधादि पांच अतिचार शी रीते लागे ? कारण के, व्रतग्रहण करता ते बधन, प्रहारादिनो त्याग करेलो नथी, जेथी व्रतना मली नपणानो अभाव छे अने जे व्रत लीधु छे ते तो अखड छे, तेथी तेमा अतिचार शी रीते उत्पन्न थाय?" गुरु तेनु समाधान करे छे के—"मुख्यपणे तो प्राणातिपातनोज त्याग करेलोछे, वध बधनादिनो त्याग करेलो नथी, पण परमार्थे तो तेनु पण पचखाण करेलुं छे, कारण के ते प्राणातिपातना हेतु छे " शिष्य कहे छे के "जो तेम छे तो तो तेवी रीते व्रत न पाळवाथी व्रतनोज भंग थवो जोइए, अतिचार शा माटे लागे ?" गुरु कहे छे के " एम नहीं व्रत बेप्रकारे पळाय छे—अतर्वृत्तियी अने बहिर्वृत्तिथी,

तेमा ज्यारे कोपादिकने वश थइ वध विगेरेमा (प्रहारादि करवामां) प्रवर्ते त्यारे निर्दयपणाने लीधे अतर्वृत्तिथी व्रतनो भंग थाय छे, पण आयुष्यना बळने लीधे ते जीवना मरण नहीं पामवाथी बहिर्वृत्तिथी व्रत पाळ्युं गणाय छे तेथी काइक भाग्यु अने काइक न भाग्यु–ते भंगाभगरुप अतिचार गणाय छे ते ऊपर अन्यत्र कह्यु छे के, " मारे जीवनो वध करवो नहीं, एवुं जेने व्रत छे तेने जीव मृत्यु पाम्या विना अतीचार केम लागे ? एवी आशकानो उत्तर आपे छे के, जे क्रोध करीने वध विगेरे करे छे, ते समये तेने निरपेक्षपणु थइ जाय छे, व्रत नियम सांभरता नथी तेवे प्रसगे जीव मृत्यु न पामवाथी तेनो नियम रहे छे, पण क्रोपवडे निर्दयपणुं करवाथी तेना व्रतनो भग थाय छे एटले देशथी भंग अने देशथी प्रतिपालन थवाथी पूज्य पुरुषो तेने अतिचार गणे छे " माटे जेम आ अतिचारो न लागे तेम प्रवर्तवु आ व्रत उपर श्रीकुमारपाळनो प्रबध नीचे प्रमाणे —

श्री कुमारपाळ प्रबंध.

एक वखते उदयनमंत्रीए पाटणमा महोत्सव सहीत श्रीहेमचंद्रसूरिने प्रवेश कराव्यो अन्यदा सूरिए मंत्रीने कह्यु के, तमारे राजाने एकातमां कहेवुं के, आजे तमारे नवी राणीने महोले सुवा न जवु, कारण के रात्रे त्या विघ्न थवानु छे कदि राजा तमने पुछे के, तेवु कोणे कह्यु ? तो ते अति आग्रह करे तो तमारे मारुं नाम आपवु पछी मंत्रीए तेम कर्युं राजाए ते वचन मान्य कर्युं ते रात्रे विद्युत् (वीजळी) पडवाथी ते राणीनो महेल बळी गयो अने राणी मृत्यु पामी आ चमत्कार जोइ राजाए मंत्रीने पूछवाथी हेमचद्राचार्यने त्या आव्या जाणी तरत बोलाव्या सूरि सभामा आव्या एटले राजा आसन छोडी तेमना चरणमा पडीने बोल्यो के,–हे भगवन् ! हु तमने मुख बतावी शकुं तेम नथी केमके, प्रथम तमे स्तभतीर्थ (खभात) मा मारी रक्षा करी हती, अने अहि पण जीवितदान आप्यु छे माटे हवे मारु राज्य लइने मने अनृणी करो आचार्य बोल्या के, हे राजन्, अमारे निःसगने राज्यनु शु काम छे ? जो तमे कृतज्ञ थइने प्रत्युपकार करवाने इच्छता हो तो तमारुं मन श्री जैनधर्ममा जोडी दो कह्यु छे के, प्राणीने घर, स्त्री, पुत्रो, सेवको, बाधवो, शेहेर, खाण, गाम अने राज्य संपत्ति विगेरे पगले पगले प्राप्त थाय छे पण विद्वानोए पूजेली निर्मल तत्वज्ञानपर रुचि प्राप्त थती नथी ते साभळी राजाए कह्यु, स्वामी तमारे कृपा करी प्रतिदिन सभामा मने प्रतिबोध करवा आववु, के जेथी अनेक ब्राम्हणादि वर्गे स्थापित करेला पक्षना विनाशथी मारी बुद्धि सम्यग् धर्ममा जोडाय पछी श्री हेमचद्रसूरि प्रतिदिन राजसभामा जवा लाग्या अने ब्राह्मणोनी साथे विवाद करीने स्याद्वाद मतनुं स्थापन करवा लाग्या एक दिवस राजाए सभामा पुछ्यु के, सर्व धर्ममा श्रेष्ट धर्म

कर्यो? सूरि बोल्या–भोजराजानी आगळ सरस्वतीए आ संवाद विषे श्लोक कह्यो छे ते साभळवा योग्य छे तेमा कह्युं छे के, "सौगत धर्म करवा योग्य छे, आर्हत् तथा वैदिक धर्म व्यवहारने माटे युक्त छे अने शिव धर्म ध्यान करवा योग्य छे राजाए फरीथी पूछ्यु के भगवन्, वेदमा लखे छे के, "जे औषधीओ, पशुओ, वृक्षो, तिर्यचो अने पक्षीओ यज्ञने माटे निधन (विनाश) पामे ते पुन उन्नत पदने पामे छे" आ प्रमाणे वेदोक्त हिंसाने केटलाएक धर्म माने छे ते विषे आप शुं कहो छो? सूरि बोल्या–राजन्, ए सत्य वचन नथी स्कंदपुराणना अठ्ठावनमा अध्यायमा कह्यु छे के, "वृक्षोने छेदी, पशुओने हणी, रुधिरनो कादव करी अने अग्निमा तिल घृतादि बाळी स्वर्ग मेळवे छे ते आश्चर्य छे. जो यज्ञने माटे पशु सर्जेला छे एम स्मृति कहेती होय तो स्मार्त्त धर्मीओ तेमनु मांस भक्षण करनारा राजाओने केम वारता नथी? वळी जो ब्रह्मा ए यज्ञने माटे पशुओ बनाव्या छे तो वाघ विगेरेना होमथी देवता संतुष्ट केम थता नथी?" हे राजन्, अहिंसाथी उत्पन्न थनारो धर्म हिंसाथी शी रीते प्राप्त थाय? जलथी उत्पन्न थनारा कमलो अग्निमाथी केम उत्पन्न थाय? ब्रह्मपुराणमा पण लखे छे के, "प्राणीनी हिंसा करनारा पुरुषो वेद भणवाथी, दान देवाथी, तप करवाथी के यज्ञो करवाथी कदी पण सद्गति पामता नथी" सांख्य मतवाळा कहे छे के —

षट्त्रिंशदंगुलायामं, विंशत्यंगुल विस्तृतं ॥
दृढं गलनकं कार्यं, भूयो जीवान् विशोधयत् ॥ १ ॥

"छत्रीश आगळ लांबु अने वीश आगळ पोहोळुं एवु गरणुं राखवु अने ते वडे वारवार जीवोने शोधवा अर्थात् पाणी गळवु" वळी लिंगपुराणमा कह्युं छे के:–

त्रिंशदंगुलमानं तु, विंशत्यंगुल मायतं ॥
तद्वस्त्रं द्विगुणी कृत्य, गालयित्वोदकं पिबेत् ॥ १ ॥
तस्मिन् वस्त्रे स्थितान् जंतुन्, स्थापयेज्जलमध्यत ॥
एवं कृत्वा पिबेत्तोयं, स याति परमां गतिम् ॥ २ ॥

"त्रीश आगळ लांबुं अने वीश आगळ पोहोळु वस्त्र बेवडु करी ते वडे जलने गाळीने पछी पीवु ते वस्त्रने लागेला जीवोने पाछा जळनी मध्यमां नाखवा एम करीने जे जळ पीवे ते सदगतिने पामे छे" उत्तरमीमांसामा पण कह्यु छे के:—

लूतास्य ततु गलिते, ये बिंदौ संति जतवः ॥
सूक्ष्मा भ्रमर मानास्ते, नैव माति त्रिविष्टपे ॥ १ ॥

कुसुभ कुंकुमांभोत्र, निचित सूक्ष्म जतुभिः ॥
तद् दृढे नापि वस्त्रेण, शक्य नो शोधयेज्जल ॥ २ ॥

"करोळीआना मुखमाथी नीकळेला तंतुओथी गळेला जळना बिंदुओमा जे जतुओ छे ते एटला बधा सूक्ष्म छे के जो ते दरेकने भ्रमरा जेवडी कायावाळा करीए तो त्रण जगतमा समाय नहीं" वळी "कसुबा तथा कुंकुमना जळनी अदर रहेला कसुबा ने कुंकुमनी जेम पाणीमा एवा सूक्ष्म जतुओ रहेला छे के घाटा वस्त्रथी गळता छता पण तेने शोधवु अशक्य थइ पडे छे अर्थात् तेमाथी पण बहार नीकळी आवे छे"

उपर प्रमाणे सर्व धर्म शास्त्रोमा कहेल छे तेथी सर्व धर्म दयामूळ छे, अने एज धर्म प्रमाण छे, माटे हे राजन्! भ्रातिने छोडीने दया धर्ममा स्थिर था आ प्रमाणेना हेमचद्राचार्यना वचनोथी जैन धर्मने सत्य मानता राजाए फरीवार पूछ्यु के, हे भगवन्, केटलाएक कहे छे के, जैन लोको वेदबाह्य छे माटे ते नमवा योग्य नथी ते विषे आप शु कहो छो? सूरि बोल्या-राजन्, वेद कर्ममार्गना प्रवर्त्तक छे अने अमे निष्कर्म मार्गी छीए, तेथी वेद शी रीते प्रमाण थाय? उत्तरमीमासामा कह्यु छे के, "वेद अवेद छे, लोक अलोक छे अने यज्ञ अयज्ञ छे" कारण के "वेदमा अविद्या कहेली छे" वळी रुचि प्रजापतिना स्तोत्रमा पुत्रनु पितामहप्रत्ये वचन छे के, "वेदमा कर्ममार्ग छे ते अविद्या छे तो हे पितामह, तमे मने कर्ममार्गनो उपदेश केम करो छो?" जो वेदमा किंचित् पण जीवदया कहेली छे तो सर्व शास्त्र समत शुद्ध-दयाने पाळनारा अमे वेदबाह्य शी रीते कहेवाइए? पुराणमा लखे छे के —

सर्ववेदा न तत्कुर्या । सर्वे यज्ञा च भारत ॥
सव तीर्थाभिषेकाश्च । यत्कुर्यात्प्राणीनांदया ॥ १ ॥

"हे भारत! (युधिष्ठिर) जे प्राणीओपर दया करवाथी थाय ते सर्व वेदोथी, सर्व यज्ञोथी अने सर्व तीर्थाभिषेकथी पण थतु नथी" वळी हे राजन, "जो वेदमा दया न होय तो ते वेद नास्तिकना शास्त्रोनी जेम अमारे प्रमाण नथी" आ प्रमाणेना गुरुमहाराजना वाक्योथी कुमारपाळ राजा वेदोने अमान्य मानतो हवो

एक वखते राजाए सूरिने कह्यु, भट्टारक, केटलाक एम कहे छे के, जैन लोको सूर्य जेवा प्रत्यक्ष देवने पण मानता नथी" सूरि बोल्या- राजन्, साभळ स्कंदपुराणे रुद्र प्रणीत कपालमोचन स्तोत्रमा कह्यु छे के —

त्वया सर्वमिद व्याप्त । ध्येयोस्ति जगता रवे ॥
त्वयि चास्तमितेदेवे । आपो रुधिरमुच्यते ॥
त्वत्करै रेव सस्पृष्टा । आपो याति पवित्रता ॥

"हे सूर्यदेव, तमाराथी आ सर्व जगत् व्याप्त छे, तमेज जगतमा ध्यावा योग्य छो, ज्यारे तमे अस्त पामो छो त्यारे जळ रुधिर कहेवाय छे, तमारा किरणो वडे स्पृष्ट थनाथीज जल पवित्र थाय छे" आवा प्रमाण वाक्योथी रात्रे अन्न जलने त्याग करनारा अमेज तत्वथी तो सूर्यने मानीए छीए वळी कह्युं छे के,—

पयोद पटलस्थेन। नाश्नति रवीमंडले ॥
अस्तं गते तु भुंजानो । अहोभानोः सुसेवकाः ॥ १ ॥

"ज्यारे मेघना वादलामा सूर्य ढंकाइ गयो होय त्यारे सूर्यभक्तो भोजन करता नथी अने सूर्य अस्त पामे छे त्यारे भोजन करे छे तो ते केवा सूर्यभक्त कहेवाय"

राजाए फरीवार पुछ्यु के, केटलाएक कहे छे के, "जैनो विष्णुने मानता नथी तेथी तेनी मुक्ति थती नथी, तेनुं शी रीते" हेमचंद्राचार्य बोल्या के,—"हे राजन्, ते सत्य छे परतु खरेखरा वैष्णव तो जैनमुनिओ ज छे गीतामा कह्यु छे के,—

पृथिव्यामप्यहं पार्थ । वायवग्नौ जलेप्यहं ॥
वनस्पति गतश्चाहं । सर्वभूतगतोप्यह ॥ १ ॥
यो मां सर्वगतं ज्ञात्वा । न च हिंसेत्कदाचन ॥
तस्याहं न प्रणस्यामि । यस्य मां न प्रणस्यति ॥ २ ॥

"हे अर्जुन, हुं पृथ्वीमा, वायुमा, अग्निमा, जलमा, वनस्पति अने सर्व भूतोमां रहेलो छुं तेथी जे मने सर्वव्यापक जाणी हिंसा करशे नहीं तेनो विनाश हु पण करीश नहीं अर्थात् जे मने हणशे नहीं तेने हु पण हणीश नहीं" वळी विष्णुपुराण मा पाराशर ऋषिए कह्यु छे के,—

परस्त्री परद्रव्येषु । जीवहिंसासु यो मति ॥
न करोति पुमान् भूप । तोष्यते तेन केशव ॥ १ ॥
यस्य रागादि दोषेण । न दुष्ट नृप मानसं ॥
विशुद्धचेतसो विष्णु । स्तोष्यते तेन सर्वथा ॥ २ ॥

"हे राजन्, जे पुरुष परस्त्री, परधन अने जीवहिंसामा बुद्धि करशे नहीं, तेनी उपर विष्णु भगवान् सतुष्ट थशे हे राजा जेनु मन रागादि दोषथी दूषित थयु नथी तेवा शुद्ध मनवाळा पुरुष उपर विष्णु सतुष्ट थाय छे" वळी तेज पुराणमा यमराज अने विष्णुना दूतोना सवाद प्रसगे कह्यु छे के,—"जे पोताना वर्णाश्रम धर्मथी चलित थतो नथी, शत्रु अने मित्रमा समान दृष्टि राखे छे, जे कोइने मारतो नथी, तेमज कोइनु हरी लेतो नथी, तेवा स्थिर मनवाळा पुरुषने विष्णुभक्त जाणवो जेनी

बुद्धि निर्मळ छे, जे मत्सर रहित, प्रशांत, पवित्र आचरणवाळो अने सर्व प्राणीमात्रनो मित्र छे, तेमज जेनां वचन प्रिय अने हितकारी छे, तेमज जे मान माया रहित छे तेवा पुरुषना हृदयमां वासुदेव वसे छे"

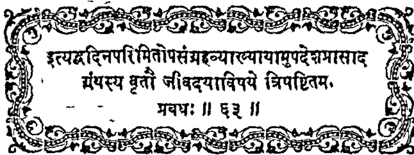
आ प्रमाणे विचारता तत्वबुद्धिवडे सर्व जीवना रक्षको जैन ज छे, ब्राह्मणो नथी, केमके तेओ तो तेथी विपरीत चालनारा छे वळी परमार्थरूप नित्य चिद्रूपपणे तथा ज्ञानात्मपणे जे व्यापे ते विष्णु कहेवाय आवी व्युत्पत्तिथी जिनज विष्णु छे, तेथी तेना भक्तोने मुक्ति प्राप्त थाय एवो निश्चय छे

आ प्रमाणे अनेक प्रकारना धर्मोपदेशथी राजाए धर्मनो मर्म जाणीने अहिंसादिक बार व्रत ग्रहण कर्या. पछी तेणे चारे वर्णोमा "पोताने तथा बीजाने माटे जे कोइ जीवहिंसा करशे ते राजद्रोही गणाशे" एवी पाटण शेहेरमा उद्घोषणा करावी, एटलुज नहीं पण मच्छीमार तथा कसाइ विगेरेनो पण निष्पाप निर्वाह चाले तेवी गोठवण करी सर्वने दयामय करी दीधा ते पछी काशी देशमा घणा जीवनी हिंसा थती साभळीने ते निवारवाने माटे एक चित्रपट तैयार कर्युं तेमा हिंसा अने अहिंसाना फलरुप स्वर्ग नरकना चित्रो आलेख्या तेनी वचमा श्रीगुरु (हेमचंद्र सूरि) नी मूर्त्ति करावी अने तेमनी आगळ पोतानी नम्र मूर्त्ति चितरावी ते चित्र साथे बे कोटी सुवर्ण तथा बे हजार जातिवंत अश्व विगेरेनी मोटी भेट आपी पोताना मंत्रीने त्या मोकल्यो वाणारसीनो राजा जयचंद्र सातसो योजन भूमि उपर राज्य करतो हतो तेनी पासे चार हजार हाथी, साठ लाख अश्व अने त्रीश लाख पेदलनी सेना हती ते गंगा यमुनाना तीर उलघी बीजे जइ शकतो नही तेथी ते पोताने "पगुराज" कहेवरावतो हतो कुमारपाळनो मंत्री चित्रपट विगेरे लइने त्या गयो केटलेक दिवसे राजानु मुख जोवामा आव्यु एटले तेणे चित्रपट बतव्यो, अने तेनु यथार्थ स्वरुप जणावता कह्यु के,-"आ मध्ये रहेली मूर्त्ति अमारा राजगुरुनी छे, ते गुरुए पुण्य पापनु फल आ चित्रमा बताव्या अनुसार दर्शाव्यु तेथी आ अमारा राजाए जीव दया धर्म स्वीकार्यो छे, अने तेमणे पोताना राज्यमा सर्वत्र अमारी घोषणा करावी छे वळी अमारा राजानी कुलदेवी प्रतिवर्ष चोविस पाडानु बलिदान लेती हती तेने पण गुरुनी सहायथी पोताना अढार देशमा जीव हिंसा न थवा देवा माटे तत्पर बनावी छे हमणा अमारा राजानी वैरीणी थवाथी हिंसाने कोई ठेकाणे स्थान मल्यु नहीं, ते तेथी आ काशी देशमा आवीने व्यापी रही जणाय छे तेने निवारवाने माटे आ भेटणु लइने मने अहिं मोकल्यो छे" आ प्रमाणेना मंत्रीना वचनो साभळी पगुराज संतुष्ट थयो अने बोल्यो के, "तमारो गुर्जर देश विवेकमा बृहस्पति जेवो कहेवाय छे ते प्रतित छे, कारण के जेमा आवा दयाळु राजा प्रदीप्तमान छे"

है राजा पोते प्रेरणा करीने मारी पासे दया करावे छे ते छतां जो हुं ते न करुं तो पछी मारी बुद्धि केवी कहेवाय !" आ प्रमाणे कही पोताना देशमांथी एकठी करावीने एक हजार लाख माच्छीनी जाळ अने हजारो बीजा हिंसाना साधनो सोलंकी राजाना मंत्रीनी समक्ष बाळी नखाव्या, पोताना बधा देशमां अमारी आघोषणा करावी अने ते मंत्रीने घमणी भेट आपीने पाटण तरफ विदाय कर्यो

मंत्रीए पण पाटण आवी चौलुक्यवंशी राजाने सर्व वृत्तांत निवेदन कर्युं. जेथी ते संतुष्ट थयो

कुमारपाळे पोताना अढार लाख अश्वोने माटे पलाणदीठ पुंजणी तथा गरणीओ करावी. आ प्रमाणे बीजा वृत्तांतो पण तेना चरित्रमांथी जाणी लेवा.


इत्यब्ददिनपरिमितोपसंग्रहव्याख्यायामुपदेशप्रासाद ग्रंथस्य वृत्तौ जीवदयाविषये त्रिषष्टितम.
प्रबंधः ॥ ६३ ॥

व्याख्यान ६४ मुं.

हवे हिंसाना अभावथी विरति थाय छे ते कहे छे.

चतुर्धा द्रव्यभावाभ्यां हिंसा त्याज्या हितेच्छुभिः ।
ततस्तेषां भवेद्देशविरतिः प्राणिसौख्यदा ॥ १ ॥

व्याख्या.

" आत्महितेच्छु प्राणीओए चार प्रकारे[1] द्रव्यभावथी हिंसानो त्याग करवो. तेथी तेमने प्राणीओने सुख आपनारी देशविरति प्राप्त थाय छे." अहिं विवेचन करे छे के, द्रव्यथी अने भावथी चार प्रकारे हिंसा थाय छे तेमां इर्यासमीतिवाळा मुनिने

१ हिंसाना चार प्रकार–१ द्रव्यथी हिंसा, भावथी नहीं. २ भावथी हिंसा, द्रव्यथी नहीं ३ द्रव्यथी पण हिंसा, भावथी पण हिंसा ४ द्रव्यथी पण नहीं, भावथी पण नहीं

द्रव्यथी हिंसा थाय छे, भावथी थती नथी, ते पहेलो प्रकार अने अंगारमर्दक नामना आचार्ये महावीर ना कीडा चंपाय छे एवी बुद्धिथी कोयलानु मर्दन कर्यु ते भावथी हिंसा छे, द्रव्यथी नहीं तेमज मंद प्रकाश छते सर्पनी बुद्धिथी रज्जुने हणवु ते पण द्रव्यथी नहीं पण भावथी हिंसा छे ते बीजो प्रकार जे मन वचन अने कायाए शुद्ध एवा मुनि छे तेने द्रव्यथी पण हिंसा नहीं अने भावथी पण हिंसा नहीं ते त्रीजो प्रकार अने हुं मारुं एवी बुद्धिए मृगनी हिंसा करनार शीकारीने द्रव्यथी अने भावथी बने प्रकारे हिंसा थाय छे ते चोथो प्रकार

हिंसा शब्दनी व्याख्या विषे तत्वार्थ भाष्यमा श्री उमास्वाती वाचक लखे छे के, "प्रमादथी प्राणनो त्याग कराववो ते हिंसा" वळी ते विषे कह्यु छे के,–

पचिंद्रियाणि त्रिविध वल च । उच्छ्वास नि:श्वास मथान्यदायु ॥
प्राणा:दशैते भगवद्भिरुक्ता । स्तेषा वियोगीकरण तु हिंसा ॥१॥

पाच इद्रियो, मन वचन काया ए त्रण प्रकारनु बळ, श्वासोच्छ्वास अने आयुष्य ए दश प्राण कहेवाय छे ते दश प्राणनो वियोग कराववो ते हिंसा कहेवाय छे ते हिसानो त्याग करवाथी अने बीजो कषाय जे अप्रत्याख्यानी तेनी चोकडी क्रोध, मान, माया, लोभ, दूर थवाथी पाचमे गुणठाणे रहेल श्रावक देशविरति कहेवाय छे आत्महितेच्छु पुरुषोए ते अवश्य करवा योग्य छे

अहिं कोइ शका करे के, गहस्थोने त्रसजीवनी हिंसा निषिद्ध छे, स्थावरनी हिंसा निषिद्ध नथी, तो तेओए शु तेनी हिंसा यथेच्छ करवी? तेना उत्तरमा कहे छे के, "मोक्षनी इच्छावाळा दयाळु उपासकोए स्थावर जीवोनी हिंसा पण निरर्थक करवी नहीं" एकला त्रसजीवनी हिंसा निषिद्ध करवाथी सपूर्णपणे धर्म प्राप्त थाय एम नथी पण शरीर तथा कुटुबादिकना प्रयोजने स्थावर हिंसानी गृहस्थने जरुर पडे छे पण तेवा प्रयोजन विना स्थावरनी हिंसा करनारानु व्रत मलिन थाय छे एथी श्रावकोए अनिषिद्ध एवी स्थावर हिंसामा पण यतना करवी जोइए जेम के पाणीनो सखारो सारी रीते जाळवीने तेमा रहेला जीवो न हणाय तेम योग्य स्थाने (जळाशयमा) नाखवो अने इधणा पण थोडा अने सम्यक् प्रकारे शोधीने उपयोगमा लेवा नहीं तो अनुकपा न रहेवाथी अतीचार लागे ते विषे कह्यु छे के, "त्रस जीवना रक्षणने माटे शुद्ध जळ ग्रहण करवु, अने इधण तथा धान्यने शोधीने उपयोगमा लेवु"

वळी पृथ्वी विगेरेमा जीवपणुं आगमने विषे कह्यु छे ते आ प्रमाणे —

अद्दामलग पमाणे, पुढविकाये हवंति जे जीवा ॥
ते पारेवय मित्ता, जंबुदीवे न मायंति ॥ १ ॥
एगंमि उदगविंदुमि, जे जीवा जिणवरेहि पन्नत्ता ॥
ते जइ सरिसवमित्ता, जंबुदीवे न मायंति ॥ २ ॥

"लीला आमळा प्रमाण पृथ्वीकायने विषे जेटला जीवो छे तेनुं दरेकनुं शरीर जो पारेवा जेवडु करीए तो तेओ आ जंबुद्वीपमा समाय नहीं" एक जलना बिंदुमा श्रीजिनेंद्रोए जेटला जीवो कहेला छे तेनु दरेकनु शरीर जो सरसव जेवडुं करीए तो ते आ जंबुद्वीपमा समाय नहीं ते पृथ्वीकाय विगेरे पाचे प्रकारना जीवोनी जघन्य ने उत्कृष्ट बंने प्रकारे अवगाहना एक अंगुलना असख्यातमा भाग जेवडी जाणवी अने तेवा अनंत जीवोना एकठापणाथी आश्रित एवुं एक शरीर ते निगोदनुं एक सूक्ष्म शरीर थाय. तेवा असंख्य शरीर एकत्र करीए त्यारे एक सूक्ष्म वायुकायनु शरीर थाय, तेथी असख्यगुणु एक सूक्ष्म तेउकायनु शरीर थाय, तेवा असख्य देह एकठा करीए त्यारे एक सूक्ष्म अप्पकायनु शरीर थाय, तेथी असख्यगुणुं एक सूक्ष्म पृथ्वीशरीर थाय, तेथी असंख्यगुणु एक बादर वायुकायनुं शरीर थाय, तेथी असख्यगुणु बादर अग्निशरीर, तेथी असख्यगुणु बादर जलशरीर, तेथी असंख्य गुणु एक बादर पृथ्वीकाय शरीर अने तेथी असंख्यगुणु एक बादर निगोदनु[2] शरीर थाय अहिं बादर पृथ्वीकायना शरीरनी सूक्ष्मता बतावे छे —

जेम कोइ युवान पुरुष एरण उपर हीरो मुकी ते पर प्रयत्नथी घणनो घा करे तो ते हीरानो भग थतो नथी, पण ते उलटो एरणमा पेशी जाय छे तेवा हीराने चक्रवर्त्तीनी स्त्री (रत्न) पोताने हाथे मर्दन करी तेनु चूर्ण करीने स्वस्तिक पूरे छे ते स्त्रीरत्न पण पृथ्वीकायना पींडने एक निसातरा पर मुकी मर्दन करे त्यारे तेमाना कोइ जीवने पीडा थाय, कोइने बीलकुल पीडा न थाय, कोइनु मरण थाय अने कोइने अल्प पण दुःख न थाय एटली बधी पृथ्वीकाय जीवोनी सूक्ष्मता छे

वळी जेम कोइ मोटा नगरमा कोइना घरमाथी चोरे द्रव्य लुट्यु तो तेनी वार्त्ता तेना पाडोशी तो जाणे छे पण कोइ तो मूळथी पण जाणता नथी तेवी रीते लवण विगेरे पृथ्वीकायने माटे जाणी लेवु

तेज प्रमाणे स्थावर एवा वनस्पति कायमा पण सिद्धातने अनुसारे जीवत्व जाणवु तेओ वधे छे, पत्र आवे छे, पुष्पित थाय छे, फल आपे छे, पोता पोताने

१ सूक्ष्म वनस्पतिकाय ते सूक्ष्म निगोद तेनु २ साधारण वनस्पति ते बादर निगोद ते एक शरीरमा अनता जीवो होय छे.

पत्र, पुष्प, फळ आववानो काळ जाणे छे, इंद्रियोना अर्थने ग्रहण करे छे, गितादिकनी असर थाय छे, बकुलादिना वृक्षोमा तेवु देखाय छे वळी तेने जन्म, वृद्धि अने जरा प्राप्त थाय छे, तेथी वनस्पतिने जीवपणु केम न होय ? होयज ते विषे कह्यु छे के, 'वनस्पति' ए जीव छे, कारण के तेमा मनुष्यनी जेम जन्म, जरा अने वृद्धि विगेरे गुणो छे जळ पण सजीव छे ते भूमिमाथी देडकानी जेम स्वाभाविक रीते प्रगटे छे अग्नि पण सजीव छे, कारण के बालकनी जेम आहारथी तेनी वृद्धि जोवामा आवे छे पवन पण सजीव छे, ते गायनी जेम बीजानी प्रेरणाथी आडो अथवा नियतपणे गमन करे छे तेमज वृक्ष पण सजीव छे, जो तेनी सर्व त्वचा उखेडी नाखे तो गर्भनी जेम ते विनाश पामे छे

आ प्रमाणे आगम वाक्यथी तथा युक्तिथी ते स्थावरनु जीवपणु जाणीने तेमज तथाप्रकारे दयारुप धर्मने समजीने स्थावर जीवनी पण निरर्थक हिंसा करवी नहीं-ए तात्पर्यार्थ छे

हवे प्रथम व्रतनी स्तुति करे छे

सर्वव्रतेष्विद मुख्य सर्वज्ञैः परिभाषितम् ।
पालनीय प्रयत्नेन सर्वपापापह नरैः ॥ १ ॥

व्याख्या

"सर्व व्रतोमा सर्वज्ञ प्रभुए ए व्रतने मुख्यव्रत कहेलु छे तेथी सर्व पापने नाश करनारु ते व्रत मनुष्योए यत्नवडे पालवु आ विषे श्री जिनदास श्रावकनो प्रबध छे ते प्राकृत मुनिपति चरित्रमाथी अहिं लखीए छीए —

श्री जिनदास श्रावकनी कथा.

चपा नगरीमा **जिनदास** नामे श्रावक रहेतो हतो गुरुमुखथी धर्म देशना साभळीने तेणे समकितमूल बार व्रत ग्रहण कर्या एक वखते तेणे दयावडे एक बळदने निर्लांछन (खासी करवा) थी मुकाव्यो कह्यु छे के,

दया विना देवगुरु क्रमार्चा । स्तपांसी सर्वेंद्रिय यत्रणानी ॥
दानादि शास्त्राध्ययनानि सर्वे । सैन्य गतस्वामी यथा वृथैव ॥ १ ॥

"देव गुरुना चरणनी पूजा, तप, सर्व इद्रियोनु दमन, दान अने शास्त्राध्ययन ते सर्व दया विना, सैन्य वगरना राजानी जेम वृथा छे" वळी "हाथीना भवमा सललु उगार्याथी ते मेघ कुमार थयो हतो, मेतार्य मुनि क्रौचपक्षीने उगार्याथी मोक्षे गया हता, कपोतने वचाववाथी श्री शातिनाथ तीर्थंकर थया हता अने श्री मुनिसुव्रत स्वामी अश्वने उगारवा साठ योजन गया हता" चाणाक्य नितिमा पण कह्यु छे के,

त्यजेद्धर्मं दयाहीनं क्रियाहीनं गुरुस्त्यजेत् ।
त्यजेत् क्रोधमुखी भार्यां निःस्नेहा बांधवास्त्यजेत् ॥

" दया वगरना धर्मने छोडी देवो, क्रिया वगरना गुरुने छोडी देवा, क्रोधमुखी स्त्रीने छोडी देवी अने स्नेह वगरना बाधवोने छोडी देवा "

हवे ते बळद हमेशा श्रेष्टीना मुखथी प्रतिक्रमण शास्त्रादि साभळीने देशविरतिपणु पाम्यो तेथी अष्टमी विगेरे पर्वतिथीए ते प्राशुक तृण जळ शिवाय काइ खातो पीतो नहीं. अने दररोज जिनदासशेठ जे पोताना गुरु हता तेना दर्शन कर्या विना काइ खातो नही

एक वखते अष्टमीने दिवसे श्रेष्टी शून्य गृहमा रात्रे पोसह लइ कायोत्सर्गे रह्या हता ते दिवसे तेनी कुलटा स्त्रीए कोइ जारनी साथे ते शून्य गृहमांज रात्रे मलवानो संकेत कर्यो हतो तेथी रात्रे पाया नीचे लोढाना चार खीलावाळा पलग सहित जारने लइने ते स्त्री ज्या शेठ कायोत्सर्गे रह्या हता त्या आवी अंधकारमां शेठने त्या रहेला नहीं जाणती ते कुलटाए ते चार खीलावाळो पलंग तेनी पासेज मुक्यो दैवयोगे पलंगनो एक पायो शेठना पग उपर आव्यो पछी पलग स्थिर करवाने माटे मुद्गरना घा करी पेल्रा चारे खीला जमीनमा नाख्या तेमाना एक खीलाथी श्रेष्टीनो पग बींधाइ गयो, अने तेनी महा व्यथा थवा लागी पछी ज्यारे ते जार दपतीए ते पलंग पर रहीने मैथुन करवा मांड्यु ते वखते विशेष भार पडतां वधारे पीडा उत्पन्न थवाथी ते श्रेष्टी क्रोध नहीं करता शरीर उपर विचार करी मनमा चिंतववा लाग्या के– "हे जीव, तने स्ववशपणुं घणु दुर्लभ छे, ज्यारे तु घणुं सहन करीश त्यारे तने स्ववशपणुं प्राप्त थशे बाकी जे परवशपणु छे तेमा तारे काइ पण गुण मानवो नहीं. अर्थात् तु परवशपणे गमे तेटला कष्ट सहन करे तेमा तने काइ गुण नथी, पण स्ववशपणे सहन करीश तो गुण प्राप्त थशे तेवो वखत अत्यारे स्वयमेव प्राप्त थयो छे वळी तु मृत्युथी शा माटे बीवे छे? ते काइ भय पामेलाने छोडतु नथी, पण जे जन्म्यु न होय तेने ग्रहण करी शकतुं नथी तेथी जन्म लेवो न पडे तेवो यत्न कर्य वळी हे प्राणी! सज्जन पुरुषो दोषजाळने छोडी दइने पारका गुणनेज मनमा धारण करे छे जेम मेघ समुद्रना क्षारपणारूप दोषने छोडी दइ मात्र जलनेज ग्रहण करे छे " एवी रीते श्रेष्टीए पोताना दोषनो विचार कर्यो पण तेना उपर कोप कर्यो नहीं छेवटे तेज रात्रीए शुभ ध्यानवडे मृत्यु पामी सौधर्म देवलोके देवता थया

प्रात:काळे पोताना स्वामीनु ते प्रकारे मरण जाणी "अहो! आ अकार्य थयु, हवे हु शु करीश ? " एम तेनी स्त्री चिंतामा पडी एवामा पेलो बळद प्रात काळ थवाथी आवश्यक साभळवा, पचखाण लेवा, तेमज श्रेष्टीना दर्शन करवा त्यां आव्यो एटले

संकेत कर्यो राजकुमारी वसतश्री तो ते रात्रे पोतानु सर्वस्व लइ अश्व उपर बेसीने ते देवालयने द्वारे आवी अहीं श्रेष्टीपुत्रे विचार्यु के, आ काम करवु गुणीजनोने युक्त नथी ए कार्य करवाथी कुळनी मलिनता थाय वळी ते राजपुत्री होवाथी घी जा पण कष्ट प्राप्त थाय आवा विचारथी ते रात्रे घेरज रह्यो कह्यु छे के, " स्त्री जातिमा दंभ, वणिक जातिमा अत्यंत व्हीकणपणु, क्षत्रीय जातिमा रोष अने ब्राम्हण जातिमा लोभ ए स्वाभाविक रहेला छे."

अहिं पेली राजकुमारीए देवद्वारे आवीने हरिवळ! एवा नामथी सांकेतिक श्रेष्टी पुत्रने बोलाव्यो ने कह्यु के-स्वामी, चालो आपणे देशांतर जइए जेथी आपणो मनोरथ सफल थाय मच्छी हरिवळ कोइ साथे संकेत छे एम जाणी हुंकारो दइने तैयार थयो बन्ने एकज अश्व उपर बेसी आगळ चाल्या मार्गमा राजपुत्री वारवार तेने बोलावे पण ते तो मात्र हुंकारोज आपे छेवटे राजसुताए खेद पामी विचार्यु के, आ कोइ बीजो पुरुष छे तेम करता ज्यारे रविनो प्रकाश थयो त्यारे तो तेनु रूप जोइ तेणे विचार्यु के, मने धिक्कार छे, पेला हाथीनी जेम मारी बने इष्ट वस्तु नष्ट थइ जेमके-" कोइ हाथीने ग्रीष्म ऋतुमा दाहथी पीडित थता घणी तृषा लागी तेथी कोइ सरोवर जोइने ते उतावळी तेनी पासे जवा चाल्यो, जेवो ते कांठानी नजिक आव्यो तेवामा ते कादवमां पग्यो खुंची गयो के, दुर्दैवयोगे ते तीर अने नीर बन्ने थी भ्रष्ट थयो " आवा निर्भागी दुष्टकुळमा जन्मेला मुर्ख, अनिष्ट पतिना नित्य संयोग करता तो एकवार मरवु सारू छे आ प्रमाणे खेद करती राजकुमारीने जोइने हरिवळे विचार्यु के, मने धिक्कार छे, में कपट करीने आ राजपुत्रीने छेतरी छे ते वखते तेनी चिंता दूर करवा माटे पेला देवे तेनु कामदेव जेवु स्वरूप करी दीधु अने आकाश वाणी करी के, हे राजपुत्री! आवा पुण्यवान पतिने मेळवीने बीजी शेनी इच्छा करे छे? पछी बंनेने प्रीति थवाथी ते देवे तेमने गांधर्व विवाह वडे परणाव्या.

त्याथी तेओ विशाळा नगरीमा आव्या त्या एक सुंदर गृह भाडे राखीने तेमा रह्या केटलेक दिवसे हरिवळ केटलीक भेटो आपीने राजानो मानपात्र थयो एक दिवस मंत्रीए राजानी पासे वसंतश्रीना रुप लावण्यनु वर्णन कर्यु ते सांभळी राजा तेनी उपर लुब्ध थयो तेथी हरिवळने हणवानी इच्छाथी एक वखते तेणे सभा वच्चे कह्यु के, मारी सभामा हरिवळ जेवो बीजो कोइ साहसीक नथी के जे मारे घेर आववा माटे लंकापति विभीषणने निमंत्रण करी लावे हरिवळे पोतानो उत्कर्ष सांभळी राजाने कह्यु के-स्वामी, जो तेमने निमंत्रण करवु हशे तो हु थोडा दिवसमा ए काम करी आवीश राजाए आज्ञा आपी एटले त्याथी ऊठीने हरिवळ पोताने घेर आव्यो . वसंतश्रीने ए वृत्तांत जणावीने कह्यु के, हु आवु त्यासुधी तु रुडी रीते शील

पाळजे हुं करेली प्रतिज्ञानो निर्वाह करवा माटे जाऊ छु–नीतिमां कह्युं छे के, "कदि मस्तक छेदाय के बधबधन मात्र थाय तथापि उत्तम पुरुषोए अगीकार करेलु पाळवु पछी जे भावी होय ते थाय " आ प्रमाणे कहीने ते घरेथी चाली नीकल्यो अनुक्रमे समुद्रने तीरे आवीने विचारवा लाग्यो के, अहो, आ कार्यनो निर्वाह शी रीते थशे ? पछी पूर्वे वरदान आपनारा देवनु स्मरण करीने तेणे समुद्रमा झंपापात कर्यो. एटले तत्काळ ते देवे तेने उपाडीने लंकाना ऊपवनमा मुक्यो. त्या एक रमणीय मेहेल जोइने ' आ शु ! एम आश्चर्य पामी हरिवळ तेमा पेठो त्यां एक ओरडामा एक यौवनवती बाळा अचेतन स्थितिमा पडेली जोवामा आवी ते जोइने हरिवळ विचारमा पड्यो के, आ शु आश्चर्य ! त्या नजीकमा एक अमृतपूर्ण तुंबी तेना जोवामा आवी. तेने जळ जाणीने तेणे ते बाळाना सर्व अंगपर सिंचन कर्यु जेथी तत्काळ ते कन्या ऊंघमाथी जागे तेम बेठी थइ अने हरिवळने जोइ लज्जा धारण करीने ऊभी रही. पछी तेणीए पुछ्युं, के हे स्वामी ! अहिं केम आव्या छो? हरिवळे आववानुं सर्व वृत्तांत जणाव्युं पछी तेणे ते बाळानु स्वरुप पुछ्यु, एटले ते बोली–स्वामी, मारो पिता आ लंकापतिना देवनो पूजारी छे एक दिवस मारा पिताए कोइ निमित्तिआने पूछ्युं के, मारी पुत्रीने केवो पति मळशे ? तेणे कह्यु के, तेनो पति राजा थशे ए साभळीने राज्यना लोभथी ते मारो पिताज मुर्खपणाथी मने परणवाने इच्छवा लाग्यो "एवा लोभी पुरुषने धिक्कार छे, के जे ऊन्मार्गमाज गमन करे छे रात्र्यंध, दिवाध, जात्यध, मायाध, मानाध, क्रोधांध, कामांध अने लोभाध, ए ऊत्तरोत्तर अधिक अधिक अध गणाय छे " आथी ते हुं स्वच्छद रीते न वर्त्तु तेटला माटे मत्रवडे मने मूर्छित करीने बहार जाय छे अने पाछो आवी आ अमृतवडे मने सजीवन करे छे. एनी दुर्मतिथी सर्व स्वजनोए तेने दूर कर्यो छे. तेना आवा कृत्यथी कोइ वार मारु मृत्यु थशे, माटे हे महाभाग ! आ लग्न वेळाएज मारुं पाणीग्रहण करो के जेथी हु चिरकाल जीवुं हरिवळे तत्काळ तेम कर्यु, एटले ते बोली–स्वामी, हवे अहिंथी आपणे पलायन करवु योग्य छे कारण के मारो पिता आवी चडशे तो विघ्न ऊत्पन्न थशे वळी न बनी शके एवुं जे विभिषणने आमंत्रण ते करवानी काइ जरुर नथी ते छता तमे अहिं आव्या छो तेवी तमारा राजाने प्रतीति करावया माटे हु विभिषणनुं चद्रहास खड्ग कोइ ऊपाये लावी आपीश. पछी तेनी समातिथी ते स्त्रीए विभिषणनु चद्रहास खड्ग गुप्त रीते लावी आप्यु. पछी ते स्त्रीनी बुद्धिथी चमत्कार पामेलो हरिवळ पेली अमृत तुबी, ते स्त्री अने चद्रहास खड्ग लइ लका नगरीनी बहार नीकळ्यो

अहिं हरिवळना गया पछी राजा गुप्त रीते तेने घेर आव्यो अने वसतश्री पासे तेना सगमनी प्रार्थना करी. ते चतुरा द्वेष अने खेद अतरमा गोपवीने बोली के,

हे राजा, मारा पतिनी शुद्धि आवता सुधी राह जुवो राजाए कपट वृत्तिए विचार्यु के, " हवे आ स्त्री मारे वश्यज थवानी छे अने तेनो पति तो मृत्युज पामवानो छे तेथी थोडा दिवस राह जोवी ठीक छे " आवुं विचारी तेनु वाक्य स्वीकारीने ते पाछो राजमेहेलमा गयो

अहिं हरिबळ देव सानिध्ये समुद्र उतरी कुसुमश्रीने पोताना नगरना उद्यानमा मुकी गुप्त रीते पोताने घेर आव्यो त्या वसनश्री पतिनी विरह व्यथाथी पीडाती हती पछी तने प्रत्यक्ष मळ्यो बनेए पोतपोताना वृत्तात जणाव्या. पछी हरिबळे राजानी इच्छानु मर्दन करवा माटे राजानी पासे पोताना खबर मोकलाव्या पछी तेणे पोते जइने राजाने कह्यु के, " हु विभिषणने नोतरी तेनी पुत्री परणीने आव्यो छु ते स्त्री उपवनमा छे अने विभिषण कुशल छे " आवु कर्ण कटु वचन साभळी राजा विस्मय पाम्यो, पण लोकापवादना भयथी तेने प्रिया साथे महोत्सवपूर्वक स्वनगरमा प्रवेश कराव्यो. पछी राजाए तेने वृत्तात पुछ्यु, एटले ते बोल्यो " हे राजन्' हु अहिंथी चाली अनुक्रमे दुस्तर सागर पासे गयो त्यारे समुद्र जोइने मने घणो उद्वेग थयो तेवामा समुद्रमाथी आवता एक राक्षसने मे दीठो तेने जोइ मे निर्भयपणे लकामा जवानो उपाय पुछ्यो एटले तेणे कह्यु के, जे पुरुष अहीं काष्ट भक्षण (अग्नि प्रवेश) करे तेनोज त्या प्रवेश थाय छे एम साभळी 'सेवके स्वामी कार्य अवश्य करवुज जोइए' एवुं हृदयमा धारी हु चितामा पेठो, एटले मारा देहनी भस्म लइ तेणे विभीषण पासे मूकी अने मारू वृत्तात जणाव्युं पछी विभीषणे मारी सात्विक वृत्तिथी सतुष्ट थइ अमृत छाटीने मने सजीवन कर्यो अने पोतानी पुत्री परणावी पछी मे तेमने तमारु आमत्रण जणाव्यु त्यारे ते बोल्या के, " मोटा माणसे पोताथी न्यून होय तेने घेर जवुं ते मान हानि छे,एथी प्रथम तारा राजाए अहिं आववुं योग्य छे, पछी हु तारा कहेवा प्रमाणे करीश आ वातनी एधाणी तरीके हु मारू चंद्रहास खड्ग तने आपु छु " एम कही मने खड्ग आप्यु पछी तेमणे पोतानी शक्तिथी प्रियासहित मने अहिं पोहोचाडी दीधो "

आवा युक्तिवाला तेना वाक्यने सत्य मानी राजा मंत्रीनी साथे विचारमां पड्यो के, अहो, आ तो जीवतो आव्यो माटे हवे फरीवार काइक छळ करीने तेने दु खमा पाडीए कह्यु छे के, " राजा, सर्प, पिशुन, चोर, क्षुद्र देवता, शिकारी प्राणी, शत्रु अने डाकण ते दुष्ट छे तोपण छल विना शु करी शके, ते शिवाय तेमनो आरंभ निष्फळ थाय छे "

एक वखते हरिबळे भविष्यमा थवाना अनर्थनो विचार कर्या वगर मंत्रीओ सहीत राजाने भोजननु निमत्रण कर्यु राजा जमवा आव्यो त्यारे तेनी बने स्त्रीनु

लावण्य जोइने अत्यंत काम पीडित थइ गयो पछी तेणे मंत्रीने पोतानो अभिप्राय जणाव्यो एटले मंत्रीए कह्युं के, हे स्वामी ! यमराजाने आमंत्रण करवा जवाने मिषे एने अग्निमां नाखी दइए, तो आपणु इच्छित पूर्ण थाय राजाने ते विचार पसंद पड्यो अन्यदा राजाए हरिबळने बोलावीने कह्युं के, हे सात्विक शिरोमणि ! तमारा शिवाय बीजो कोण अग्निमार्गे जइने यमराजने मारे घेर तेडी लावे ? ते सांभळी हरिबळे विचार्युं के, राजाने आवी बुद्धि मंत्रीथी प्राप्त थइ छे पछी ते तो राजानी आज्ञा प्रमाण करीने घेर आव्यो अने विचारवा लाग्यो के, " खल पुरुषोने उपकार करवाथी उलटो महादोष उत्पन्न थाय छे, शुं अनुकूल वर्तवाथी (मन गमतुं भोजन खावाथी) रोग अतिशय कोप करता नथी ? करेछे " माटे हवे खळने योग्य शिक्षाज करवी

पछी राजाए एक चिता रचावी हरिबळ पण तरत पेला देवने संभारीने त्या आव्यो अने ज्वलायमान अग्निमा प्रवेश कर्यो तत्काल तेनी काया सुवर्णवत् देदीप्यमान थइ अने ते पोताने घेर आव्यो पण कोइए तेने जोयो नहीं ए समये राजा पण निर्भयपणे हरिबळने घेर आव्यो अने तेनी स्त्रीओनी पासे कामभोगनी याचना करी त्यारे ते स्त्रीओ बोली के-"हे स्वामी, आपने सेवकनी स्त्रीओ पासे आवु वाक्य बोलवुं घटित नथी कारण के आतो पेहेरेगीरोएज चोरी करवी, रक्षकोएज धाड पाडवी, जळमाथीज लहाय उत्पन्न थवी अने सूर्यथी उलटो अंधकार उत्पन्न थवा जेवुं छे " आवी रीते अनेक युक्तियी समजाव्यो तथापि तेणे पोतानो आग्रह मुक्यो नहीं, एटले ते बंने स्त्रीओए मळीने राजाने दृढ बंधनथी बांधी लीधो अने तेना अवयव जर्जरीत करी दीधा पछी दया लावीने तेने छोडी मुक्यो एटले प्रात:काळे ते लज्जाथी पोताना अंत:पुरमां पेसी गयो.

हवे हरिबळे विचार्युं के, कोइ वार आ दुष्ट मंत्री आवा दंभ करीने मने मारी नाखशे माटे हुज दंभ करीने तेने यमराजनो अतिथी करू कह्यु छे के:—

व्रजंति ते मूढधियः पराभवं, भवंति मायावीषु ये न मायिन. ।
प्रविश्य ही घ्नंति शठास्तथाविधान, संवृतांगान्निशिता इवेषव ॥१॥

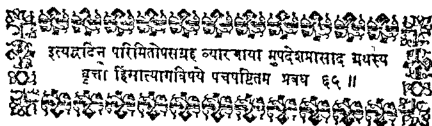
" जे मायावीनी साथे मायावी थता नथी ते मूढ लोको पराभवने पामे छे कारण, तेवा शठ लोको कवच वगरना शरीरवाला पुरुषोने जेम तीक्ष्ण बाण पराभव करे छे तेम अंदर पेशीने हेरान करे छे " आ प्रमाणे विचारी हरिबल कोइ पुरुषने यमराजनो छडीदार बनावी तेनी साथे राजसभामा आव्यो राजा तेने जोइ विस्मय पामी गयो तेणे हरिबळने यमराजनु स्वरूप पुछयुं एटले हरिबळे स्वबुद्धि प्रमाणे तेनु वर्णन करी बताव्यु पछी जणाव्यु के, " हे स्वामी, हु यमराजनु वर्णन

वचनथी शुं करी शकुं कारण के मोटा मोटा योगिंद्रो पण तेना भयथी योगाभ्यास करे छे वधारे शु कहु! त्रणे भुवन तेनी सेवा करे छे हे राजेंद्र! में ज्यारे सारी युक्तिथी तेने आमत्रण कर्यु त्यारे तेमणे पोतानो छडीदार मारी साथे आपीने कह्युं के, मारी समृद्धि जोवाने माटे तारा राजाना मन्त्रीने आनी साथे मोकलजे पछी हु तेनी साथे आवीश." हरिबळे आ प्रमाणे कह्युं एटले पेला कृत्रीम छडीदारे पण कह्यु के, हे मन्त्री! सत्वर त्या पधारो ते वखते राजा पण ज्वलता अग्निमा प्रवेश करवाने उत्सुक थइ गयो ते जोइ स्वामीद्रोहना भयथी हरिबळे कह्यु के, महाराज! प्रथम तमारा आववाना खबर आपवा मन्त्रीने मोकलो पछी आप पधारजो एटले मंत्री राजानी वधामणी देवाने माटे उत्सुक थइ सत्वर अग्निमा पड्यो अने भस्मावशेष थइ गयो पछी हरिबले राजाने कह्यु के, हे स्वामी, परस्त्रीना अगनो सग करवानी बुद्धि छोडी आप चिरकाल दीर्घायु थाओ स्वामीद्रोहनु महापाप जाणी मे आपने मृत्युथी बचाव्या छे हवे फरीवार पापबुद्धि आपनारा ते मन्त्रीना दर्शन थशे नहीं आ प्रमाणे साभळी खेद करतो सतो राजा पोताना महेलमा गयो पण राजा तेनु चातुर्य जोइने घणो सतुष्ट थयो तेथी तेनी साथे पोतानी कन्यानो विवाह कर्यो

अहिं काचनपुरना राजाए मुसाफरोना मुखथी पोतानी पुत्रीना तथा हरिबळना खबर साभळ्या तेथी तत्काल तेणे पोताना जामाताने बोलावी पोतानु राज्य अर्पण कर्यु पछी हरिबळ राजाए पोताना राज्यमा अमारीघोषणा करावी अन्यदा विहार करता करता तेना धर्मगुरु मुनि महाराजा त्या पधार्या तेमने वदना करी धर्म देशना साभळी पछी पोताना देशमाथी साते व्यसनोने दूर कराव्या

छेवटे पोतानी राजगादी उपर पोताना पुत्रने बेसाडी त्रण राणीओ साथे तेणे दीक्षा लीधी अनुक्रमे हरिबळ राजर्षि मुक्तिने प्राप्त थया

हे भव्यो, आ प्रमाणे हरिबळनु चरित्र साभळी आ लोकमा पण पूर्ण फळने आपनारी जीव दयाने विषे महान प्रयत्न करो आ हरिबळनु वधारे विस्तारवाळु चरित्र श्री प्रतिक्रमण सूत्रनी बृहद्वृत्तिथी जाणी लेवु


इत्यब्ददिन परिमितोपसग्रह व्याख्यायां मुपदेशप्रासाद प्रथस्य वृत्तौ हिंसात्यागविषये पचपष्टितम प्रबध ६५ ॥

व्याख्यान ६८ मुं.

हवे जे प्राणी निरंतर छकायनी हिंसा करवामां तत्पर रहे छे तेनुं फळ बतावे छे.

निरपराध जंतूनां कुर्वंति वधमन्वहं ।
असंयता गतघृणा भ्रमंति भवकंदरे ॥

व्याख्या.

" जे प्राणी हमेशा निर्दयपणे अने अविरतपणे निरपराधी प्राणीओनी हिंसा करे छे ते आ ससारने विषे परिभ्रमण करे छे " श्री पुष्पमालानी टीकामा कह्युं छे के, " जे जीव प्राणीने वध बंधन करवामा तेमज मारवामा निरतर तत्पर होय छे अने जीवोने अति दु.ख आपनार होय छे ते **मृगावतीना पुत्रनी** जेम सघळा दुःखना स्थानरुप थाय छे " आ ठेकाणे वध शब्दे प्राणीने ताडनादि करवावडे पीडा उपजाववानुं समजवुं बंध शब्दे दोरडा विगेरे सख्त बधन करवानुं समजवु अने मारण शब्दवडे प्राणथी वियोग कराववानुं समजवुं ते वध, बंध तथा मारणमा रक्त अने जुठु आळ देवा विगेरेथी प्राणीने घणु दुःख उत्पन्न करनार प्राणी मृगापुत्रनी जेम समस्त प्रकारना दुःखनु भाजन थाय छे ते मृगापुत्रनु दृष्टांत श्री विपाक सुत्रने अनुसारे अहीं लखीए छीए

श्री मृगापुत्रनी कथा.

श्री वीर प्रभु पृथ्वीने पवित्र करता करता अन्यदा **मृग** नामना गामना उद्यान समोसर्या पछी प्रथम गणधर श्री इंद्रभूति प्रभूनी आज्ञा लइने मृग गाममा गोचरीए गया त्याथी एपणीय अन्नादि लइ पाछा वळता मार्गमा एक वृद्ध अने अंध कोढीआने जोयो तेना मुख उपर माखीओ वणवणी रही हती अने ते पगले पगले स्खलित थतो हतो एवा दु.खना घररुप तेने जोइ गौतमस्वामीए प्रभुनी पासे आवीने पुछ्यु के " हे भगवन् ! आजे में एक एवो महा दुःखी पुरुषने, जोयो छे के तेना जेवो विश्वमा बीजो कोइ हशे ?

प्रभु बोल्या–" हे गौतम ! एने कांइ मोटु दु.ख नथी, पण आज गाममा विजय राजानी पत्नी मृगावति नामे राणी छे तेनो प्रथम पुत्र लोढिआना जेवी आकृतिवाळो छे, तेना दुःखनी आगळ आनुं दु ख कोण मात्र छे ए मृगापुत्र मुख, नेत्र अने नासिकादिके रहित छे, तेना देहमाथी दुर्गंधी रुधिर अने परु श्रव्या करे छे, ते जन्म थीरा पछी सदा भूमिगृहमाज रहे छे " आ प्रमाणे साभळी गौतमस्वामी आ-

थये पाम्या अने प्रभुनी आज्ञा लइ तेने जोवानी इच्छाए राजाने घेर गया राजपत्नी मृगावती गणधर महाराजने अचानक आवेला जोइ बोली- हे भगवन्, तमारुं दुर्लभ आगमन अकस्मात् केम थयु छे? गणधर भगवंत बोल्या- 'मृगावती! प्रभुना वचनथी तारा पुत्रने जोवा माटे आव्यो छु ' राणीए तरतज पोताना सुंदर आकृतिवाळा पुत्रो बताव्या, एटले गणधर बोल्या-हे राजपत्नी, आ शिवाय तारा जे पुत्रने भूमिगृहमा राख्यो छे ते बताव मृगावती बोलीके-भगवन, मुखे वस्त्र बाधी अने क्षणवार राह जुवो के जेथी हु भूमिगृह उघडावु, के तेमाथी केटलीक दुर्गंध नीकळी जाय पछी क्षणवारे मृगावती गौतमस्वामीने भूमिगृहमा लइ गइ गौतम स्वामीए नजिक जइने मृगावतीना पुत्रने जोयो ते पगना अगुठा, होठ, नासिका, नेत्र, कान अने हाथ वगरनो हतो, जन्मथी नपुसक, बधिर अने मुगो हतो, दुस्सह वेदना भोगवतो हतो, जन्मथी माडीने शरीरनी अदरनी आठ नाडीमाथी अने बहारनी आठ नाडीमाथी रुधीर तथा परु श्रव्या करतु हतुं जाणे मूर्त्तिमान् पाप होय तेवा ते लोढकाकृति पुत्रने जोइ गणधर बहार नीकळ्या अने प्रभुनी पासे आवीने पुछ्युं के, हे स्वामी! आ जीव कया कर्मथी नारकीनी जेवुं दु ख भोगवे छे? प्रभु बोल्या-

शतद्वार नामना नगरमा धनपति नामना राजाने राष्ट्रकूट नामे एक सेवक हतो ते पाचसो गामनो अधिपति हतो तेने साते व्यसन सेववामा घणी आसक्ति हती ते घणा आकरा करोथी लोकोने पीडतो हतो अने कान नेत्र विगेरेने छेदीने लोकोने हेरान करतो हतो एक समये तेना शरीरमा सोळ रोग उत्पन्न थया ते आ प्रमाणे-श्वास, खासी, ज्वर, दाह, पेटमा शूळ, भगदर, हरष, अजीर्ण, नेत्रभ्रम, मुखे सोजा, अन्न पर द्वेष, नेत्र पीडा, खुजली, कर्णव्याधि, जलोदर अने कोढ, कह्यु छे के —

दुष्टानां दुर्जनानां च, पापीनां क्रूर कर्मणां।
अनाचार प्रवृत्तानां, पाप फलति तद् भवे॥ १॥

"दुष्ट, दुर्जन, पापी, क्रूरकर्म करनार अने अनाचारमा प्रवर्त्तनारने तेज भवमा पाप फळे छे" ते राठोडे क्रोध अने लोभने वश थइ अनेक पापो कर्या तेणे पोतानो बधो काळ पाप करवामाज गुमाव्यो एवी रीते अढीशे वर्षनु आयुष्य भोगवी मरण पामीने पहेली नरके गयो त्याथी निकळीने अहि मृगावतीना पुत्रपणे उत्पन्न थयो छे तेने मुख न होवाथी तेनी माता गात्र करीने तेना शरीर उपर रेडे छे ते आहार रोगना छीद्रद्वारा अदर पेसी परु अने रुधिरपणाने पामी पाछो बाहेर नीकळे छे आवा महा दु खवडे बत्रीश वर्षनु आयुष्य पूरुं करी मरण पामीने आज भरतक्षेत्रमा वैता-

२ राठोड कहेवाय छे ते

ध्य समीपे सिंह थशे त्याथी मरण पामीने फरीवार पेहेली नरके जशे त्याथी सर-पोळीया (नोळीया) पणाने पामी बीजी नरके जशे, त्याथी पक्षी थइ त्रीजी नरके जशे एम एक एक भवने आतरे सातमी नरक सुधी जशे, पछी मच्छपणु पामशे पछी स्थलचर जीवोमा आवशे पछी खेचर–पक्षी जातिमा उपजशे, पछी चतुरिंद्रिय, ते-इंद्रिय अने बेइंद्रियमा आवशे पछी पृथिवी विगेरे पाचे थावरमा भमशे एवी रीते चोराशी लाख योनिमां वारवार भमी अकामनिर्जराए लघु कर्मी थवाथी प्रतिष्ठान पुरे एक श्रेष्ठीने घेर पुत्र पणे उपजशे त्या साधुना संगथी धर्म पामी देवता थशे त्याथी चवी अनुक्रमे सिद्धिपदने पामशे

आ प्रमाणे श्री वीर प्रभुए गौतमस्वामीने लोढकनो संबध कह्यो आ कथा सांमळी आस्तिक पुरुषोए चराचर जीवोनी हिंसा छोडी देवी अने हमेशा पोतानुं चित्त अहिंसक करवुं

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादग्रंथस्य वृत्तौ अहिंसाविषये
षट् षष्टितमः प्रबंधः ॥ ६६ ॥

व्याख्यान ६७ मुं.

जे पुरुष हिंसानो मनोरथ करे ते पोतेज दुःखी थाय छे, ते कहे छे.

यदि संकल्पतो हिंसा मन्यानुपरि चिंतयेत् ।
तत्पापेन निजात्मानं दुःखावनौ च पात्यते ॥ १ ॥

व्याख्या

" जो कोइ प्राणी संकल्पथी पण बीजानी उपर हिंसानुं चिंतवन करे, तो ते ते पापथी पोताना आत्मानेज दुःखनी भूमिमा पाडे छे " आ विषे दासीपुत्रनो प्रबंध छे ते नीचे प्रमाणे—

दासीपुत्रनी कथा.

कौशांबी नामनी नगरीमा महिपाल नामे राजा हतो ते नगरना उद्यानमा त्रण ज्ञानने धारण करनार वरदत्त नामे मुनि पधार्या तेमणे चतुर्विध संघने

आ प्रमाणे धर्मदेशना आपी– " जैनीओ अपराधी अने निरपराधी बंनेनी उपर दया करे छे जेम चंद्र, राजा अने चांडाळ बनेना घर उपर सरखी क्रांति प्रसारे छे तेम "

आ प्रमाणे धर्मदेशना देता गुरुए अकस्मात् हास्य कर्युं ते जोइ सभ्यजनो विस्मय पामीने बोल्या–भगवान्, प्रवचनमा कह्युं छे के हास्य करवाथी सात अथवा आठ प्रकारना कर्मनो बंध थाय छे, तो तमारा जेवा मोहने जितनारा पुरुषोने अवसर विना हास्य उत्पन्न केम थयुं ? मुनि बोल्या–भद्रो, साभळो, आ लींबडाना वृक्ष उपर समळी नामे पक्षिणी देखाय छे, ते पूर्व भवना वैरथी क्रोध लावी चे पगवडे मने मारी नाखवाने इच्छे छे ते साभळी सभ्यजनोए कौतुकथी तेनो पूर्व भव पुछ्यो–मुनिए ते समळीने प्रतिबोध थवा माटे कह्यु के–" आ भरत खडमा आवेला श्रीपुर नामना नगरमा **धन्य** नामे श्रेष्टी हतो तेने सुंदरी नामे स्त्री हती ते व्यभिचारिणी हती एक वखते तेना जारपुरुषे तेने कह्यु के, आजथी तारे मारी पासे आववु नहीं कारण के हु तारा स्वामीथी भय पामु छुं सुदरी बोली–प्रियतम, एवुं बोलो नहीं थोडा दिवसमा हु एवुं करीश के आपणे निर्भय थइशुं अर्थात् मारा पतिने हु मारी नाखीश एक वखते ते सुंदरीए पतिने मारी नाखवा झेर साथे दुधनो प्यालो तैयार कर्यो पछी पतिने पीरसवा माटे ते प्यालो लेइने जेवी ते घरमा गइ तेवामा तेने सर्पे डशी, एटले ते पृथ्वी पर पडीने मृत्यु पामी धन्य श्रेष्टी तेना पडवानो अवाज सांभळी सभ्रमथी भोजन करतो ऊभो थयो अने 'आने शुं थयु' ? एम बोलतो तेनी पासे गयो. तत्काळ सुदरीने मृत्यु पामेली जोइ तेपरना स्नेहथी तेना दुश्चरित्रने नहीं जाणनारो ते विलाप करवा लाग्यो सुदरी मृत्यु पामीने सिंह थइ धन्यश्रेष्टीए वैराग्य पामीने दीक्षा लीधी

अन्यदा कोइ वनमा ते धन्य मुनि कायोत्सर्गे रह्या हता त्या दैवयोगे पेली सुंन्दरीनो जीव सिंह आवी चड्यो तेणे पूर्व भवना वैरथी मुनिने मारी नाख्या धन्यमुनि मृत्यु पामीने बारमा अच्युत देवलोके देवता थया अने ते सिंह मरीने चोथी नरके गयो

धन्यमुनिनो जीव बारमा स्वर्गथी चवी चपा नगरीमा दत्त नामना श्रेष्टीने घेर **वरदत्त** नामे पुत्र थयो ते बाल्यवयथीज विवेकी, दातार अने दयालु थयो. थोडा वखतमा तेणे समकित रत्न प्राप्त कर्युं सुदरीनो जीव चोथी नरकमाथी नीकळी अनेक भवमा भमी वरदत्तने घेर **कामुका** नामे दासीनो पुत्र थयो ते लोकोमा '**दासीपुत्र**' एवा नामथी प्रख्यात थयो ए दासीपुत्र वरदत्तने शत्रुनी जेम जोवा लाग्यो, तथापि तेने प्रिति उत्पन्न करवा काइ काइ दया पाळवा लाग्यो तेने धर्मिष्ट जाणी सतुष्ट थयेला श्रेष्टीए विचार्युं के, आ मारो धर्मबधु छे ते कर्मयोगे निच

कुलमा उत्पन्न थयो छे पण जैन सिद्धांत प्रमाणे 'परमार्थथी कुलनी प्रधानता जोवाती नथी' आम विचारी तेणे लोकोनी समक्ष तेने पोताना भ्राता तरीके स्थापन कर्यो. त्यारथी लोकोमा पण ते 'श्रेष्ठी भ्राता' एवा नामथी प्रसिद्ध थयो. दासीपुत्र उपरथी कपट वृत्तिवडे भक्ति बतावतो पण अंदरथी गृहनो स्वामी थवा माटे श्रेष्ठीने मारी नाखवा सारु विविध ऊपायो योजतो

एक वखते तेणे शयन समये शेठीने विषयुक्त नागरवेलनुं पान आप्यु पण वरदत्ते ते समये चोविहारनुं पचखाण करेला होवाथी ते ओशीके मुकीने सुइ गयो प्रातःकाळे नवकारनु स्मरण करतो ते देरासरे प्रभुने नमवा गयो ए समये वरदत्तनी स्त्रीने ते तांबूलपत्र हाथ आवता दासीपुत्रने आगणामा उभेलो जोइ ते बोली के– देवर, आ तांबूल ग्रहण करो दासीपुत्र तेना रुप तथा कंकणादि अलंकारमा मन लगाडी तेनी मनोहर वाणीथी मोह पामी प्रसन्न थइ गयो हतो, तेथी ते तांबूल पत्र भक्षण करी गयो तत्काल विष प्रयोगथी भूमी उपर पडी आर्त्तध्याने मृत्यु पामी आ समळीरुपे उत्पन्न थयो छे तेनु एवु स्वरुप जोइ संसारथी वैराग्य पामी स्वद्रव्यने उत्तम क्षेत्रमा वावी वरदत्ते दीक्षा लीधी ते आ हुं छु अने आ प्रमाणे मारु पूर्व वृत्तांत छे.

ए वखते ते समळी पोतानो पूर्व भव सांभळी जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थवाथी वृक्षथी नीचे उतरी गुरुना चरणमा पडी अने तेणे पोताना अपराध खमाव्या पछी मुनिना वचनथी अनशन करी मृत्यु पामीने स्वर्गे गइ ते जोइ राजा विगेरेए अहिंसा धर्म स्वीकार्यो मुनि चारित्र पाळीने मोक्ष गया

आ प्रमाणे दासीपुत्रना प्रबंधथी हिंसानो संकल्प करवो ते पण अति दुःखदायक छे, एम जाणी राग द्वेषवडे थती हिंसाने तजी दइ ते मुनि चिद्रुपलक्ष्मी (मोक्षलक्ष्मी) ने प्राप्त थया

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहव्याख्यायामुपदेशप्रासाद
प्रथमस्य वृत्तौ अहिंसा संकल्प विषये सप्तषष्टितमः
प्रबंध ॥ ६७ ॥

व्याख्यान ६८ मुं.

कोइक अज्ञानी एम कहे छे के " जे माछी के वागुरिक जातना लोको छे तेओने बोकडा डुकर विगेरेनी हिंसा करवी ते तो कुलाचार प्रमाणे चाली आवे छे तेथी ते काइ केवळ पापनो हेतु थती नथी कारण के, तेओ कहेछे के, अमने तो इश्वरे आवोज अवतार आप्यो छे अने अमारा पूर्वजोए जे आचर्यु छे ते अमे पण आचरीए छीए तो तेमा काइ दोष नथी " आ प्रमाणे कहेनाराओ प्रत्ये जे शिक्षा छे, ते नीचे प्रमाणे छे—

कुलक्रमागतां हिंसां, परित्यजति यो बुधः ।
कुमारपाल वद् ज्ञेय, स श्रेष्टः श्रावकोत्तम ॥ १ ॥

व्याख्या.

" जे प्राज्ञ पुरुष कुलक्रमथी चाली आवती हिंसाने त्यजी दे तेने कुमारपालनी जेवो श्रेष्ठ श्रावक समजवो " आ विषे कुमारपालनो प्रबंध छे ते आ प्रमाणे—

श्री कुमारपाळ राजानी कथा.

पाटण नगरमा ज्यारे सिद्धराज जयसिंह मृत्यु पाम्यो त्यारे संवत् ११९९ना वर्षमा कुमारपाळ राजा थयो कह्यु छे के,

न श्री कुलक्रमायाति । शासने लिखिता नच ।
खडगेनाक्रम्य भूंजित । वीरभोग्या वसुधरा ॥ १ ॥

" लक्ष्मी काइ कुलक्रमथी चाली आवती नथी, अने लेखमा लखाती नथी, पण ते तो मात्र खड्गथीज मेळवीने भोगवाय छे, कारण के, पृथ्वी वीर भोग्याज छे " ते राजाए पचाश वर्ष पर्यंत देशातरमा फरवाथी मेळवेली निपुणतावडे राजनीति स्थापन करी हती तेणे दिग्विजय करीने अग्यार लाख घोडा, अग्यारसो हाथी, पचाश हजार रथ, बोंतेर सामत अने अढार लाख पेदल— एटली समृद्धि एकठी करी हती तेना दिग्विजयनु प्रमाण श्री वीर चरित्रमा आ प्रमाणे कहेल छे के—" कुमारपाळ राजा पूर्वमा गंगा सुधी, दक्षिणमा विंध्याचळ सुधी, पश्चिममा सिंधु नदी सुधी अने उत्तरमा तुरक देश सुधी पोतानी आज्ञा प्रवर्त्तावशे एक वखते राजा कुमारपाळ सभा भरीने बेठो हतो तेवामा श्री हेमचद्र सूरि तेने प्रतिबोध पमाडवा माटे त्या आव्या तेने आवता जोइ राजाए ऊभा थइ आसन आप्यु अने गुरुए पूर्वे करेला उपकारो संभारीने तेमने वंदना करी पछी राजाए पूछ्यु के— हे भगवन्, सर्व धर्ममा

कयो धर्म श्रेष्ट ? गुरु बोल्या-हे राजन्, सर्व धर्ममां अहिंसा धर्म श्रेष्ट छे अने ते सर्व शास्त्रोमा विख्यात छे. जे धर्ममा जीवदया नथी, ते धर्मने सर्व रीते छोडी देवो. वळी कृष्णे युधिष्ठिरने कह्यु छे के,–

ध्रुवं प्राणिवधो यज्ञे । नास्ति यज्ञस्त्वहिंसकः ।
सर्वसत्वेष्वहिंसैव । धर्मयज्ञो युधिष्ठिरः ॥

हे युधिष्ठिर, यज्ञमां प्राणीनो वध जरुर थाय छे कोइ यज्ञ हिंसा विना थतो नथी, तेथी सर्व प्राणी उपर जे दया तेज मोटो धर्मयज्ञ छे वळी मीमांसामा कह्युं छे के,

अंध तमसि मज्जाम । पशुभिर्ये यजामहे ।
हिंसाया न भवेद्धर्म । न भूतो न भविष्यति ॥

" जे पशुवडे यज्ञ करे छे ते अंधकारमा मग्न थाय छे. हिंसाथी कदिपण धर्म थतो नथी, थयो नथी अने थशे पण नहीं."

जैन शास्त्रमा पण कह्युं छे के, धर्म धर्म ए शब्द जगतमां घणे प्रकारे प्रवर्त्ते छे, तेथी घर्षण, ताप अने छेदवडे जेम सुवर्णनी परिक्षा करीए छीए तेम तेनी त्रण प्रकारे परीक्षा करवी. परस्पर विरोधी एवा दर्शनोना ३६३ भेद परस्पर विरोधी छे, पण तेओ अहिंसाने दूषित करता नथी तेथी ज्या विशेष प्रकारे अहिंसा वर्त्तती होय ते धर्मने ग्रहण करवो आ प्रमाणे सूरिना उपदेशथी सम्यक् प्रकारे धर्मने जाण्या छतां पण कुमारपाळराजा लोकलज्जाथी मिथ्यात्वने छोडी देवा इच्छतो नहोतो कह्यु छे के, " कामराग अने स्नेहराग ते टाळवा सुलभ छे, पण दृष्टिराग तो एवो महापापी छे, के ते सत्पुरुषोने पण दुःख आपे छे "

राजाए सूरीने कह्यु के, भगवन् ! कुल तथा देशनो धर्म तो उल्लंघन करवो नहीं नीतिमा पण ए प्रमाणे कह्युं छे, तेथी कुलाचारने त्यजवो ते योग्य जणातुं नथी सूरि बोल्या—राजन्, आ वाक्य शुभकर्म न तजवा माटे ग्रहण करवानुं छे कदि कुलक्रमथी दरिद्रता चाली आवती होय तो तेने निवारवा कोण इच्छा न करे ? कह्यु छे के, " ज्यासुधी बीजानी प्रतीतिमांज बुद्धि वर्त्तती होय त्यासुधी तेना बधा विचार दुःखदायक छे, तेथी पोताना मनने पोताना खरा स्वार्थमा योजवु, कारणके काइ आप्त वचन आकाशमाथी पडता नथी. मूढ बुद्धिवाळा पुरुषो कुलक्रमवडे धर्मनु आचरण करे छे अने विद्वानो परिक्षा करवावडे पोताना चित्तमा निश्चय करीने धर्म आचरे छे " कोइ घणा पण मूढ होय छे के जेओ लोढाना भारने वहन करनाराना जेम रुपु तथा सुवर्णादि मळ्या छता लोढुंज ग्रहणरूप पोतानो कदाग्रह कदि पण छोडता नथी. तेओ आ दुरंत संसारमां परिभ्रमण करे छे. जेथी अ

राजा, " सर्वे धर्म दया मूल छे अने ते सर्व शास्त्रोमां प्रमाण गणाय छे, तेथी भ्रांतिने छोडी दृढ दया धर्ममा स्थिर थाओ आचार्यनी आवी युक्तिथी प्रतिबोध पामीने कुमारपाळराजाए प्राणातिपातविरमण व्रत ग्रहण कर्युं अने पोताना राज्यमा सर्वत्र पट नगाडावीने जणाव्युं के, " चारे वर्णमा जे कोइ पोताने माटे के बीजाने माटे जी नशे ते राजद्रोही गणाशे " पछी पोताना राज्यमा जे पारधि, कसाइ, मार दारुना पीठवाळा हता तेमना व्यापार बध कराव्या अने तेओना पथा मात्र छोडी दीधो, तेमज तेओनो निष्पापवृत्तिए निर्वाह चाले तेवी योजना करी आपी

एक वखते कुमारपाळना शरीरमा कुळदेवीए करेला कष्टने जोइने वाग्भट नामना मत्रीए कह्यु के, स्वामी, आत्मरक्षा माटे देवीने पशु आपो ते साभळी 'अरे आ वणिक केवो नि सत्त्व छे मारी भक्तिमा घेलो थइ आवा वचन बोले छे' एवु धारी राजा बोल्यो के अरे मत्री साभळ—

भवे भवे भवे देहा, भाविना भवकारण ।
न पुन' सर्वविस्रोक्त, मुक्तिकारी कृपावृत ॥ १ ॥
श्वासश्चपलवृत्ति स्याज्जीवितं च तदात्मकं ॥
तत्कृतेह कथ मुचे, स्थिरा मोक्षकरी कृपा ॥ २ ॥

"आ भव कारणरूप देह भवे भव प्राप्त थया करे छे, पण सर्वज्ञ प्रभुए कहेलो दयाधर्म वारवार प्राप्त थतो नथी वळी श्वास चपळ छे अने जीवित तेने आधिन छे तो तेने अर्थे मोक्षने आपनारी एवी स्थिर दया हु शामाटे छोडी दउ " आवी धर्म दृढताथी तेना देहमाथी सर्व रोग नाश पामी गया

एक वखते कुमारपाळ गुरुने प्रणाम करी उभा हता ते वखते गुरु बोल्या— राजन्, आवु देहमा कष्ट छता पण तु अर्हतना शासनथी भ्रष्ट थयो नहीं, तेथी आजथी तने परमार्हत्न् बिरुद आपु छु

आ प्रमाणे राजाना मुखमा, मनमा, घरमा, देशमा अने नगरमा सर्वत्र दया व्यापवाथी हिंसाने कोइ ठेकाणे स्थान मळ्यु नहीं, तेथी ते पोताना पिता मोहनी पासे गइ मोहे चिरकाळे जोएली हिंसाने ओळखी नहीं, तेथी पुछ्यु के—हे सुदरी, तु कोण छे? ते बोली—पिताजी' हु तमारी वहाली पुत्री हिंसा छु माहे पुछ्यु के— तु केम ग्लानि पामी गइ छु? हिंसा बोली के—तात, काइ कहेवानी वात नथी राजा कुमारपाळे मने देशमाथी काढी मुकी छे ए साभळी मोह रोष पामीने बोल्यो—वत्से, कर नहीं, हु तारा वैरीओने रुदन करावीश आ प्रमाणे आश्वासन आपी

मोहे गर्वथी कह्युं, अरे पुत्री! आ त्रण भुवनमां कोइ एवो नथी के जे मारी आज्ञा लोप करे. पछी मोहराजाए पोताना सैन्यने सज्ज कर्युं तेमां ... हतो, अज्ञानराशी नामे सेनापति हतो, मिथ्यात्व, विषय अने ... हतां अने हिंसानी साथे पाणिग्रहण करावनारा यज्ञकर्ता ब्राह्मणो ... ते सर्व सैन्य चौलुक्यवंशी कुमारपाळनी साथे युद्ध करवा गयुं, पण ... पाछुं आव्युं, एटले मोह दुःखथी विलाप करवा लाग्यो ते वखते रागादि पुत्रो तेने कहेवा लाग्या–पिताजी, तमारा जेवा गरुडने टीटोडीरूप कुमारपाळनी ... आटलो बधो खेद केम थाय छे? तेओमां प्रथम पुत्र राग बोल्यो–तात, हुं ... आ त्रणभुवनने जिती शकु तेवो छु जुओ! इंद्र अहल्याने ... ब्रह्मा पोतानी पुत्रीनी पछवाडे गया अने चंद्रे गुरुनी स्त्रीने सेवी, ए प्रमाणे ... पण नथी मुकाव्यो! मारा बाणने जगतने उन्माद उत्पन्न करवानी ... छे! पछी क्रोध बोल्यो–पिता, मारु पराक्रम साभळो, हु ... करी दउ, धीर अने सचेतनने अचेतन प्राय करी दउ, मारा प्रभावथी बुद्धिमान् पण कृत्याकृत्य जोता नथी, हितनी वात साभळता नथी ... थाय छे. ए प्रमाणे लोभे अने दंभे (कपटे) पण गर्जना करी ... स्फोट करीने पोतानु पराक्रम जणाव्यु पछी पोताना ... स्वदेशमां अवकाश आपनार कुमारपाळ उपर युद्ध करवाने ... गया राजा कुमारपाळे धर्मराजाना मंत्री सदागम (सत्शास्त्र) ... प्रमाणे वर्तीने तेमने क्षणवारमां जिती लीधा

कुमारपाळनु आवु साहस अने ... ने ... समक्ष थया अने पोतानी पुत्री कृपासुंदरी (दया) तेने ... पछी श्री हेमचं सूरिरूप ब्राह्मणे (कुळगुरुए) श्री ... ध्यानना चार भेदरू चारीमां, नव तत्वरूप वेदीनी उपर, ... अने तेमां भावरू घी होमी कुमारपाळने कृपासुंदरी नाम्नी ... पाणिग्रहण कराव्युं ... फेरव्या) ते वखते चत्तारिमंगलं ... पछी धर्मराजाए जामाताने पाणिमोचन पर्वमां ... दीर्घ आयुष्य, ... सुख आप्या पछी राजा कुमार... पद आप्यु.

एक वखते राजा कुमारपाळे ... एक पाप आव्यु ते परी रीने ... राजा ... रस्या मार्गमां कोइ ... तेवामां ...

मोहोर काढतो जोवामा आव्यो राजाए विचार्यु के आ मूषक केटली मुद्रा काढे छे, ते जोइए क्षणवारमा तेणे एकवशि मुद्रा काढी पछी ते उपर नृत्य करी शयन करी एक मुद्रा लइने पाछो बिलमा पेठो ते वखते कुमारपाळे चिंतव्यु के, "अहो, आ प्राणीने काइ भोग नथी, काइ गृहकार्य करवाना नथी, काइपण राजाने आपवानु नथी, बीजाने काइ सत्कार करवानो नथी वळी तीर्थयात्रादिक सुकृत काइ करवानु नथी, तथापि ते लुब्ध बुद्धियी धन उपर केवी प्रीति राखे छे, तेथी हु मानु छु के, आ जगतमा धनना जेवु बीजु काइपण मोहक नथी" आ प्रमाणे विचारी राजाए बाकीनी वीश मुद्रा लइ लीधी अने दूर उभो रह्यो एटलामा तो उदर बिलमाथी नीकळ्यो, पण त्या एके मुद्रा न दीठी एटले तत्काळ हृदय फाटी जवाथी मृत्यु पामी गयो ते जोइ राजा घणो खेद पाम्यो सतो विचारवा लाग्यो के–

धनेहा जीवितव्येषु, स्त्रीषु चान्येषु सर्वदा ॥
अतृप्ता प्राणिनः सर्वे, याता यास्यंति याति च ॥

"अहो, प्राणीओ, धननी इच्छामा, जीवितमां, स्त्रीमा अने बीजामा, सदा अतृप्त रह्या सता चाल्या गया छे, चाल्या जाय छे अने चाल्या जशे"

आ प्रमाणे पूर्व पापने याद करीने ते पापनु प्रायश्चित करवा सारु प्रथम व्रत ग्रहण करवाने समये ते स्थळे जइ त्या एक उदरीकाविहार नामे प्रासाद कराव्यो ते अद्यापि पण त्या रहेलो छे.

एक वखते शाकंभरी नगरीनो स्वामी आनाक नामे राजा जे कुमारपाळनी बेननो स्वामी (बनेवी) थाय, ते पोतानी पत्नी साथे सोगठाबाजी रमतो हतो तेणे हास्यथी रमता रमता कह्यु के, "हेमसूरि विगेरे मुडीआने मारो," त्यारे पत्नीए कह्यु, "स्वामी ! एम बोलो नहीं, ते आचार्य तो मारा भाइना गुरु थाय छे अने हिंसाने निवारनारा छे" राणीए आ प्रमाणे कह्या छता आनाक राजा वारंवार ते प्रमाणे कहेवा लाग्यो त्यारे राणी कोप करीने बोली के–अरे जागडा ? जीभने समाळी राख हु तारी स्त्री छु एम धारी माराथी कदि भय न होय पण शु मारा भाइ कुमारपाळथी पण भय नथी ? राणीना आवा वचन साभळी आनाके रोष करी पत्नीने पाटु मार्यु, पत्नीए कह्यु, 'अरे दुष्ट, जो तारी जीभ मारा भाइ पासे अवळे मार्गे खेंची कढावु तो मने राजपुत्री मत्य जाणजे' आ प्रमाणे कहीने ते पाटण चाली गइ, अने पोतानी प्रतिज्ञा भ्राताने जणावी तत्काळ सैन्यथी विंटाएला चौलुक्ये शाकंभरी उपर चडाइ करी कुमारपाळनी मोटी सेना आवेली साभळी आनाक राजा पण त्रण लाख घोडा, ...नो हाथी अने दशलाख पायदळ लइ सामो चाल्यो बन्ने लश्कर भेळा थया

परंतु चौलुक्यराजानी मोटी सेना जोइने आनाके घणु द्रव्य आपी कुमारपाळनी मोटी सेनामा फाटफुट करी दीधी पछी ज्यारे संग्राम शरु थयो त्यारे सामंतोने युद्ध करवामा उदासवृत्तिवाळा जोइ राजा कुमारपाळे महावतने पुछ्यु के, आ सामंतो युद्ध केम करता नथी ? महावते जणाव्यु के, महाराज ! तमारा सैन्यना आगेवानोने आनाकराजाए द्रव्य आपीने खुट्व्या छे राजा बोल्यो–हे महावत, तुं केवो छु ? ते बोल्यो–हु, आ कलह पंचानन हाथी अने तमे ए त्रण जण फर्या नथी आ हकीकत साभळी राजा चिंतातुर चित्ते युद्ध करवा तैयार थयो ते वखते एक चारण बोल्यो—

कुमारपाळ मम चित कर । चिंत्यु किमपि न होय ॥
जिणे तुह रज्ज समप्पियुं । चिंता करशे सोय ॥ १ ॥
अमे थोडा रिउ घणा । इय कायर चितंत ॥
मुद्ध निहाळो गयणालों । के उज्जोय करत ॥ २ ॥

" हे राजा कुमारपाळ ! मनमा चिंता करीश नहीं चिंतवेलु कांइ थतुं नथी केमके जेणे तने राज्य आप्युं छे, तेज तारी चिंता करशे हे भोळा राजा, अमे थोडा अने शत्रु घणा छे एम चिंतववु, ते तो कायरनुं काम छे, आ आकाशमा जो, के उद्योत करनार थोडा छे के घणा " आवा तेना शब्द साभळी राजा कुमारपाळ युद्ध करवा चाल्या बंने वच्चे मोटु युद्ध थयु भाते अतुल बलवाळो कुमारपाळ विजळीनी जेम टेकीने शत्रुना हाथीना स्कंध उपर चडी बेठो, अने हाथीनी ध्वजा छेदी शत्रुने पृथ्वी उपर पाडी तेनी छाती उपर चडी बेठो पछी कह्यु के, अरे वाचाळ ! मारी बेनना वचन साभरे छे, हु तेनी प्रतिज्ञा पूरी करवा माटे आ तरवारवडे तारी जिव्हा छेदी नाखुं ? हवे पछी हिंमक वाक्य बोलीश ? आ प्रमाणे बोलवावडे यमराजनी जेवा दुर्दर्श कुमारपाळने जोइ आनाकराजा काइ पण बोली शक्यो नहीं ते वखते कुमारपाळनी पासे तेनी बेने आवी पतिरूप भिक्षा मागी एटले कुमारपाळ बोल्या के अरे जागडा, तने बेननो पति जाणी मुकतो नथी पण दयाधर्मने अधिक मानी जीवतो मुकु छु पण तारे जिह्वा खेंचवानु आ चिन्ह पोताना देशमा धारण करवु आजथी तारा देशमा वाम अने दक्षिण भागे जिह्वाना आकारे मस्तकने ढाकवानो वस्त्रनो बुरखो चिरकाल रहेशे, तारी पछवाडे पण परपराए आ जिह्वानु चिन्ह मारी आज्ञाथी राखवु, के जेथी पृथ्वीमा मारी बेननी प्रतिज्ञा पूर्ण थयेल। विख्यात थाय तेणे आ सर्व अगीकार कर्यु बळवाननी साथे कोण विरोध करे ! पछी कुमारपाळे आनाकराजाने काष्टना पांजरामा त्रण दिवस सूधी पूरी पोताना सैन्यमा

चद्रा अने सर्गनी कथा.

वर्द्धमान (वढवाण) नगरमा सधड नामे कुलपुत्र हतो तेने चंद्रा नामे स्त्री हती तेमने सर्ग नामे एक पुत्र थयो हतो आ सर्वे दु सदायक स्थितिमा हता चद्रा पारका घरनु काम करती हती, अने सर्ग वनमाथी इंधणा लावतो हतो एक वखते सर्गने माटे शीका उपर आहार मुकी चद्रा जळ भरवाने गइ सर्ग वनमाथी आव्यो त्यारे तेणे मातने जोइ नहीं अने क्षुधा तृषा लागेली तेथी क्रोधे भरायो एटलामा तेनी माता आवी तेने जोइने ते गुस्साथी बोल्यो—पापिणी, आटली वार शुं शूलीए चडी हती? ते साभळी क्रोधथी चंद्रा बोली के—आ शींकापरथी उतारीने केम खाधु नहीं? शु तारा हाथ कपाइ गया हता? आ प्रमाणे बनेए दुर्वचनवडे कर्म बाध्यु पछी आयुष्य पूर्ण थयाथी सर्गनो जीव मृत्यु पामी केटलाक भव भमीने ताम्रलिप्ती नगरीमा अरुणदेव नामे एक श्रेष्टीनो पुत्र थयो, अने चद्रानो जीव परिभ्रमण करीने पाटलीपुरमा जसादित्यने घेर देवणी नामे पुत्री थयो तेना पिताए देवणीने अरुणदेवने आपी तेमनो विवाह थया पछी अरुणदेव बीजा मित्रोनी साथे वेपार करवा माटे वाहाणे चड्यो दूर जता प्रतिकूल वायुवडे वाहाण भाग्यु पुण्ययोगे पाटीयु मेळवी एक मित्रनी साथे कांठे आव्यो अनुक्रमे फरतो फरतो पाटलीपुरमा पहोंच्यो त्या मित्रे अरुणदेवने कह्यु, मित्र, अहीं तारा सासरानु घर छे, तेथी चाल, त्यां जइए. अरुणदेव बोल्यो के, आवी स्थितिमा आपणे त्या जवु युक्त नथी मित्रे कह्यु के, त्यारे तुं अहीं रहे, हु नगरमा जइ भोजन लइ आवु पछी अरुणदेव कोइ देवालयमा रह्यो थोडीवारमा थाक थयेला अरुणदेवने निद्रा आवी गइ

आ समये ते नगरमा तेनी स्त्री देवणी क्रीडा करवा आवेली तेना बने हाथ छेदीने कोइ चोर कंकण लइ नाशी गयो तेणीनो पोकार साभळी राजाना सेवको तत्काळ त्या दोडी आव्या अने चोरनी पाछळ दोड्या पेलो चोर ज्या अरुणदेव सुतो हतो ते देवालयना आवी भय पामवाथी कंकण अने खड्ग अरुणदेवनी पासे मुकीने नाशी गयो तेना गया पछी ज्यारे अरुणदेव जाग्यो त्यारे ते कंकण अने खड्ग जोइ 'आ कंकण देवीए आप्या' एवु जाणी हर्षथी लइ लीधा तेवामा चोर पाछळ दोडता राजाना सेवकोए त्या आवीने कह्यु के—अरे, हवे क्या जइश ? एम कही अरुणदेवने मारवा माड्यो एटले तेना वस्त्रमाथी बे कंकण नीचे पडी गया तत्काळ तेने बाधीने राजा पासे लइ गया अने राजानी आज्ञाथी तत्काळ तेने शूलीए चडावी दीधो.

ए समये पेलो भोजन लेवा गयेल मित्र त्या आव्यो. ते अरुणदेवनी आ दशा जोइ, अरे सुखदु खमा वत्सल एवा मित्र, तु क्या चाल्यो? एम बोलतो

ऊंचे स्वरे रुदन करवा लाग्यो मेवक पुरुषोए तेने पुच्छु के, आ कया श्रेष्टीनो पुत्र छे ? ते बोल्यो, हवे शु कहेवु, तेनी कथा तो पूर्ण थइ रही पछी तेणे सर्व वृत्तात जणाव्यु अने शिलावडे आत्महत्या करवा तैयार थयो लोकोए एकठा मळी तेने निवार्यो जशादित्य पोतानी पुत्री अने जामातानो सर्व वृत्तात साभळीने तथा ते अवस्थामा बनेने जोइने घणो खेद पाम्यो पछी जामाता अरुणदेवने शूळी उपरथी नीचे उतरावी तेणे राजसेवकोने उपालभ आप्यो राजा बोल्यो के, हे श्रेष्टी, आ काममा सहसा काम करनार एवा मारोज अपराध छे

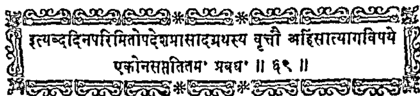
ए समये चतुर्ज्ञानी अमरेश्वर नामे मुनि महाराज त्या पधार्या तेमणे देशना आपी के, "हे भव्यो ! मोहनिद्रान छोडी दो, अने त्रीविधे त्रीविधे हिंसा त्यजी दो वचन अने कायावडे करेली हिंसा तो दु खदायक छेज, पण मनमा पण चिंतवेली हिंसा पण प्राणीने नरकमा पाडे छे, ते विषे एक दृष्टात साभळो–

वैभारगिरि उपर आवेला एक उद्यानमा अन्यदा केटलाक लोको उजाणी करवा एकठा थया हता तेमने जोइ कोइ राक भीख मागवा आव्यो पण तेना दुष्कर्मोदयथी तेने कोइ ठेकाणेथी पण भिक्षा मळी नहीं एटले तेणे विचार्यु के, 'अहा, आटलु बधु भोजन छता पण कोइ मने आपतु नथी' तेथी आ सर्वने मारी नाखु' आवु विचारी कोप करीने ते गिरि उपर चड्यो अने एक मोटी शिला तेमनी उपर देडवी देता दैवयोगे शिला साथे पोते पण पडी गयो सर्व लोको दूर खसी गया अने ते भीखारी शिला नीचे चूर्ण थइ मृत्यु पामीने नरके गयो आ प्रमाणे मनमा चिंतवेली हिंसानु पण तेने माठु फळ प्राप्त थयु

वळी श्री आऊरपचखाण नामना पयन्नामा कह्यु छे के, "आहारनी अभिलाषाए मत्स्य सातमी नरके जाय छे, तेथी साधुए मनवडे पण सचित्त आहारनी इच्छा न करवी" अहिं मत्स्य एटले तंदुल मत्स्य विगेरे लेवा, ते पण गर्भज जाणवा कारण के समूर्छिम तो असज्ञीपणाने लीधे पहेली रत्नप्रभा नरकसुधीज जाय छे ते तदुल मत्स्य मोटा मत्स्यना मुखनी पासे आखनी पापणमा उत्पन्न थाय छे तेनु प्रमाण तदुल जेटलु होय छे, ते वज्रऋषभनाराचसघयणी होय छे अने दुष्ट मननो व्यापार करवाथी सातमी नरके जाय छे आ प्रमाणे वृद्धो कहे छे वळी जघन्ये अगुळना असख्यातमा भागप्रमाण देहवाळा मत्स्य पण सातमी नरके जाय छे, एम श्री भगवती सूत्रमा कह्यु छे तेथी मन वचन अने काया, ए त्रिविधे थती हिंसा अनेक भवने आपनारी छे आ प्रमाणे साभळी राजा विगेरेए ते समये मात्र थयेलु ते स्त्री पुरुषना दु खनु कारण पुच्छ्यु ज्ञानी मुनिए तेनो पूर्व भव कहेवा-

वडे ते सर्व कही बताव्युं ते सांभळी देवणी अने अरुणदेवने जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयुं, तेथी तेमणे तत्काळ अनशन अंगिकार कर्युं ते जोई सर्व पर्षदाए संवेग पामी दयाधर्मने स्वीकार्यो, अने ते देवणी अने अरुणदेव मरण पामीने देवलोके गया.

हे भव्यो! उपर प्रमाणे चद्रा माता अने सर्ग पुत्रनुं वृत्तांत सांभळीने हास्य, मोह के दुष्ट बुद्धिवडे कदि पण हिंसा वचन बोलवुं नहीं, अने हमेशा मनने दयाळु करवुं



इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादग्रंथस्य वृत्तौ अहिंसात्यागविषये एकोनसप्ततितमः प्रबंधः ॥ ६९ ॥

व्याख्यान ७० मुं.

केटलाएक कहे छे के, आ जीवात्मा अभेद्य, नित्य अने सनातन छे, तो देह पिंडनो नाश थवाथी जीवनो नाश शी रीते थाय? पृथ्वीथी उत्पन्न थयेलो घडो नाश पामवाथी शुं आकाश नाश पामे छे? कदि कहेशो के, घटाकाशतो नाश पामे छे, तो ते पण कल्पित छे वळी गीतामां कह्युं छे के, युद्ध के यज्ञादिकमां जीववध करवानो बाध नथी, पण ते वाक्य अयुक्त छे कारण के, निश्चयनयनी अपेक्षाए जीव नित्य अने गति आगतिथी रहित छे, पण व्यवहारनी अपेक्षाए ते नानाप्रकारना देह पिंडात्मक थई गायपणुं हाथीपणुं, पुरुषपणुं, स्त्रीपणुं धारण करे छे, तेथी माकड की डि विगेरेमां पण उत्पन्न थयेलो प्रत्यक्ष जणाय छे ते पक्षे दीपकनो नाश थये तेनी प्रभाना नाशनी जेम देहरूप पिंडनो विनाश थतां जीवनो पण विनाश थाय छे ए थीज 'तुं मरीजा' एवुं कहेवाथी प्राणीने दुःख थाय छे अने मारी नाखवाथी तेनुं फळ नरकनी वेदनारूप प्राप्त थाय छे, माटे सर्व धर्ममां दयाधर्मज श्रेष्ठ छे तेनी स्तुति अमे पण करीए छीए तेवी जीवदयामां जेमना हृदय तत्पर छे एवा श्री शांतिनाथ अने मुनिसुव्रतप्रभु पूर्वे थया छे, तेमनी कीर्ति अद्यापि पृथ्वीपर प्रवर्ते छे आ विषे अचिरा माताना पुत्र श्री शांतिनाथप्रभुनो संबंध आ प्रमाणे—

श्री शांतिनाथजीनी कथा

जंबुद्वीपना पूर्व महाविदेह क्षेत्रनी मंगलावती विजयमां रत्नसंचय नामना नगरने विषे श्री शांतिनाथप्रभुजीनो जीव पूर्वे वज्रायुध नामे राजा हतो एक वखते एक

पारेवुं भय पामी राजा वज्रायुधनी शरणे आव्युं राजाए कह्युं के, भय पामीश नही. तेनी पछवाडे तरतज एक सींचाणो पक्षी आव्यो, तेणे कह्यु के हे राजन्, मने घणी क्षुधा लागी छे तेथी आ पक्षी मने आपो राजाए कह्यु, तेने बदले तुं उत्तम अन्न ले. सींचाणे कह्युं के, मने तो मास उपरज रुची छे राजा बोल्यो त्यारे हु मारा देहनुं मास आपुं सींचाणो बोल्यो के– तो आ पारेवा जेटलुं आपो पछी राजाए ताजवुं मगावी एक तरफ पोतानी जघामाथी छेदीने मासनो पिंड मुक्यो अने बीजी तरफ रेवाने राख्युं पारेवामा एटलो भार थयो के छेवटे राजा पोते तुलापर चढी बेठो आवी वज्रायुध राजानी दया तरफ हिंमत जोई, बे देव प्रत्यक्ष थइ बोल्या, हे महानुभाव! इद्रे सभामा तमारी प्रशंसा करी, ते नही मानीने अमे बने तमारी परीक्षा करवा आवा रुप करी अहीं आव्या हता पछी तेओ राजा उपर पुष्पवृष्टी करी स्वर्गे चाल्या गया राजा वज्रायुध चारित्र लई नवमा ग्रैवेयकमा एकत्रिंश सागरोपम आयुष्यवाळा देवता थया

मुनिसुव्रतप्रभुनी कथा

भृगुकच्छ (भरुच) नगरमा **जितशत्रु** नामे राजा हतो तेणे एक वखते अश्वमेध यज्ञ करवा माटे अग्निमा होमवा एक अश्व तैयार कर्यो आ खबर ज्ञानवडे मुनिसुव्रत स्वामीए जाण्या, एटले तत्काळ ते अश्वने बचाववा माटे प्रतिष्ठानपुरथी भरुच एक रात्रिमा साठ योजन आवी पहोच्या त्या एकठा थयेला जनसमूहमा प्रभुए धर्मदेशना आपवा माडी ते अश्वे प्रभुने जोई उचा कान कर्या अने वारवार प्रभु सामुं जोवाथी तेने जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयु तेथी तत्काळ प्रभु पासे आवी पृथ्वीपर मस्तक मुकीने पोतानी वाचामा बोल्यो के, हे विश्वरक्षक, दुःखार्त एवा मारी रक्षा करो ते जोई राजाए प्रभुने पुछ्यु के, आ अश्व शुं कहे छे? प्रभु बोल्या–राजन्, तेनो पूर्वभव साभळो

पद्मिनीपुर नामना नगरमा **जिनधर्म** नामे एक जैनधर्मी श्रेष्ठी हतो, तेने **सागरदत्त** नामे एक शैवधर्मी मित्र हतो ते सागरदत्ते पूर्वे एक शिवालय कराव्युं हतु एक वखते ते मित्रनी साथे साधुनी पासे गयो त्या जिन मंदिर कराववानु महत् फळ साभळ्यु, तेथी तेणे एक जिनबिंब प्रासाद कराव्यो ते कार्यथी तेने समकित दर्शन प्राप्त थयु एक वखते शैव लोकोए घीवडे शिवलिंग पूर्युं, ते जोवा सागरदत्तने बोलाव्यो त्या घीना गधथी घणी घीमेलो तथा कीडिओ एकठी थई हती ते निर्दय शैव लोकोना चरणन्यासथी कचराइने मरी जती हती ते जोइने सागरदत्त बोल्यो के, तमारा पगवडे हजारो कीडिओ मरी जाय छे, ते तमने घटतुं नथी त्यारे तेओ क्रोध

करीने बोल्या के, अरे मुर्ख! कुलक्रमथी चाल्या आवेला धर्मने छोडी दइ नवो धर्म अंगीकार करता तु केम शरमातो नथी? माटे उठ, तारे घेर चाल्यो जा ते साभळी लज्जाथी ग्लान मुख थयो सतो पोताने घेर आवीने ते विचारवा लाग्यो के, अरे, मे कुलधर्मनो त्याग करी केवु काम कर्यु ? आ प्रमाणेना आतर्ध्यानथी मृत्यु पामी घणा भव भमीने हे राजा, ते सागरदत्तनो जीव आ अश्व थयो छे ते मारो पूर्वभवनो मित्र होवाथी मने जोइने कहे छे के, आ राजा मने आजे यज्ञमा होमी देशे, तेथी मारी रक्षा करो, रक्षा करो हे राजन्, यज्ञनु फळ नरकज छे. तथी ते करवा योग्य नथी आ प्रमाणे प्रभुना वचनथी जीतशत्रु राजा प्रतिबोध पाम्यो तेथी अश्वने निर्भय करी पोताना नगरमा यज्ञो करवानोज अटकाव कर्यो ते अश्व प्रभु पासे अनशन अंगीकार करी सहस्रार देवलोकमा देवता थयो त्याथी तत्काळ त्या आवीने ते देवे प्रभुना समोसरणने स्थाने एक जिनप्रासाद रचावी तेमा मुनिसुव्रत स्वामीनी प्रतिमा अने तेनी आगळ अश्वनी मूर्ति स्थापन करी, त्यारथी त्या अश्वावबोध नामे तीर्थ थयु

केटलेक काळे तेज वनमा एक वडना वृक्ष उपर समळी रहेती हती ते कोइ म्लेच्छे बाण मारी वींधी नाखी ते प्रभुना प्रासाद पासे पडी अत समये कोइ मुनिए तेने नवकार मन सभळाववाथी ते सिंहलराजानी पुत्री थइ अन्यदा भृगुपुरथी कोइ श्रेष्ठी त्या आव्यो, ते छींक आवता नवकारमत्रनु पहेलु पद बोल्यो ते साभळी राजपुत्रीने जातिस्मरण थयु पछी मातापिताने पुछी भृगुपुरे आवी तेणे ते चैत्यनो उद्धार कर्यो त्यारथी ए तीर्थ " शकुनिकाविहार " ए नामथी विख्यात थयु

त्यारपछी अनुक्रमे परमार्हत श्रीकुमारपाळराजाना मत्री उदयनना पुत्र, शत्रुजय तीर्थनो उद्धार करनार, गिरनार पर्वत उपर सुगम पाज बाधनार अने बीजा पण अनेक पुण्य कार्य करनार श्रीवाग्भट कविना अनुज बाधव अबड प्रधाने पिताना पुण्यने अर्थे ते तीर्थ उद्धार कराव्यो ते समळीकाविहार तीर्थमा तेणे मगलदीपकना लुछणा वखते याचकोने बत्रीश लाख सोनैया आप्या हता, एम वृद्ध पुरुषो कहे छ उपर प्रमाणे श्रीशातिनाथ अने श्रीमुनिसुव्रत स्वामी अश्व अने पारेवानु रक्षण करवाथी पृथ्वीपर महान कीर्तिना भाजन थया छे ते बन्ने प्रभु मने पण शीघ्र सुखना आपनारा थाओ

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशप्रासादग्रथस्य वृत्तौ जीवरक्षा
विषये सप्ततितम प्रबध ॥ ७० ॥

व्याख्यान ७१ मुं.

हवे हिंसानुं कारण प्रमाद छे ते कहे छे.

शरीरी म्रियतां मा वा ध्रुवं हिंसा प्रमादिनः ।
सा प्राणव्यपरोपेऽपि प्रमादरहितस्य न ॥ १ ॥

व्याख्या.

" प्राणी मरण पामे अथवा न पामे पण निश्चये प्रमादीने हिंसा लागे छे अने प्राणनो कदि नाश थाय तोपण प्रमाद रहित एवा पुरुषने हिंसा लागती नथी " जो कोइ साधु प्रमादथी एटले उपयोग वगर चाले तो तेने जीवनो वध न थाय ते छता पण हिंसा लागे छे, अने जे साधु अप्रमादथी एटले उपयोगथी चाले तो तेनाथी कदी जीव वध थइ जाय तोपण तेने भावथी हिंसा लागती नथी. जेम नदी विगेरे उतरता उपयोगथी चालता साधुने अप्काय जीवनी विराधना तीमवध आपनारी थती नथी, तेम जेम कोइ याचीनो जीव कोटी पूर्वना आयुष्यवाळो होय ते प्रतिदिन विश घाणीओवडे तिल पीळे छे ते आखा जीवितवडे पण तेटला तिल पीलवा समर्थ न थाय के जेटला जीव साधु नदी उतरता जळना एक बींदुमा हणे छे जो ते जळ सेवाळवाळु होय तो तेमा अनत जीवनो पण घात थाय छे पण जो ते मुनि प्रमादी होय तो तेनी हिंसा लागे छे अन्यथा लागती नथी

श्रीभगवती सूत्रमा कह्यु छे के, केवलज्ञानी पण गमनागमनथी अने नेत्रना लालन विगेरेथी घणा जीवनो घात करे छे परंतु मात्र योगवडेज वध होवाथी ने प्रथम समये बाधे छे, बीजे समये अनुभवे छे (वेदे छे) अने त्रीजे समये निर्जरे छे. कारण के ते अप्रमादी होवाथी तेमने कर्मनो बध बहु काळनी स्थितिवाळो थतो नथी.

वळी प्रथमागमा कह्यु छे के, कोइ मुनिए अकस्मात् कांइ [illegible] होय, ते जो लुण वहोरावनार ग्रहस्थ पाछु न ले तो मुनिए तेने [illegible] करवाथी तेणे श्रीजिनेश्वरनी आज्ञा पाळी माटे ते मने [illegible] तेनी हिंसा न लागे तेज प्रमाणे ग्रहस्थने पण जिन पूजा विगेरेमा [illegible] होवाथी हिंसा लागती नथी

प्राचीन पूज्य पुरुषोए हिंसाना त्रण प्रकार [illegible] स्वरूपहिंसा, [illegible] अने अनुबधहिंसा अंत.करणमा दयाना परिणाम [illegible] थाय ते स्वरुपहिंसा केहेवाय छे [illegible]

छे ते हेतुहिंसा कहेवाय छे अने अंत करणमा कलुषित परिणाम वर्तता निर्दयपणे जे हिंसा कराय छे ते अनुबंधहिंसा कहेवाय छे राजा यशोधरे माताना वचनथी पिष्टमय कुकडानी पण हिंसा करी तो तेथी ते दुरंत दु ख परंपराने पाम्यो हतो अने ब्रह्मदत्त चक्री विगेरेने बाह्यपणे स्वरुपहिंसानो अभाव छता पण अनुबंध हिंसाना ध्यानथी नरकनी प्राप्ति थइ हती तेनो संबंध नीचे प्रमाणे छे

श्रीब्रह्मदत्त चक्रीनी कथा

कांपिल्यपुर नगरमा ब्रह्म नामना राजाने चार मित्रो हता काशी देशनो राजा कटक, हस्तिनापुरनो अधिपति करेणु, कोशल देशनो स्वामी दीर्घ अने चपा नगरीनो नृपति पुष्पचूल, आ चारे राजाओ परस्पर स्नेहथी एक बीजाना राज्यमा एकेक वर्ष आवीने रहेता हता एक वखते बीजा त्रणे ब्रह्म राजाने त्यां आवेला हता, तेवामां अकस्मात् ब्रह्म राजाने मस्तकनी वेदना उत्पन्न थइ एटले ब्रह्म राजाए तेओना उत्संगमा ब्रह्मदत्त नामना पोताना बाळ वयना पुत्रने मूकीने 'तमारे आ राज्यनी व्यवस्था करवी' एम कही ते मृत्यु पाम्यो पछी तेओ पोतामाथी दीर्घ राजाने त्या मूकी पोतपोताना राज्यमा चाल्या.

दीर्घ राजा त्या रह्यो सतो ब्रह्म राजानी स्त्री चूलणीनी साथे आसक्त थयो ते खबर जाणी धनु नामना मंत्रीए पोताना पुत्र वरधनुने जणाव्यु के, आ वृत्तात तु एकातमा जइने चूलणीना पुत्र ब्रह्मदत्तने जणावजे तेणे ब्रह्मदत्तने जणाव्युं एटले ते चतुर कुमार कोकिला अने कागडाने लइने अत पुरमा गयो त्या ते बन्नेनो सबध करावी कागडाने मारी नाखीने ते बोल्यो के, बीजो पण जे कोइ आवु करशे तेने हु आवी रीते मारी नाखीश आ हकीकतनो सार समजीने दीर्घे चूलणीने कह्यु के, हु काग अने तु कोकिला छु राणी बोली के–एवी शका करो नहीं आ बालक ते आपणो सबध शुं जाणे ! फरी वळी एकवार ब्रह्मदत्ते पाडानो अने हाथिणीनो सबध करावी पूर्वोक्त वाक्य कहीने पाडाने मारी नाख्यो तेथी दीर्घ राजाए 'आ मारुं जाणे छे अने अन्योक्तिवडे मने शिक्षा आपे छे' एवु समजी राणीने ते वात जणावी एटले राणी बोली के–त्यारे आपणे पुत्रने मारी नाखीए जो आपणे कुशल इच्छु तो घणा पुत्रो थशे दीर्घराजाए ते स्वीकार्युं पछी दीर्घराजाए ब्रह्मदत्तने कोइ-एक सामतनी पुत्री परणावी, अने तेमने सुवाने माटे एक लाखनु गृह कराव्युं आ खबर जाणीने वरधनु मत्रीए गुप्त रीते ते घरनी नीचेथी नगर बहार उद्यान सुधी एक

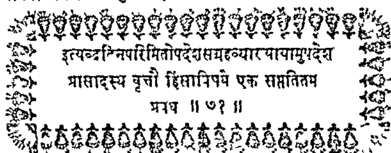
 सुरंग करावी शुभ दिवसे वर वधू अने धनु कुमारे ते घरमा प्रवेश कर्यो एटले रा-

त्रिना बे पोहोर जता तें गृहने चूलणीए अग्नि लगाड्यो मन्त्रीपुत्र वरधनु थमथीज जाणतो हतो तेथी सुरगा मार्गे ब्रह्मदत्तने उद्यानमा लइ गयो, अने त्या सुरगाना द्वार उपर बे अश्व तैयार राखेला हता ते उपर बेसी बन्ने मित्र देशाटन करवा नीकळी पड्या

भाग्यवान् ब्रह्मदत्ते पृथ्वीपर भमतां सार्वभौमपदनी संपत्ति प्राप्त करी, अने वरधनुने सेनापतिनी पदवी आपीने दीर्घराजानी उपर मोकल्यो तेनी पछवाडे पोते आवीने चक्रवडे दीर्घराजानुं मस्तक छेदी नाख्यु पछी तेणे पोताना नगरमा प्रवेश कर्यो अनुक्रमे ब्रह्मदत्त चक्रीए पट्खड भरतने साध्य कर्यो

पूर्वे ज्यारे ब्रह्मदत्त एकाकीपणे भमतो हतो त्यारे एक ब्राह्मणे तेने जळ पायुं हतुं ते ब्राह्मण ब्रह्मदत्तने चक्रवर्त्तीपद प्राप्त थयेलुं साभळी त्या आव्यो तेणे विचार्यु के, आटला बधा सैन्य बच्चे ते मने केम ओळखशे, तेथी तेणे एक जीर्ण वस्त्रनो ध्वज करी जीर्ण सुपडु विगेरे लटकावी जुदुज रूप बताव्यु तेनी विलक्षणता जोइ राजाए सेवक मोकलीने तेने बोलाव्यो पछी तेने ओळखी तेनापर सतुष्ट थइने वरदान मागवा कह्यु, एटले अल्प बुद्धिवाळा ब्राह्मणे स्त्रीना वचनथी दररोज अनुक्रमे एकेक गृहे भोजन अने बेसोना मोहोरनी दक्षिणा तेने मळे एवी मागणी करी राजाए तरतज तेवी गोटवण करावी आपी एक वखते ते लुब्ध ब्राह्मणे चक्रीने कह्युं के, हे राजन्! एकवार तमारा घरनु भोजन मने करावो चक्रीए कह्यु के, मारु भोजन तो मनेज जरे तेवु होय छे ब्राह्मणे गुस्साथी कह्युं के, अरे राजा! शु तु कृपण छे के जेथी मने भोजन तारुं पण आपी शकतो नथी पछी चक्रीए ते ब्राह्मणने कुटुब सहित पोताने घेर जमाड्यो, जेथी ते अति कामातुर थइ गयो पछी तेणे रात्रे पोतानी माता बहेन विगेरेनी साथे पशुवत् आचरण कर्युं ज्यारे चक्रीना अन्ननो मद उतरी गयो त्यारे ते लज्जा पामी गयो पछी तेणे विचार्यु के आवु अपकृत्य चक्रीएज जाणी बुजीने कर्युं छे, माटे तेने शिक्षा करवी आवा क्रोधथी ते एक वखते ते वनमा फरतो हतो तेवामा कोइ गोवाळ गलोलना प्रयोगथी पिपळाना पानने काणा करतो तेना जोवामा आव्यो एटले तेने मळी काइ द्रव्य आपी तेनी पासे चक्रवर्त्तीना बन्ने नेत्र फोडी नंखाव्या राजसेवकोए ते गोवाळने पकड्यो अने कह्यु के, अरे दुष्ट, आ तें शु कर्युं? एटले तेणे पेला ब्राह्मणने बताव्यो, तेथी ते ब्राह्मणने कुटुब सहित मारी नाख्यो त्यारथी चक्रीने ब्राह्मण जाति उपर रोष चढ्यो तेथी तेणे मन्त्रीने आज्ञा करी के, प्रतिदिन अनेक ब्राह्मणोना नेत्रो काढी मारी पासे लाववा एटले मन्त्री तेम करवा लाग्यो चक्री ते नेत्रोने मर्दन करी खुशी थवा लाग्यो आ प्रमाणे हमेशा करता घणा जीवनो वध थतो जोइ मन्त्री बीज वगरना वडगुंदानो थाळ भरीने राजा पासे मुकवा लाग्यो अथ चक्री तेने पोताना शत्रुओना नेत्र जाणी क्रोध बुद्धिथी चोळी

नाखवा लाग्यो आ प्रमाणे सोळ वर्ष सुधी करी रौद्र ध्यानवडे मृत्यु पामीने सातमी नर्के गयो, कह्यु छे के–"वडगुदाने ब्राह्मणना नेत्रनी बुद्धिए चोळतो छेद्र ब्रह्मदत्त नामनो चक्रवर्ती अनुबंध हिंसाना योगथी सातमी नरके गयो छे"



इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायां उपदेश
प्रासादस्य वृत्तौ हिंसाविषयें एक सप्ततितम
प्रबंध ॥ ७१ ॥

व्याख्यान ७२ मुं

हवे केटलाएक माणसो बीजा जीवोनी हिंसा करनारा हिंसक जीवोने मारी नाखवामा धर्म माने छे, तेओने माटे शिक्षा कहे छे—



केचिद्वदति हतव्या प्राणिन' प्राणिघातिन ।
हिंस्रस्यैकस्य घाते स्याद्रक्षण भूयसा किल ॥ १ ॥

व्याख्या

केटलाएक कहे छे के, जे बीजा प्राणीओनी हिंसा करनारा प्राणीओ छे, तेमने मारी नाखवा कारण के तेवा एक हिंसक प्राणीना घातथी बीजा जीवोनु रक्षण थाय छे अर्थात् जे सर्प मार्जार विगेरे हिंसक प्राणीओ छे तेमने मारवामा दोष नथी पण आ तेमनो विचार अयुक्त छे कारणके तेवो विचार करीशु तो आ आर्यक्षेत्रमा पण अहिंसक प्राणीओ घणा थोडा मळी शकशे, तेथी तेवा निर्ध्वस परिणामनो त्याग करवो

वळी कोइ कहे छे के, "निर्वाहने माटे मत्स्य तथा धान्य विगेरेना घणा जीवोने शा माटे हणवा, पण एक मोटा हाथीने मारवो के जेथी घणा काळ सुधी निर्वाह चाले" आ प्रमाणे माननाराने आर्द्रकुमारना प्रबंधद्वारा शिखामण दे छे.

आर्द्रकुमारनो कथा

मगधदेशमा श्रेणिक नामे राजा हतो तमणे एक वखते पूर्वजनी प्रीति वधारवा पोताना मंत्रीनी साथे आर्द्रकराजाने केटलीक भेट मोकली मंत्रीए आर्द्रदेशमा

जइ त्यांना राजानी आगळ भेट मुकी पछी परस्पर कुशल वार्त्ता पुछी ते वखते आर्द्रकराजाना पुत्र आर्द्रकुमारे श्रेणिक राजाना मत्रीने पुछयुं के, तमारा राजाना कुमारनु नाम शु छे? मत्रीए कह्युं के, तेमनु नाम **अभयकुमार** छे ते महा धर्मज्ञ छे, अने पाचसो मत्रीओनो अधिपति छे, शुं तेमनु नाम तमारा साभळवामा पण नथी आव्यु? मंत्रीना आ प्रमाणेना वचनो साभळी आर्द्रकुमारे अभयकुमारने माटे मोती विगेरे मोकलाव्या अनुक्रमे मत्री राजगृह नगरमा आव्यो, अने त्याथी आपेली भेट श्रेणिक राजाने अने अभयकुमारने आपी पछी अभयकुमारने कह्य के, आर्द्रकुमार तमारी साथे मैत्री करवा इच्छे छे ते साभळी अभयकुमारे विचार्यु के, ए कोइ भव्य जीव व्रतनी विराधना करवाथी अनार्य देशमा जन्मेलो लागे छे, कारण के अभव्य के दूरभव्य तो मारी साथे मैत्री करवाने इच्छताज नथी "प्राय. समान धर्मीओनेज परस्पर प्रीति थाय छे" हवे हुं तेनी उपर एक आर्हत् चित्र मोकलावु के जेने जोइ ते जरूर प्रतिबोध पामशे आवुं विचारी अभयकुमारे एक पेटीमा रत्नमय आर्हत् प्रतिमा मूकीने ते भेट तरीके मोकलावी मत्रीए ते पेटी लइ जइ आर्द्रकुमारने एकाते आपी अने प्रणाम करीने स्वस्थाने गयो आर्द्रकुमार पेटी उघाडी एटले तेनी अंदर प्रतिमा जोइ विचारमा पड्यो के, आ ते केवु आभूषण हशे? आ आभूषण कंठे, मस्तके के हृदयमा क्या पेहेरातु हशे? अथवा में पूर्वे आवु काइक जोएलु छे एवो विचार करता तेने जातिस्मरण ज्ञान थयु तेथी तेणे जाण्यु के अहो, आ भवथी त्रीजे भवे हु **सामायिक** नामे कौटंबीक हतो मारे **बधुमति** नामे स्त्री हती मे वैराग्य पामी प्रिया सहित दीक्षा लीधी हती एक वखते मा ध्वीओना समूहमा मारी स्वरुपवती स्त्रीने जोइने पूर्वना अनुरागथी हु तेनो अभिलाषी थयो में तेनी आगळ मारो अभिप्राय जणाव्यो ते साध्वीए जाण्यु के, आ साधु जरूर तेना तथा मारा व्रतनो भग करशे, तेथी ते अनशन लइ मृत्यु पामीने स्वर्गे गइ पछवाडे हु पण तेना दु खथी अनशन करी मृत्यु पामी देवता थयो देवलोकनु सुख भोगवी त्याथी चवीने अहिं उत्पन्न थयो छुं मारो धर्मगुरु अभयकुमारने धन्य छे, के जेणे दुर रहीने पण मने प्रतिबोध कर्यो

पछी आर्द्रकुमारे अभयकुमारना दर्शन करवाने उत्सुक थइ पोताना पिताने कह्य के, पिताजी, राजगृहनगर जोवानी मारी इच्छा छे ते साभळी आर्द्रकराजाए तेने ना पाडीने अटकाव्यो अने ते नाशी न जाय ते माटे तेनी सभाळ राखवा पाचसो सुभटोने तेनी पासे राख्या तथापि छेवटे आर्द्रकुमार सर्व सुभटोने छेतरी वाहाणमा बेसी आर्यदेशमा आवतो रह्यो. अने ते प्रतीकार आर्द्रकुमारे आगम आर्द्रकुमार

अभयकुमार उपर मोकली आप्यु पछी हजु तारे भोग्यकर्म बाकी छे एम कहीने देवताए तेने अटकाव्यो तथापि तेणे साहसथी व्रत ग्रहण कर्यु

अन्यदा विहार करता करता आर्द्रमुनि वसंतपुर नगरना उद्यानमा आवेला कोइ देवालयमा कायोत्सर्ग करीने रह्या ए अरसामा बंधुमतीनो जीव ते नगरवासी कोइ श्रेष्ठीने घेर **श्रीमती** नामे पुत्रीपणे उत्पन्न थयो हतो ते सखीओ साथे एज उद्यानमा रमवाने आवी चडी सर्व बालिकाओ परस्पर उपहास्यमा कहेवा लागी के, सखीओ, मनगमता वरने वरो, एटले बधी इच्छा प्रमाणे वर धारवा लागी ते वखते श्रीमती बोली के, हु तो आ मुनिने वरीश ते वखते आकाशवाणी थइ के, 'मुग्धे ! तु योग्यवरने वरी छु' एम कहेवा साथे देवताए दुदुभिना नादपूर्वक त्या रत्नोनी वृष्टि करी ते वखते दुदुभिनी गर्जनाथी भय पामी श्रीमती मुनिने पगे व लगी पडी. आर्द्रमुनि अनुकूळ उपसर्गनो संभव जाणी त्याथी बीजे चाल्या गया पछी राजाना पुरुषो ते वृष्टिनु द्रव्य लेवाने आव्या तेमने अटकावीने देवताए कह्यु के, ए द्रव्य तमारु नथी, पण ए तो श्रीमतीना विवाहने माटे आप्युं छे पछी तेना पिताए ते ग्रहण कर्यु श्रीमतीए ते मुनिनेज वरवानो पोतानो विचार जणाव्यो पिताए पुत्रीने कह्यु के, वत्से ! भ्रमरनी जेम भमता ए मुनि तने शी रीते मळशे ? अने कदि मळशे तोपण घणा मुनिओमा आ तेज छे एम ताराथी केम ओळखाशे ? माटे हव बीजा वरने वरवु कबुल कर श्रीमती बोली–पिताजी ! आम बोलवु युक्त नथी नीतिमा कह्यु छे के,

सकृज्जल्पति भूपाला , सकृद्वदति सज्जना ।
सकृत् कन्या प्रदीयते, त्रीण्येतानि सकृत्सकृत् ॥

" राजाओ एकवारज बोले, सज्जनो एकवारज वदे अने कन्या एकवारज अपाय, आ त्रण वाना एकजवार थाय छे " वळी आपे केम ओळखीश एम कह्यु, पण हुं तेना चरणना चिन्ह उपरथी तेमने ओळखी काढीश

पितानी आज्ञाथी श्रीमतीए त्यारथी नित्य मुनिओने दान आपवा माड्यु, बार वर्ष वित्या पछी ते मुनि फरीने अकस्मात् त्या आवी चड्या चरणना चिन्ह उपरथी तेमने ओळखी श्रीमती बोली के, हे स्वामी, ते वखते तो मने क्रूरनी जेम छोडीने नाशी गया हता, पण हवे क्या जशो ? पछी आर्द्रमुनि देवी आकाशवाणी सभारी श्रीमतीने परण्या अनुक्रमे तेमने एक पुत्र थयो, ते मोटो थयो एटले आर्द्र कुमारे श्रीमतीने कह्यु के, भद्रे, तमारो पुत्र मोटो थयो छे, माटे हवे हु दीक्षा लइश ते साभळी श्रीमती रेटीआनी त्राक लइने रु कातवा बेठी. मोटा थयेला पुत्रे माताने

पुत्रे पुछ्युं के, माता! तमे रेंटीआनी त्राक केम लीधी? श्रीमती बोली, पुत्र! ज्यारे तारा पिता तपस्या करवा जशे, अर्थात् दीक्षा लेशे तो पछी मारे त्राकनुज शरण छे, एटले के रेंटीओ कातिनेज पेट भरवु पडशे पुत्र बोल्यो—माता, हु मारा पिताने बाधी राखीश, जवा नहीं दउं पछी पुत्रे त्राकना सूत्रथी पोताना पिताना पगने वींटवा माड्या अने कह्यु, पिताजी! मे तमने बाधी लाधा, हवे क्या जशो? आवु पुत्रनु आचरण जोइ आर्द्रकुमारे पोताना पगने वींटेला सूत्रना तंतुनी सख्या करी, त्यारे ते बार वींटा थया ते प्रमाणे पोते बार वर्ष सुधी घेर रह्या ज्यारे अवधि पूर्ण थयो एटले ते दीक्षा लइ पवननी जेम अप्रतिबद्धपणे पृथ्वीपर विहार करवा लाग्या

आ अरसामा तेना पिताए रक्षाने माटे मुकेला सुभटो कुमारने शोधता हता, तेओ चोरी करीने पोतानी आजीविका चलावता हता दैवयोगे मार्गमा आर्द्रमुनि तेमने मळ्या तेमने धर्मोपदेश कर्यो एटले प्रतिबोध पामी ते सर्वेए दीक्षा लीधी तेमने साथे लइ आर्द्रकुमार मुनि श्रीवीर प्रभुने वादवा माटे चाल्या, मार्गमा गोशालो मळ्यो, ते बोल्यो के—हे मुनि! तमे वृथा तप करी कष्ट सहन करो छो, शुभ अशुभनुं कारण तो दैवज छे, ते सर्वत्र प्रमाण छे कह्यु छे के,

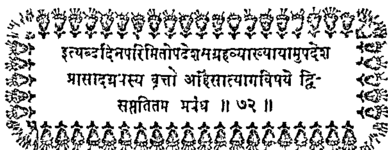
उपक्रमशतैः प्राणी, यन्न साधयितुं क्षमः ।
दृश्यते जायमानं, तल्लीलया नीयतेर्बलात् ॥

" सेकडो यत्न करवाथी पण प्राणी जे साध्य करवा समर्थ थतो नथी, ते दैवना बळथी एक रमत मात्रमा साध्य थइ जाय छे " आर्द्रकुमार मुनि बोल्या के, आ कहेवु घटतु नथी प्रारब्ध-कर्म अने उद्योग बनेना मळवाथी कार्यसिद्धि थाय छे "जेम कर्म-प्रारब्धथी थालीमा भोजन प्राप्त थयु, पण ज्यासुधी हाथ मुख तरफ लइ जाय नहीं त्यासुधी ते मुखमा पेसे नहीं " इत्यादि अनेक दृष्टातो आपी गोशाळाने निरुत्तर करी दीधो

त्याथी आगळ चालता आर्द्रमुनि हस्तितापसोने आश्रमे आव्या ते तापसो कायम हाथीने मारीने तेनु मासज खाता हता तेओ एम मानता के, अनाज विगेरेथी निर्वाह करता अग्निकाय, वनस्पतिकाय विगेरेना घणा जीवोने मारवा पडे छे, तेथी घणु पाप लागे, माटे एक मोटो जीव मारवाथी घणा वखत सुधी निर्वाह चाले ने पाप थोडु लागे ज्यारे आर्द्रमुनि त्या आव्या त्यारे तेमणे एक हाथीने पकडीने बाधेलो हतो आ मुनिने जोइ ते हाथी लघुकर्मी होवाथी खीलाने उखेडी मुनिना चरण पासे आव्यो अने मुनिने भक्तिथी प्रणाम कर्यो मुनिना अतिशय जोइ अने देशना साभळीने ते तापसो प्रतिबोध पाम्या अने तेमणे जैनवाणीनो स्वीकार कर्यो पछी आर्द्रमुनिए तेमने दीक्षा आपी त्याथी सर्व परिवार सहित ते वीरप्रभुनी

पासे आव्या ते वखते अभयकुमार सहित श्रेणिकराजा समोसरणमा आव्या हता तेमणे आर्द्रकुमार मुनिने हस्ति छोडाववानो वृत्तांत पूछयो, त्यारे मुनि बोल्या के, हे राजन्! हाथीने बंधनथी छोडाववो ते काइ दुष्कर नथी, पण सूतना ततुपासमाथी छुटा थवु ते दुष्कर छे श्रेणिके सूतततु विषे वधारे हकीकत पुछी एटले आर्द्रकुमारे पोतानी सघी वार्त्ता कही सभळावी, अने अभयकुमारनी प्रशंसा करीने तेने धर्माशीष आपी पछी आर्द्रमुनि सर्व पापने आळोइ पडिकमी, केवळज्ञान पामीने मोक्षने प्राप्त थया

उपर प्रमाणे आर्द्रकुमार मुनिना वचनथी जेम हस्तितापसोए हिंसा छोडी दीधी, तेम तेमनु चरित्र साभळीने प्राज्ञ पुरुषोए हमेशा दया धर्मनो पक्ष करवो



इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहव्याख्यायामुपदेशप्रासादग्रन्थस्य वृत्तो अहिंसात्यागविषये द्विसप्ततितम प्रबंध ॥ ७२ ॥

व्याख्यान ७३ मु

हवे मुनि तथा गृहस्थोने जे हिंसाना स्थान वर्जवा योग्य छे ते कहे छे.

मुखरध्रमनाच्छाद्य, भणनीय न कर्हिचित् ।
निमित्त च विकालाना, न वाच्यं कस्यचित्पुर ॥ १ ॥
उच्चै स्वरै निशिथेन, पाठो वर्ज्य सुबुद्धिभि ।
हिंसास्थानान्यनेकानि, इथ्थ ज्ञात्वा त्यजेद्बुध ॥ २ ॥

व्याख्या.

"मुखनु छिद्र ढाक्या वगर क्यारे पण भणवु नहीं अने कोइनी आगळ अनागत काळना (भविष्यना) फळादेश कहेवा नही वळी बुद्धिमाने पाछली रात्रे ऊचे स्वरे भणवु नही आ प्रमाणे अनेक हिंसाना स्थान छे, तेने जाणीने प्राज्ञ पुरुषे त्यजी देवा" प्रथम कह्यु के, मुखछिद्रने वस्त्रादिकथी आच्छादन कर्या शिवाय भणवु नही, तेनु कारण ए छे के, तेम भणवाथी वायुकाय जीवोनी हिंसा थाय छे महाभारतमा

कह्यु छे के, "मुखवस्त्रिका छे ते मुखना निश्वासने रोकनारी छे, ते जीवोनी दयाने माटे रखाय छे" ते विषे अन्य मतमा कहे छे के, "हे ब्रह्मन्, अणुमात्र पण अक्षर बोलता नासिका विगेरेमाथी नीकळता एक श्वासवडे सैकडो सूक्ष्म जतुओ हणाय छे" ते विषे पूर्वाचार्यो कहे छे के, "चार स्पर्शवाळा भाषा वर्गणाना पुद्गलो श्वासोश्वासना आठ स्पर्शवाळा पुद्गलोमा मळी जवाथी आठ स्पर्शवाळा वायुकाय जीवोने हणे छे" वळी कोइनी आगळ ज्योतिष विगेरे उपरथी भविष्य कहेवु नहीं ते विषे कह्यु छे के, "जे मुनिओ ज्योतिष निमित्तादिवडे भविष्यना अक्षरो कहे, अथवा कौतुक इद्रजाल विगेरे चमत्कार बतावे, वळी भूतिकर्म विगेरे करे, तेम करवाने प्रेरे अथवा तेम करनारनी अनुमोदना करे तो ते मुनिना तपनो क्षय थाय छे" ते विशे एक क्षत्रियनो प्रबध छे

क्षत्रिय प्रबध.

क्षितिप्रतिष्ठितनगरमा एक प्रोषितभर्तृका* क्षत्रियाणी हती तेने घेर एक मुनि कोइ कोइ वखत आहार लेवाने आवता हता एक वखते ते क्षत्रियाणीए मुनिने पुछ्यु के, मुनिराज, मारो स्वामी क्यारे आवशे? मुनि बोल्या नहीं पण तेणीए घणो आग्रह कर्यो त्यारे मुनिए विचार्या वगर कही दीधु के, आजथी पाचमे दिवसे आवशे दैवयोगे पाचमे दिवसे ते क्षत्रिय आव्यो एटले मुनिनु वचन सत्य थयु ते दिवसे मुनि आहार लेवाने तेने घेर आव्या एटले पेली क्षत्रियाणीने अने मुनिने सामसामु हास्य आव्यु ते जोइ क्षत्रियने शका आवी, तेथी हाथमा खड्ग लइने उभो थयो अने मुनिने हास्य थवानु कारण पूछ्यु त्यारे मुनिए जे यथार्थ हतु, ते कही आप्यु एटले क्षत्रिए परिक्षा करवा माटे मुनिने पूछ्यु के, आ घोडी सगर्भा छे तेने शु अवतरशे? मुनिए कह्यु-वछेरो आवशे तेथी तत्काल ते क्षत्रिए खड्गथी ते घोडीनु उदर विदार्यु, तेमा वछेरो जोइने ते शका रहित थयो आ हिंसाकृत्य जोइ मुनिए तत्काळ अनशन कर्यु पेला क्षत्रिये मुनिने खमाव्या मुनि काळ करीने स्वर्गे गया इति क्षत्रिय प्रबध

वळी रात्रे मोटे स्वरे पाठ करवो त्यजी देवो जो कदि काइ काम पडे तो मदस्वरथीज बोलवु खुखारो के होकारो पण रात्रे करवो नहीं जो रात्रे तेम करे तो घरमा रहेला घरोळी विगेरे हिंसक जीवो जाग्रत थइ मक्षिका विगेरेना भक्षणनो आरंभ करे अने पडखे पाडोशीओ होय ते जागी पोतपोताना आरंभ करवामा प्रवर्त्ते तेमज रसोइ करनारा, घाची, जार, तस्कर, खेडुत, कोल्हकार, घटी फेरवनार, चरखावाळा, धोबी अने मच्छीमार विगेरे पण परपराए पोतपोताना कुव्यापारमा प्रवर्त्ते

* जेनो स्वामी परदेश गयलो छे एवी

वळी श्रीवीर भगवते जयतीना प्रश्नोत्तरमा कह्यु छे के, 'अधर्मी पुरुषो सुतान्न भला अने धर्मी पुरुषो जागता भला' आ विषे नीचे प्रमाणे एक प्रबंध वृद्धोना मुखथी साभळेलो छे

मच्छीमार चोरनी कथा.

कोइ साधु रात्रे पोताना शिष्योने पूर्वगत[1] वाचना आपता हता ते प्रसगमा एक वखते तेमणे पोताना शिष्यने अमुक चूर्ण औषधि विगेरेना प्रयोगथी समुर्छिम मत्स्यादिक जीवोनी उत्पत्ति थाय छे एम कह्यु ते वात त्याथी चाल्या जता एक चोरी करवा नीकळेला मच्छीमारे साभळी, अने ते चूर्णनो प्रयोग मनमा धारी लइने ते घेर गयो पछी तेणे ते प्रमाणे कर्यु एटले घणा मत्स्योनी उत्पत्ति थइ, तेथी हर्ष पामीने ते माछी नित्ये तेज प्रयोगथी पोताना कुटुबनु पोषण करवा लाग्यो एवी रीते करता घणो काळ चाल्यो गयो एक वखते ते विद्याचोर माछी ते मुनिनी पासे आव्यो, अने मुनिने नमस्कार करीने बोल्यो के–हे स्वामी, तमारा प्रसादथी हुं सहकुटुब सुखे जीवु छु अने ते रीते दुकाळ विगेरे सकटना वखतमा अनेक जीवोनो उपकार थशे मुनि बोल्या–केवी रीते ? चोरे कह्यु के–पूर्वे तमे रात्रे शिष्योनी आगळ चूर्ण प्रयोगथी जीवोत्पत्ति कही हती, ते मारा साभळवामा आवी हती, त्यारथी ते प्रयोगवडे हु सुखे जीवु छु ते साभळी मुनि मनमा पोताना प्रमाददोषनी निंदा करता सता परपराए अत्यत पापनी वृद्धि थवानो निश्चय जणावाथी ते मछीमार प्रत्ये बोल्या के–हु तने बीजो तेथी पण श्रेष्ठ उपाय बतावु ते साभळ "अमुक अमुक द्रव्यनो योग मेळवी, एकाते ओरडामा बेसी, तेना कमाड बध करी, मध्य भागे राखेला जळ विगेरेमा ते चूर्ण नाखवु एटले सुवर्ण सरखा वर्णवाळा मत्स्यो उत्पन्न थशे तेनु भक्षण करवाथी तारु शरीर पण पुष्ट थशे" ते साभळी ते माछी पोताने घेर गयो, अने गुरुना कहेवा प्रमाणे चूर्ण तैयार करी ओरडामा पेठो पछी तेनो प्रयोग करता तेमाथी एक व्याघ्र उत्पन्न थयो ते तेनु भक्षण करी गयो, जेथी ते पापी मृत्यु पामीने नरके गयो अने मुनि ते पापनी आलोचना करी स्वर्गे गया माटे रात्रे उचा स्वरथी पठन पाठन न करवु, ए आ उपदेशनो सार छे

आ विषे बीजु पण एक दृष्टात छे ते नीचे प्रमाणे—

कोइएक श्रावक रात्रिने छेल्ले पोहोरे उचेस्वरे आवश्यक (प्रतिक्रमण) भणवा लाग्यो ते नजीक रहेला पाडोशीनी स्त्रीए साभळ्यु, तेथी थोडी रात्रि शेष हशे एम जाणी ते उठी अने अनाज दळवानो समय जाणी दळवा बेठी तेवामा घटीना गाळामा रहेलो एक सर्प कचराइ गयो तेनु विष सर्व लोटमा प्रसरी गयु ते लो

1 चौद पूर्वोमा रहेली

टना रोटला खावाथी तेना सर्व स्वजन मृत्यु पामी गया पेला श्रावके ज्ञानी पासेथी ते पापनी शुद्धि जाणी ते प्रमाणे आलोचना करी अने मृत्यु पामीने स्वर्गे गयो

आ प्रमाणे हिंसा थवाना अनेक प्रकारो छे ते जिनेंद्र कथित शास्त्रोथी तथा पोतानी बुद्धिथी जाणीने जे सुज्ञ पुरुषो तेनो त्याग करे छे ते शाश्वत सुखवाळी मोक्ष लक्ष्मीने पामे छे

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहव्याख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य वृत्तौ जीवदयाविषये त्रिसप्ततितम प्रबंधः ॥ ७३ ॥

व्याख्यान ७४ मुं.

हवे हिंसा अने अहिंसानुं फळ दर्शावे छे.

हिंसा निरंतरं दु ख, महिंसा तु परं सुखम् ।
जाता ददात्यहो सूरचंद्रयोरिव तद्यथा ॥ १ ॥

" हिंसा हमेशा दु:ख आपे छे अने अहिंसा परम सुख आपे छे. ते विषे सूर चंद्रनुं दृष्टांत छे " ते आ प्रमाणे —

सूर अने चंद्रकुमारनी कथा

जयपुर नामना नगरने विषे शत्रुंजय नामे राजा हतो तेने सूर अने चंद्र नामे बे पुत्रो हता पिताए ज्येष्ट कुमार सूरने युवराजपद आप्यु तेथी पोताने अपमान थयु जाणी चंद्रकुमार नगर बहार नीकळी विदेशमा फरवा लाग्यो एक वखते तेणे कोइ मुनिना मुखथी नीचेना बे श्लोक साभळ्या—

सापराधा इति प्रायो गेहिभि पुण्यदेहिभि ।
न हतव्यास्त्रसास्तावत्कि पुनस्ते निरागस· ॥ १ ॥
मीनाना वधप्रारंभे छेद· स्वांगुलिनोऽभवत् ।
त्यक्ता शस्त्रेण हिंसां च जातो धीवरधीधन· ॥ २ ॥

भावार्थ —" पवित्र देहवाळा गृहस्थे अपराधी एवा पण त्रस जीवोने हणवा नहीं तो निरपराधी जीवोने तो केमज हणवा कोइ बुद्धिमान् ढीमरे मत्स्यनो वध

करता पोतानी आगळीनो छेद थया ते उपरथी शस्त्रवडे हिंसा करवीज छोडी दीधी" ते कथा आ प्रमाणे छे —

'पृथ्वीपुर नगरमा एक ढीमर रहेतो हतो, ते मत्स्य मारवाने इच्छतो नहोतो, तथापि तेना स्वजन वर्गे तेने जाल विगेरे आपीने मत्स्य मारवा बलात्कारे मोकल्यो. ते जालमा मत्स्यो लइने आव्यो स्वजनोए तेने मत्स्य चीरवाने तीक्ष्ण शस्त्र आप्यु ते शस्त्रथी मत्स्योनो वध करता तेनी आगळी कपाइ गइ तेनी वेदनाथी पराभव पामता तेणे चितव्यु के, "हिंसाप्रिय जीवोने धिक्कार छे कोइने 'मरी जा" एवु कहेता पण दु ख लागे छे तो हिंसा करता केम न लागे!

ए वखते काइ गुरु शिष्य नगरमाथी नहार ठल्ले जता ते स्थानेथी निकळ्या तेमणे हाथमा शस्त्रवाळा पेला माछीने जोयो ते जोइ शिष्ये गुरुने कह्यु के, हे भगवन्, आवा पापी जीवो तो काइ रीते पण तरे एम लागतु नथी गुरु बोल्या–वत्स, जिनेंद्र शासनमा एवो एकात कदाग्रह नथी कारण के, अनेक भवोमा सचय करेला कर्मोने सद्भाव अने अध्यात्म ज्ञान सहित शुभ परिणामवडे प्राणी क्षणवारमा नाश पमाडे छे ते विषे कह्यु छ के,–

ज ज समय जीवो, आवम्मइ जेण जेण भावेण ॥
सो तमि तमि समये, सुहासुह नधए कम्म ॥

भावार्थ –"जे जे समये जीव जे जे भावमा प्रवर्त्ते छे, ते ते समये तेवा तेवा शुभाशुभ कर्म बाधे छे" आ प्रमाणे कहीने शिष्यने निरुत्तर करीने गुरुए उच्चस्वरे आ प्रमाणे एक पद कह्यु के–"जीववहो महापावो" आ प्रमाणे कही गुरु आगळ गया ते साभळी ढीमर ते पद याद करीने चिंतव्यु के, "आजथी मारे कोइ जीवनो वध करवो नहीं"–आवु ध्यान करता तेने जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न थयु तेथी पोते पूर्वे चारित्रनी विराधना करेली तेनु फळ आ नीच कुळमा जन्म विगेरे मानी ते दीक्षा लेवामा उत्सुक थयो अने अते शुक्ल ध्यानथी तत्काल केवलज्ञान पाम्यो सानिध्यमा रहेला देवताओए तेनो महोत्सव कर्यो 'देव दुदुभिनो' शब्द साभळी पेला शिष्ये गुरुने पुछ्यु के, आ शेनो शब्द छे? गुरु बोल्या–"वत्स! जो, ते ढीमरने महाज्ञान उत्पन्न थयु तेनो देवो महोत्सव करे छे ते मगळी दुदुभीना नाद छे हवे तु त्या जइ तेमने मारा भव विषे पुछ" पछी शिष्य शका अने विस्मय धरतो सतो त्या गयो त्यारे ज्ञानी बोल्या के–"अरे मुनि! तु विचारे छे, हु तेज ढीमर छु, अने द्रव्य भाव हिंसाना त्यागथी मने आ फळ प्राप्त थयु छे हवे तु जे पुछवा आव्यो छे तेनो उत्तर साभळ–तु जे वृक्ष*

* ते वृक्ष आवळीनु हतु

नीचे ऊभो छे तेना पत्र जेटला तारा गुरुने भव छे, अने हुं आ भवमांज सिद्धिने पामनार छे" ते साभळी शिष्ये गुरुनी पासे जइने ते वात कही, ते साभळी गुरु नृत्य करी हर्ष पामता सता बोल्या के, अहो आटला गणत्रीं थइ शके तेटला भवेज मने सिद्धि प्राप्त थशे! खरेखर हुं धन्य छु अने ते ज्ञानीनुं वाक्य सत्य छे आ प्रमाणे कही तेमणे त्याथी आगळ विहार कर्यो. पूर्वोक्त माछी हिंसाने छोडी क्षणमा चरमज्ञानने प्राप्त थयो तेथीज सर्व व्रतमां अहिंसाव्रतने मुख्य कहेलुं छे ते सत्यज छे अने तेना गुण वचन द्वारा कही शकाय तेम नथी आ प्रमाणे गुरुए कहेली देशना साभळी चद्रकुमारे अपराधी जीवनी हिंसानो पण त्याग कर्यो मात्र तेनो राजाना आदेशथी भग न थाय एटली छुट राखी आ प्रमाणे व्रत ग्रहण करी तेणे ते नगरना राजानी सेवा करवा माडी एक वखते वनमा राजाना सुभटोए कोइ चोरने पकड्यो. राजाए चद्रकुमारने कह्यु के, हे चंद्रकुमार, तु आ उग्र चोरने मारी नाख ते वखत चद्रे पोताने युद्ध सिवाय कोइपण प्राणीने मारवानो नियम जणाव्यो तेथी हर्ष पामी राजाए तेने पोतानो अंगरक्षक (हजुरी) कर्यो अने अनुक्रमे एक देशनो स्वामी बनाव्यो

अहीं चद्रकुमारना मोटा भाइ सूरकुमारे युवराज पदवीथी पण असतुष्ट थइ पराङ्मुख थइने सुतेल्ला पितानी उपर रात्रे शस्त्रनो प्रहार कर्यो राजानो घात करीने भागता तेने राणीए जोयो, तेथी ' आ राजघातक चाल्यो जाय छे माटे तेने पकडो " एवो त्या कोलाहल थइ पड्यो घायल थयेलो राजा पोताना पुत्रने ओळखीने विचार करवा लाग्यो के —

> सौरभ्याय भवंत्येके, चदना इव नंदन· ।
> कुलोच्छेदे भवंत्यन्ये, वालका इव बालका· ॥ १ ॥

भावार्थ—" केटलाएक पुत्रो चदनना वृक्षनी जेम सुगधने माटे थाय छे अने केटलाएक पुत्रो वाळानी जेम कुलना उच्छेदने माटे थाय छे "

आ प्रमाणे विचारीने राजाए सूरकुमारने देशपार कर्यो अने चद्रकुमारने पोलानी राज्यउपर बेसार्यो

शस्त्रना घानी पीडाथी सूरकुमार उपर रौद्र ध्यान करतो राजा मृत्यु पामीने चित्तो थयो सूरकुमार फरतो फरतो ते वनमा आव्यो पूर्वना वैरथी चित्ताए तेने मारी नाख्यो पछी ते भिल्ल थयो तेज वनमा शीकार करता ते भिल्लने चित्ताए पुन· मारी नाख्यो तेना सगासबंधीओए मळीने चित्ताने पण मारी नाख्यो पछी बंने डुक्कर थया परस्पर वैर राखता ते बंनेने पारधीए हणी नाख्या मरीने बने गजेंद्र थया कोईए तेओने पकडीने चंद्रराजाने अर्पण कर्या चद्रराजानी आगळ पण ते बने युद्ध करवा लाग्या राजाए सुदर्शन केवलीने तेमना वैरनु कारण पुछ्यु एटले केवली

भगवते तेमने वैर थवानु पूर्वोक्त कारण कह्यु ते साभळी चद्रराजाए चिंतव्यु के, अहो विचित्र कर्मरूप नटे भजवेलु आ भवनाटक केवु छे, जेमा रक राजा थाय, अने राजा रक थाय अढार सागरोपमना आयुष्यवाळो देवता[1] पण क्षणमा खर के श्वान बने छे महा मोहरूप निद्रावाळा प्राणीओ जेनो आश्रय करवाथी ससार रुप कूवा मा पडेछे अने सद्‌गतिना मार्गने जोता नथी तेनु कारण मिथ्यात्वरुप गाढ अधकार छे आवा प्रकारना उत्तम चितवनथी वैराग्य पामी पोताना पुत्रने राज्ये बेसाडी चद्रराजाए चारित्र ग्रहण कर्युं निरतिचार चारित्र पाळी ते राजर्षि एकावतारी देवपणाने पाम्या पेला बने हाथी मराने पहेली नरके गया

" जेमने गृहस्थपणामा देशथी पण आदरेल उत्कृष्टपणाने अगीकार करीने पाळ्यु तेवा सर्व जीवनी दयामा तत्पर चद्रकुमार नामे राजर्षि अनुक्रमे मोक्षसुखने पाम्या "


इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहव्याख्यायामुपदेश प्रासादग्रंथस्यवृत्तौ जीवदयाविषये चतु सप्ततितम, प्रबन्ध ॥ ७४ ॥

---

१ आठमा देवलोक सुधीना देवता त्याथी चवीने तिर्यंच पण थाय छे

स्थंभ ६ ठो.

व्याख्यान ७५ मुं.

हवे मृषावाद नामे बीजुं व्रत कहे छे

सूक्ष्मबादरभेदाभ्यां, मृषावाद द्विधा स्मृतम् ।
तीव्रसंकल्पज स्थूलं, सूक्ष्मं हास्यादिसंभवम् ॥ १ ॥

व्याख्या.

मृषावाद नामे बीजुं व्रत सूक्ष्म अने बादर एवा बे भेदवाळुं छे तेमा जे तीव्र संकल्पथी थाय ते स्थूल (बादर) अने हास्य विगेरेथी थाय ते सूक्ष्म तेमा श्रावकने सूक्ष्म मृषावादने विषे यतना करवी अने स्थूलनो तो अवश्य करीने त्याग करवो कारण के, ते लोकमा पण अपकीर्ति विगेरेनो हेतु छे स्थूल मृषावाद कन्या विगेरे संबंधी असत्यने कहे छे बीजु जे अणुव्रत छे तेमा क्यारे पण असत्य बोलवुं नहीं तेमा पण विशेषे करीने पृथ्वी, कन्या, गाय, धननी स्थापण अने साक्षीमानो असत्य बोलवुज नही ते विषे कह्युं छे, " कन्या, गाय, ने भूमिसबंधी असत्य, कोइनी थापण ओळवती ते अने खोटी साक्षी पूरवी ते-ए पाच स्थूल असत्य कहेवाय छे " तेमा कन्यासबंधी असत्य आ प्रकारे के, जे विषकन्या न होय तेने द्वेषने लीधे आ विषकन्या छे, एम कहेवु अथवा दु शीला होय तेने रागवडे सुशीला कहेवी, इत्यादि कन्यासबधी अलीक असत्य कहेवाय छे तेमा उपलक्षणथी दासदासी विगेरे सर्व द्विपदसबधी असत्यनो समावेश करवो हवे गायसंबंधी असत्य आ रीते के, अल्पदुधवाळीने घणा दुधवाळी कहेवी, घणा दुधवाळीने अल्प दुधवाळी कहेवी ते आ उपरथी बीजा सर्व चतुष्पद विषे जाणी लेवु भूमिसबधी असत्य आ रीते के, पारकी भूमिने पोतानी कहेवी, उखर (खारवाळु) क्षेत्र होय तेने उखर वगरनु कहेवु ए भूमिसबधी असत्य तेमा सर्व घर, हाट, मकान विगेरे अपद पदार्थोनु ग्रहण करवु अहिं शिष्य शका करे छे के, उपलक्षणथी आप बीजा द्विपद, चतुष्पद ने अपद पदार्थोनु ग्रहण करवानु कहोछो तो मुख्य वृत्तिएज ते त्रण विषय असत्यना केम न गणाव्या ? गुरु उत्तर आपे छे के-कन्या विगेरे असत्य लोकमा पण विशेष निंदनीक छे अथवा कन्यादि असत्यथी भोगातराय द्वेषवृद्धि विगेरे दोषो स्फुट रीते जणाय छे

वळी कोइए सुवर्ण विगेरेनी थापण मुकेली होय ते ओळववाथी महापाप लागे छे जो के, थापण ओळववानो अदत्तादानमा समावेश थाय छे पण तेमा 'त मुकीज नथी' एम ना पाडवी पडे छे तेथी वचननी प्राधान्यता छे तेथी तेने मृषा वादमा गणेल छे

पाचमो भेद जे कूट साक्षी छे ते लेण देण विगेरेमा जे खरो साक्षी होय ते लाच के द्वेष भावथी खोटी साक्षी पूरे तेने घणु पाप लागे छे, अने तेथी वसुराजानी पेठे बने भवमा अनर्थनी प्राप्ति थाय छे जेम वसुराजाने मात्र अज शब्दना अर्थनी साक्षीमा कूटसाक्षी दोष लाग्यो हतो. ते कथा आ प्रमाणे'—

वसुराजानी कथा

शुक्तिमती नगरीमा क्षीरकदंबक नामे एक उपाध्याय रहेतो हतो. तेनी पासे ते उपाध्यायनो पुत्र पर्वत, राजानो पुत्र वसु अने एक ब्राह्मणनो पुत्र नारद, ए त्रण जण साथे भणता हता एक वखते तेओ घरनी अगाशी उपर भणता भणता थाकी जइने सुइ गया हता, तेवामा कोई बे चारणमुनि आकाशे जता तेमने देखीने बोल्या के, आ त्रण विद्यार्थीओमा एक स्वर्गगामी छे अने बे नरकगामी छे. आ वचन उपाध्यायना साभळवामा आव्यु तेथी पाठके तेमनी परीक्षाने माटे मात काळे एक एक पिष्टनो कुकडो ते त्रणेने आपीने कह्यु के, हे वत्सो, ज्या कोई जुवे नही त्या जइने आ कुकडाने मारी नाखजो आ प्रमाणे साभळी वसु अने पर्वत ना कोई शून्य स्थाने जइ तेने हणीने पाछा आव्या पण जे ब्राह्मण पुत्र नारद हतो तेणे एकाते जइने विचार कर्यो के, " गुरुए कह्यु छे के, ज्या कोई जुवे नहीं त्या जइने हणजो तो तेवु स्थान तो त्रणे जगतमा पण नथी. केमके सर्वज्ञ अने सिद्ध पुरुषोने शु अगम्य छे! ज्ञानीने अगोचर कोई वस्तु नथी वळी आ कुकडो मने जुए छे अने हु तेने जोउ छु, तेथी गुरुए जरूर अमारी परीक्षा करवाने माटे आ बताव्यु लागे छे" आ प्रमाण विचारी ते कुकडाने हण्याविना अक्षत लइने घेर पाछो आव्यो. गुरुए कह्यु के, वत्स! तें मारी आज्ञा प्रमाणे केम न कर्यु? ते बोल्यो—भगवन्! हृदयमा विचारो के आपना वचन प्रमाणेज कर्यु छे आम कहीने पछी पोतानो अभिप्राय पण जणाव्यो ते साभळी गुरुए निश्चय कर्यो के, आ नारद दयाने लीधे स्वर्गे जवानो अने पेला बे नरकगामी थवाना तो हवे जेओ नरकमा जवाना तेमने भणा वीने शु करवु इत्यादि वैराग्य धारण करीने उपाध्याये गुरुपासे दीक्षा लीधी पछी लोकोए उपाध्यायने स्थाने तेना पुत्र पर्वतने स्थापित कर्यो अने अभिचद्र राजाना पछी वसुकुमार राजा थयो

एक-समते कोई पारधिए मृगउपर बाण नाख्यु ते बाण वचमा स्खलित थई गयु तेथी पारधीए पासे आवी हस्तस्पर्श कर्यो एटले त्या स्फटिकनी एक शिला जोवामा आवी पछी तेणे राजानी पासे ते वात कही राजाए ते शिला मगावीने पोताना सिंहासन नीचे मूकी, जेथी तेनु सिंहासन जमीनथी अधर रह्यु होय तेम जणाव्या लाग्यु ते जोई लोकोए जाण्यु के, आ राजा सत्यवादी छे तेथी तेनु आसन अधर रहे छे अनुक्रमे तेवी प्रसिद्धी लोकमा पण सर्वत्र प्रसार पामी

एकदा नारद पर्वतने मळवा आव्यो, ते वखते पर्वत विद्यार्थीने भणावतो हतो तेमा एम आव्यु के, "अजवडे यज्ञ करवो" तेनो अर्थ पर्वते एवो कह्यो के, अज एटले बकरो, तेनावडे होम करवो ते साभळी नारदे कह्यु के, रे पर्वत ! तु ए पदनो अर्थ खोटो करे छे तेनो खरो अर्थ एवो छे के, अज एटले त्रण वर्षनी डागर के जे उगे नहीं तेवडे होम करवो गुरुए पण आपणने एमज शीखव्यु छे माटे अरे बाधव ! तु केम भुली गयो ? ते साभळी पर्वते गर्वथी कह्यु के, हु कहु छु तेज खरु छे, तेथी जेनु खोटु पडे तेनी जिव्हा छेदी नाखवी एवी परस्पर प्रतिज्ञा करी, अने ते विषे वसुराजाने पुछवु, ने जे वसुराजा कहे ते सत्य मानी लेवु एम ठराव्यु आ खबर पर्वतनी माताने पडी एटले ते पुत्रना मृत्युथी कपती वसुराजा पासे गइ अने सर्व वृत्तांत जणावीने बोली के, महाराजा ! मने पुत्रदान आपो वसुराजाए कह्यु के, माता ! सुखे जाओ हु तमारा पुत्रनो पक्ष करीश बीजे दिवसे पर्वत अने नारद वसुराजानी पासे परिवार साथे आव्या राजाए पर्वतनी तरफमा कूटसाक्षी पूरी एटले समिप रहेला देवताए अधर देखातु ते सिंहासन चूर्ण करी नाख्यु वसुराजाने भूमिपर पाडी नाख्यो तत्काळ मृत्यु पामीने ते नरके गयो नारदनी देवताओए स्तुति करी अने अनुक्रमे ते सत्यथी स्वर्गे गयो

उपरनी कथा साभळीने प्राज्ञ पुरुषोए सत्यव्रतने विषे हमेशा आदर राखवो वसुराजाना आठ पुत्रो हता तेमने पण देवताओए मारी नाख्या पर्वतने नगर जनोए धिःकारीने काढी मूक्यो तेने महाकालनामना असुरे ग्रहण कर्यो ते महाकाळनो सबध आ प्रमाणे छे

अयोधन नामना राजाए पोतानी पुत्रीनो स्वयंवर रच्यो हतो ते वखते माताए गुप्त रीते कन्याने कह्यु के, तारे मारा भाइना पुत्र मधुपिंगने वरवो आ खबर त्या रहेली दूतीनी मारफते सर्व राजाओमा मुख्य एवा सगर राजाना जाणवामा आवी तेथी तेणे पोताना पुरोहितने ते कन्या वरवानो उपाय पुछ्यो कवि अने चतुर एवा पुरोहिते कपट भरेली राजलक्षणना विवेचनवाळी एक नवीन सहिता

बनावी अने ते वाचवा माटे सभा भरी तेमा तेणे लक्षणोवडे सगरने सर्वथी उत्कृष्ट अने मधुपिगन सर्वथी नीचो जणाव्यो तेथी सर्व राजा विगेरे मधुपिगनु उपहास करवा लाग्या, तेथी मधुपिग लज्जा पामीने त्याथी चाल्यो गयो पछी पेली कन्या सगरराजाने वरी. आथी क्रोध पामेलो मधुपिग कष्टकारी तप करी महाकाल नामे असुर थयो ते असुर पर्वतने मळ्यो ते बनने पिप्पलाद नामना एक त्रीजा पुरुषनो मेळाप थयो. ए पिप्पलाद कोण हतो तेनु वृत्तात आ प्रमाणे —

सुलसा अने सुभद्रा नामे वे तापसीओ लोकमा विदुषी तरीके विख्यात थइ हती तेओमा सुलसा विशेष पडिता हती तेवामा याज्ञवल्क्य नामना कोई तापसे एवो पडह वगडाव्यो के, 'जे मने वादमा जिते तेनो हु शिष्य थइने रहु.' आ साभळी सुलसाए वाद करी याज्ञवल्क्यने जिती लीधो अने तेने पोतानो शिष्य बनाव्यो पछी ते बनेने घणो परिचय थवाथी सुलसा सगर्भा थइ आ खबर सुभद्राने पडी एटले तेणे आवीने तेआने बहु उपालभ आप्यो अने ते वात सगर राजाने जणावी राजाना भयथी सुलसा गुप्तपणे पुत्रने जणी एक पिप्पल (पिपळा) ना वृक्षनीचे छोडी दइ याज्ञवल्क्यनी साथे नासी गइ प्रात काळे सुभद्रा त्या आवी, तेणे पिपळा नीचे पुत्रने जोयो ते पुत्र क्षुधातुर थइ पिपळानु फळ स्वयमेव मुखमा पडेलु तेनु आस्वादन करतो हतो ते जोई सुभद्राए तेनु पिप्पलाद एवु नाम पाड्यु अने तेने सारी रीते भणाव्यो सुभद्रा पासेथी पोताना जन्मनी वार्ता साभळी ते अनार्य पिप्पलादे अनार्य वेद रच्या तेमा एवी प्ररूपणा करी के, राजाओए अरिष्टनी शातिने माटे तेमज स्वर्गनी प्राप्तिने माटे पशु, अश्व, हाथी, अने मनुष्य विगेरेने होमी यज्ञ करवो आ वार्ताने महाकाल असुरे टेको आप्यो. तेणे एवु विचार्यु के, आ पर्वत अने पिप्पलादना वचनथी राजाओ यज्ञमा हिंसा करशे एटले तेओ नरके जइ महावेदना भोगवशे आ प्रमाणे मारा वैरी सगर विगेरे राजा पण करशे एथी मारा वेरनो बदलो वळी जशे आवु विचारी तेणे ते बनेने कह्यु के, तमे तेवा यज्ञ प्रवर्तावो हु तेमा सानिध्य रहीश आथी ज्या ज्या तेओ यज्ञ करावे त्या त्या महाकाल असुर आवी रोग विगेरेनी शाति करे अने पशु विगेरेने साक्षात् विमानमा रहेला बतावे आ प्रमाणे नजरे जोवाथी घणा राजाओ विगेरे यज्ञ करवामा आदरवाळा थया छेवटे तेओए नि शूक थइ मनुष्यनी हिंसा पण प्रवर्तावी एक वखते महाकाले मायाथी मोह पमाडी सगरराजाने स्त्रीसहित यज्ञमा होमी दीधो पिप्पलादे पितृमेध करी पोताना मातापिताने यज्ञमा होमी दीधा एवी रीते लोकोमा अनार्य वेद प्रवर्त्या अने आर्यवेद के जे माणवक नामना नि

नी उद्धरीने प्रतिदिन जमाडाता श्रावकोने भणवा माटे भरतचक्रीए

थनाव्या हता के जेमा चार व्रतना अंगीकाररुप अगउपर चार तिलक अने त्रण रत्नने सूचवनार यज्ञोपवितना त्रण सूत्र अने तीर्थंकरनी स्तुति विगेरे प्रतिपादन करेल छे ते वेदनी प्रवृत्ति वध पडी

उपर कह्या प्रमाणे वसुराजा, पर्वत अने पिप्पलाद विगेरे असत्यवादथी अधमगतिने पाम्या, तेनो दाखलो हृदयमा धारण करीने आत्महितेच्छु प्राणीओए असत्यवादनो त्याग करवो

इत्यब्द दिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादस्य वृत्तौ मृषावादत्यागविषये पंचसप्ततितमः प्रबंध ॥ ७५ ॥

व्याख्यान ७६ मुं.

हवे असत्यना भेद कहे छे

अभूतोद्भावनं चाद्य, द्वितीयं भूतनिह्नवम् ।
अर्थांतरं तृतीयं च, गर्हानाम चतुर्थकम् ॥ १ ॥
एतच्चतुर्विधासत्यं, श्वभ्रादिदुःखहेतुकं ।
ज्ञात्वानृतं व्रतं ग्राह्यं, येनातिसौख्यवैभवम् ॥ २ ॥

व्याख्या

असत्य चार प्रकारनुं छे, तेमा पहेलु असत्य अभूतोद्भावन नामे छे एटले आत्मा सर्वगत छे अथवा श्यामाक नामनु खडधान चोखा जेवुंज छे आम जे कहेवुं ते अभूतोद्भावन असत्य बीजुं भूतनिन्हव असत्य एटले छती वस्तुने निषेधवी, जेमके आत्मा नथी, पुण्य पाप नथी एम कहेवुं इत्यादि त्रीजु अर्थांतर असत्य एटले जे पदार्थ होय तेने बीजो कहेवो जेम गायने अश्व कहेवो चोथुं गर्हा असत्य एटले निंदाथी असत्य कहेवु ए गर्हा असत्य त्रण प्रकारनु छे पहेलु सावद्य व्यापारमा प्रवर्त्तावबुं, जेमके क्षेत्र खेड, क्षेत्रनी जमीनने बाळी दे विगेरे कहेवु बीजुं अप्रिय कारण, एटले काणाने काणो कहेवो ते त्रीजु आक्रोशरूप एटले कोईने तिरस्कारथी कहेवुं के, अरे निर्मुख! अरे भानवगरना! इत्यादि आ प्रमाणेना असत्य बोलवाथी प्राणीने नारकी विगेरेनां दुःखो प्राप्त थाय

छ ते विषे योगशास्त्रमां लखे छे के, "जे प्राणी मृषावाद बोले छे, ते निगोदमां, तिर्यंचमां अने नारकीमां उत्पन्न थाय छे परस्त्री भोगवनार अने चोरी करनारने पाप मुक्त थवानो उपाय छे, पण जे असत्यवादी छे तेने कोई पण उपाय नथी " एथी तेना त्यागरूप बीजुं अणुव्रत ग्रहण करवुं के जेथी सुख संपत्तिनी प्राप्ति थाय ए विषे श्रीकांत श्रेष्ठीनुं दृष्टांत छे ते आ प्रमाणे—

श्रीकांत श्रेष्ठीनी कथा

राजगृह नगरमां श्रीकांत नामे एक श्रेष्ठी हतो ते दिवसे व्यापार करे अने रात्रे चोरी करे एक वखते द्वादशव्रतने धारण करनार **जिनदास** नामे कोई श्रावक त्यां आव्यो श्रीकांत शेठे भोजनने माटे तेने आमंत्रण कर्युं जिनदासे कह्युं के, जेनी आजीविकाना प्रकार मारा जाणवामां न होय तेने घेर हुं भोजन करतो नथी श्रीकांते कह्युं, हुं शुद्ध व्यापार करूं छुं जिनदासे कह्युं, पण तमारा घरखरचप्रमाणे तमारो व्यापार जोवामां आवतो नथी माटे सत्य होय ते कहो पछी श्रीकांते जिनदास पारकुं गुह्य प्रगट करे तेम नथी एवी खात्री थवाथी पोताना व्यापारनी, अने चोरीनी सत्य वात कही त्यारे जिनदासे कह्युं, हुं तमारे घेर भोजन लइश नहीं, कारण, मारी बुद्धि पण तमारा आहारथी तमारा जेवी थाय श्रीकांते कह्युं, चोरीना त्याग विना जे तमे कहो ते हुं धर्म करूं जिनदासे कह्युं के, त्यारे तमे प्रथम असत्य बोल्या हता, तेम हवे असत्य बोलवुं नहीं, ते व्रत ग्रहण करो असत्य विषे कह्युं छे के, "त्राजवामां एक तरफ असत्यनुं पाप राख्युं अने बीजी तरफ बीजां बधां पापो राख्यां, तोपण असत्यनुं पाप अधिक थयुं " जे कोई शिखाधारी, मुंडी, जटाधारी, दिगंबर, के वल्कलधारी थइ लांबा वखत तपस्या करे ते पण जो मिथ्या बोले तो ते चंडालथी पण निंदवा योग्य थाय छे वळी असत्य अप्रतीतिनुं मूळ कारण छे अने सत्य विश्वासनुं मूळ कारण छे तथा सत्यनुं अचिंत्य महात्म्य छे लोकीकमां पण कहेवाय छे के, द्रौपदीए सत्य बोलवाथी आम्रवृक्षने नवपल्लवित कर्युं हतुं ते वार्ता नीचे प्रमाणे छे.—

हस्तिनापुरना राजा युधिष्ठिरना उद्यानमां मास मासने विषे एकदा अठ्याशी हजार ऋषिओ आव्या राजाए तेमने भोजनने माटे निमंत्रण कर्युं त्यारे तेओ बोल्या के हे राजा, जो तमे आम्ररसथी भोजन करावो तो अमे जमीशुं, नहींतर नहीं जमीए ए सांभळी राजा युधिष्ठिर चिंतामां पड्या के, आ आम्रनी ऋतु नथी तो अकाळे आम्रफळ शीरीते मळी शके तेवामां अकस्मात् नारद मुनि आवी ॥ तेणे राजानी चिंता जाणीने कह्युं के, जो तमारा पटराणी द्रौपदी सभामां

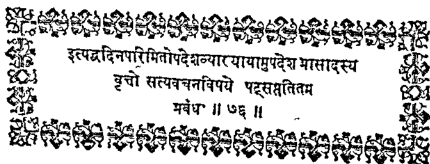
थावी पांच सत्य बोले तो अकाले पण आम्रवृक्ष फळे राजाए ते वात अंगीकार करी द्रौपदीने सभामां बोलाव्या. नारदे सतीने पुछयुं के, हे सती, पाच पतिथी संतोष धरावनारा एवा तमे सतीपणुं, संवर, शुद्धपणु, पतिमा प्रेम अने मनमां संतोष ए पाच बाबत संबंधी जे सत्य होय ते कहो ? द्रौपदी असत्यथी भयपामीने जे स्त्रीओनुं गुह्य हतुं ते सत्य रीते कहेवा लाग्या "हे मुनि, रूपवान, शूरवीर अने गुणी एवा मारे पाच पतिओ छे तथापि कोईवार मारुं मन छहामा जाय छे हे नारद, ज्या सुधी एकांत, योग्य अवसर अने कोई प्रार्थना करनार पुरुष मळे नही त्या सुधीज स्त्रीओनुं सतीपणु छे स्वरूपवान पुरुष, पिता, भ्राता के पुत्र होय तो पण तेने जोईने काचा पात्रमाथी जलनी जेम स्त्रीओनी योनी भीजाया करे छे हे नारद! जेम वर्षा ऋतुनो समय कष्टदायक छे तथापि आजीविकानु कारण होवाथी सर्वने वहालो लागे छे तेम भर्त्ता भरणपोषण करे छे तेथी स्त्रीने वहालो लागे छे, काइ प्रेमथी वहालो लागतो नथी काष्टवडे अग्नि तृप्त थतो नथी, सरिताओथी समुद्र तृप्त थतो नथी अने सर्व प्राणीओथी यमराज तृप्त थतो नथी, तेम पुरुषोथी स्त्री तृप्त थती नथी हे नारद, स्त्री अग्निना कुड समान छे अने पुरुष घीना कुड समान छे तेथी उत्तम जनोए स्त्रीओनो संसर्ग छोडी देवो" आ प्रमाणे द्रौपदी पाच सत्य बोली तेमा प्रथम सत्ये आम्राने अंकुर थया, बीजे सत्ये पल्लव थया, त्रीजे सत्ये टीसीओ थइ, चोथे सत्ये मजरी थइ अने पाचमे सत्ये पाका मधुर फळ थइ गया. ते जोइ सर्व सभामदो प्रशंसा करवा लाग्या पछी ते आम्रना रसवडे युधिष्ठिरे सर्व मुनिओने पारणु कराव्युं

आ प्रमाणे सत्य वचननो महिमा लोकमा अने शास्त्रमां वर्णवेलो छे. एथी हे श्रीकात शेठ! तमे पण ते सत्यव्रत स्वीकारो आ साभळी श्रीकाते सत्यव्रत स्वीकार्युं जिनदासे कह्यु, श्रेष्ठी! जीवितनी जेम आ व्रत यावज्जिवित पाळजो श्रीकाते कह्यु के, राज्य जाओ, लक्ष्मी चाली जाओ, अने आ नाशवंत प्राण पण जाओ, परंतु मारी वाचा न जाओ आवु नीतिनु वचन छे तेथी में व्रत लीधु छे तेनो हु कदी पण भग करीश नहीं

हवे श्रीकांत शेठे आ व्रत ग्रहण कर्युं तथापि तेनो चोरीनो स्वभाव तो गयो न होतो तेथी एक वखते श्रीकात शेठ चोरी करवा गयो त्यां मार्गे नगरचर्चा जोवा निकळेला श्रेणिक राजा अने अभयकुमार मळ्या तेमणे श्रीकातने पुछ्यु के, तु कोण छुं? तेणे कह्यु, हु पोते छुं फरी पुछयुं के, तुं क्या जाय छे ? श्रीकाते कह्यु के, राजाना भंडारमांथी चोरी करवाने जाउ छु. पुन: पूछ्यु के, तु क्या वसे छे ? श्रीकाते कह्यु के अमुक पाडामा, वळी पूछ्यु के तारु नाम शु ? श्रीकाते कह्यु के, मारुं नाम श्रीकात छे, ते साभळी बंने आश्चर्य पाम्या के, चोर आवी रीते साचु कहे नहीं, माटे

आ चोर जणातो नथी पछी तेओ त्याथी आगळ चाल्या पाछा वळतां पेलो श्रीकात राजाना भंडारमाथी पेटी लइने जतो हतो तेने पाछा श्रेणीक अने अभयकुमार मळ्या तेणे पुछ्यु के, आ शुं लीधु छे ? श्रीकाते कह्यु के, राजाना भंडारमाथी आ रत्ननी पेटी लइने घेर जाऊ छु आटु तेनु वाक्य साभळी तेओ राजमहेलमा गया. प्रातःकाळे भडारीए भडारमा चोरी थयेली जाणी बीजी पण केटलीक वस्तु आथी पाछी करीने पछी पोकार करी कोटवालने तिरस्कार साथे भडारमा चोरी थयानुं कह्यु ते वातनी राजाने खबर थइ एटले तेणे भडारीने बोलावीने कह्यु के, कोशमाथी शु शु गयुं छे ? भडारीए कह्यु के, रत्ननी दश पेटीओ गइ छे पछी राजाए मत्री सामु जोइ पेला श्रीकातने बोलाव्यो अने पुछ्यु के, रात्रे तें शु चोर्यु छे ? ते पुछताज श्रीकाते जाण्युं के, रात्रे जे बे जण मळ्या हता तेज आ छे तेथी तेणे कह्युं के, स्वामी, तमे शु भूली गया तमारा देखताज हुं मारी आजीविका माटे एक पेटी लइने जतो हतो श्रेणिक राजाए पुछ्युं के, अरे चोर ! तु मारी पासे पण साचु बोलता केम भय पामतो नथी ? श्रीकात बोल्यो के,–" महाराज ! प्राज्ञ पुरुषोए प्रमादथी पण असत्य बोलवुं न जोइए, केमके असत्य बोलवाथी प्रचंड पवनवडे वृक्षनी जेम कल्याण (सुकृत) नो भग थइ जाय छे वळी कदि तमे क्रोध पामो तो आलोकना एक भवना सुखनो नाश करो, पण जो सत्यव्रतनो भग करु तो अनंत भवमा मने दुःख प्राप्त थाय " आ प्रमाणेना तेना वचनो साभळी राजा श्रेणिके तेने शिक्षा दीधी के, जेनु आ बीजु व्रत पाळे छे, तेनी रीते बीजा पण व्रत पाळ. श्रीकाते ते स्वीकार्युं एटले राजाए ते जुना भंडारीने रजा आपीने ते पदवी उपर श्रीकातने राख्यो अनुक्रमे ते त्रिशलानदन (महावीर स्वामी) ना शासननो श्रावक थयो

आ प्रमाणे श्रीकात चोरे जिनदास श्रावकना वाक्यथी दृढतावडे सत्यवचन रुप बीजु व्रत लीधु तेवुं पाळ्यु तो तेथी तेणे आलोकमाज इष्टफल प्राप्त कर्युं तेथी भव्य प्राणीओए जरूर सत्यव्रत ग्रहण करवु


इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशव्याख्यायामुपदेशप्रासादस्य
वृत्तो सत्यवचनविषये षट्सप्ततितम
प्रबंध ॥ ७६ ॥

व्याख्यान ७७ मुं.

हवे ए बीजा व्रतना पांच अतीचार कहे छे.

एतद्व्रतप्रपञ्चस्य, त्याज्यं मिथ्योपदेशनम् ।
अभ्याख्यानमनालोच्य, व्याचष्टे नैवकस्यचित् ॥ १ ॥

व्याख्या

ए बीजुं व्रत जे असत्य न बोलवुं ते जेणे अंगीकार कर्युं होय तेवा पुरुषे मिथ्या उपदेशनो त्याग करवो, एटले असत् उपदेशने छोडी देवो, अर्थात् कोईने पीडा थाय तेवुं वचन न कहेवुं, एवा वचनने असत्यज समजवु, जेमके 'आ गधेडा अने उंट उपर वधारे भार नाखो,' 'आ चोरने मारी नाखो' एवा वचनो न कहेवा. सत्य शब्दनो अर्थ व्युत्पत्तिथी एवो थाय छे के 'सद्भ्यो हितं सत्यं' एटले जे उत्तम पुरुषने हितकारी ते सत्य तेथी बीजानी हिंसा करवा रूप वाक्य सत्य होय तोपण ते अहितकारी होवाथी असत्य समजवु तेने माटे कह्युं छे के,

न सत्यमपि भाषेत । परपीडाकरं वचः ॥
लोकेपि श्रूयते यस्मात् । कौशिको नरकं गतः ॥

"बीजाने पीडा थाय तेवु वचन सत्य होय तोपण बोलवुं नहीं. ते विषे लोकमा एम संभळाय छे के, कौशिक नामनो तापस तेवु वचन बोलवाथी नरके गयो हतो" तेनी कथा नीचे प्रमाणे.—

कौशिक तापसनी कथा.

कौशिक नामनो एक तापस लोकमां सत्यवादी तरीके प्रख्यात थइ फरतो हतो एक वखते एवुं बन्युं के, केटलाक चोर कोई गामने लुंटी ते तापसनी पासे थइने वनमा नाशी गया. ते चोरोनी पछवाडे रक्षको वगेरे वगेरे त्यां आव्या. तेमणे कौशिक मुनिने जोईने पुछयुं के, मुनिराज! तमे सत्यवादी छो माटे सत्य कहो, चोर कये मार्गे गया? तापसे विचार्युं के, "जे साचु पुछे तेने असत्य कहेवाथी मोटु पाप लागे छे अने तेवु पाप एक हरणीए[1] पण माथे लीधु नहतुं" आवुं विचारी ते तापसे चोर लोकोनु स्थान बताव्युं एटले तेओए त्या जइ चोरोने मारी नाख्या. ते पापथी कौशिक मुनि नरके गयो

---

१ आ हरणीनी कथा लौकिकपुराणमां छे.

वळी एक एवी वार्त्ता पण छे के, एक ज्ञानी मुनि वनमा तपस्या करता हता त्या एक वखते कोई पारधिना त्रासथी मृगला नाशी तेनी पासे थइने वनमा चाल्या गया पारधिए आवी तेमने पुछ्युं के, अहिंथी मृग क्या गया ? दयालु मुनिए विचारीने कह्यु के, जे जुवे ते बोले नहीं, अने जे बोले ते जुए नहिं आ प्रमाणे वारंवार बोलता सांभळी ते पारधि विचारवा लाग्या के, आ तापस तो लोकवहिर्मुख[१] जणाय छे, माटे तेने पुछवाथी शुं वळवानुं छे. आम कही तेओ त्याथी चाल्या गया अने मृगला बची गया तेथी मुनि स्वर्गे गया

आ प्रमाणे प्रमादवडे परने पीडाकारी वचन बोलवु ते पहेलो अतिचार छे अथवा युद्धने माटे अनेक प्रकारना प्रपंच शिखडाववा ते पण प्रथम अतिचार कहेवाय छे

इति प्रथम अतिचार

हवे बीजो अतिचार कहे छे जे विचार्या वगर जुठुं आळ चडाववु अथवा, अछता दोषनु आरोपवु, जेम कोईने कहेवु के, ' तु चोर छे, तु व्याभिचारी छे ' ते बीजो अतिचार छे माटे आ प्रमाणे कोईने कहेवु नहीं बीजा एम पण कहे छे के, तद्दन खोटु आळ चडाववु अथवा कोईनुं एकात रहस्य जनसमूहमा उघाडु करवु जेमके, कोई वृद्ध स्त्रीने कहेवु के, तारो पति अन्य सुरूप तरुणीमा आसक्त छे एवु शिखवी कलह उत्पन्न करवो, अथवा कोई स्त्री पुरुषनु रहस्य (एकाते गुप्तपणे थयेल बीना) हास्य क्लेश मात्र प्रगट करे, तीन सरलेश पडे नही ते विषे सूत्रमां पण कह्यु छे के, जे सहसा अभिशाप (आळ) आपवु ते बीजा व्रतमा निषिद्ध छे, ते जाणता छता आचरे तेनु तो व्रत भग थाय अने जे अजाणे आचरे तेने अतिचार लागे आ प्रमाणे बीजो अतिचार छे.

इति द्वितीय अतिचार

शास्त्रमा कह्यु छे के, "कोईने आळ आपवाथी जीव गधेडो थाय छे, निंदा करवाथी श्वान थाय छे, परस्त्री भोगववाथी कृमि थाय छे, अने मत्सर (द्वेषभाव) राखवाथी कीडो थाय छे " वळी कह्यु छे के—जे दूषण तरफ दृष्टि करे नहीं ते उत्तम, जे साभळे जाणे पण प्रकाश न करे ते मध्यम, जे दूषण जोईने तेनीज पासे कहे ते अधम अने जे सर्व ठेकाणे प्रकाश कर्या करे ते अधमाधम " हवे विचार्या वगर कोईने आळ चडाववा उपर एक दृष्टात कहे छे—

कोई गाममा सुदर नामे एक श्रेष्टी हतो ते घणो दाता होवाथी लोकप्रिय थइ पड्यो हतो कह्यु छे के, " जे दातार होय ते प्रजाने प्रिय थाय छे, काई धनाढ्य प्रिय थतो नथी लोको वरसादने चाहे छे, काई समुद्रने चाहता नथी "

१ लोकनी रीतभातने नहिं जाणनारा

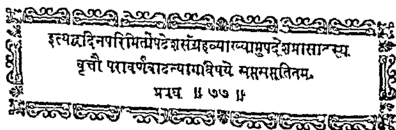
दाता शेठनी मात्र एक ब्राह्मणी निंदा करती हती ते कहेती के, जे परदेशीओ आवे छे, ते आ शेठने धर्मी जाणी तेने घेर द्रव्यनी थापण मूके छे अने तेओ परदेशमा जइने मृत्यु पामे छे तेनी दोलत शेठने रहे छे तेथी शेठ घणो हर्ष पामे छे, माटे एनु बधु कपट छे एक वखते कोई कापडी ते शेठने घेर आव्यो ते क्षुधावडे बहु पीडित हतो तेथी तेणे खावानु माग्युं ते समये शेठना घरमा काई भोजन के पेय पदार्थ हता नहीं, तेथी दयाने लीधे शेठे कोई आहीरनी स्त्रीने घेरथी छाश लावी आपी ते पीताज ते कापडी मरण पाम्यो कारण के, ते छाशनी दोणी माथापर राखी ढाक्याविना आहीरनी स्त्री काईक जती हती, तेवामा एक सर्पने लइ आकाशे समळी उडती हती ते सर्पना मुखमाथी झेर नीकळीने ते छाशमा पड्यु हतु हवे प्रभाते ए कापडीने मरेलो जाणी पेली वृद्धा ब्राह्मणी खुशी थइ सती कहेवा लागी के, जुवो, आ दातारनु चरित्र! तेणे द्रव्यना लोभथी बीचारा कापडीने विष आपीने मारी नाख्यो ए समये ते कापडीना मरवाथी जे पापरूप हत्या प्रगट थइ ते स्त्रीरूपे भमती हती अने विचारती हती के, हु कोने लागु पडु, आ दाता तो अति शुद्ध मनवाळो छे, तेनो आमा काई दोष नथी वळी सर्प तो पराधीन हतो अने तेने लइ जनारी समळी तो सर्पनो आहार करनारीज छे तेमज आ आहीरनी स्त्री तो तदन अजाणी छे हवे हु कोने वळगुं? आवु विचारती फरती हती ते पेली निंदा करनारी ब्राह्मणीने लागु पडी कारण के शेठने खोटु आळ देवाथी खरी रीते तेज दोषवान् हती हत्याना स्पर्शथी ते स्त्री तत्काळ श्याम, कुबडी अने कुष्ट रोगिणी थइ गइ. सर्व तेनी निंदा करवा लाग्या. कह्यु छे के, "माता पोताना वाहाला बाळकनी विष्टा फुटेला घडानी ठीववडे ले छे, पण दुर्जन माणस तो पोताना कठ, ताळु अने जिव्हावडे लोकोनी निंदा करवाने मिषे तेनी विष्टा ग्रहण करे छे एथी दुर्जने तो माताने पण हरावी दीधी" उपर कहेला ब्राह्मणीना दृष्टातथी एटलु समजवु के, कोईनो पण अवर्णवाद लोक समक्ष बोलवो नहीं तो पछी राजा, अमात्य, देव अने गुरुना अवर्णवाद विषे तो शु कहेवुं तेमा पण साधु मुनिराजना अवर्णवाद बोलवाथी भवातरमा नीचगोत्रनी तथा कलंकनी प्राप्ति थाय छे कह्यु छे के, "पूर्व भवमा मुनिने आळ आपवाथी प्राणीने सीता सतीनी जेम कलक प्राप्त थाय छे अने अनंत दुःख पामे छे," तेनी कथा आ प्रमाणे छे—

वेगवतीनी कथा

आ भरतक्षेत्रने विषे मिणालकुंड नामना नगरमा श्रीभूति नामे पुरोहित रहेतो हतो तेने सरस्वती नामे स्त्री हती. तेओने वेगवती नामे एक पुत्री थइ हती

एक वखते ते गाममा कोई मुनि आव्या. ते उद्यानमा कायोत्सर्ग करीने रह्या लोको तेमने वादवा अने पूजवा जवा लाग्या. ते जोई खोटी इर्षा करनारी पुरोहितनी पुत्री वेगवती लोकोने कहेवा लागी के, अरे, आ मुंडो तो पाखंडी छे, ब्राम्हणोने छोडीने तेने शा माटे पुजो छो? आ साधु तो कोई रमणीनी साथे क्रीडा करतो मारा जोवामा आव्यो हतो आ प्रमाणे तेणे साधुने खोटु आळ दीधु ते साभळी केटलाएक मुग्ध लोको ते मुनि पासे जता अटकी गया. आ खबर मुनिने थया एटले तेमना मनमा घणु खोटु लाग्युं. तेमणे चितव्यु के, मारा निमित्ते जिनशासननी हिलणा थवी न जोईए आवु धारी तेमणे अभिग्रह कर्यो के, ज्यासुधी मारा उपरथी आ कलंक उतरे नहीं त्यासुधी मारे आहार पाणी लेवा नहीं आवी प्रतिज्ञा करीने तेओ कायोत्सर्गमा रह्या आवी दृढ प्रतिज्ञाथी शासननी अधिष्टायक देवी तेमने सानिध्य थया तत्काल तेणे पुरोहितनी पुत्री वेगवतीने शरीरे तीव्र वेदना उत्पन्न करी. आथी वेगवतीने घणो पश्चात्ताप थयो तेथी तेणे ते मुनिनी पासे जइ सर्व लोकोनी समक्ष क्षमा मागी अने कह्युं के, हे भगवन्, में मात्सर्यथी आपनी उपर खोटु आळ चडाव्यु छे, ते क्षमा करो एम कहीने ते चरणमा पडी तेनो अतरग पश्चात्ताप जोई शासनदेवीए तेने साजी करी पछी ते धर्मदेशना साभळी दिक्षा लइने सौधर्म देवलोकमा देवी थइ त्याथी चवीने ते जनकराजानी पुत्री सीता थइ सीताना भवमा पूर्वे मुनिने मृषा आळ चडाववाना पापथी तेने कलक प्राप्त थयु पेला मुनि तो कलक मुक्त थइ लोकोमा अतिशय पूज्य थया

आ प्रमाणे वेगवतीनी कथा साभळीने सर्व भव्य प्राणीओए सर्वदा अवर्णवादनो त्याग करवो, अने बीजानो अवर्णवाद कोई करे तो ते साभळवो पण नहीं ए प्रमाणे करवाथी प्राणी सर्व जननी प्रशसानु पात्र थइ सम्यक् प्रकारे सद्धर्मने योग्य थाय छे


इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहव्याख्यासुपदेशप्रासादस्य वृत्तौ परावर्णवादत्यागविषये सप्तसप्ततितम.

प्रबंध ॥ ७७ ॥

व्याख्यान ७८ मुं.

हवे बाकीना मृषावादना अतिचार कहे छे.

विश्वासेन स्थिता ये च । तेषां मंत्रप्रकाशनम् ।
अन्यस्मै भाषणं गुह्य । कूटलेखश्च पंचमः ॥ १ ॥

व्याख्या

जे मित्र स्त्री विगेरे पोताना विश्वास उपर रहेला होय तेमना गुप्त विचारने बीजानी पासे प्रगट करवा, जो के ते सत्य कह्या छे तेथी अतिचार लागवो जोईए नहीं, तथापि तेमना गुप्त विचार जाहेर करवाथी लज्जाने लीधे कदि तेओनुं मृत्यु विगेरे थवा संभव छे, तेथी ते परमार्थरूपे असत्य (मृषा) कहेवाय छे, माटे ए त्रीजो मृषावादनो अतिचार छे

इति तृतीय अतिचार.

हवे चोथा अतिचारमां आकृति तथा चेष्टाथी कोईनुं गुह्य जाणी बीजाने कही देवुं ते सत्य छता असत्य छे एम जाणवु जेमके, 'अमुक माणस भेगा थइने राजानी विरुद्ध विचार करे छे ' आवुं कहेनाथी तेने मोटी हानि थवा संभव छे अहिं कोई शंका करे के, त्रीजा अने चोथा अतिचारमा शो भेद छे? तेना उत्तरमा कहेवानु के, त्रीजामा कोईनो गुप्त विचार के जे विश्वासथी पोताने कहेवामा आव्यो होय तेने जनसमूह आगळ खुल्लो करवो ते अने चोथामा आकृति तथा चेष्टा विगेरेथी कोईनुं गुह्य जाणी स्हने तेने खुल्लुं करवु ते आ प्रमाणे त्रीजा अने चोथा अतिचारमा भेद रहेलो छे.

हवे कोइनो गुप्त विचार खुल्लो करवाथी जे दोष थाय ते कहे छे.

" बुद्धिमान पुरुषे कोईनु गुह्य वाक्य प्रगट करवुं नहीं " जेम मर्म कहेवाथी एक वणिकने स्त्री मरण संबंधी दु ख थयुं हतु ते कथा नीचे प्रमाणे छे.—

पुण्यसारनी कथा.

वर्णपुर नामना नगरमा पुण्यसार नामे श्रेष्ठी रहेतो हतो एक वखते ते पोतानी स्त्रीनु आणुं वाळवा सासराने घेर गयो ते स्त्री कोई बीजा पुरुषसाथे रागी थयेली हती तेथी जवाने आनाकानी करती हती तथापि पुण्यसार शेठे तेने हठ करीने साथे लीधी मार्गमा ते वणिक तृपार्त थवाथी कोई कुवाउपर पाणी भरवा गयो ते कुवा-जळ खेचतो हतो एवामा तेनी पछवाडे रहेली स्त्रीए तेने कुवामां नाखी दीधो,

अने पोते पाछी पिताने घेर आवी पिताए तरतमांज पाछी आववानुं कारण पुछ्युं एटले तेणीए कह्यु के, " मार्गमा मारा पतिने चोरोए लुंटी लीधो अने तेने मार्यो हशे के शु थयु हशे तेनी मने खबर नथी हु तो नाशीने अंहि आवी छु " पछी ते स्त्री पितृगृहमा रही सती स्वेच्छाए वर्त्तवा लागी

अंहि पुण्यसार कुवामा थोडुं जळ होवाथी उपरज रह्यो तेने कोइ मुसाफरोए खेंचीने बहार काढ्यो ते फरीवार पाछो श्वसुर गृहे गयो सर्व लोकोए मार्गनी वार्त्ता पुछी त्यारे तेणे कह्यु के, मने चोराए लुटी लीघो पण जीवतो मुक्यो अने मारी स्त्री नाशीने अंहि आवती रही ते सारु थयु आ प्रमाणे तेणे पोतानी स्त्रीनु गुह्य (मर्म) ढांकीने वार्त्ता कही, तेथी ते स्त्री तेनापर विशेष रागी थइ पछी तेने लइने ते वणिक घेर आव्यो गाढ प्रेमी थयेला ते दपतीने एक पुत्र थयो अनुक्रमे पुत्र मोटो थयो एक वखते पुण्यसार शेठ भोजन करतो हतो तवामा प्रचंड पवननो वंटोळीओ आववाथी तेना भाणामा रज पडवा माडी, त्यारे स्त्रीए आवीने पोताना वस्त्रनो छेडो आडो राख्यो ते वखते पुण्यसारने तेनु पूर्व चरित्र याद आव्यु तेथी काइक हास्य थयु पुत्रे एकाते जईने पिताने हास्यनु कारण पुछ्यु पुत्रनो घणो आग्रह थवाथी पिताए तेनी पासे तेनी मातानु पूर्व चरित्र कही दीधु

एक वखते पुण्यसारना पुत्रनी स्त्री तेना पति आगळ पोतानी स्त्री जाति माटे गर्व करती हती ते वखते पुत्रे पोतानी मातानु चरित्र तेनी आगळ जणावीने कह्यु के, तमारी स्त्री जातिने धिक्कार छे नीतिमा कह्यु छे के,

> नितम्बिन्य पतिं पुत्रं, पितरं भ्रातरं क्षणात् ।
> आरोपयत्यकार्येऽपि । दुर्वृत्ता' प्राणसंशये ॥

" दुराचरणी स्त्रीओ पति, पुत्र, पिता अने भ्राताने पण प्राणसंशयवाळा अकार्यने विषे क्षणवारमा नाखी देछे " तेवी स्त्रीओमा कयो पुरुष प्रेम बाधे ते विषे नीतिशास्त्रमा कह्यु छे के,

> वंचकत्वं नृशंसत्वं, चंचलत्वं कुशीलता ।
> एतेनैसर्गिका दोषा । यासां तासु रमेत क ॥

"वचकता, क्रुरता, चचळता, अने कुशीळपणु एटला तो जे स्त्री जातिमा स्वाभाविक दोष छे, तेवी स्त्रीओमाथे कोण प्रीति बाधे" आ वचन साभळी ते स्त्री मौन करीने बेसी रही अन्यदा सासू वहुने परस्पर कलह थयो एटले एक बीजाना मर्मनी वात्तो उघाडी करवा माडी ते प्रसगे वहुए पोताना पति पासेथी साभळेली वात मेहे ---- रूपमा कही दीधी ते साभळताज तेना मनमा विचार आव्यो के, अहो, मारा

पतिए आटला वखतसु धी मारी गुह्य वात गुप्त राखी छेवटे आ वहु आगळ पण प्रगट करी, तेथी मारे हवे जीवीने शु करवु आवु चिंतवी गळाफासो नाखी ते मृत्यु पामी. ते जाई पुण्यसार शेठे पण देहत्याग कर्यो तेवो बनाव जोई श्रेष्ठी पुत्रने वैराग्य थयो तेथी ते पोतानी स्त्रीने छोडी दईने दीक्षा लइ चाली नीकळ्यो

उपरनी कथा साभळी कोइए कोइनी गुप्त वात प्रकट करवी नहीं जेओ बीजाना गुह्यने ढाके छे तेओ खरेखर धन्य छे ते उपर कपासना छोडनु दृष्टांत कहेवाय छे. जेम कपासना छोड जेवा पुत्रने तो कोइ विरल माताज जणे छे के जेओ पोतानु अग (कपास) काढीने गुणवडे बीजाना गुह्यने ढाकी दे छे, एटले सुतरवडे मनुष्य मात्रने वस्त्र पुरा पाडी सर्वना देहने ढाके छे लौकिक शास्त्रमा पण कह्यु छे के, " जे नराधमो परस्परना मर्म उघाडा करे छे, तेओ उदरना अने राफडाना सर्पनी जेम मृत्युने पामे छे " तेनी कथा आ प्रमाणे छे—

बे सर्पनी कथा.

पृथ्वीपुर नामना नगरमां सुंदर नामे राजा हतो, तेने एकदा वक्रशिक्षीत अश्व कोइ अरण्यमा लइ गयो ज्यारे अश्व थाकीने उभो रह्यो त्यारे ते राजा अश्व उपरथी उतरी श्रांत थइने एक वृक्ष नीचे सुइ गयो ते वखते तेना उघाडा रहेला मुखमा एक नानो सर्प पेसी गया राजा त्याथी घेर आव्यो, परतु उदरमा रहेला सर्पनी पीडाथी ते एटलो बधो कटाळी गयो के, छेवटे करवत मुकाववाने गंगातीर्थे जवा चाल्यो तेनी राणी पण साथे चाली मार्गे जता श्रमने लीधे राजा एक वडना वृक्ष नीचे सुइ गयो, राणी जागती रही तेवामा वायु भक्षण करवाने माटे पेलो सर्प उदरमाथी मुखद्वारा जरा बहार नीकळ्यो तेनामा नजिक एक राफडो हतो तेमा रहेला बीजा सर्पे तेने जोइने कह्यु के, अरे पापी, आ राजाना उदरमाथी बहार नीकळ, नहीं तो हु तारा नाशनो उपाय जाणु छु ते ए छे के, जो कडवी चीभडीना मूळ कांजीमा वाटीने पीवे तो तारो नाश थइ जाय पण शु करुं अहीं कोइ नथी के जेनी आगळ हु ते निवेदन करु ते साभळी पेलो उदरनो सर्प बोल्यो—हु पण उष्ण करेला तेलने तारा बीलमा रेडवावडे तारा नाशनो अने तारा बीलमा रहेला निधानने मेळववानो उपाय जाणु छु, पण कोई अहीं नथी के जेने ते उपाय कहु के जे ते उपायथी तने मारीने तारी नीचे रहेलो द्रव्यनो निधि मेळवे

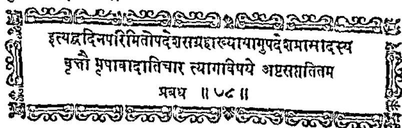
आ प्रमाणे ते बनेना परस्परना मर्मने उघाडनारा वचनो राजानी पासे जागरणे सुनेली राणीए साभळी लीधा पछी ते प्रमाणे उपाय करवाथी राजा नीरोगी थयो अने पेला राफडाना सर्पने मारी द्रव्यनिधि पण तेमणे स्वाधीन करी लीधो. आ दृष्टांत जाणीने कोई पण प्राणीए परस्परना मर्म (गुह्य) प्रकाश करवा नहीं. ए पारका मर्म प्रगट न करे तेनेज खरो धर्मधारी समजवो

हवे पांचमो अतिचार कहे छे-बीजानी मुद्रावडे अथवा तेनी जेवा अक्षरो काढवावडे खोटो लेख बनाववो ते कूटलेख नामनो पांचमो अतिचार कहेवायछे जेम कुणालनी अपरमाताए राजाना पत्र (लेख) रुपे पुत्र उपर कूटलेख लख्यो अर्थात् पत्रमा मात्र एक बिंदु वधारी दीधु जेथी कुणालने नेत्र विनाशरूप महान् अनर्थ प्राप्त थयो हतो

अहीं कोई शका करे के, आ कूटलेखरूप अतिचार छे ते तो महा अनर्थकारी होवाथी तेमज प्रगटपणे असत्यरूप होवाथी तेने तो स्थूलमृपावादमा गणवो जोईए, तो ते आतिचारमा केम गणाय? अने ते प्रमाणे करवाथी व्रत भग थयेलो केम न गणाय? तेना समाधानमा कहेवानु के, कोई मुग्ध माणस असत्य बोलवाना पच्चखाण ले अने ते एम समजे के, मे तो असत्य बोलवाना पच्चखाण लीधा छे, काई लखवाना लीधा नथी, तो जे कूटलेख लखवो तेमा शो दोष छे? आवु धारी ते व्रतनी सापेक्षता जाळवी राखे तेथी बीजा व्रतमा आ कूटलेख अतिचार रुपे कह्यो छे अथवा अनाभोगथी एटले अजाणपणा विगेरेथी पण ते अतिचार गणाय छे आ प्रमाणे ते पाचमो अतिचार छे.

इति पचम अतीचार

आ पाचे अतिचार निश्चय त्याग करवा योग्य छे, कारण के ते बीजा व्रतमा मलीनताने आपनारा छे तेथी तेनो त्याग करी जैन धर्मना व्रतधारीओए सत्यतानो गुण विशुद्धपणे ग्रहण करवो



इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्यायामुपदेशमालादस्य
वृत्तौ मृषावादातिचार त्यागविषये अष्टसप्ततितम
प्रबध ॥ ७८ ॥

व्याख्यान ७९ मु.

हवे सत्यवादीनी स्तुति करे छे

सर्वेषां धर्मकार्याणामाद्यं सत्यमुदीरितम् ।
तद्विना गदितो धर्म । ॥ १ ॥

तप, जप, ज्ञान अने दर्शन विगेरे कह्या छे तेओमा श्रीवीतराग प्रभुए सत्यने मुख्य कहेल छे. ते उपर एक दृष्टान्त कहेवाय छे के, कोई श्रावकनो पुत्र धर्मरहित हतो पिताए तेने बलात्कारे गुरुनी पासे लावी बेसार्यो धूर्तपणाथी तेणे गुरुए कहेला द्वादशव्रतना नियमो जाणे प्रतिबोध पाम्यो होय तेम आदरथी स्वीकार्या नियम विषे दृढता धराने गुरुए तेनी प्रशसा करी एटले ते बोल्यो—आ बधा व्रतोमां बीजु सत्य बोलवारुप जे व्रत छे ते मारे शुद्ध छे, कारण के ते मुश्केल होवाथी गृहस्थथी पाळी शकाय नहीं आ प्रमाणे बोलवामा तेनो आशय एवो हतो के, मे अत्यार सुधी जे नियम ग्रहण कर्या छे, ते बधु हुं असत्य बोल्यो छे आवो तेनो आशय जाणी गुरुए अने तेना पिता विगेरेए ' आ धर्मने अयोग्य छे ' एम जाणी तेनी उपेक्षा करी

सत्य विनाज कुतीर्थिओए कहेलो धर्म निरर्थक छे जेने माटे कह्युं छे के, " चार्वाक, कौलिक, ब्राह्मण, बौद्ध, अने वैष्णवोए असत्यवडेज पराक्रम करी आ जगतने घणी विडंबना करी छे " वळी "अल्प एवा मृषावादथी पण रौरवादि नरकमा पडाय छे तो जैन वाणीने अन्यथा कहेवाथी तो कहो केवी माठी गति थाय ? " परतु " तेवा पापी नास्तिकोना मुखोदर नगरनी खाळ जेवा छे के जेमाथी कादववाळा दुर्गंधी जलना जेवीज वाणीओ निकळे छे " अने "जेओ ज्ञान अने चारित्रनु मूळ जे सत्य तेने वदे छे, तेओ पोताना चरणनी रजथी आ पृथ्वीने पवित्र करे छे " आ विषे हसराजानी कथा छे ते आ प्रमाणे—

हंसराजानी कथा.

राजपुरीमा हंस नामे एक राजा हतो एक वखते ते उपवननी शोभा जोवाने माटे नगर बहार गयो त्या वनमा एक मुनि तेना जोवामा आव्या राजा तेनी पासे बेठो एटले मुनिए आ प्रमाणे धर्मदेशना आपी

सच्चं जसस्समूलं । सच्चं विसास कारणं परम ।
सच्च सग्गद्दार । सच्चं सिद्धिइ सोपाणं ॥

" सत्य यशनुं मूळ छे, सत्य विश्वासनु कारण छे, सत्य स्वर्गनु द्वार छे अने सत्य सिद्धिनु सोपान (पगथीयु) छे " वळी " जेओ असत्य बोले छे तेओ भवातरे दुर्गंधी मुखवाळा, अनिष्ट वचनना बोलनारा, कठोर भाषी, बोबडा अने मुगा थाय छे आ सर्व असत्य वचनना परिणाम छे " आवी धर्मदेशना साभळी हसराजाए सत्यव्रत ग्रहण कर्युं

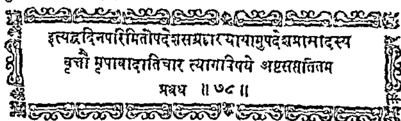
एक वखते हंसराजा अल्प परीवार लइ रत्नशिखर गिरि उपर चैत्री महोत्सवना प्रसंगे श्रीआदीश्वर प्रभुने नमवा गयो अर्धे मार्गे आवता कोई सेवके त्वराथी आवीने कह्यु के, "हे देव! तमे यात्रा करवा चाल्या, के तरत सीमाडाना राजाए

हवे पांचमो अतिचार कहे छे-बीजानी मुद्राकडे अथवा तेनी जेवा अक्षरो काढवावडे खोटो लेख बनाववो ते कूटलेख नामनो पांचमो अतिचार कहेवायछे जेम कुणालनी अपरमाताए राजाना पत्र (लेख) रुपे पुत्र उपर कूटलेख लख्यो अर्थात् पत्रमा मात्र एक बिंदु वधारी दीधु जेथी कुणालने नेत्र विनाशरुप महान् अनर्थ प्राप्त थयो हतो

अहीं कोई शका करे के, आ कूटलेखरुप अतिचार छे ते तो महा अनर्थकारी होवाथी तेमज प्रगटपणे असत्यरुप होवाथी तेने तो स्थूलमृषावादमा गणवो जोईए, तो ते अतिचारमा केम गणाय? अने ते प्रमाणे करवाथी व्रत भग थयेलो केम न गणाय? तेना समाधानमा कहेवानु के, कोई मुग्ध माणस असत्य बोलवाना पच्चखाण छे अने ते एम समजे के, में तो असत्य बोलवाना पचखाण लीधा छे, काई लखवाना लीधा नथी, तो जे कूटलेख लखवो तेमा शो दोष छे? आवु धारी ते व्रतनी सापेक्षता जाळवी राखे तेथी बीजा व्रतमा आ कूटलेख अतिचार रुपे कह्यो छ अथवा अना भोगथी एटले अजाणपणा विगेरेथी पण ते अतिचार गणाय छे आ प्रमाणे ते पाचमो अतिचार छे

इति पचम अतीचार

आ पाचे अतिचार निश्चय त्याग करवा योग्य छे, कारण के ते बीजा व्रतमा मलीनताने आपनारा छे तेथी तेनो त्याग करी जैन धर्मना व्रतधारीओए सत्यतानो गुण विशुद्धपणे ग्रहण करवो


इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादस्य
वृत्तौ मृपावादातिचार त्यागविषये अष्टसप्ततितम
प्रबध ॥ ७८ ॥

व्याख्यान ७९ मु.

हवे सत्यवादीनी स्तुति करे छे.

सर्वेषां धर्मकार्याणामाद्य सत्यमुदीरितम् ।
तद्विना गदितो धर्म । कुतीर्थिकैर्निरर्थक ॥ १ ॥

व्याख्या

सर्व धर्म कार्योमा सत्यगुण मुख्य रहेलो छे ते सत्य विना कुतीर्थी (मिथ्यात्वी) ओए धर्म कहेलो होवाथी तेने निरर्थक समजवो शास्त्रमा जे धर्मना का

ते वायुनी जेम प्रतिबंध रहित छे आवो उत्तर साभळी ते वने पाछा चाल्या गया पछी राजा सुका पादडा विगेरेनो आहार करीने रात्रे सुवा माटे तैयारी करतो हतो तेवामा कांईक कोलाहल तेना साभळवामा आव्यो तेमा तेणे एवो शब्द साभळ्यो के, 'आपणे त्रीजे दिवसे सघने लुटीशु' ते साभळी राजा चिंतातुर थयो क्षणवार थई तेवामा तो केटलाएक सुभटोए आवीने पुछ्यु के, अरे ! तें क्याई चोरने जोया ? अमे गोविंपुरना राजाना सेवको छीए अने ते राजाए सघनी रक्षा करवाने माटे अमने मोकल्या छे ते साभळी राजाए चिंतव्यु के, जो हु चोरोने बतावीश तो आ राजपुरुषो अवश्य तेओने मारी नाखशे अने नहीं बतावु तो ते चोर लोको सघने लुटी लेशे हवे अहिं मारे शु बोलवु युक्त छे पछी जरा विचारीने राजा बोल्यो के, में ते चोरने जोया नथी पण तमारे कोई ठेकाणे शोधी लेवा, अथवा तेमने शोधवानी शी जरुर छे, तमे सघनी साथे रहीने तेनी रक्षा करो आवो उत्तर साभळी तेओ चाल्या गया तेमना गया पछी सुभटो साथे थयेली वातने साभळनारा ते चोरो राजा पासे आवीने कहेवा लाग्या के, अरे भद्र ! तें अमारा प्राण बचाव्या तेथी हवे अमे चोरी के हिंसा नहीं करीए तेनो लाभ तने प्राप्त थाओ आ प्रमाणे कही ते चोर पोताने स्थानके चाल्या गया

त्याथी राजा आगळ चाल्यो तेवामा केटलाएक घोडेस्वारोए आवीने पुछ्यु के, अरे पाथ ! अमारा शत्रु हंसराजाने ते कोई ठेकाणे जोयो छे ? ए अमारो कट्टो शत्रु छे तेथी अमारे तेनो विनाश करवो छे राजा हंस असत्यना भयथी बोल्यो के— हु पोतेज हंस छु आम साभळी तेओए क्रोधथी राजाना मस्तक उपर खड्गनो प्रहार कर्यो, परंतु तेज वखत खड्गना सेंकडो कटका थई गया अने राजानी उपर पुष्पवृष्टि थई तत्काळ एक यक्ष प्रत्यक्ष थईने बोल्यो के—हे सत्यवादी राजा ! तु चिरकाळ जय पाम हे नृप ! हुं तमने आजेज जिन यात्रा करावु माटे तमे आ विमानने अलंकृत करो यक्षना आवा वचन साभळी हंसराजा विमानमा बेठो अने जिनेश्वरनी यात्रा पूजा करी, यक्षना सांनिध्यथी शत्रुने जीती राज्य भोगवी अनुक्रमे दीक्षा लईने स्वर्गे गयो.

"हंस एवा नाम मात्रने धारण करवाथी पक्षी पण जळाशयमा सुखी थाय छे, तो जे हंसराज एवा नामने धारण करे ते खरेखर स्वर्गमा रहेली अप्सराना सुखने पामे तेमा शु आश्चर्य ! "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादस्य वृत्तौ सत्यविषये एकोनाशीतितमः प्रबंधः ॥ ७९ ॥

आवी ग्लानिकारे तमारा नगरने कबजे कर्यु छे, तेथी आपने जेम योग्य लागे तेम करो " पास रहेला सुभटोए पण राजाने विनति करी के, स्वामी आपणे पाछा जइये रा जाए कह्यु के, प्राणीने पूर्व कर्मना वशथी संपत्ति अने विपत्तिनी प्राप्ति थाय छे तेथी जेओ संपत्तिमा हर्ष अने विपत्तिमा खेदने विस्तारे छे, तेओ खरेखर मूढ छे आ अवसरे सद्भाग्यथी प्राप्त थयेला जिनयात्रा महोत्सवने तजी दइने भाग्यथी रह्य एवा राज्यने माटे दोडवु ते युक्त नथी वळी कह्यु छे के—

धनेन हीनोपि धनी मनुष्यो, यस्यास्ति सम्यक्त्वधनं महार्घ्यं।
धनं भवेदेकभवे सुखार्थं, भवेभवेऽनंतसुखी सुदृष्टि॥

"जेनी पासे समकितरूप अमूल्य धन छे, ते धनहीन छता धनवान समजवो, केमके धन तो एक भवमा ज सुखदायक छे अने समकित तो भवोभवमा अनंत सुखदायक छे " आ प्रमाणे कही राजा पाछो न वळता आगळ चाल्यो परंतु शत्रु आव्याना खबर साभळी एक छत्रधारक शिवाय बीजो सर्व परिवार पोतपोताना घरनी संभाळ लेवाने पाछो वळी गयो राजा पोताना अलंकारोने गोपवीने छत्रधा- रकना वस्त्रो पहेरी आगळ चाल्यो त्या कोई एक मृग राजाना देखता सत्वर दोडतो लताकुंजमा पेसी गयो तेनी पछवाडे तरत ज धनुष्य उपर बाण चडावेलो कोई भिल्ल आव्यो तेणे राजाने पुछ्यु, अरे! मृग कई बाजु गया ते कहे त साभळी राजाए मनमा चिंतव्यु के, "जे प्राणीओने अहित होय ते सत्य होय तोपण कहेवु नहीं अने तेनो प्रसंग आवे तो सुबुद्धि पुरुषोए ते पुछनारने बुद्धिना प्रपचथी सम जाववो " आ प्रमाणे चिंतवी राजा बोल्यो के अरे भाई! हु मार्ग भ्रष्ट थयो छु फिराने फरीवार पछ्यु, त्यारे राजाए कह्यु के, हु दरा छु आ प्रमाणे राजाना व- चन साभळी ते भिल्ल क्रोधथी बोल्यो के, अरे भिल्ल! आवो विपरीत उत्तर केम आपे छे? त्यारे राजाए कह्यु के, हवे तने मने जे मार्ग बतावशो, ते मार्गे हु जईश आ प्रमाणे विरुद्ध वचनो साभळी ते भिल्ल तेने गांडो मानी निराश थईने पाछो चाल्यो गयो.

त्यार्थी राजा आगळ चाल्यो तेवामा एक साधु तेना जोवामा आव्या तेने नमस्कार करी आगळ जता हाथमा शस्त्र धारण करनार ते भिल्ल राजाने सामा मळ्या तेओए राजाने कह्यु के-"अरे पांथ! अमारा स्वामी चोरी करवी धारीने जता हता, त्या वचमा एक साधु सामो मळ्यो तेथी अपशुकन थया जाणी अमारा स्वामी पाछा वळ्या, अने अमने ते मुनिने मारवा माटे मोकल्या छे, तो ते साधु तारा जोवामा आव्यो होय तो बताव्य" राजा ते वखते असत्य पण सत्य जेवु छे एम मानीने बोल्यो के-ते साधु, डाबे मार्गे जायछे पण तमने मळशे नहीं, कारण के

रोहिणी चोरनी कथा.

वैभार पर्वतनी गुहामां लोहखुर नामे एक चोर रहेतो हतो तेणे एक वखते पोताना पुत्र रोहिणेय चोरने शिखामण आपी के, तारे कदि पण श्रीवीरनी वाणी साभळवी नहीं अन्यदा रोहिणेय राजगृह नगरमा चोरी करवा गयो चोरी करीने पोताना स्थान तरफ जतो हतो त्या मार्गमा श्रीवीर प्रभुनु समोसरण तेना जोवामा आव्यु ते वखते 'वीरनी वाणी साभळवी नहीं' एवी पोताना पितानी आज्ञानो भग न थाय एटला माटे ते कानमा आगळी राखीने चाल्यो तेम चालता तेने पगमां कांटो वाग्यो ते कांटो काढ्या शिवाय चाली शकाय तेम न होवाथी तेणे कांटो काढवा एक हाथ नीचे कर्यो, ते वखते भगवतनी आ प्रमाणेनी वाणी तेना साभळवामा आवी

अनिमिस नयणा मणकज्झसाहणा पुप्फदाम अमिलाणा।
चउरंगुलेण भूमि न च्छिविंति सुरा जिणा बिंति ॥

"जेना नेत्रमा निमेष (मटका) थाय नहीं, जे मननी इच्छा प्रमाणे करी शके, जेनी पुष्पमाळा करमाय नहीं अने जे पृथ्वीथी चार आगल उचा रहे, ते देवता कहेवाय-एम श्री जिनेश्वर कहे छे" आ प्रमाणे साभळी तेणे चितव्यु के, अरे धिक्कार, मे आ वीरनी वाणी साभळी एम चितवतो ते आगळ चाल्यो तेवामा चोतरफ फरता राजपुरुषो ते रोहिणेयने पकडीने राजा पासे लई गया राजाए तेनो वध करवानी आज्ञा करी, एटले अभयकुमार मत्री बोल्यो-स्वामी, एने वधी हकीकत पुछ्या शिवाय, मुद्दा माल विना तेमज तेनी कबुलत विना तेने केम मारी शकाय? राजाए कह्यु के, त्यारे पुछो एटले रोहिणीओ बोल्यो के-"हुं शालिपुरनो निवासी दुर्गचंद्र नामे कुटुंबी (कणबी) छु आजे कार्य प्रसंगे राजगृहीमा आव्यो हतो. बहार नीकळती वखते दरवाजा बध हता तेथी भय पामी कील्लो उलघीने हुं मारे गामे जतो हतो, तेवामा पुररक्षकोए मने पकड्यो छे, माटे हुं चोर नथी" आ प्रमाणे तेणे कह्यु, तथापि तेने कारागृहमा पुर्यो अने तेनी तपास करवाने शाळीगामे माणस मोकल्यु त्या रोहिणीए प्रथमथी गोठवण करी राखेली होवाथी ते गामना माणसोए रोहिणीआना कहेवा प्रमाणेज कह्यु पछी तेनी मुखजुबान कबुलत करावना माटे अभयकुमार तेने मदिरापान करावी बेशुद्ध करीने पोताना महेलमा लई गया त्या दोगुदुकदेवनी जेम अप्सरा जेवी रमणीओथी वींटाएला पलंगमा तेने शयन कराव्यु अने चीनाई वस्त्रनो पोशाक पहेराव्यो पछी ज्यारे तेनो केफ ऊतरी गयो त्यारे

व्याख्यान ८० मुं

हवे त्रीजा व्रतनो व्याख्या करे छे

तदाद्य स्वामिनादत्त, जीवादत्तं तथापरम् ।
तृतीय तु जिनादत्त, गुर्वदत्तं तुरीयकम् ॥ १ ॥
सूक्ष्मबादर भेदाभ्या, माद्यादत्त द्विधा मतम् ।
सूक्ष्मे हि यतना कार्या, श्राद्ध स्थूल च सत्यजेत् ॥ २ ॥

व्याख्या

अदत्तादान (चोरी) चार प्रकारे छे प्रथम स्वामीनु अदत्त, बीजु जीवनुं अदत्त, त्रीजु श्रीतीर्थंकरनु अदत्त अने चोथु गुरुनु अदत्त ते चार भेदमा पहेलु जे स्वामी अदत्त छे ते सूक्ष्म अने बादर एवा बे भेदवाळु छे श्रावके सूक्ष्मादत्त विषे यतना करवी अने स्थूलादत्तनो त्याग करवो जे सुवर्ण नाणु विगेरे तेना स्वामीए न आप्युं होय छता लेवु ते पहेलु स्वामी अदत्त जाणवु जे फल, फुल, पत्र विगेरे पोतानी मालेकीनु छे तेने भेदवु ते जीवादत्त छे कारण के ते सचित्त (जीव युक्त) होवाथी तेना जीवोए कांई पोताना प्राण तने आप्या नथी, माटे ते अदत्त छे गृहस्थे आप्यो आधाकर्मी आहार जो मुनि ग्रहण करे तो ते तीर्थंकरनी आज्ञा रहित छे तेथी ते त्रीजु तीर्थंकरादत्त कहेवाय छे एवी रीते श्रावकने अनतकाय अभक्ष्यादिक पदार्थो जे छे ते खाता तीर्थंकर अदत्त लागे छे अने जे सर्व दोषथी रहित होय पण गुरुनी आज्ञा विना लेवाय के वपराय ते चोथु गुर्वदत्त कहेवाय छे

अहीं तो प्रथमना स्वाम्यदत्तनो अधिकार छे तेना सूक्ष्म अने बादर एवा बे भेद कह्या छे तेमा सूक्ष्म एटले स्वामीनी आज्ञा वगर जे कांई तृण के ईंट जेवी वस्तु ग्रहण करवी ते अने बादर एटले जे लेवाथी लोकमा चोर कहेवाय ते, ते स्थूल पण कहेवाय छे चोरीनी बुद्धिथी जे क्षेत्र तथा खला विगेरेमाथी अल्प पण लेवु, ते पण स्थूल अदत्तमा गणाय छे ए रीते पहेला स्वामी अदत्तना बे भेद छे तेमा श्रावकने सूक्ष्ममा यतना करवी अने स्थूलथी तद्दन निवृत्ति करवी ए भावार्थ जाणवो

हवे ते व्रतनु फळ कहे छे–चोरी करवी ते वध करवाथी पण अधिक छे, कारणके वधवडे तो ते एकज मरे छे अने चोरीवडे धन हरवाथी तो घणु कुटुंब दुःखार्त्त थई मरी जाय छे चोरी कर्मने छोडनारो रोहिणीयो चार देव सपत्तिने पाम्यो हतो, तेथी प्राणात काले पण विवेकीए परधन चोरवु नहीं आ वार्त्तानो सबध नीचे प्रमाणे छे-

ल्पीथे ते पाचसें वाहाणो विषमगिरीना वमळमा आवी पड्या त्या पूर्वे कोई बीजाना पण ५०० वाहाणो फसी रहेला हता ते पण त्याथी नीकळी शकता न हता त्या आ वाहाणो पण आवी भरावा तेथी शेठ घणो खेद पाम्या तेवामा कोई वाहाण उपर वेसीन एक खलासी आव्यो तेणे कह्यु के,—"अरे मुसाफरो, तमारं निस्तारानो एक उपाय हु कहु ते साभळो, 'अहीथी नजिक पचशृग नामे एक द्वीप छे त्या सत्यसागर नामेराजा छे, ते एक वखते मृगया रमवा गयो हतो तेमा तेणे एक सगर्भा मृगलीने मारी तेने मरती जोई तेना दु खथी तेनो पति मृग पण मरण पाम्यो. ते जोईने सत्यसागर राजाने घणी दया उपजी तथी तेणे सर्वत्र अमारी घोषणा करावी छे आजे प्रथम तेमणे मोकलेला एक शुकपक्षीना मुखथी तमारी उपर पडेली आपत्ति जाणीने तेमणे मने अहीं मोकल्यो छे आ पर्वतनी कडणमा एक द्वार छे तेमा पेसीने गिरीनी पेली पार जवाय छे, त्या एक उज्जड नगर छे, तेमा एक जिन चैत्य छे, त्या जईने ते चैत्यनी अदर रहेलो पटह वगाडशो, तेना नादथी त्रास पामीने त्या रहेला भारड पक्षीओ उडशे एटले तेओनी पाखना प्रचड वायुथी प्रेरा-एला आ वाहाण मार्गे चडी जशे तमारे बचवानो मात्र आ एकज मार्ग छे तेथी त्या एकज माणसने मोकलो पण ते माणस पाछो आवी शकशे नहीं" तेणे आ प्रमाणे कह्यु, पण त्या जवाने कोईनी हाम चाली नही तेथी दयाळु एवा कुबेरदत्त श्रेष्ठी पोतेज एकला त्या गया अने पेला खलासीना कहेवा प्रमाणे कर्यु, जेथी तेना ते आ-गळना सर्वे वाहाणो वमळमाथी नीकळी गया अने भृगुपुर क्षेम कुशलताथी आवी पहोंच्या परतु पछवाडे ते पर्वतपर रहेला कुबेरदत्तनु शु थयु ते हु जाणतो नथी एथी हे राजन्, तेनु वीश कोटी सुवर्ण, आठ कोटी रौप्य द्रव्य, अने हजार तुला प्रमाण रत्नो तमे ग्रहण करो गुर्जरपति ते द्रव्यने तृणवत् गणी नही ग्रहण करतो सतो बोल्यो के, हे माता! तमारो पुत्र थोडा काळमा आवशे माटे जे आ द्रव्य छे, ते धर्ममा के तमारी इच्छा आवे तेमा वापरो

आ प्रमाणे आश्वासन आपी राजा स्वस्थानके जता हता, तेवामा तो कुबेर-दत्त एक स्त्री साथे विमानमा बेसी आकाश मार्गे त्या उतर्यो ते जोई माताने अत्यत हर्ष साथे आश्चर्य उत्पन्न थयु श्रेष्ठी राजाने अन माताने नमीने उभो रह्यो राजाए पुछ्यु, अहो साहसिक शिरोमणि! ज्या तमे गया हता, ते शून्य नगरमा शु थयु?

श्रेष्ठी बोल्यो—"हे स्वामी, ते नगरमा एक मेहेलमा कोई कन्या मारा जोवा मा आवी तेणे मने कह्यु के, "हु पाताळकेतु विद्याधरनी पुत्री छु, हसकुमारी छु मारा पिताए मासनी लोलुपताथी एकदा एक मार्जारीनु भक्षण कर्यु तेथी मास

भक्षणनु व्यसन थता ते राक्षस थयो तेणे घणा लोकोने भक्षण कर्या तेथी आ नगर उज्जड थइ गयु छे हाल ते आहारने माटे बहार गयेल छे " कन्या आ प्रमाणे वात करे छे तेवामा तेनो पिता अने माता बने त्या आव्या. तेओए मने ते कन्या आपी पाणीग्रहण समये मे एवु माग्यु के, तमे मांस खावानो नियम ल्यो पछी तेने मति बोध पमाड्यो एटले तेणे ते नियमनो स्वीकार कर्यो ते विद्याधर मने स्त्रीसहित विमानमा बेसारी अहीं मुकीने स्मशान पाछो पोताने स्थानके गयो" आ प्रमाणे तेनी हकीकत सांभळी कुमारपाल राजा विस्मय पामीने बोल्या के, धन्य छे तमने के एवा संकटमा पण तमे पोताना नियमने छोडी दीधो नहीं आ प्रमाणे तेनी प्रशंसा करता गुर्जरपति त्याथी गुरुने वंदन करवा गया गुरुए कह्यु के, हे राजा ! जे अपुत्रीयानु धन ग्रहण करे ते तेमनो पुत्र थाय छे अने तमे ते द्रव्य रातोपथी छोडी दीधु तेथी तमे खरेखर सर्व राजाओना पण पितामह थया छो

आ प्रमाणे राजर्षि, धर्महित, नीतिराघव अने चौलुक्यसिंह इत्यादि बीरुदोने धारण करनार अने जैन आगमना अर्थने जाणनार श्रीकुमारपाळराजा परद्रव्यने ग्रहण करवामा विमुख थई विजयवंत थया

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादस्य
वृत्तौ तृतीयव्रतविषये एकाशीतितमः प्रबंधः ॥ ८१ ॥

व्याख्यान ८२ मुं.

हवे ते त्रीजा व्रतना पांच अतिचार कहे छे.

स्तेनानुज्ञा तदानीतादानं द्विड्राज्यलंघनम् ।
प्रतिरूपक्रियामानान्यत्वं वा स्तेयसंश्रिता ॥ १ ॥

व्याख्या

"चोरने आज्ञा करवी, चोरीनु द्रव्य लेवु, राजाए निषेध करेल व्यापारादि आचरवु, वस्तुमा तद्रूप हलकी चीजनो भेळसेळ करवी अने कुडा तोल माप राखवा ए अदत्तादान विरमणव्रतना पांच अतिचार छे" चोरने आज्ञा करवी एटले चोरीना

लीधे ते पाचसें वाहाणो विषमगिरीना वमळमा आवी पड्या त्या पूर्वे कोई वीजाना पण ५०० वाहाणो फसी रहेला हता ते पण त्याथी नीकळी शकता न हता त्यारे आ वाहाणो पण आवी भरावा तेथी तेउ घणो खेद पाम्या तेवामा कोई वाहाण उपर बेसीने एक खलासी आव्यो तेणे कह्यु के,-"अरे मुसाफरो, तमारे नीकळवानो एक उपाय हु कहु ते साभळो, 'अहींथी नजिक **पचशृग** नामे एक द्वीप छे त्या **सत्यसागर** नामेराजा छे, ते एक वखते मृगया रमवा गयो हतो तेमा तेणे एक सगर्भा मृगलीने मारी तेने मरती जोई तेना दु खथी तेनो पति मृग पण मरण पाम्यो. ते जोईने सत्यसागर राजाने घणी दया उपजी तेथी तेणे सर्वत्र अमारी घोषणा करावी छे आजे प्रथम तेमणे मोकलेला एक शुकपक्षीना मुखथी तमारी उपर पडेली आपत्ति जाणीने तेमणे मने अहीं मोकल्यो छे आ पर्वतनी कटणमा एक द्वार छे तेमा पेसीने गिरीनी पेली पार जवाय छे, त्या एक उज्जड नगर छे, तेमा एक जिन चैत्य छे, त्या जईने ते चैत्यनी अदर रहेली पटह वगाडवो, तेना नादथी त्रास पामीने त्या रहेला भारड पक्षीओ उडशे एटले तेओनी पाखना प्रचड वायुथी वेरा-एला आ वाहाण मार्गे चडी जशे तमारे वचवानो मात्र आ एकज मार्ग छे तेथी त्या एकाद माणसने मोकलो पण ते माणस पाछो आवी शकशे नहि" तेणे आ प्रमाणे कह्यु, पण त्या जवाने कोईनी हाम चाली नहीं तेथी दयालु एवा कुबेरदत्त श्रेष्ठी पोतेज एकला त्या गया अने पेला खलासीना कहेवा प्रमाणे कर्यु, जेथी तेना ने आ-शका सर्वे वाहाणो वमळमाथी नीकळी गया अने भृगुपुर क्षेम कुशलताथी आवी पहोंच्या परतु पछवाडे ते पर्वतपर रहेला कुबेरदत्तनु शु थयु ते हु जाणतो नथी एथी हे राजेंद्र, तेनु त्रीश कोटी सुवर्ण, आठ कोटी रौप्य द्रव्य, अने हजार तुला प्रमाण रत्नो तमे ग्रहण करो गुर्जरपति ते द्रव्यने तृणवत् गणी नहीं ग्रहण करतो सतो वाल्यो के, हे माता! तमारो पुत्र थोडा काळमा आवशे माटे जे आ द्रव्य छे, ते धर्ममा के तमारी इच्छा आवे तेमा वापरो.

आ प्रमाणे आश्वासन आपी राजा स्वस्थानके जता हता, तेवामा तो कुबेर-दत्त एक स्त्री साथे विमानमा बेसी आकाश मार्गे त्या उतर्यो ते जोई माताने अत्यत हर्ष साथे आश्चर्य उत्पन्न थयु श्रेष्ठी राजाने अने माताने नमीने उभो रह्यो राजाए पुछ्यु, अहो साहसिक शिरोमणि! ज्या तमे गया हता, ते शून्य नगरमा शुथयु?

श्रेष्ठी बोल्यो-"हे स्वामी, ते नगरमा एक मेहेलमा कोई कन्या मारा जोवा मा आवी तेणे मने कह्यु के, "हु पाताळकेतु विद्याधरनी पुत्री छु, हकुमारी छु मारा पिताए मासनी लोलुपताथी एकदा एक मार्जारीनु भक्षण कर्यु तेथी मास

भक्षणनु व्यसन थता ते राक्षस थयो तेणे घणा लोकोने भक्षण कर्या तेथी आ नगर उज्जड थइ गयु छे हाल ते आहारने माटे बहार गयेल छे " कन्या आ प्रमाणे वात करे छे तेवामा तेनो पिता अने माता बने त्या आव्या तेओए मने ते कन्या आपी पाणीग्रहण समये मे एवु माग्यु के, तमे मास खावानो नियम ल्यो पछी तेने प्रति बोध पमाड्यो एटले तेणे ते नियमनो स्वीकार कर्यो. ते विद्याधर मने स्त्रीसहित विमानमा बेसारी अहीं मूकीने इमणाज पाछो पोताने स्थानके गयो" आ प्रमाणे तेनी हकीकत साभळी कुमारपाल राजा विस्मय पामीने बोल्या के, धन्य छे तमने के एवा सकटमा पण तमे पोताना नियमने छोडी दीधो नहीं आ प्रमाणे तेनी प्रशसा करता गुर्जरपति त्याथी गुरुने वदन करवा गया गुरुए कह्यु के, हे राजा ! जे अपुत्रीयानु धन ग्रहण करे ते तेमनो राजानो पुत्र थाय छे अने तमे ते द्रव्य सतोषथी छोडी दीधु तेथी तमे खरेखर सर्व राजाओना पण पितामह थया छो

आ प्रमाणे राजर्षि, धर्मार्हित, नीतिराघव अने चौलुक्यसिंह इत्यादि बीरुदोने धारण करनार अने जैन आगमना अर्थने जाणनार श्रीकुमारपाळराजा परद्रव्यने ग्रहण करवामां विमुख थई विजयवत थया

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादस्य वृत्तौ तृतीयव्रतविषये एकाशीतितम. प्रबन्ध. ॥ ८१ ॥

व्याख्यान ८२ मुं.

हवे ते त्रीजा व्रतना पांच अतिचार कहे छे.

स्तेनानुज्ञा तदानीतादानं विरुद्धगामुकम् ।
प्रतिरूपक्रियामानान्यत्वं वा स्तेयसश्रिता ॥ १ ॥

व्याख्या

"चोरने आज्ञा करवी, चोरीनु द्रव्य लेवु, राजाए निषेध करेल व्यापारादि आचरवुं, वस्तुमा तद्रूप हलकी चीजनो भेळ करवो अने कुडा तोल माप राखवा ए अदत्तादान विरमणव्रतना पाच अतिचार छे" चोरने आज्ञा करवी एटले चोरीना

क्षीभा तेमने प्रेरणा करवी- जेम के, केम हमणा व्यापार रहित बेसी रहा छो, जो तमारी पासे भातुं विगेरे काई न होय तो हु आपीश, अथवा तमारी लावेली वस्तुओनो जो कोई खरीद करनार नहीं मळे तो हु खरीद करीश एवा वचनथी तेमने उत्साहित करवा अथवा चोरीना साधन जेवा के कोश, गणशीओ विगेरे आपवा- इत्यादि प्रकारे तेने चोरीमा सहाय करवी ते आवी रीते वर्त्तनार माणसने पण नीतिमा चोर गण्यो छे. कह्यु छे के,

चोरश्चौरापको मन्त्री, भेदज्ञो काणकक्रयी ।
अन्नदस्थानदश्चेति, चौरः सप्तविध स्मृत ॥

"चोर, चोरने साधनो आपनार, चोर साथे विचार गोठवनार, चोरनो भेद जाणनार, चोरेली वस्तु खरीदनार, चोरने अन्न आपनार अने चोरने स्थान आपनार ए साते प्रकारना चोर कहेवाय छे " एमा पण व्रती एवी शंका करे के, मारे चोरी करवानो त्याग छे, काई चोरने प्रेराडी आपवानो त्याग नथी तेथी ते करवामा शो दोष छे, एवी शकाने लीधे व्रतभगमा सापेक्ष निरपेक्षपणु होवाथी ए प्रथम अविचार कहेवाय छे इति प्रथम अतीचार

हवे बीजा अतिचारमा चोरी लावेल कुकुमादि वस्तुनु मूल्य आपी ग्रहण करवु ते ते पण लोभना दोषथी ग्रहण करता अनुक्रमे तेना व्रतनो भग थाय तेमा व्रतधारी एवु धारे के, चोरी करवाथी व्रतनो भग छे पण हु तो व्यापार करुछु, काई चोरी करतो नथी तो तेमा शो दोष छे एवा परिणामे व्रतनी निरपेक्षताना अभावे व्रतनो भग थतो नथी तेथी ए बीजो अतिचार कहेवाय छे इति द्वितीय अतीचार

त्रीजा अतिचारमा राजानी आज्ञा विरुद्ध वर्त्तवु. जेम के, पोताना राजानी मनाई छता वेपारने माटे तेना शत्रु राजाना राज्यमा जवु, उपलक्षणथी राजाए निषिद्ध कर्या छता गुप्त रीते दात, लोहखड, पाषाण विगेरे वस्तुओ लाववी ते जो के मूळ चार प्रकारना अदत्तादानमा स्वामीनी आज्ञा वगर लेवु ते स्वाम्यदत्त कहेलु छे, अने ते आमा आवी जाय छे वळी ते चोर्यदडने योग्य पण थाय छे तेथी तेना व्रतनो भग थाय छे पण राज्य विरुद्ध वर्त्तनार व्रती एम धारे के, में वेपार कर्यो छे, काई चोरी करी नथी तेथी मने लोको 'आ चोर छे' एम कही शकशे नही एथी व्रतनु सापेक्षपणु होवाने लीधे ते त्रीजो अतिचार छे इति तृतीय अतीचार

हवे चोथा अतिचारमा प्रतिरूप वस्तु साथे भेळसेळ करवी ते जेम डागरमा पलजी भेळवे, घीमा चरबी अथवा तेल, केशरमा कसुबो इत्यादि ते चोथो १ गणाय छे इति चतुर्थ अतिचार.

हवे पांचमा अतिचारमा कूट तोलमान आवे छे एटले शेर, मण, खाडी विगेरे तोल अने माणु, पाली, हाथ गज विगेरे माप–तेमा न्यूनाधिक तोलमान माप राखी न्युनमापे आपे अने अधिक मापे ले, ते पाचमो अतिचार छे आ चोथा अने पाचमा अतिचारमा परने छेतरी परद्रव्यनु ग्रहण करवाथी व्रतनो भग थाय छे तथापि व्रती एम धारे के, खातरपाडीने चोरी करवी ते चोरी कहेवाय आतो वणिक कुलनी आजीविकानो व्यापार छे एवी रीते व्रतनी सापेक्षता रहे छे तेथी ए अतिचार छे एवी रीते त्रीजा व्रतना पाच अतिचार उत्तम श्रावके त्यजी देवा जोईए

अहीं जे कूटमान कह्युं, तेमा तो प्रगट रीते चोरी रहेली छे तेविषे नीतिकार लखे छे के, "थोडु लालनपालनथी, थोडु कळाथी, थोडुं मापथी, थोडु तोलथी अने थोडुं चोरीथी–ए प्रमाणे ग्रहण करता एवा धूर्त वणिको प्रत्यक्ष चोरज छे " एवी आ कृत्य श्रावकने करवु उचित नथी आ व्रत पाळवाथी व्यवहारनी पण शुद्धि थाय छे कह्युं छे के, " जेओने शुद्ध अंतःकरणथी परद्रव्य लेवानो नियम छे तेओनी पासे समृद्धि स्वयंवरा थई सामी आवे छे " गृहस्थे मेळवेलु अन्यायोपार्जित द्रव्य, एक वर्षने अते राजा, चोर, अग्नि के जल विगेरेथी जरूर नाश पामे छे, चिरकाळ रहेतु नथी तेमज ते पुण्यकार्यमा पण वपरातु नथी कह्युं छे के,

अन्यायोपार्जितं वित्त, दशवर्षाणि तिष्ठति।
प्राप्ते चैकादशे वर्षे, समूलं च विनश्यति ॥

अन्यायथी उपार्जन करेलु द्रव्य दश वर्ष सुधी रहे छे, ज्यारे अग्यारमु वर्ष प्राप्त थाय छे त्यारे समूलगु विनाश पामे छे ते उपर वचकश्रेष्ठीनु दृष्टात छे ते आ प्रमाणे–

वंचकश्रेष्ठीनी कथा

कोई नगरमा हेलाक नामे श्रेष्ठी हतो तेने हली नामे स्त्री अने चालक नामे पुत्र हतो, ते श्रेष्ठी मधुर भाषण, खोटा तोल मापनी रचना, नवी जुनी वस्तुओ एकठी करवी, रसपदार्थोमा सेळभेळ करवी, चोरीथी लावेल चीज वेचाण लेवी विगेरे पाप व्यवहारना प्रकारोथी गामना मुग्ध लोकोने छेतरी धनोपार्जन करतो हतो. जो के ते बीजानी वचना करतो हतो तथापि परमार्थथी तो ते पोताना आत्मानेज वचतो हतो कपटी पापी जनो मायानी रचनाथी जगतने वचे छे, पण तेओ खरी रीते पोतानेज वचे छे.

आ प्रमाणे हेलाकशेठे घणु द्रव्य मेळव्यु पण दरेक वर्षने अते अन्यायोपार्जीत होवाने लीधे चोर, अग्नि अने राजा विगेरेथी हराई जवा लाग्यु अनुक्रमे तेनो

पुत्र यौवन वयने प्राप्त थयो एटले कोई परगामना शुद्ध श्रावक श्रेष्टीनी पुत्री साथे तेने परणाव्यो पुत्रवधू शुद्ध श्राविका अने धर्मनी ज्ञाता हती ते शेठने घेर आवी. हेलाकशेठनी दुकान तेना घरनी नजीक हती ज्यारे कोई ग्राहक आवे त्यारे तेने आपवा तथा लेवामा पूर्वसंकेत करी राखेला नामथी पुत्रनी पास तोलना काटला मगावे ज्यारे लेवु होय त्यारे ते पाच पोष्कर मागे एटले पुत्र सवा शेरी आपे अने आपवु होय त्यारे त्रिपोष्कर मागे एटले पोणो शेर आपे आ संकेतनी वात धीमे धीमे लोकोमा जाहेर थवाथी लोकोए हेलाकश्रेष्टीनु नाम **वचकश्रेष्टी** एवु पाड्यु

एक वखते धर्मज्ञ पुत्रवधूए पोताना स्वामीने पुछ्यु के, तमारा पिता तमने बीजा नामथी केम बोलावे छे ? श्रेष्टीपुत्रे तेना उत्तरमा व्यापारसंबधी सर्व हकीकत पोतानी स्त्रीने निवेदन करी ते साभळी धर्मशील वधूए पोताना स्वसुर हेलाकश्रेष्टीने विज्ञप्ति करी के, ' हे तात ! आवा पाप व्यापारथी उपार्जन करेलुं द्रव्य धर्म कार्यमा अने शारीरीक उपभोगमा वपराशे नहीं तेमज ते घरमा पण रहेशे नहीं तेथी न्यायमार्गे द्रव्य उपार्जन करवु उत्तम छे श्रेष्टीए कह्यु के, जो साचा व्यवहारथी चालीए तो घरनो निर्वाह केम चाले ? कोई विश्वास करीने पैदा करवा आपे नही, वधूए कह्यु के "न्यायथी मेळवेलु धन अल्प होय तो पण ते व्यवहार शुद्ध होवाथी तेनावडे बीजुं घणु मळे अने ते घरमा पण रहे जेम सारा क्षेत्रमा वावेलु बीज, घणा फळवाळु होइ निःशकपणे भोगादिकनी प्राप्तिने माटे थाय छ कह्यु छे के. कूट माप तोल विगेरेथी जे धन उपार्जन कराय छ ते तपावेला पात्रपरना जळ बिंदुनी जेम नाश पामतु जोवामा आवतु नथी परतु नाश पामेज छे वळी अन्यायवडे मेळवेलु द्रव्य अशुद्ध, तेनाथी लावेलु अन्नादि अशुद्ध, ते अन्ननो आहार अशुद्ध, तेवडे शरीर अशुद्ध अने तेवा शरीरवडे करेलु कृत्य पण उखर भूमिमा वावेला बीजनी जेम सफल थतु नथी जो आ विषे प्रतीति न आवती होय तो छ मास सुधी कूट वेपारनी वृत्ति छोडी न्यायवृत्तिथी व्यापार करो एटले खबर पडशे " वधूना वचनथी श्रेष्टीए तेम कर्यु तो छ मासमा तेणे पाचशेर सुवर्ण उपार्जन कर्यु

सत्य व्यवहारथी लोको तेनोज विश्वास करीने तेने त्याथीज लेवा देवा लाग्या अने सर्वत्र तेनी कीर्त्ति प्रसार पामी शेठे ते सुवर्ण लावीने वधूने अर्पण कर्यु वधूए न्यायोपार्जित द्रव्यनी परिक्षा करवाने माटे ते सुवर्णनी एक पांच शेरी करावी पछी तेनी उपर चामडु मढावी पोताना सासराना नामनी मोहर करी त्रण दिवस सुधी चौटामा रखडती मुकी पण कोइए लीधी नहीं एक दिवस तेने उपाडीने एक जळाशयमा नाखी दीधी त्या एक मत्स्य तेने गळी गयो. ते मत्स्य मारे ईई जतानी कोई ढीमरनी जाळमा आव्यो तेने चीरता पाच शेरी

नीकळी तने अमुक तोलु जाणी ते माळी एज श्रेष्ठीनी दुकाने वेचवा लाव्यो श्रेष्ठीए तेनापर पोतानु नाम होवाथी थोडुं द्रव्य आपी तेनी पासेथी वेचाती लीधी पछी तेना परनी चामडु काढीने जोता पोताना सोनानी पांच शेरी जाणी तेने वधूना वचन उपर घणी प्रतीति आवी . पछी शुद्ध व्यवहारवडे तेणे घणुद्रव्य उपार्जन कर्युं, अने साते क्षेत्रमा अनेक प्रकारे वापर्युं. अनुक्रमे तेनो यश घणी मोटलाने प्राप्त थयो त्यार पछी सर्वे लोको ते हेला शेठना द्रव्यने शुद्ध मानी व्यापार माटे तेनुंज द्रव्य लेवा लाग्या वाहाणोमा पण निर्विघ्नताने माटे तेलु द्रव्य लईनेज मुसाफरी करवा लाग्या आथी तेना द्रव्यनी घणी वृद्धि थइ अने तेनु नाम पण मंगलिक गणाव्या लाग्यु अद्यापि वाहाण चलावती वखते खलासी लोको हेलासा, हेलासा एम कहे छे ए प्रमाणे ते हेला शेठनु पवित्र नाम अद्यापि जगत् प्रसिद्ध छे

आ प्रमाणे शुद्ध व्यवहार आलोकमा प्रतिष्ठानो हेतु छे अने परलोकमा पण महा सुखकारी थाय छे. एवी रीते परमार्थपणे न्यायज द्रव्योपार्जनना उपायभूत छे एम जाणवु शुद्धाशुद्ध व्यवहारना फळने बतावनार आ हेला श्रेष्ठीनुं दृष्टांत सर्वे भव्य प्राणीओए मनन करवा योग्य छे

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादस्य
वृत्तौ तृतीयस्तंभातर्गतशुद्धव्यवहारविषयेद्व्यशीतितम
प्रबंध. ॥ ८२ ॥

व्याख्यान ८३ मुं.

हवे उपर कहेलु व्रत न पालवाथी शुं फळ प्राप्त थाय ते कहेछे.

परस्व तस्करो गृण्हन्, वधबंधादि नेक्षते ।
लगुडं दुग्धपायीव, बिडाल उपरिस्थितम् ॥ १ ॥
व्याधश्वोवरमार्जारादिभ्यश्चौरोऽतिरिच्यते ।
निगृह्यते नृपतिभिर्यदसौ नेतरे पुन. ॥ २ ॥

व्याख्या

"परद्रव्यने ग्रहण करवा इच्छतो चोर, चोरीवडे प्राप्त थनारा वध बंधनादि देखतो नथी. जेम दुध पीवाने इच्छतो मार्जार पोतानी उपर उगामी रहेली लाक-

डीने जोतो नथी तेम पारधि, ढीमर अने मार्जार विगेरेथी पण चोरी करनार अधि
अपराधी छे, कारण के, चोरनो राजा निग्रह करे छे अने बीना पारधि विगेरे
निग्रह करतो नथी " आ उपर एक नीचे प्रमाणे दृष्टांत छे—

श्रेणिकना पिता प्रसेनजित राजाना राज्यमां राजगृहीनगरीने विषे लोहखुर
नामे एक चोर रहेतो हतो एक वखते तेणे द्युतक्रीडामा जितेलुं द्रव्य याचकोने
आपी दीधु पछी त्याथी जतां मार्ग क्षुधातुर थयो एटले पोताने घेर भोजन करवा
माटे जवानी इच्छा करी तेवामा राजाना महेलमाथी सरस रसोईनी सुगंध आवी,
एटले तत्काळ तेने विचार थयो के, मारी पासे अंजनविद्या छे, तेथी मारे शु अवश्य
छे, माटे अजनविद्याथी राजगृहमा जईने राजभोजन करु आवु विचारी ते अदृश्य थि
थाथी राजमहेलमा गयो अने राजानी साथे एक थाळमा बेसी तेमाथी भोजन करी
पोताने घेर गयो. पछी तो रसगृद्धि थवाथी एवी रीते प्रतिदिन करवा लाग्यो.
शास्त्रमा कह्यु छे के, " सर्व इन्द्रियोमा जिव्हा इन्द्रिय दुर्जय छे, कर्ममां मोहनी कर्म
दुर्जय छे, व्रतमा ब्रह्मचर्य व्रत दुष्कर छे अने त्रण गुप्तिओमा मनोगुप्ति पाळवी मुश्के
ल छे " घणा दिवस सुधी तेम चालवाथी ओछो आहार थवाने लीधे राजानु अंग
कृश थई गयु एक वखते मत्रीए राजाने पुछ्युं के, हे स्वामी, तमारु शरीर श्याम
केम छे? शु तमने अन्न उपर अरुचि थइ छे ? कारण के, "अन्न वगर शरीर, नेत्र
वगर मुख, न्याय वगर राज्य, लवणविना भोजन, धर्म विना जिवित अने च
विना निशा ए शोभता नथी " अथवा तमने कांई चिंता तो नथी ? कारण के, "शरी
रमा रहेली चिंता शरीरने बाळे छे, अने दुष्ट पिशाचिनी जेम नित्य रुधिर अने मां
सने बाळी नाखे छे " राजा बोल्यो के, हे मत्री ! मने मोटु आश्चर्य थाय छे, हु ह
मेशा थमणु त्रगणु जमु छु, पण कोई अजनसिद्ध पुरुष मारी साथे जमी जाय छे, तेथी
नारकीना जीवोनी जेम मारो उदराग्नि शात थतो नथी आ साभळी मत्रीए रसो
डाना स्थानमा चोतरफ आकडाना सुका पुष्पो वेर्या भोजन समये पेला चोरना
पगना आयातथी तेने खडखडता जोई ते विषे निश्चय थयो पछी बीजे दिवसे ते
रने दृढ अर्गला आपी वासी दीधा अने अदर प्रथमथी गुप्त राखेलो तीव्र धूमाडो
कर्यो धूम्रथी व्याकुल थयेला चोरना नेत्रमाथी अश्रुधारा चाली तेथी तेणे
करेलु सिद्धाजन धोवाई गयु एटले सर्वे ए तेने प्रत्यक्ष जोयो पछी तत्काळ तेने,
बाधीने राजापासे लई गया ते वखते चोरे चितव्यु के, अहा, दैवयोगे मारु तो
भोजन अने घर बने नष्ट पाम्यु तेविषे कहेवाय छे के " कोई गजेंद्र, ग्रीष्म ऋतुमां

घामार्त अने तृषातुर थयो तेथी एक पूर्ण सरोवरने जोई त्वराथी ते तरफ चाल्यो. परतु तट उपर थयेला कादवमा ते खुंची गयो, एटले दैवयोगे ते नीर अने तीर बनेथी भ्रष्ट थयो" वळी कह्यु छे के, "सर्पना डशेला पुरुषो, मणिमत्र अने औषधवडे स्वस्थ थयेला जोवामा आव्या छे पण दृष्टिविपसर्प जेवा दृष्टिमाविष वाळा एटले करडी नजरवाळा राजाओए डशेला पुरुषो फरीवार उठेला जोवामा आव्या नथी."

पछी राजानी आज्ञाथी सुभटोए तेचोरने नगरना जाहेर जाहेर भागोमा फेरवी शूलीए चडाव्यो पछी राजाना सुभटो गुप्तरीते संताई रहीने जोवा लाग्या के, हवे जे पुरुष आ चोरनी साथे वार्तांचत करे तेनी पासे सर्व नगरजननुं चोरेलुं द्रव्य छे एम जाणीने तेने त्या शोधवु तेवामा जिनदत्त नामे एक श्रेष्ठी ते मार्गे नीकळ्यो. तेणे चोरनुं आक्रदन साभळी चोर प्रत्ये कह्यु के, अरे चोर, पापरूपी वृक्षनुं आ भवमा आ वध बंधन विगेरे फळ तने प्राप्त थयु छे अने परलोकमा नरक गतिनी वेदनारूप फळ प्राप्त थशे केमके प्राणीए ऊपार्जन करेलुं कर्म अन्यथा थतु नथी. परंतु हवे अंतकाळे पण तुं अदत्तादान (चोरी) ना त्यागरूपव्रत अंगीकार कर्य ते साभळी चोरे कह्यु, अरे शेठ, मारा पग शियाल लाई गया छे, अने कागडाओए मस्तकने ठोली नाख्युं छे आ प्रमाणे मने पूर्वकर्मनु फल उदयमा आव्यु छे, हवे हुं शु करू ? परतु मने तृषा घणी लागी छे तेथी कृपा करी मने पाणी लावी आपो. श्रेष्ठी ते वात राजविरुद्ध जाणी मौन रह्यो. पुनः चोरे दीन आलापोवडे तेवीजरीते पाणीनी मागणी करी जेथी श्रेष्ठीए हिंमत लावीने कह्युं के, हे भद्र, तु तारा आखा भवमा करेला पापनी आलोचना कर्य. शेठना कहेवाथी चोरे पोताना आखा भवमां करेला पाप जणाव्या एटले जिनदत्ते चोरी प्रमुखना तेने पचखाण कराव्या, अने कह्यु के, "हे भद्र, एकत्व अने अन्यत्वभावना भाववाथी प्राणीना सर्व पाप क्षणार्द्धमा पण लय पामी जाय छे तेथी तु हवे ते भावना भाव्य सर्व जीवोने मैत्री भावे जो अने सर्व प्रकारनी आपत्तिमाथी ऊद्धार करनार नमस्कार महामंत्रनुं स्मरण कर्य हु जळ लेवाने जाउंछुं" चोरे पुछ्युं के, कृपानिधि ! आ पचखाणथी अने नमस्कारथी मारा महापाप जशे ? श्रेष्ठी बोल्या के-

कृत्वा पापसहस्राणि हत्वा जंतुशतानि च ।
अमु मत्र जपित्वा च तिर्यंचोपि दिवं गता ॥

"हजारो पाप करी, अने सैकडो जीवोनी हत्या करी, नवकार मंत्रने जपनारा तिर्यंचो पण स्वर्गे गया छे."

आ प्रमाणे तेने उपदेश करी जिनदत्त श्रेष्ठी जळ लेवाने गयो पछवाडे चोर समाधिथी मृत्यु पामी अन समयेज आयुष्य बाधी सोधर्म देवलोकमा देवता थयो. "अहो, सत्सगतिनु फळ केवु छे!" कह्यु छे के,–

महानुभावससर्ग कस्यनोन्नतिकारक ।
गगा प्रविष्ट रथ्याम्बु त्रिदशैरपि वद्यते ॥

"महानुभाव पुरुषनो ससर्ग कोनी उन्नति करतो नथी? गगामा भळेलु शेरीओनु जळ देवताओथी पण वदाय छे" जिनदत्त श्रेष्ठी जळ लईने आव्या, त्या तो तेने मृत्यु पामेलो जोयो परतु पोते राजविरुद्ध कर्यु छे एवु जाणी ते शक्रावतार चैत्यमा जईने कार्योत्सर्गे रह्यो सुभटोए सर्व वृत्तात राजाने जणाव्यु, एटले राजाए आज्ञा करी के, हे सुभटो, ए मुर्ख गाय जेवा पण कृत्ये वाघ जेवा श्रेष्ठीने चोरनी जेम विडबना करीने मारी नाखो सुभटोए तत्काळ श्रेष्ठीने राजानी आज्ञा जणावी, तथापि ते ध्यानथी चलित थयो नहीं पछी तेओ तेने अनेक प्रकारनी विडबना करवा लाग्या ते वखते पेलो 'लोहखुरदेव' भवप्रत्यय अवधिज्ञानवडे पोताना धर्मगुरुनी एवी अवस्था जोईने विचार करवा लाग्यो के,–

अक्षरस्यापि चैकस्य, पदार्थस्य पदस्य च ।
दातार विस्मरन् पापी, किपुनर्धर्मदेशिन ॥

"एक अक्षर, अर्धपद के पदमात्रने भणावनारा गुरुने जे भुली जाय ते पापी कहेवाय छे तो धर्मने बतावनारा गुरुने भूली जनार पापी कहेवाय तेमा तो शी नवाई?" आवु विचारी प्रतीहारनो वेष लई सत्वर त्या आव्यो अने दडाघातवडे सुभटोने मूर्छित कर्या गरुडा ने हकीकत सामळी राजा चतुरगसेना लईने त्या आव्यो देवे [illegible] पणा [illegible] गयु [illegible] "यथा गर्जतो [illegible]

वृत्तात कही सभळाव्यो राजाए कह्यु के साहित्य शास्त्रमा कह्युं छे, के, नारीएलना वृक्षो पोताने प्रथम पायेला थोडा जळने याद करीने पोताना मस्तकउपर भार वहन करता सता पोताना जिवीत पर्यंत माणसने अमृत जेवुं जळ आपे छे, तेज प्रमाणे साधुपुरुषो करेला उपकारने जिवितसुधी भुली जता नथी. पछी प्रसन्न थयेला देवे कह्यु के, तमे सर्वे मारा गुरूना चरणमा प्रणाम करो अने तेमना मुखथी नवकार मत्र तथा चोरी विगेरेना व्रतने ग्रहण करो सर्वेए तेम कर्यु अने जिनदत्त श्रेष्ठी मोटा घत्सववडे पोताने घेर आव्या लोको पण प्रत्यक्ष जैनधर्मनी प्रशसा करवा लाग्या

उपर प्रमाणे लोहखुर चोर लोढानी शूळीए परोवायो हतो, छता अल्प काळना पण नियमने धारण करी **जिनदत्त** श्रावकनी सहायथी आद्यविमानने विषे देवसमृद्धिने प्राप्त थयो

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य
वृत्तौ चोर्यव्रतविषये त्र्यशीतितम प्रबंधः॥ ८३ ॥

व्याख्यान ८४ मुं.

हवे ए त्रीजा व्रतनीज प्रशंसा करे छे.

अदत्तादाननैयम्य । ग्रहणैकरतो नरः ।
लक्ष्मीपुंज इवाप्नोति । भवद्वये महत्पदम् ॥ १ ॥

व्याख्या

"अदत्तादानना नियमने ग्रहण करवामा तत्पर एवो पुरुष **लक्ष्मीपुंज**नी जेम बन्ने भवने विषे महत्पदने पामे छे" अदत्तादान सामान्यपणे बे प्रकारनु छे सचित्त अने अचित्त **सचित्त** एटले मनुष्य, पशु विगेरे अने **अचित्त** एटले आभूषणादि ते बन्नेना ग्रहणनो नियम एटले विरति–विराम पामवु ते आ विषे **लक्ष्मीपुंज**नो प्रबंध छे, ते आ प्रमाणे

लक्ष्मीपुंजनी कथा.

"हस्तिनागपुरने विषे **सुधर्मा** नामे वणिक अने **धन्या** नामे तेनी स्त्री, बन्ने दारिद्रपणाना दुःखथी काळ निर्गमन करता हता एकदा रात्रीए स्वप्नमा धन्याए

पद्म-द्दमा कमळने विषे रहेला लक्ष्मीदेवीने जोया प्रात थाले ते इकीकत पोताना पतिने निवेदन करी ते घणो खुशी थयो तेणे कह्यु के, हवे आपणु दारिद्र दूर थशे. ते समय कोई देव स्वर्गमाथी चवी धन्यानी कुक्षिमा अवतर्यो ते वखते तेना पूर्वभवना मित्रदेवोए तेना घरमा सुवर्ण विगेरेनी वृद्धि करी पूर्ण मासे पुत्रनो प्रसव थयो. स्वजनोए मळी तेनु लक्ष्मीपुज एवु यथार्थ नाम पाड्यु ते बालक शुक्लपक्षना चन्द्रनी ज्योत्स्नानी जेम वृद्धि पाम्यो अनुक्रमे ते स्वयवरमा मोटा धनाढ्यनी आठ कन्याओ परण्यो ते रमणीओनी साथे स्वगृहमा सुखानुभव करता एक दिवस त्या कोई देवे प्रगट थईने तेने कह्यु के, हे मित्र! तारा पूर्वभवनो वृत्तात साभळ.—

पूर्वे मणिपुरमा गुणधर नामे तु सार्थवाह हतो एक वखते ते गुणधरे आ प्रमाणे एक मुनिनी वाणी साभळी के, "प्राणीओने द्रव्यनु हरण मरणथी पण विशेष दु.खदायक थाय छे, तेथी सुकृति पुरुषोए चौर्य त्यागनु व्रत अवश्य अगीकार करवु." वळी लौकिक शास्त्रमा पण कहेल छेके, "कुडी साक्षी पूरनार, मित्रनो द्रोह करनार, कृतघ्नी अने चोरी करनार, ए चार कर्मचांडाल कहेवाय छे, अने पाचमो जाति चाडाल छे" मनुए जमीनपर जळ छाटती कोई चडालणीने पूछ्यु के, "मदिरा मासनी भक्षण करनारी हे चडाळी! तारा एक हाथमा तो मनुष्यनी खोपरी छे, ते छता जमणा हाथवडे जमीनपर जळ केम छाटे छे?" चडाळी उत्तर आपे छे.—

मित्रद्रोही कृतघ्नश्च । स्तेयी विश्वासघातको ।
कदाचिच्चलितो मार्गे । तेनेय क्षिप्यते छटा ॥

"मित्रनो द्रोह करनार, कृतघ्नी, चोरी करनार अने विश्वासघाती कोई आ मार्गे चाल्यो होय (तो तेथी अपवित्र थयेली जमीनने पवित्र करवा माटे) तेवु धारीने आ जळनो छंटकाव करु छु" वळी—

कूटसाक्षी मृषावादी । पक्षपाती झगट्टके ।
कदाचिच्चलितो मार्गे । तेनेय क्षिप्यते छटा ॥ २ ॥

"खोटी साक्षी पूरनार, असत्य बोलनार अने झगडामा पक्षपात करनार आ मार्गे चाल्यो होय तेवु धारी जळनो छटकाव करु छु" "अग्निनी शिखानो स्पर्श करवो सारो, सर्पना मुखनु चुंबन करवु सारु अने हालाहल झेरने चाटवु सारु, पण परद्रव्य हरण करवु ते सारु नहीं" आ प्रमाणे देशना साभळी गुणधर अदत्तादानथी पाम्यो एकदा विशेष धनना लाभने अर्थे ते गुणधरसार्थवाह घणो कइ देशातरे चाल्यो मार्गमा वेगवाळा घोडाने लीधे ते सार्थभ्रष्ट थई महा

अरण्यमां नीकळी गयो. एकाकी अश्वपर बेसीने चाल्या जता लक्ष मूल्यवाळी एक सुवर्णमाळा पृथ्वीपर पडेली तेना जोवामां आवी परंतु ते लेवाथी अंगीकार करेला त्रीजा व्रतनो भंग थशे एवा भयथी तेणे ते लीधी नहीं त्यार्थी आगळ चालतां अश्वनी खरीओथी उखडी गयेली भूमिमां द्रव्यथी पूर्ण एवो एक ताम्रकुंभ जोवामां आव्यो तेने पण कांकरा तुल्य मानी ते आगळ चाल्यो. त्यां अकस्मात् अश्व मूर्छा खाईने भूमिपर पड्यो ते जोईने तेणे मनमा विचार्युं के, जो कोई आ अश्वने सज्ज करे तो हुं तेने मारुं सर्व द्रव्य आपुं. आवुं चिंतवी पोते तृपातुर थवाथी जल शोधवाने आगळ चाल्यो तेवामा एक वृक्ष साथे बांधेलो पाणीनो पोटलीओ अने पासे पाजरामां रहेलो पोपट तेना जोवामां आव्या पाजरामा रहेला शुक पक्षीए तेने कह्यु के, हे सुभग! तुं आ पोटलीआमाथी जळ पी, हु तेना स्वामीने कहीश नहीं सार्थपति बोल्यो के, कदि तृषाने लीधे प्राण चाल्या जशे तो ते अनेक भवने विषे पाछा प्राप्त थशे पण हु परत्नुं अदत्त तो ग्रहण करीश नहीं कहुं छे के, "हास्यथी, रोषथी के छळथी पण जे प्राणी अदत्त ग्रहण करे ते तेनुं फळ प्राप्त करे छे" जेम कृष्ण वासुदेवनी स्त्री रुक्मिणीए वनमा मोरना ईडाने लइने हाथमा गोपवी राख्युं हतु, तेने शोधवाने मयूरी सर्वत्र भमती जोई सोळ घडी सुधी राखीने पछी तेणे पाछुं मुक्युं, पण ते ईडु हाथमा लागेला अलताना रंगथी रातु थयेलु जोई मयूरीए घणीवार सुधी सेव्युं नही तेवामा वर्षाद आव्यो अने तेना जळथी ज्यारे ते धोवाई गयु त्यारे तेने सेव्युं. आ कर्मथी रुक्मिणीने सोळ वर्ष सुधी पुत्रनो वियोग थयो. आ प्रमाणे हास्यथी पण अदत्तादान लेवावडे तेनु कष्टकारी फल प्राप्त थयु आ दृष्टांत हास्य उपर छे अने रोषथी अदत्तादान लेवाना संबंधमा देवानंदा अने त्रिशलानु दृष्टांत छे, तेथी हे शुक! हु स्वाम्यदत्तने ग्रहण करतो नथी.

आवी व्रत पाळवाने विषे तेनी दृढता जोईने शुक पक्षी तुष्टमान थयो, अने तत्काळ पोतानुं स्वरूप फेरवी दिव्यरूप करीने बोल्यो के—हुं सूर्य नामे विद्याधर छुं, तमे गुरु पासे त्रीजुं व्रत लीधु तेथी विस्मय पामी द्रव्यनिधि देखाडवा विगेरेथी मे तमारी परीक्षा करी, पण तमे तमारा लीधेला व्रतमा दृढ रह्या आ प्रमाणे कही तेणे तेनी पासे घणुं धन मुक्युं सार्थ पति बोल्यो के—जे द्रव्य में शुद्ध व्यवहारवडे उपार्जन कर्युं होय तेज मारा सुखने अर्थे थाय, आ तमारुं धन मारे शा कामनु, ते हुं लेवानो नथी परतु मारुं सर्व धन तमे ग्रहण करो, कारणके प्रथममें धारणा करी हती के—जे मारा अश्वने जीवाडशे तेने हु मारुं धन आपीश तेथी आ मारुं धन ते तमारुंज छे विद्याधर बोल्यो के, में आ चधुं मायाथी बताव्युं हतुं तो तमे ते देवाने माटे धार्युं ते धन माराथी केम

लेवाय, माटे हे सार्थवाह! आपण बन्नेनु द्रव्य कोई शुभ स्थाने वापरी नाखवु सार्थेशे कह्यु के, तेवु स्थान तो धर्मज छे, तेथी आपणे जीर्णोद्धारादि कार्यमा वापरीने आ द्रव्यने कृतार्थ करीए पछी ते बन्ने जणाए तेम कर्यु सार्थवाह सार्थनी साथे पोताने घेर आव्यो अनुक्रमे मुनिधर्मने स्वीकारी आयुष्य पूर्ण थता मृत्यु पामीने तु लक्ष्मीपुज थयो छु, अने सूर्य विद्याधर ते हु व्यतर देव थयो छु तारा महिमाथी अने भाग्यथी प्रेराएलो हु तारा गर्भ दिवसथी माडीने आज दिन सुधी रत्नादिकनी वृद्धि करु छु

आ प्रमाणेनी हकीकत साभळताज लक्ष्मीपुजने जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयु अनुक्रमे तेणे दीक्षा ग्रहण करी अने मृत्युपामीने अच्युत देवलोकमा गयो त्याथी च्यवी मनुष्यपणु प्राप्त करी शिवसुखने सपादन करतो हवो

उपरनु दृष्टात साभळी जे प्राणी स्थिरपणाथी अदत्तादाननो नियम ग्रहण करे छे तेने धन तथा सुवर्णनी उत्तम समृद्धि प्राप्त थाय छे ते सार्थवाह पण परधन-नो त्याग करवाना नियमथी देवताओने पूजवा योग्य थयो हतो तेथी हे भव्यो! आ व्रत ग्रहण करवाने प्रयत्न करो

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहरव्यायामुपदेशप्रासाद ग्रथस्य वृत्तौ तृतीयव्रतविषये चतुरशीतितम. प्रबध॰ ॥ ८४ ॥

व्याख्यान ८५ मुं.

हवे स्वदारसतोष नामे चोथु अणुव्रत कहेछे.

सतोष स्वेषु दारेषु त्यागश्चापरयोषिताम् ।
गृहस्थाना प्रथयति चतुर्थं तदणुव्रतम् ॥ १ ॥

व्याख्या

"पोतानी विवाहित स्त्रीमा सतोष अने परस्त्रीनो त्याग ए गृहस्थने चोथु अणुव्रत कहेवाय छे" गृहस्थाए पोतानी विवाहित स्त्रीमाज सतोष करवो बीजानी एटले पोताथी जुदा जे मनुष्य, देव, अने तिर्यंच तेनी स्त्रीओनो तेमज ... सग्रहीत अने विधवास्त्रीओनो पण त्याग करवो जो के अपरिगहित ... अने तिर्यंचनी स्त्रीओ कोईए ग्रहण करेली नथी तेमज विवाहित नथी

तथापि तेओ वेश्यातुल्य तेमज परजातिने भोग्य होवाथी परस्त्री कहेवाय तेथी तेनो त्याग करवो तेज योग्य छे जे स्वदारसंतोषी छे तेने तो बधी परस्त्रीओज छे दार शब्दथी उपलक्षणवडे स्त्रीओए पण पोताना पति शिवाय बीजा सर्व पुरुषोने वर्जी देवा ए भावार्थ जाणवो गृहस्थोने माटे आ चोथु अणुव्रत श्रीजिनेश्वर भगवंते कहेलु छे

मैथुन बे प्रकारनु छे सूक्ष्म अने स्थुल कामना उदयथी जे इंद्रियोनो जरा विकार ते सूक्ष्म अने मन वचन, कायाथी औदारिक देहधारी स्त्रीसाथे जे संभोग करवो ते स्थूल अथवा मैथुनत्यागरुप ब्रह्मचर्य बे प्रकारनु छे सर्वथी अने देशथी तेमा सर्वथी विरति स्वीकारवाने अशक्त एवा उपासके (श्रावक) देशथी आ व्रत ग्रहण करवु आ व्रतविषे एक श्लोक आ प्रमाणे छे " अहो, ब्रह्मचर्यव्रत केवु उत्तम छे के जे मुक्तिनु कारण कहेवाय छे वळी ते **नागिल**ने विपत्तिनु विनाशक पण थयु हतु " अत्र कथा

नागिलनी कथा.

भोजपुर नामना नगरना सर्वज्ञ धर्ममा तत्पर **लक्ष्मण** नामे एक वणिक हतो तेने नवतत्वने जाणनारी **नंदा** नामे एक पुत्री हती एक वखते वरने माटे शोध करता पिताने तेणीए आ प्रमाणे जणाव्यु के " हे पिताजी ! जे पुरुष काजळ वगरनो, वाटथी रहित, तेलना व्यय विनानो अने चचळपणा रहित दीवाने धारण करे ते मारो पति थाओ " पुत्रीनु आ वचन साभळी तेनो दुष्कर अभिग्रह जाणीने चिंतातुर थयेला लक्ष्मण शेठे ते वार्ता नगरमा उद्घोषणाथी जाहेर करी आ खबर **नागिल** नामना एक जुगारे साभळी एटले कोई यक्षनी सहायथी तेणे तेवो दीपक कराव्यो. ते नजरे जोई श्रेष्ठी हर्ष पाम्यो अने पोतानी पुत्री नंदा ते नागिलने परणावी नंदा पोताना पतिने व्यसनासक्त जाणी घणी कचवावा लागी, तथापि नागिले ते व्यसन छोड्यु नही तेथी हमेशा द्रव्यनो व्यय थवा लाग्यो लक्ष्मणशेठ पुत्रीना स्नेहथी तेने द्रव्य पूरतो हतो अने नंदा पतिनी साथे मन विना पण निरंतर परिचय राखती हती एक वखते नागिलना मनमा एवो विचार थयो के, अहो, आ स्त्रीनु केवु गांभीर्य छे के जे हु मोटो अपराधी छता मारी उपर कोप करती नथी

अन्यदा नागिले कोई ज्ञानी मुनिने भक्तिपूर्वक पुछ्यु के, हे महामुनि, आ मारी प्रिया शुद्ध आशयवाळी छता पण मारी उपर मन धरती नथी तेनु शु कारण? मुनिए ते नागिलने योग्य जाणी तेनी पासे अवश्य दीपकनु स्वरुप आ प्रमाणे कह्यु–

तारी स्त्रीनी एवी इच्छा हती के " जे पुरुषना अंतःकरणमां मायारूप काजल न होय, जेमा नवतत्व विषे अस्थिरतारूप वाट न होय, जेमा स्नेहना भगरूप तेलना व्यय न होय अने जेमा समकितना खडनरूप कप (चचळता) न होय तेवा विवेक रूपी दीपकने जे धारण करतो होय ते मारो पति थाओ " आ प्रमाणे दीपना मिषथी ते स्त्रीए जे अर्थ धार्यो हतो, ते कोई जाणी शक्युं नहीं अने तें तो धूर्त पणाथी यक्षने आराधीने कृत्रिम बाह्य दीपक बताव्यो एटले श्रेष्ठीए पोतानी पुत्री तने आपी हवे तु के जे महा व्यसनी छे तेनी उपर शीलादिगुणे युक्त एवी ए तारी स्त्रीनु मन लागतु नथी तेथी जो तु मतने अगीकार करीश तो तारु इच्छित पूर्ण थश

नागिले पुछ्यु, भगवान् ! सर्व धर्ममा कयो धर्म श्रेष्ठ छे ? मुनि बोल्या- हे भद्र ! श्रीजिनेंद्रप्रभुए पोताना सुगधवडे त्रण भुवनने सुगधमय करनार सम कितपूर्वक शील धर्मने सर्वधर्ममा श्रेष्ठ कहेलो छे ते विषे शास्त्रमा कह्यु छे के, " जे पुरुषे पोताना शीलरूप कपूरना सुगधवडे समस्त भुवनने सुगधी करेलु छे तेवा पुरुषने वारवार नमीए छीए " वळी कह्यु छे के, " क्षणवार क्षणवार भावना भाववी, अमुक वखत दान देवु अने अमुक तपस्या करवी ते स्वल्प काळी होवाथी सुकर छे, पण यावज्जिवित सुधी शील पाळवु ते दुष्कर छे " " नारद सर्व ठेकाणे क्लेश करावनार, सर्व जननो विध्वस करनार अने सावद्य योगमा तत्पर एवो छता जे सिद्धिने पामे छे ते निश्चे करीने शीलनुज माहात्म्य छे " इत्यादि गुरुवाक्य साभळी नागिल प्रतिबोध पाम्यो , अने तत्काल समकित, शील अने विवेकरूप दीपकने स्वीकारी ते दिवसथी ते श्रावक धर्मने आचरवा लाग्यो

एक वखते नदाए कह्यु के, हे स्वामी ! तमे बहु सारू कर्यु के आत्माने विवेक मत्ये पमाडयो शास्त्रमा कहेल छे के, " जिनेश्वरनी पूजा, मुनिने दान, साधर्मीनुं वात्सल्य, शीलपालन अने परोपकार ते विवेकरूपी वृक्षना पल्लवो छे " नागिल बोल्यो-प्रिया ! सर्वने आत्माना हितने अर्थे विवेकवडे धर्म करवानो छे. विवेकरूप अकुश विनानो मनुष्य सर्वदा दु खी होय छे जेवो मुर्ख बकराना युथना स्वामी (भरवाड)नी जेम हमेशा हसतो होय तो पण तेनु हसवापणु काई कामनु नथी "

आ प्रमाणे साभळी नदा घणो हर्ष पामी अने भावथी तेनी सेवा करवा लागी अन्यदा ते पिताने घेर गई हती अने नागिल एकलो चद्रनी ज्योत्स्नामा सुतो हतो, तेवामा कोई पतिवियोगी विद्याधरनी पुत्रीए तेने जोयो तेथी तत्काल कामातुर थई त्या आवीने तेणे कह्यु के, " हे महापुरुष ! जो मने स्त्रीपणे स्त्रीकारशो तो हु तमने अपूर्व विद्या आपीश, आ मारू लावण्य जुवो, मारा वचनने अन्यथा करशो

नहीं " आ प्रमाणे कही शरीरे ध्रुजती ते बाळा नागिलना चरणमां पडी एटले नागिले जाणे अग्निथी बळ्यो होय तेम पोताना पगने संकोची दीधा, एटले ते बाळा एक लोढानो अग्निमय रक्त गोळो विकुर्वीने बोली के, अरे अधम ! मने भज- नहींतो हु तने भस्मीभूत करी नाखीश ते सांभळी नागील निर्भयपणे विचार वा लाग्यो के " दश अवस्थारूप होवाथी दशमस्तकवाळा रावणनी जेवो काम- देवरूप राक्षस के जे देवदानवोथी पण दुर्जय छे तेपण शीलरूप अस्त्रथी साध्य थाय छे " आम विचार करे छे तेवामा सूत्कार शब्द करती ते बाळाए आज्वल्यमान लोढानो गोळो तेना मस्तक उपर नाख्यो ते वखते नागिले नमस्कार मत्रनु स्मरण कर्युं एटले ते गोळो खड खड चूर्ण थई गयो. एटले ते बाळा लज्जाथी अदृश्य थई क्षणवारमा नंदानु रुप लईने एक दासीए उघाडेला द्वारमाथी त्यां आवी अने मधुर वाणीवडे बोली के-हे स्वामी, मने तमारा विना पिताने घेर गम्यु नहीं तेथी रात्री छता अहीं आवती रही तेने जोई नागिल विचारमा पडया के, नदा शियळ सबधी स्वपतिना संबंधमा पण संतोषवाळी छे, तेथी तेनी आवी चेष्टा होय नहीं आनु रुप तो तेवु छे पण परिणाम तेवा जणाता नथी, तेथी एनी परिक्षा कर्या विना विश्वास करवो योग्य नथी आम विचारी नागिले कह्यु के, हे प्रिये[1] जो तु खरेखरी नंदा होय तो मारी समीप अस्खलितपणे चाली आव्य. ते सांभळी ते खेचरी जेवी तेनी सामी चाली तेवीज मार्गमा स्खलित थई गई धर्मना महिमाथी नागीले तेनु सर्व कपट जाणी लीधुं पछी विचार्यु के, कदि बीजाना कपटथी आवी रीते शीलनो भग पण थाय, माटे सर्व विरतिपणु अंगीकार करवु तेज योग्य छे आवु धारी तेणे तत्काळ केशनो लोच कर्यो अने पेला यक्षदीपने कह्यु के, तु हवे तारेस्थाने जा यक्षे कह्यु के, हु यावज्जीवित तारी सेवा करीश मारा तेजथी तमने उजेही नहीं पडे पछी सूर्यनो उदय थता नागिले नंदानी साथे गुरु पासे जई व्रत ग्रहण कर्यु अने यक्षदीपनी साथे आश्चर्य सहित पृथ्वीपर विहार करी, सयम पाळी, ते दपती हरिवर्ष क्षेत्रने विषे युगलिआ थया. त्याथी देवता थई पुन नरभवने पामी मोक्षने प्राप्त थया छे

" आ नागिले द्रव्यदीपथी शुभ एवा भावदीपने चिंतव्यो अने स्वदारासंतोष व्रतमा दृढ प्रतिज्ञा राखी तो ते विद्याधरीथी पण कपायमान थयो नहीं " माटे सर्व प्राणीए स्वदारासंतोषव्रत दृढपणे धारण करवुं

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादस्य
वृतौ चतुर्थव्रतविषये पचाशीतितम. प्रबंधः ॥ ८५ ॥

---

१ मुनिने दीपकनी उजेही पडे तेस्थान वर्ज्य छे तेथी यक्षे आ प्रमाणे कह्यु छे.

व्याख्यान ८६ मुं.

पुन' ए व्रतनोज प्रशसा करे छे

य स्वदारेषु सतुष्ट, परदारपराङ्मुख ।
स गृही ब्रह्मचारित्वाद्यतिकल्प प्रकल्पते ॥ १ ॥

व्याख्या

" जे मनुष्य पोतानी विवाहित स्त्रीमा सतुष्ट थई परस्त्रीथी विमुख रहे छे, ते गृहस्थ छता पण ब्रह्मचारीपणाथी यति समान कहेवाय छे " आ विषे नीचे प्रमाणे प्रबध छे श्रीपुर नगरमा कुमार अने देवचद्र नामे बे राजकुमार बधु हता एक वखते तेओ धर्म गुरुनी वाणी साभळवाने माटे उद्यानमा गया त्या गुरुए देशनामा कह्यु के, " कोई मनुष्य कोटी सोनैयानु दान दे अथवा श्रीवीत रागनो कचनमय प्रासाद रचावे तेने तेटलु पुन्य न थाय के जेटलु ब्रह्मचर्यधारी पुरुषने थाय छे " केटलाएक प्राणी शीलवतीनी जेम दुखमा पण पोतानु शीलव्रत छोडता नथी ते कथा आ प्रमाणे छे

शीलवतीनी कथा

लक्ष्मीपुर नगरमा समुद्रदत्त नामे श्रेष्टी हतो ते पोतानी शीलवती नामनी प्रियाने घेर मुकी सोमभूति नामना एक ब्राह्मणनी साथे परदेशमा गयो विप्र तो केटलाएक दिवस रही श्रेष्टीनो सदेशपत्र लई पोताने घेर पाछो आव्यो. आ खबर पतप्रमशीलवती पोताना पतिए मोकले ल सदेशपत्र लेवाने सोमभूतिने घेर गई विप्र ते सुदर स्त्रीने जोईने कामातुर थयो, तेथी बोल्यो के, हे कृशादरी ! प्रथम मारी साथे क्रीडा करे तो पछी तारा पतिना सदेशपत्र आपु ते चतुर स्त्री विचारीने बोली के, हे भद्र ' रात्रीना पेहेला पोहोरे तमारे मारे घेर आवव आ प्रमाणे कहीने ते सेनापति पासे आवी अने कह्यु के, हे देव, सामभूति मारा पतिनो सदेशपत्र लाव्यो छे, पण मने आपतो नथी ते साभळी अने तनु स्वरूप जोता मोह पामी ते बोल्यो के, हे सुन्दरी ' प्रथम हु कहु ते कबुल करो तो पछी तमने ते पत्र अपावु मतभगना भयथी तेने बीजे पोहोरे पोताने घेर आववानु कही ते मत्रीपासे ई तेनी पासे फर्याद करता तेणे पण मोह पामी उपर प्रमाणे मागणी करी एटले त्रीजे पोहोरे घेरे आववानु कही ते राजा पासे गई राजाए पण तेवीज प्रार्थना करी

एटले तेने चोथा पोहोरे आववानु कह्यु पछी घेर आवी पोतानी सासुनी साथे संकेत कर्यो के, तमारे मने चोथे पोहोरे बोलाववी आ प्रमाणे संकेत करी ते पोताना एकांतवासमां तैयार थईने रही पहेले पोहोरे पेलो ब्राह्मण आव्यो तेनी साथे स्नानपान विगेरेमाज पेहेलो प्रहर निर्गमन कर्यो, तेवामा करेला संकेत प्रमाणे सेनापति आव्यो तेनो शब्द सांभळताज ब्राह्मण भयथी कपवा लाग्यो एटले तेने एक मोटी पेटीना खानामा नाख्यो. एवी रीते सेनापति, मंत्री अने राजाने पण पेटीना जुदा जुदा खानामा पूर्या. आ प्रमाणे चारेने पूरी प्रातःकाले रुदन करवा लागी एटले तेना कुटुंबीओए आवीने पुछ्युं के, भद्रे, केम रुदन करे छे? ते बोली के, मारा स्वामीनी दुःखवार्त्ता सांभळीने रुदन करुछु. ते सांभळी तेना सगांओ आ शेठ अपुत्र मरण पामेलो होवाथी तेना खबर आपवा-माटे राजा, मंत्री, अने सेनापतिनी पासे गया, पण तेओ तो तेमने स्थाने मळ्या नहीं एटले तेओए राजपुत्र पासे जईने विज्ञप्ति करी के, हे कुमार! समुद्रदत्त श्रेष्ठी परदेशमा अपुत्र मृत्यु पाम्या छे माटे तेनी समृद्धि आप ग्रहण करो कुमार तेने घेर गयो तो घरमा बीजु तो काई जोयु नहीं मात्र एक मोटी पेटी तेना जोवामा आवी एटले ते राजभुवनमा लई जई उघडावी तो तेमाथी विप्र विगेरे चारे जण लज्जा पामतासता बहार नीकळ्या राजाए ब्राह्मण, सेनापति अने मंत्री त्रणेने देशपार कर्या अने शीलवतीनो सारी रीते सत्कार करी तेनी घणी प्रशंसा करी

आ प्रमाणे गुरुपासे धर्म सांभळीने कुमारे स्वदारासंतोष व्रत ग्रहण कर्यु देवचंद्रे दीक्षा ग्रहण करी शुद्ध आहार ग्रहणने करतो हतो ते महा तपस्वी थयो.

एक वखते देवचंद्रमुनि विहार करता करता श्रीपुरनी नजिकना एक देवालयमा आवीने रह्या ते सांभळी कुमारचंद्र राजा तेमने वांदवा गयो अने पाछो आव्यो. ते खबर जाणी राणीए एवा अभिग्रह कर्यो के, "काले सवारे देवचंद्रयतिने वांदा पछी भोजन करीश" प्रभाते मुनिने वंदन करवा नीकळी त्या वचमा नदीए पूर आवेलु हतु अने उपर जल वृष्टि पण थती हती तेथी राणी स्खलित थईने नदीने कांठेज उभी रही एटले राजाए तेने बोलावीने कह्यु के, हे प्रिया! तमे नदीने एम कहो के, हे देवी नदी! जे दिवसे मारा दीयरे व्रत लीधु ते दिवसथी माडीने जो मारा पति खरेखरी रीते ब्रह्मचर्य व्रतने धारणने करी रह्या होय तो मने मार्ग आपो ते सांभळी राणीए चिंतव्यु के, मारा पति आम कहे छे, पण तेना ब्रह्मचर्यनी वात हु शु नथी जाणती! तोपण ठीक छे, जे हशे ते त्या जणाशे, माटे हमणा तो पतिनु वचन स्वीकारु; केमके जो पतिना वचनमा शंका लावु तो मारु पवित्र खंडित थाय ते विषे कह्यु छे के,

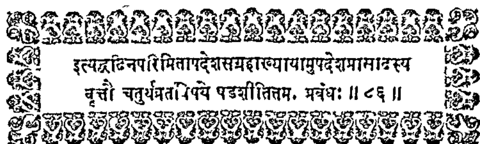
सती पत्यु प्रभोः पत्ती गुरो शिष्यः पितु सुत ।
आदेशे सशय कुर्वन् खड्यत्यात्मनो व्रत ॥

"जो सती स्त्री पतिना वाक्यमा, सेवक राजाना वाक्यमा, शिष्य गुरुना वा क्यमा, अने पुत्र पिताना वाक्यमा शका लावे तो तेओ पोताना व्रतने खडित करे छ" आवु चितवीने ते नदीनी पासे गई अने विनयथी पोताना पतिनु वाक्य कहु एटले तत्काल नदीए मार्ग आप्यो ते मार्गे नदी उतरी सामे काठेना देवालयमा जइ पोताना दीयर मुनि पासेथी धर्म साभळ्यो मुनिए पुछ्यु, तमने नदीए शी रीते मार्ग आप्यो? देवीए जे बन्यु हतु ते यथार्थ कही सभळाव्यु, एटले मुनि बोल्या के, भद्रे! साभळो, मारा सहोदर बधु पण मारी साथेज व्रत लेवाने इच्छता हता पण लोकोना अनुग्रहने माटे तेमणे राज्यनो स्वीकार कर्यो तेओ व्यवहारथी जो के राज्यनो अने इद्रीयोना भोगनो अनुभव करे छे, तथापि ते निश्चयथी ब्रह्मचारीज छे कादवमा कमळनी जेम गृहवासमा रहेता एवा पण ते राजानु मन निर्लेप होवाथी तेने विषे ब्रह्मचारीपणु घटे छे पछी ते राणीए अभिग्रह पूरो थवाथी वनना एक भागमा जई साथे लावेला शुद्ध आहारवडे पोताना दीयरने प्रतिलाभित कर्या अने पछी पोते पण भोजन कर्यु पछी ज्यारे तेनी जवानी इच्छा थइ एटले चालती वखते देवीए मुनिने पुछ्यु के, मारे नदी शी रीते उतरवी? मुनिए कह्यु के, तमे नदीनी आ प्रमाणे प्रार्थना करो के, हे नदीदेवी! जो आ मुनि व्रत ग्रहण कर्यु त्यारथी सदा उपवासी रहीने विचरता होय तो मने मार्ग आपो आथी विस्मय पामी राणी नदीने तीरे गइ, अने मुनिनु वाक्य सभळावताज नदीए मार्ग दीधो ते मार्गे नदी उतरीने ते पोताने घेर आवी विस्मय पामेली राणीए राजाने ए वृत्तात जणावी पुछ्यु के, हे स्वामी! आ-जेज में तमारा बधु मुनिने पारणु कराव्यु ते छता तेओ उपवासी केम कहेवाय? राजा बोल्या—देवी! साभळो, ते विषे शास्त्रमा कह्यु छे के, "साधु निरवद्य आहार करता होवाथी नित्य उपवासी छे, मात्र उत्तर गुणनी वृद्धि करवाने माटे तेओ शुद्ध आहार ले छे तथापि ते उपवासीज छे" वळी बीजे पण कह्यु छे के,

अकृताकारित शुद्धमाहार धर्महेतवे ।
अश्नतोपि मुनेर्नित्योपवासफलमुच्यते ॥

"नहीं करेलो अने नहीं करावेलो एवो शुद्ध आहार मुनि, चारित्र धर्मना प्रतिपालनने माटे वापरे छे, तेथी तेने नित्य उपवासनु फळ प्राप्त थाय छे." इत्यादि वचनोथी पोताना भर्त्ता अने दीयरनु माहात्म्य जाणी राणीए मन कायावडे शीलादि धर्म स्वीकार्यो

उपर प्रमाणे शीलव्रतना माहात्म्यथी जेम नदीए राजानी प्रियाने मार्ग आप्यो, तेम जे प्राणी ते व्रतने मनमा धारण करे छे, तेने कर्मरूप समुद्र अक्षर एवा शिव मार्गने आपे छे



इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादस्य वृत्तौ चतुर्थव्रतविषये षडशीतितम. प्रबंधः ॥ ८६ ॥

व्याख्यान ८७ मुं.

आ चोथा व्रतमां पण जे वर्जवा योग्य पाच अतिचार छे ते कहे छे.

इत्वरात्तागमोऽनात्तागति· परविवाहनम् ।
मदनात्याग्रहोऽनंगक्रीडा च ब्रह्मणि स्मृता ॥ १ ॥

व्याख्या

"थोडा काळ माटे कोइए राखेली वेश्यानो संगम, कोइए नहीं ग्रहण करेली एवी वेश्या स्त्रीनो सगम, पारका विवाहनु कराववु, काम भोगमा तीव्र अनुराग अने अनग क्रीडा ए पाच ब्रह्मचर्य व्रतमा अतिचार छे तेने त्यजी देवा "

इत्वरा एटले प्रत्येक पुरुष पासे जनारी वेश्याने कोइए अमुक काळ माटे पोतानी करी राखी होय तेनु ग्रहण अथवा काइ मूल्य ठरावी अमुक काळ सुधी पोते स्त्री तरीके स्वीकारवी ते ए प्रमाणे पोतानी करी राखेली वेश्यानु सेवन करनार पुरुष पोतानी बुद्धि कल्पनाथी तेने पोतानी स्त्री समान गणी मनमा व्रतनी सापेक्ष वृत्ति धरावे के मारे तो परस्त्रीनो मात्र त्याग छे अने आ तो आटलो काळ मारी स्त्री थएली छे, तेथी मारा व्रतनो भग थयो नहीं पण ते थोडा काळ सुधी परिग्रहभूत थएली होवाथी वस्तुताए तेने बीजानी स्त्रीज जाणवी तेथी ए अतिचार छे इति प्रथम अतिचार

बीजा अतिचारमा अनात्ता एटले कोइए नही ग्रहण करेली वेश्या अथवा व्यभिचारिणी स्त्री के जेनो पति विदेशे गएलो होय, तेवी स्त्रीनु आसेवन करवु, अने

तेमा एवी बुद्धि करवी के, आ स्त्री काइ परस्त्री न गणाय पण ते धारणामा अज्ञ नता होवाथी अतिचार लागे छे इति द्वितीय अतिचार

आ ने मात्र परस्त्री त्यागरूप व्रतवाळाने अतिचार छे पण जेने स्वदारासंतोष व्रत होय तेने तो अनाचारज छे अर्थात् तेम करवाथी तेना व्रतनो भग थाय छे

त्रीजा अतिचारमा त्रीजानी सततिना कन्यादानना फळनी इच्छाथी अथवा स्नेह विगेरे कारणथी ज विवाह करावी आपवो ते अतिचार जाणवो श्रावकोए पोतानी सततिने विषे पण सख्या परिमाण करवा रूप अभिग्रह करवो एम सभळाय छे के, कृष्ण अने चेटकराजाने पोतानी सततिनो पण विवाह सबध करवानो नियम हतो आ पण सचित अतरसद्भावपणु होवाथी अतिचार छे इति तृतीय अतिचार

काम भोगने विषे जे तीव्र अनुराग ते चोथो अतिचार छे इतिचतुर्थ अतिचार

हवे पाचमो अतिचार अनग क्रीडा काम प्रधान क्रीडा ते परस्त्रीना अगर चुबन, आलिंगन विगेरे करवु ते अथवा स्वस्त्रीना सबधमा वात्स्यायन मुनिए रचेला कामशास्त्रमा बतावेला चोराशी आसन विगेरेने सेववा ते इति पचम अतिचार

आ प्रमाणे चोथा ब्रह्मचर्य व्रतमा ए पाच अतिचार. त्याग करवा योग्य छे, आ व्रतने विषे रोहिणीनु उदाहरण छे ते आ प्रमाणे —

रोहिणीनी कथा

पाटलीपुरमा नद राजा राज्य करता हता, ते वखते ते नगरमा धनावह नाम एक श्रेष्टी रहेतो हतो तेने रोहिणी नामे शीलवती प्रिया हती अन्यदा धनावह श्रेष्टी समुद्रयात्रा करवा गयो हतो अने घेर रोहिणी एकली हती तेवामा एक वखते एवु बन्यु के, राजाए रोहिणीने तेना गोखमा बेठेली जोई तेने जोई राजा कामातुर थयो तथी तत्काल एक दासीने रोहिणीनी पासे मोकली दासीए त्या जइने कह्यु के, हे रोहिणी ! तमारु पुण्य मोटु लागे छे के जेथी नद राजा तमारु आलिंगन करवाना अभिलाषी थया छे आ साभळी रोहिणीए चितव्युं के, "अहो, मूढ लोको पोताना कुलधर्मनेपण त्यजी देता शरमाता नथी" आ राजा उन्मत्त हस्तीनी जेम मारा शीलरूप वृक्षने उखेडी नाखशे, तेथी तेने कोई उपायथीज समजाववो योग्य छे आम विचारी तेणीए दासीने कह्युं के, भद्रे ! आज रात्रे तु राजाने मारे त्या मोकलजे दासीना वचनथी राजा हर्ष पामीने रात्रे तेने घेर आव्यो रोहिणीए भूमितरफ दृष्टि राखी तेनो योग्य सत्कार कर्यो. पछी भोजननेमाटे पोताना गृहमाथी जुदाजुदा वेष धरनारी स्त्रीओपासे सुवर्णना, रूपाना, अने कासा विगेरेना नवीनवी जातना पात्रो मुकाव्या, अने तेमा ते दासी

ओए खावामा एकज रस आपे एवा जुदाजुदा वर्णना भोज्य पदार्थो जुदाजुदा अनेक ओरडामाथी लावी लावीने मुक्या राजाए जुदा जुदा पात्रोमाथी रसनो स्वाद लेवा माड्यो, तथापि बधा पात्रमाथी एकज स्वादवाळो रस आववाथी ते विस्मय पामी गयो, जेथी तेणे राहीणीने पुछ्यु के, मुग्धे! आ जुदा जुदा पात्र छता अने तेमा जुदा जुदा वर्णवाळी वस्तु छता तेनो रस एकज प्रकारनो आवेछे, तेनु शु कारण ?

रोहिणी बोली के, राजेंद्र[1] जे विवेकी होय ते तो एकज पात्रमांथी स्वाद ले, कारण के, सर्वनो स्वाद एकजछे जेम एमा स्थान ने वर्णनो भेद छता रसनु विशेषपणु जणातु नथी, तेमज एकज स्त्रीजातिमा रूप के वेषादिना भेदथी शो फेर पड छे? जेम कोई माणस भ्रातिथी आकाशमा अनेक चद्र जुए, पण वस्तुताए चद्र एकज छे, तेम कामीकामभ्रमथी भ्रात थई एकज स्त्रीजातिने अनेकपणे जुए छे

हे राजा, लौकिक शास्त्रमा पण लिंगपुराणने विषे अब्रह्म विषे लखे छे के, " एक माससुधी निराहार रहेतो अने पारणाने दिवसे कदमूल खातो एवो तापस पण मनमा तापसीने इच्छवाथी कमाडमा मुख नाखीने मृत्यु पाम्यो हतो " ए कथा एवी छे के, सेलकपुरना उद्यानमा एक मठने विषे मासोपवासी तापस रहेतो हतो एकदा त्या कोई तापसी आवी चडी तापसे तेणीने रात्रिवास करवा आश्रय आप्यो, पण पोताना शीलभगना भयथी तेणे सूचव्यु के, " भो तापसी ! रात्रे तमारे मजबूत रीते कमाड वासीने शयन करवु कारण के अहिं एक राक्षस आवे छे ते कदि मारा जेवा स्वरथी तने बोलावे अने एवाणी पण धापे, तथापि तमारे कमाड उघाडवा नहीं, जो तु उघाडीश तो ते राक्षस तारा देहने गळी जशे " आ प्रमाणे कही तापस मठनो बाहार सूतो अर्धरात्रे काम विकार उत्पन्न थवाथी तेणे अनेक रीते आलाप करी तापसीने बोलावी, पण पूर्वशिक्षित तापसीए द्वार उघाड्यु नहीं छेवट अदर पेसवाने छिद्र पाडी तेमा मुख नाख्यु, परतु ते दबावाथी तापस त्याज मृत्यु पामी गयो परतु तेना शीलनु खंडन नहीं थयेल होवाथी ते देवता थयो पा तकाळे सर्वनी समीप प्रगट थई ते देवे पोतानु स्वरूप कही बतावीने मैथुनना निषेध कर्यो वळी विष्णुपुराणमा पण लखे छे के, "वाराणसीमा गगाना तीर उपर रुद्र नामना तापसे घणा वर्षसुधी तपस्या करी हती एक वखते गगामा स्नान करती कोई स्त्रीने जोईने मोह पामी गयो तेनी पाछळ पाछळ तेने घेर जई तेनी मागणी करी त्यारे ते बोली के, हे तपस्वी ! हु चाडाली छु, अने तमे तपस्वी छो, तो मारा जेवी नीच साथे तमारे व्रत खडन करवु योग्य नथी तेना ए वचनने नहीं गणकारीने ते कामार्त तापसे तेनी साथे रतिक्रीडा करी पछी आखो उघडी, एटले तेने घणो पश्चाताप थयो तेथी कामने

---

1 कामाधपणे नेत्र मिचायेला हता ते सद्विचार आववाथी उघड्या एम समजवु

धिक्कार करतो पोतानु मस्तक शिलाउपर पटकीने मृत्यु पाम्यो ते वखते ते आ प्रमाणे बोल्यो हतो

श्री रामराम धिग्धिग्मे जन्मनो जीवितस्य च ।
याश्वर दुश्वर तप्त्वा चाडालीसंगम गत ॥

"अरे राम, राम, मारा जन्मने अने जीवितने धिक्कार छे, के जे हु दुष्ट तपस्या तपी प्राते चाडालीना सगमने प्राप्त थयो"

श्रीवीतरागना शासनमा पण कह्यु छे के, "जेम किपाकना फळ खाते वखते सारा अने मीठा लागे छे, पण परिणामे मृत्यु आपे छे, तेम विषयभाग पण भोगवती वखते सारा लागे छे, पण परिणामे अनेक भवमा मृत्यु आपे छे" आव ते रोहिणीना वचनो साभळी नदराजाए अन्यायरूप व्रणने रुझवनारी एवी रोहिणीने खमावीने कह्यु के,

सति विश्वे दुराचारोपदेष्टार पदेपदे ।
हितार्थमुपदीकर्तु विरला एव केचन ॥

"आ विश्वमा दुराचारनो उपदेश करनारा तो स्थाने स्थाने छे, पण हितार्थनो उपदेश करनारा कोई विरला छे" एम कही स्वदारासतोप व्रत ग्रहण करी नदराजा पोताने घेर आव्यो

हवे धनावह शेठ परदेशथी घणु धन कमाई घेर आव्यो घेर आव्या पछी एक वखते दासी पासेथी राजाना आववाना खबर साभळी तणे चितव्यु के, जरूर मारी स्त्रीए पोताना शीलने खडित कर्यु हशे अही बीजा मनुष्य विनाना स्थानमा आवेलो राजा आवी सुदर स्त्रीने केम छोडी दे आखी रात आवा सकल्प विकल्प करतो राजा रोहिणीनी उपर नि स्नेह थयो ते अरसामा रोहिणीना पुण्योदयथी एवु बन्यु के, वर्षादने लीधे नदीमा मोटु पूर आव्यु अने तेथी सर्व नगर डुबाई गयु ते वखते रोहिणी सर्व लोकोनी समक्ष गोपूर (दरवाजा) उपर चडी हाथमा जळ लईने बोली के, हे सरिता, गगाना जळनी जेम जो मारु शील निर्मल होय तो तु आ नगर पासेथी पाछी ओसर तत्काल नदीनु पूर उतरी गयु अने सर्व जनोए तेना शीलनी मोटी प्रशसा करी धनावह श्रेष्ठीए स्नेह सहित थइ तेना शील धर्मने प्रणाम कर्यो

उपर प्रमाणे महासती रोहिणीए शीलव्रतनी दृढतावडे जैनधर्मनी प्रभावना करीने अने पोताना मनुष्य जन्मने कृतार्थ करीने सुकृतनी मोटी प्रतिष्ठाने प्राप्त करी

इतिउपदेशप्रासादस्पवृत्तौ चतुर्थव्रतातिचारविपये सप्ताशीतितम प्रबध ॥ ८७ ॥

व्याख्यान ८८ मुं.

हवे ब्रह्मचर्यव्रतनुं रक्षण करवाथी शो गुण थाय ते कहेछे.

ज्ञानादिसर्वधर्माणा जीवित शीलमेव ये ।
रक्षन्ति प्राणिनस्तेषा कीर्त्तिर्माति न विष्टपे ॥ १ ॥

व्याख्या

"ज्ञानादि सर्व धर्मनु जीवित शील छे जे प्राणीओ ते शीलनी रक्षा करे छे तेआनी कीर्ति आ जगतने विषे माती नथी" ज्ञानादि ए वाक्यमा आदि शब्दवडे दर्शन चारित्र विगेरे ग्रहण करवा तेना प्राणरूप ब्रह्मचर्य शील छे, अर्थात् ते विना सर्व धर्म व्यर्थ छे ते विषे अन्यदर्शनीना शास्त्रमा पण कह्यु छे के, "हे युधिष्ठिर! जे एकरात्रि पण ब्रह्मचारी रह्यो होय, तेने जे गति मळे ते गति हजारो यज्ञोथी पण मेळवी शकाती नथी"

जिनागममा तो ब्रह्मचारीने स्त्रीना विकारी अग सामु जोवा विगेरेनो पण निषेध करेलो छे कह्यु छे के, "स्त्रीना गुप्त अग रागोत्पादक होवाथी ब्रह्मचारीए जोवा नहीं, तेम स्पर्शवा नहीं कदि ते जोवाई गया के स्पर्शाइ गया तो तेमा राग बुद्धि न करवी कह्यु छे के, स्त्रीनु रूप नजरे पडी जाय तो जोया वगर रहेवाय नहीं, पण डाह्या माणसे तेमा राग के द्वेष करवानु छोडी देवु वळी गायनी योनिनु मर्दन करीने गोमुत्र लेवु नहीं पण ज्यारे ते स्वेच्छाए मूत्रोत्सर्ग करे त्यारे लेवु कदि खास काम होय तो तेमा चित्तनी एकाग्रता न करवी जो कदि स्वप्नमा स्त्रीनो भोग थाय तो तत्काळ उठी ईर्यापथि प्रतिक्रमण पूर्वक एकसो आठ श्वासोच्छ्वास[1] नो काउस्सग्ग करवो वळी स्त्रीओनी इन्द्रियो जोवामा अने तेमनी साथे भाषण करवा विगेरेमा सर्वत्र यतना पूर्वक निवृत्ति करवी किंबहुना आ प्रमाणे जे प्राणीओ ब्रह्म व्रतने पाळे छे तेओनी कीर्त्ति आ विश्वमा माती नथी" आ विषयमा जिनपालनो प्रबंध छे ते आ प्रमाणे-

जिनपाळनी कथा

चपानगरीमा **माकद** नामे एक वणिक रहतो हतो तेने **भद्रा** नामे स्त्री हती अने **जिनपाल** अने **जिनरक्षक** नामे वे पुत्र हता तेमणे अग्यार वखत समुद्रमा सफर करीने निर्विघ्ने पुष्कळ द्रव्य उपार्जन कर्यु अन्यदा आग्रह

१ चार लोगस्सनो, सागर वरगभीरा सुधी

करीने बारमी वखत मुसाफरीए जवाने तैयार थया मातापितानी आज्ञा लई वाहाण भरीने चाल्या मार्गमा प्रतिकुल पवनवडे वाहाण शिवासाथे अफडाई भागी गयु बने एक पाटीयुं मळवाथी तरीने रत्नद्वीपे पहोच्या त्या एक रत्नमा क्रीडावापीनी अदर तेओ जलक्रीडा करवा लाग्या तेवामा त रत्नद्वीपवासीनी देवीए प्रत्यक्ष थईने कह्यु के, तमे बने मारीसाथे भोग भोगवो नहीतर आ खड्गथी तमारो शिरच्छेद करीश बनेए भयथी ते स्वीकार्युं पछी तेना शरीरमा शुभपुद्गळो सक्रमावी अशुभ पुद्गळोने दूर करीने ते तेमनी साथे भोग भोगववा लागी एक वखते ते रत्नद्वीपनी देवीने सौधर्मइन्द्रे आदेश कर्यो के, एकविशवार काष्ट विगेरे काढीने लवण समुद्रने निर्मळ करवो आवो आदेश आवता ते देवीए बनेने शिखामण आपी के, तमारे बनेए दक्षिण बाजुना वनमा जवु नही कारण के, त्या दृष्टिविष सर्प छे तेथी अहीज रहेवु, कदि जवु होयतो बीजी बाजुना वनमा जवु आ प्रमाणे कहीने देवी पोताने कामे गई

पछवाडे बने जणे विचार्युं के, आपणने देवीए दक्षिण बाजुना वनमा जवाने शामाटे अटकाव्या हशे, माटे ते बाजु जवु तो खरू आम विचारी तत्काल तेओ कौतुकथी तेज वनमा गया तो त्या अस्थिनो मोटो समूह जोवामा आव्यो. आगळ जता एक पुरुषने शूळीए चडावेलो जोयो बनेए तेने पुछ्यु के, तु कोण छे? ते बोल्यो के, "हु वणिक पुत्र छु, वाहाण भागवाथी अंहि आवी चडयो हतो आ द्वीपनी अधिष्ठायक देवीनी साथे मे भोग भोगव्या हता, पण ज्यारे तमे आव्या त्यारे ते देवीए मने थोडा अपराधमा आवी दशाए पोहोचाड्यो छे" आ प्रमाणे साभळी तेओ भय पामीने विचारवा लाग्या के, जेवी आनी गति थई तेवी गति आपणी पण थवानी पछी पुन तेने पुछ्यु के, अमारो छुटको अहींथी शी रीते थाय? ते बोल्यो के, अंहिथी पश्चिम दिशामा एक शैलक यक्ष छे, ते पर्वनिदिवसे मोटा शब्दथी बोले छे के, हु कोने तारू अने कोनु पालन करू? तमारे तेनी पासे जई तेनी पूजा करवी अने ज समये ते बोले ते वखते कहेवु के, हे यक्षराज! अमने तारो ने अमारू पालन करो आ प्रमाणे साभळी तेओए ते यक्ष पासे जई ते प्रमाणे कर्युं, एटले ते यक्ष बोल्यो के. "हे भद्रो! ते व्यतरी महा दुष्टा छे, परतु तमारे तेनाथी भय पामवु नहीं मे विकुर्वेला आ अश्वनी पुष्ट उपर तमे बेसो ते देवी तमारी पासे आवीने सराग अने मधुर वाणीथी तमने क्षोभ पमाडशे, तथापि तमारे चलित थवु नहीं जेम फरता जेनु मन तेनी वाणीथी क्षोभ पामशे तेने हु समुद्रमा पाडी नाखीश" यक्षनो आ ठराव तेमणे कबुल कर्यो पछी यक्ष अश्वरूपे थई पीठ उपर तेमने बेसारीने त्याथी चाल्यो अहि रत्नद्वीपनी देवी

ईद्रनी आज्ञा प्रमाणे काम करी पोताना वासगृहमा आवी त्या तेओने जोया नही एटले ते तेनी पछवाडे दोडी अने समुद्रमार्गे तेओ यक्षाश्वनी पीठपर बेसीने जता हता, त्या आवी राग भरेली मधुर वाणीवडे बोली के,–अरे प्राणवल्लभो! मने अबलाने तजी दईने तमारे चाल्यु जवु घटित नथी, मारा अपराधने क्षमा करो इत्यादि अनेक आलापथी तेने पूर्ण रागी जाणी जिनरक्षित क्षोभ पामी गयो. यक्षे अवधिज्ञानवडे जिनरक्षितना चित्तने विषयासक्त जाण्यु, एटले तत्काल पोतानी पीठउपरथी पाडी नाख्यो एटले रत्नदेवीए खड्गथी तेना कटके कटका करी नाख्या. जिनपाले दृढ प्रतिज्ञाथी तेनी सन्मुख पण जोयु नही. तेथी तेने क्षेम कुशळ चपा नगरीमा पोहोंचाडी यक्ष पोताने स्थानके गयो

जिनपाले सर्व वृत्तात पोताना मातापिताने जणाव्यो पछी वैराग्य पामी श्रीवीरप्रभु पासे दीक्षा लईने ते सौधर्म देवलोकमा देवता थयो त्या बे सागरोपम आयुष्य भोगवी महाविदेह क्षेत्रमा सिद्धिने पामशे उपरना दृष्टातमा तत्त्वरूप जे उपनय छे ते छठ्ठा अगमा विस्तारथी कह्यो छे ते आ प्रमाणे–जेओ आ ससारमा रह्या सता निरतर विषयभोगनी आकाक्षा राखे छे, तेओ घोर ससारसागरमा पडे छे अने जेओ भोगनी अपेक्षा राखता नथी तेओ ससार अटवीनो पार पामे छे आ ससारमा दु खी जीवने श्रीजिनाज्ञाना वचन ते सेलक यक्षना पृष्ट समान छे, जे समुद्र ते ससार छे, अने जे पोताने घेर पोहोचवानु ते सिद्धिगमन तुल्य छे जे देवी ते मोहिनीरूप छे, तेमा जे लुब्ध थई क्षोभ पामे ते जिनरक्षितनी जेम ससार-समुद्रमा पडे छे अने विषममोहवडे अनत जन्म मरणना दु.खने पामे छे अने जे प्राणी मोहिनीथी क्षोभ पामतो नथी ते जिनपालनी जेम ससारसागरमा नही पडता ते जेम पाताने घरे पहोंच्यो तेम प्रधान सुख–सिद्धिसुखने प्राप्त करे छे आ प्रमाणे ते कथानो उपनय छे

उपरनी कथा उपरथी समजवानु ए छे के, रत्नद्वीपनी देवीमा दृढ कामनाने राखनार अने भोगस्पृहा करनार जिनरक्षित द्रव्य भाव बने प्रकारना समुद्रमा पड्यो अने विषयमा निरपेक्ष रहेनार जिनपाल श्री परमात्मानी सभामा यशपा थयो

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य
वृत्तौ चतुर्थप्रस्तविषये अष्टाशीतितम. प्रबध. ॥ ८८ ॥

व्याख्यान ८९ मु

चोथा व्रतनो भग थवाथी त्रीजा बधा व्रतोनो भग थाय छे ते कहे छे.

व्रतानामपि शेषाणा चतुर्थव्रतभगके।
लीलया भेदतामाहु' तस्माद्दुःशीलता त्यज ॥ १ ॥

व्याख्या

" चोथा व्रतनो भग थवाथी बाकीना बधा व्रतनो सहेज भग थइ जाय छे तेथी हे जीव, तु दु शीलपणानो त्याग कर " चोथा व्रतनो भग थता बाकीना प्राणातिपात विरमण विगेरे चार व्रतोनो पण अवश्य भग थाय छे ते विषे श्रीजिनेश्वर भगवत कहे छे के,—

स्त्रीनी योनिमा एक बे त्रण लाखथी माडी उत्कृष्टा लक्ष पृथक्त्व बेइंद्रिय जीव उत्पन्न थाय छे पुरुषनी साथे सयोग थता जेम वासनी भुगळी रुथी भरी होय तेमा तोढानी तपावेली सळी नाखता रु बळी जाय, तेम ते जीवोनी हिंसा थाय छे. वळी पचेन्द्रिय मनुष्य एवा एक पुरुषे भोगवेली स्त्रीना गर्भमा एक साथे उत्कृष्टा नव लाख गर्भज जीवो उत्पन्न थाय छे ते नव लाख जीवोमा एक बे जीव जे विशेष आयुवाळा होय छे ते जीवे छे, बाकीना त्याज विलय पामे छे ज्ञानीना वचन उपरथी शीलव्रतनो भग थता प्राणातिपात विरमण नामे पहेलु व्रत भग थाय छे. तेम बीजु मृषावादना त्यागरूप व्रत पण नाश पामे छे, कारण के कामीजन सत्यवादी होता नथी ते विषे नीतिमा रखे छे के, वणिक, वेश्या, चोर, द्यूतकार, व्यभिचारी, द्वारपाल अने कौल (नास्तिक) ए सात मृषावादना मदिररूप छे तेम त्रीजा व्रतनो भग पण थाय छे अहीं कोइ शका करे के, पिता विगेरेनी आज्ञाथी परणेली स्त्री सेवन करता त्रीजु व्रत जे अदत्तादानना त्यागरूप छे, तेनो भग केम कहेवाय ? तेना उत्तरमा कहे छे के, अब्रह्म (दु शील) सेवन करवाथी तीर्थंकर अदत्त लागे छे, कारण के, तीर्थंकरोए मुमुक्षु पुरुषोने सर्वथा अब्रह्म सेववानो निषेध कर्या छे वळी स्वामी जे मडलाधिपति तेनु पण अदत्त छे बाकीना बे प्रकारना अदत्त पोतानी मेळे तर्कथी जाणी लेवा ए प्रकारे त्रीजा व्रतनो पण भग थाय छे चोथा व्रतनो भग तो स्पष्टज छे पाचमु जे परिग्रहना त्यागरूप व्रत तेनो भग कर्या सिवाय स्त्रीनो सबध थतोज सभवतो नथी दशकालिकसूत्रमा लख्ये छे के, जे पोताना आत्माने

स्त्रीना मगमा स्थापे छे, तेणे नव वाडने भागी नाखी अने दर्शन गुणनो घात कर्यो समजवो वळी तेनाथी बीजा सर्व व्रतोनो पण भग थाय छे

आ प्रमाणे घणा दोषथी दूषित एवु अब्रह्म (दु शील) छे, एम जाणीने हे जीव, तु दु शीलताने छोडी दे हवे कोइ गृहस्थ छता पण प्रथम वयथी ते याव-ज्जीवित ब्रह्मव्रतने पाळे छे ते विषे कहे छे के, " कोइ उत्तम पुरुष बाळवयथी मांडीने ते व्रतने आदरे छे जेम एक दपतीए शुक्लपक्ष अने कृष्णपक्षना नियमथी ब्रह्मचर्य पाळ्यु हतु " तेनी कथा नीचे प्रमाणे छे—

कच्छदेशमा एक नगरने विषे **अर्हद्दास** नामे श्रेष्ठी रहेतो हतो तेने **अर्हद्दासी** नामे पत्नी हती तेमने **विजय** नामे एक पुत्र हतो ते गुरुनी पासे भणतो हतो एक वखते ते विजये कोइ मुनिना मुखथी आ प्रमाणे शीलनु माहात्म्य साभळ्यु के,

> अमरा· किकरायंते सिद्धय· सहसंगताः ।
> समिपस्थायिनी सपत् शीलालकारशालिनां ॥

" जेओए शीलरुप अलकारने धारण करेलो छे तेओने देवताओ सेवक थइने रहे छे, सिद्धिओ साथे आवी मळे छे अने सपत्ति तो समीपेज हाजर रहे छे " आवी देशना साभळी विजये स्वदारा सतोष व्रत ग्रहण कर्युं, अने तेमा पण शुक्ल पक्षमा तेनुं पण सेवन करवुं नहीं एवो नियम लीधो

तेज नगरमा बीजो धनावह नामे श्रेष्ठी रहे छे तेने धनश्री नामे स्त्री छे तेनी पुत्री विजयाए एक वखते शीलनु वर्णन साभळी एवु व्रत लीधु के कृष्ण पक्षमा पोताना पतिने पण सेववो नहीं घुणाक्षर न्यायथी एवु बन्यु के, तुल्य रूपवाळा ते विजय अने विजयानाज परस्पर सबध थइ विवाह थयो विजया सोळ शृगार सजी, नवीन भव्य वस्त्रो धारण करी हर्ष पामती एकाते पोताना पति पासे आवी एटले विजये पोतानी ते सुलोचना प्रियाने कह्यु के, " अरे प्रिया, तु मारु हृदय छे, तेमज मारो तु जीव, श्वास अने प्राण छे, आ ससारमा प्राणीओने प्रियाजन तेज ससारसुखनु सर्वस्व छे हे चकोराक्षी, जो तारा जेवी प्रिया होय तो पछी स्वर्गसुखनु शुं काम छे ? अने जो तारा जेवी प्रिया न होय तो स्वर्गनु सुख पण शा कामनु छे ? पण हे शुभे ! में पुर्वे एवो नियम लीधो छे के, शुक्ल पक्षमा मन, वचन, कायाथी शील पाळवु तेना हवे मात्र त्रण दिवस बाकी छे, ते व्यतित थया पछी कृष्ण पक्षमा आपणे रति

सुखने अनुभवशु " आ प्रमाणेना पोताना पतिना वचनो सांभळी विजरा अत्यत ग्लानि पामी गइ विजये ग्लानि थवानु कारण पूछ्यु एटले ते बोली के हे स्वामी ! मारे कृष्ण पक्षमा शील पाळवाना नियम छे ते सांभळता विजयने घणो खेद थयो त्यारे विजयाए कह्यु के हे स्वामीनाथ ! तमे बीजी स्त्री परणीने तेनी साथे सुख भोग भोगवशो, खेद करशो नहीं पुरुषोने तो वधारे स्त्रीओ होय छे वसुदेवने बोंतेर हजार स्त्रीओ हती अने चक्रवर्तीने एक लाख ने बाणु हजार स्त्रीओ होय छे ते सांभळी विजय बोल्यो के, हे सुशीले ! मने आ बातमा काइपण खेद थतो नथी कारण के मारा माता पिताए मने दीक्षा लेता लेता बळात्कारे परणाव्यो हतो वळी विषय सेववाथी काइ आयुष्यनी वृद्धि थती नथी, तेमज तेथी जगतमा महत्व के सर्व जीवोमा आधिक्य प्राप्त थतु नथी केवळ ते मननी उत्सुकता मात्र छे, ते विषे श्रीविशेषावश्यक वृत्तिमा लखे छे के,

"प्रेमनी जेम स्त्रीने वळगी सर्व अगने महान् प्रयास आपी आ प्राणी जे क्रीडा करे छे तेनाथी तने सुखी केम कहेवाय ?" वळी पशु पक्षीओ पण विषयने तो सेवे छे तो तेमा शु तत्त्व छे ? हे सुंदरी ! आ जीवे देवताना भवमा असख्याता वर्ष सुधी अगणित विषयो भोगव्या छे ते विषे लोकप्रकाशमा कह्यु छे के, "कल्पवासी देवताओने एकवार भोग भोगवता बे हजार वर्ष वही जाय छे तेवी रीते बीजा देवताओने पाचसो पाचसो वर्ष अनुक्रमे ओछा करवा एटले पनरसो वर्ष ज्योतिषीने, एक हजार व्यतरने अने पाचसो वर्ष भुवनपतिने एक वार भोग भोगवता वही जाय छे " हे कमलाक्षी, आ ससारमा जे पुष्पमाळा, चदन, तथा स्त्री विगेरेनु पुद्गलजनित सुख छे ते नाशवत छे अने बीजाना सयोगथी थयेलु जे सुख ते वस्तुताए दु खरूप छे कारण के ते मनना सकल्पथी अने उपचारथीज उत्पन्न थयेलु छे ते विषे श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमण कहे छे के, " जेम आफरो चडे तथा सनिपात रोग थाय त्यारे क्वाथ विगेरे असत्य उपचार करे ते दु खरूप थाय छे, तेम विषयसुख ते प्रमाणे असत्य उपचार मात्र होवाथी दुःख रूपज छे " अर्थात् विषयसुख ते क्वाथ, तथा डाम देवानी चिकित्सानी जेम उपचारपणे सुखरूप लागे छे, पण ते दु खरूप छे पारमार्थिक सुख तो श्रीसिद्ध परमात्माने ज थाय छे आत्मीक आनदने रोध करनार सातासाता वेदनी कर्मथी उपजेला सयोग वियोग स्वभाववाळा सुखने सुख कोण कहे ! ते विषे कह्यु छे के, साता अने असाता ए बने सोनानी ने लोढानी बेडी बेडीयो तुल्य छे खरु सुखतो ते बन्नेना विरहथीज प्राप्त थाय छे लोकीक सुख देहने इद्रीयनी अनुकुळतावडे गणाय छे पण वास्तविकसुख वेदना अभावथीज छे माटे हे मृगाक्षी ! दुखदायक विषयमा मारु मन रुचि करतु नथी ते विषय उपर कह्यु छे के,

विषस्य विषयाणांच, पश्यतां महदंतरं ।
उपभुक्तं विषं हंति, विषयाः स्मरणादपि ॥

" विष अने विषय ए बे वच्चे मोटु अंतर छे, विष तो खावाथी मारे छे पण विषयो तो स्मरण मात्रथी मारे छे " तेथी हे सुंदरी ! हवे गंगाना जळ जेवु निर्मळ शील मारे त्रिविधे जन्मपर्यंत रहो पण आपणे आ वृत्तांत आपणा माता पिताने जणाववो नहीं. छतां तेमांथी ज्यारे कोइ आ वृत्तांत जाणे तो पछी आपणे अवश्य दीक्षा लेवी आवो निश्चय करी ते दंपती पोताना जीवितनी जेम शीलनुं रक्षण करवा लाग्या बंने जणा रात्रे एक शय्यामां सुवे छे तथापि तेओमांथी कोइने कामोद्दीपन थतुं नथी हमेशा एकांतमां पण तेओ शीळ गुणनुंज वर्णन करता हता. आ प्रमाणे भावचारित्र पाळतां तेमने घणो समय चाल्यो गयो

अन्यदा **विमळ** नामे कोई केवलीमुनि चंपानगरीमा समोसर्या, तेमनी देशना सांभळीने जिनदास श्रेष्ठीए कह्यु के, भगवन्, मे एवो अभिग्रह लीधो छे के, मारे चोराशी हजार साधुओने पारणुं कराववुं आ मारो मनोरथ क्यारे सफल थशे? केवली बोल्या के एवा मुमुक्षु साधुओनो एक साथे संगम शीरीते थाय, कदि दैवयोगे तेटला साधुओ मळी जाय तोपण आकाशपुष्पनी जेम तेटलां शुद्ध अन्न पाननी सामग्री मळवी ते पण दुर्लभ छे तेथी हे श्राद्ध ! तुं कच्छ देशमां जा अने त्यां रहेला विजया अने विजय दंपतीनी भात पाणी विगेरेथी भक्ति कर्य, तेथी तने तेटलुं पुण्य थशे कह्युं छे के " चोराशी हजार साधुओने पारणुं करावतां जेटलुं पुण्य थाय तेटलुं पुण्य शुक्ल अने कृष्ण पक्षना शीलव्रत धारी एवा दंपतीने भोजन कराववाथी थाय छे " आ प्रमाणे सांभळी जिनदासे ते दंपतीनो वृत्तांत पुछ्यो एटले केवलीए तेने सर्व वृत्तांत कही संभळाव्यो ते सांभळी जिनदास श्रेष्ठी भक्तिथी भरपूर हृदये कच्छ देशमां आव्यो अने ते दंपतीनी अनिर्वाच्य भक्ति करी तेमज नगरजनोनी आगळ तेमनुं दुश्चर चरित्र प्रगट कर्युं ते वखते तेमनां मातापिताए पण ते वात जाणी श्रावक जिनदास धारेलो मनोरथ पूर्ण करी पोताने घेर गयो अने ते दंपती पण प्रतिज्ञा पूर्ण थवाथी दीक्षा लई मुक्तिने प्राप्त थया

आ प्रमाणे शीलना प्रभावथी ते दंपती मुनिवोपण विशेष प्रशंसाने पात्र थया. तेथी सर्व भव्य प्राणीओए सौभाग्यना हेतुरूप अने संसारदुःखनुं निवारण करनार शीलव्रतने सर्वदा पाळवु

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य
वृत्तौ चतुर्थव्रतविषये एकोननवतितम प्रबंध' ॥ ८९ ॥

व्याख्यान ९० मु

हवे स्त्रीओमा अनेक दोप छे एम जाणीने आ चतुर्थ व्रत ग्रहण करवु तेविषे कहे छे.

स्त्रीपु कापट्यमूलेपु, नरो धीमान् न विश्वसेत ॥
वदत्यन्य गृहत्यन्यं, तृप्तिर्न विषये कदा ॥ १ ॥

व्याख्या

" कपटनु मूळ एवी स्त्रीओनो बुद्धिमान् पुरुपे कदि विश्वास करवो नहीं स्त्री ओ बीजाने बोलावे छे अने वळी बीजाने स्वीकारे छे, तेने कदिपण विपयथी तृप्ति थती नथी " स्त्रीओने विपयमा कदिपण तृप्ति थती नथी ते उपर नीति शास्त्रमा कह्यु छे के, "स्त्रीओने पुरुपथी बगणो आहार होय छे, चार गणी लज्जा होय छे, छ गणो व्यवसाय होय छे अने आठ गणो काम होय छे" आ श्लोकना भावार्थ उपर भर्तृहरि राजानु दृष्टांत छे ते आ प्रमाणे—

भर्तृहरिराजानी कथा

अवंती नगरमा भर्तृहरि नामे राजा हतो तेना राज्यमा मुकुंद नामे एक निर्धन ब्राह्मण रहेतो हतो तेणे लक्ष्मी मेळववाने माटे हरसिद्धि देवीनी आराधना करवा माडी देवीए संतुष्ट थइ तेने अल्प पुण्यवान जाणीने अमर फळ आप्यु अने कह्यु के, तारा भाग्यमा अल्प पुण्यने लीधे द्रव्य नथी माटे आ अमर फळ ले. आ फळनु भक्षण करवाथी तु घणु जीविश अने शरीरे नीरोगी रहीश मुकुंद ते फल लइने घेर आव्यो पछी फल खावानी इच्छा करता तेने विचार थयो के, आ फळ मारे खाइने शु करवु, मारे तो वधारे जिववाथी उलटी हानी छे, तेथी जे जगतना आधारभूत होय तेने आपु तो तेनी कृतार्थता थाय आ प्रमाणे विचारी तेणे अवंतीपति भर्तृहरिने ते फळ आप्यु राजाए पोतानी पट्टराणी पिंगला उपर घणी प्रीति होवाथी तेने आप्यु अने तेनो समग्र प्रभाव जणाव्यो राणीए पोतानो जारपति जे हाथीनो महावत हतो तने तेनो प्रभाव जणावीने ते फळ आप्यु महावते विचार्यु के, मारे वधारे जीववाने शु करवु छे, माटे मारी प्राणप्रिया जे वेश्या छे तेने आपु के जेथी त मारी उपर प्रसन्न रहे आम विचारी तेणे ...ने आप्यु वेश्याए चिंतव्यु के, मार आ फळ खाईने शु करवु छे, माटे आ फल नाथ भर्तृहरिने आपु आम विचारी तेणीए ते फळ राजाने आप्यु

राजा भर्तृहरिए ते फळ ओळखी वेश्याने पुछ्यु के, आ फळ तने क्याथी मल्यु ? राजदंडना भयथी वेश्याए यथार्थ हकीकत जणावी एटले राजाए हाथीना महावतने बोलावीने पुछ्यु ताडनादिकना भयथी तेणे राणीनु नाम आप्यु. एटले राणीने पुछ्यु, परंतु तत्काळ भयथी विह्वल बनेली राणी काइपण उत्तर आपी शकी नहीं राजा स्त्रीने अवध्य जाणी संसारनी असारताविषे विचार करी आ प्रमाणे बोल्यो के—

यां चिंतयामि सततं मयि सा विरक्ता,
साप्यन्यमिच्छति जनं स जनोन्यसक्तः ॥
अस्मत्कृते च परितुष्यति काचिदन्या,
धिक् तांच तंच मदनंच इमांच मांच ॥

"जे स्त्रीने माटे हु हमेशा चिंतवन करू छुं ते स्त्री मारामा विरक्त छे अने ते बीजा पुरुषने इच्छे छे, ते पुरुष बीजी स्त्रीमा आसक्त छे अने ते स्त्री वळी मारे माटे संतुष्ट थाय छे माटे ते राणीने, ते जारने, कामदेवने, आ वेश्याने अने मने धिक्कार छे"

संमोहयंति मदयंति विडंबयंति,
निर्भर्त्सयंति रमयंति विषादयंति ॥
एता प्रविश्य सदय हृदय नराणां,
किं नाम वामनयना न समाचरंति ॥

"स्त्रीओ मोह उत्पन्न करे छे, मद चडावे छे, विडंबना करे छे, तरछोडी नाखे छे, रमाडे छे अने खेद करावे छे अहो ! सुंदर नेत्रवाळी स्त्रीओ पुरुषानो दयाळु हृदयमा पेशीने शु शु नथी करती ?" सर्व करे छे आ प्रमाणे विचारी राजा भर्तृहरिए गाळवाळु राज्य तृणवत् छोडी दई व्रत ग्रहण कर्यु अने योगी सन्यासीनो वेष लई पृथ्वी उपर फरवा लाग्यो एक वखते पृथ्वीपर फरता फरता ते राजा कोई वनमा रहेता तापसना आश्रममा गयो तापसने नमी आगळ बेठो. तापसे राजा छता तेनो अनादर कर्यो एटले राजाए विचार्यु के, जरूर आ कोई मायावी लागे छे, तेथी छुपीरीते आनी मायाने अवलोकन करू. आवु धारी राजा एकाते छुपो रह्यो रात्रि पडता ते तापसे पोतानी जटामाथी एक डाबली काढी ते उघाडीने तेमा जळनी अजलि छांटी एटले एक सुंदर स्त्री उत्पन्न थई तेनीसाथे कामसेवन करी ते तापस सुई गयो पछी थोडीवारे ते स्त्रीए पोतानी वेणीमाथी एक डाबली काढी अने तेने जळनी अजलि छांटी एटले तेमाथी देवकुमार जेवो एक

पुरुष उत्पन्न थयो तेनी साथे भोग विलास करी पाछी ते डाबली तेणे पोतानी वेणीमा गोपवी दीधी पछी तापसे जागीने पण ते रीते डाबलीमा गोपवी दीधी आ प्रमाणे तेनु चरित्र प्रत्यक्ष जोई राजाए चितव्यु के—

मत्तेभकुंभदलने भुवि संति शूरा,
केचित् प्रचंडमृगराजवधेपि दक्षा ॥
किंतु ब्रवीमि बलीना पुरतः प्रसह्य,
कंदर्पदर्पदलने विरला मनुष्या' ॥

"अहो, आ पृथ्वी उपर उन्मत्त हाथीओना कुंभस्थलने तोडी पाडनारा शूरवीरो छे अने प्रचंड केशरीसिंहनो वध करनारा वीरो पण छे परंतु मारे तेवा बळवतोनी आगळ आग्रहथी केहवु जोईए के, कामदेवना गर्वने तोडनारा तो विरला मनुष्योज छे " आ प्रमाणे विचारी राजा भर्तृहरि श्रीपुरनगरना उद्यानमा जई कोई वृक्षनी नीचे सुई गयो आ अरसामा एवुं बन्यु के, ते नगरनो राजा अपुत्र मृत्यु पामेलो हावाथी तेना मंत्रीओए पाच दिव्य प्रगट कर्या ते अहीं सुतेला राजानी पासे आवीने उभा रह्या मंत्रीओए नगरजनसाथे त्या आवी राजाने जगाड्यो अने राज्य लेवाने कह्यु राजाए जणाव्यु के, मारे राज्यनु काई पण प्रयोजन नथी नगरजनोए विनतिपूर्वक कह्यु के हे महाराज ! आप आ राज्य स्वीकारो अने अमोने कृपा करीने जीवितदान आपो एटले राजाए दयार्थी ते राज्य स्वीकार्यु अने न्यायपूर्वक राज्य चलाववा लाग्यो पछी सर्वजनोए बलात्कारे प्रथमना राजानी एक पुत्री हती ते तेने परणावी ते नवयौवना राणी एक वखते राज महेलना गोखमा बेठी हती, त्या कोई श्रेष्ठीनो सुदर पुत्र तेना जोवामा आव्यो तेने जोइ ते बालाए कटाक्ष बाणवडे तेनु हृदय घायल कर्यु श्रेष्ठीकुमार पण ते राणीने मळवा उत्सुक थयो तेथी ते इच्छा पूर्ण करवाने माटे एक पुरुषना प्रमाणनी अने सहस्र दीवाओनी श्रेणीवाळी एक पोली दीवी तेणे करावी, तेमा पोते पेठो अने संकेत करी राखेला पुरुषोए ते दीवी राजाने भेट करी राजाए ते अंतःपुरमा मुकावी पछी ज्यारे समय आव्यो त्यारे ते तेमाथी नीकळ्यो अने राणीनी साथे विषयभोग भोगवी पाछो तेमा पेसी गया एवी रीते हमेशा करवा लाग्यो एक समये तेना वस्त्रनो दोरो दीवीना काष्ठना सांधानी बहार रही गयेलो ते राजाना जोवामा आव्यो, तेने खेंचता ते दोरो लांबो लाग्यो, एथी तेने तेमा कोई जारपुरुष छे एवो निश्चय थयो पण ते वखत ते काई बोल्यो नहीं

पछी एक दिवसे पोतानी पटराणीने हाथे रसवती करावी पेला योगीने भोजन करवाने निमन्त्रण कर्युं ते भोजन करवा आव्यो एटले तेनी आगळ छ पत्रावळी माडी तापस भोजन करवा बेठो एटले राजाए कह्यु के महाराज ! तमारी जटामा रहेली स्त्रीने बहार काढो तापसे भयथी तेम कर्युं पछी ते स्त्रीने राजाए कह्युं के, तु पण तारी डावलीमाथी पुरुषने काढ स्त्रीए पण तेम कर्यु पछी पोतानी राणीने कह्यु, तु पण आ दीवीमाथी तारा पतिने बहार लाव्य, शामाटे तेने कारागृहमा राख्यो छे ? तेनी साथे भोजन कर्य राणीए पण भयथी तेम कर्युं पछी ते सर्वने भोजनादिवडे संतुष्ट करी अतरमा उग्र वैराग्यने धारण करता राजा भर्तृहरिए सर्व मत्री अने नगरजनोने बोलावीने जणाव्युं के, आवा विषयने धिक्कार छे पछी तेनी आघोषणा आखा नगरमा करावी भर्तृहरिराजाए बीजीवार राज्य छोडी दइ निश्चळ शील व्रत ग्रहण कर्यु अने ते एकज व्रतना आराधनथी देवपणाने प्राप्त थया ए महाराजा भर्तृहरिनो रचेलो **वैराग्यशतक ग्रंथ** अद्यापि लोकमा विख्यात छे

" मृगना जेवा लोचनवाळी स्त्रीओना चारित्र जोइने कयो पुरुष तेनाथी विरक्त न थाय जुओ ! राजा भर्तृहरिए पण पोताना अमर फळने जोईने योग धारण कर्यो हतो "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादस्य
वृत्तौ चतुर्थव्रतविषये नवतितमः प्रबंधः ॥ ९० ॥

" श्री चिंतामणी पार्श्वनाथना महिमावडे अने श्रीविजय सौभाग्य सूरिना प्रसादवडे पोताना गुरुभाई मेरुविजयने अर्थे श्री विजयलक्ष्मी सूरिए आ उद्यम कर्यो छे तेनो छट्ठो स्थंभ सोळ अधिकारवडे पूर्ण थयो.

इति षष्ठः स्तंभ समाप्त. ।

" वर्षना दिवस जेटला अधिकारवाळा आ ग्रंथने रचता जे पुण्यनी प्राप्ति थइ होय ते पुण्य-कर्ता कहे छे के—मारा कर्मना क्षयमाटे अने महोदयनी प्राप्तिमाटे थाओ. "

॥ सप्तमः स्तंभः ॥



व्याख्यान ९१ मुं.

हवे कामदेवथी अतृप्त एवी स्त्रीनो त्याग करनार पुरुष श्रेष्ठ छे, ते कहे छे.

स्त्रीणां कामस्य वांछासु, संतोषो जायते नहि ।
तस्मात्तासु विरक्तत्वं, भजेत्स पुरुषोत्तमः ॥ १ ॥

व्याख्या

"स्त्रीओने कामनी इच्छाओमां संतोष थतो नथी, तेथी स्त्रीओमां जे विरक्तपणुं राखे ते पुरुष उत्तम कहेवाय छे "

आ संबंधने विषे एक भिल्लनो प्रबंध छे ते आ प्रमाणे–

भिल्लनी कथा

एक समये श्रीवीरप्रभु कौशांबी नगरीना उद्यानमां समोसर्या ते खबर सांभळी चंडप्रद्योतन राजा अने शतानीक राजानी पत्नी मृगावती प्रभुनी देशना सांभळवा आव्या. भगवंत देशना आपवा लाग्या तेवामां कोई भिल्ले आवीने प्रभुने पुछ्युं, के, या सा? अर्थात् जे हुं धारूं छुं ते ते छे? प्रभु बोल्या सा सा एटले जे तुं धारे छे ते तेज छे आवो जवाब सांभळी गौतम गणधरे प्रभुने पुछ्युं के, हे भगवंत! आ भिल्ले आपने शुं पुछ्युं अने आपे शुं जवाब दीधो ते अमे कांई समज्या नहीं प्रभु बोल्या –हे गौतम! सांभळ आ भरतक्षेत्रमां चंपा नामे नगरी छे ते नगरीमां अनंग नामे एक सोनी रहेतो हतो ते अत्यंत कामगृद्ध होवाथी जे जे रूपवती कन्या देखे तेने पूर्ण द्रव्य खरचीने पण परणतो हतो एम करतां तेने घेर पांचसो स्त्रीओ एकठी थई. ते सर्वने तेणे सरखां आभूषणो कराव्यां हतां, परंतु ...

दिवसे ते स्त्री सुंदर वेष पहेरी तेनीपासे आवती ...
करतो, बीजी स्त्रीओ तेनी आज्ञा प्रमाणे साध...
प्रमाणे तेमनो काळ निर्गमन थतो हतो तेम ...
ज्यारे ते सोनी आडो अवळो जाय त्यारे बीजी ...
लागी, पण तेवा वखतमां कदापि जो ते ...

हतो आवी रीते ते इर्षाना भरपूर पणावडे करीने ते स्त्रीओ उपर एवो अविश्वासी थयो के, तेमानी कोइ स्त्रीने कोईने घेर भोजन करवा पण मोकलतो नहीं छेवटे तेमने माटे एक स्तभवाळो आवास करावी तेमा तेमने राखी अने जेम भूत पीपळाना स्थानने छोडे नही, तेम ते गृहद्वारने नहीं छोडता त्याज बेसी रहेवा लाग्यो इत्यादी दग्ध थयेल्लानी जेम ते कोईने घेर जमवा जतो नहीं अने कोईने पोताने घेर जमवा लावतो पण नहीं

एक वखते कोई मित्र तेने आग्रह करी बलात्कारे भोजन करवा पोताने घेर तेडी गयो त्या ते पोताने शत्रुए कारागृहमा नाख्यो हाय तेम मानवा लाग्यो. आ समयनो लाग जोई तेनी स्त्रीओ हर्ष पामी अने तत्काल तेमणे स्नान विलेपन करी सर्व अगे वस्त्राभूषणो धारण कर्या पछी प्रीतिपूर्वक जेवी ते दर्पणमा पोताना रूपने जोती हती तेवामा ते पिशाचना जेवो क्रूर गृहपति सोनी आवी चडयो पोताना घरना द्वारपासे आवताज स्त्रीओनी तेवी चेष्टा जोइने ते तेमनी उपर घणो गुस्से थयो एटले तेमाथी एक स्त्रीने तेणे एवी मारी के ते तत्काल यमराजना गृहनी अतिथि थई गई ते देखाव जोईने सर्व स्त्रीओने एक साथे भय उत्पन्न थयो, तेथी तत्काळ तेमणे चितव्यु के, 'आ पापी आपणने पण आ स्त्रीनी जेम मारी नाखशे, माटे आपणे एकत्र थईने तेनेज मारीए' आवो विचार करीने ते सर्व स्त्रीओए पोताना हाथमा-रहेला दर्पण दूरथी तेनापर फेक्या समकाळे चारसो ने नवाणु दर्पणोना प्रहारथी ते सोनी मृत्यु पाम्यो पछी सर्व स्त्रीओ पश्चात्ताप करी घर बाळी ते सोनीनी साथेज बळी मुई ते चारसोने नवाणु स्त्रीओ पश्चात्ताप अने अकामनिर्जराथी मृत्यु पामी काइ अरण्यमा चोर कुळमा पुत्रपणे उत्पन्न थई अनुक्रमे ते सर्व लोकोने लुटनारा महातस्कर थया जे स्त्री पहेला मरण पामी हती, ते काइ गाममा दरिद्री ब्राह्मणने घेर पुत्रपणे प्रगट थइ अनुक्रमे ते पुत्र पाच वर्षनो थयो पांच वर्षसुधी पेला सोनीनो जीव तिर्यच योनीमा भमी तेज दरिद्री ब्राह्मणने घेर पुत्रीपणे उत्पन्न थयो. मातापिताए पेला पुत्रने आ बालिकानो पालक कर्यो ते बालिका हमेशा बहु रोती हती, थोडीवार पण रूदन करवाथी विराम पामती नहीं एक वखते तेना बधुए तेना उदर उपर हाथ फेरववा माडयो एम करता तेना गुह्यभागपर स्पर्श थई जवाथी तत्काळ ते रोती बध पडी अने हसवा लागी आथी तेना बधुए तेना रूदनने शात करवानो ते उपाय मेळव्यो त्यारथी ज्यारे ते बाळा रुवे के ते तेनी योनी उपर पोतानो हाथ अडाडतो एटले तरतज ते शात थती. एक वखते आवो उपाय करता ते पुत्रने तेना मातापिताए जोयो तेथी तरतज तेने मारीने घर बहार काढी मुक्यो त्याथी वनमा जता ते पुन पेला चारसोने नवाणु चोरने मळ्यो, त्यारथी तेओ बराबर पाचसो थया

पेली बाला बाल्यवयथीज कुलटा थइ एक वखते ते नाळा कोई गामे गई हती. ते दिवसे पेला चोरोए ते ग्राम लुट्यु अने ते बालाने पकडीने लइ गया अने सर्वए मलीने तेने पोतानी स्त्री करी ते एकली सर्वेनी साथे भोग भोगववा लागी अन्यदा केटलाएक चोरोए तेनापर दया आववाथी विचार्यु के, आ बाळा एकली जो सर्वेनी साथे निरतर भोग भोगवशे तो जरूर ते मृत्यु पामी जशे तेथी तेनी प्रीतिने माटे कोइ बीजी स्त्री हरी लावीए तो ठीक आवो विचार करी ते चोरो एक बीजी स्त्रीने हरी लाव्या पछी सर्व चोरो ते बने स्त्रीओनी साथे भोगसुख अनुभवता काल निर्गमन करवा लाग्या केटलाक दिवसो गया पछी प्रथमनी स्त्री के जे घणी कामी हती तेणे पापबुद्धियी विचार्यु के, " आ बीजी स्त्री मारा कामविलासमा विघ्न करनारी सपत्नी थई छे, तो कोई उपायवडे हु तेने मारी नाखु तो सारु " आवो विचार करीने ते तेना छिद्र जोवा लागी एक दिवसे एवु बन्यु के, बधा चोरो धाड पाडवा गया, तेथी घर निर्जन थयु एटले ते इर्षालु अने क्रोधीष्ट पापी स्त्रिए पेली सरळ स्त्रीने छेतरीने कोई उडा कुवामा नाखी दीधी थोडीवारे पेला चोरो चोरी करीने आव्या अने पुछ्यु के, तारी सपत्नी बेन क्या गइ छे ? ते बोली-क्या गइ ते हु जाणती नथी चोरोए चितव्यु के, जरूर ते बीचारी मुग्धाने आ पापणीए मारी हशे ते समये पेला विप्रचोरे विचार्यु के, आ दुर्मति स्त्री मारी बेन तो नही होय ? पण ते शीरीते जणाय जो कोई ज्ञानी आवे तो पुछी जोउ आ प्रमाणे ते चितवतो हतो तेवामा (श्रीवीर प्रभु कहे छे के) तेणे अमारु आगमन लोकोपासेथी साभळ्यु एटले तत्काळ ते अहि आव्यो अने पोतानी बेन सबधी प्रश्न करवामा लज्जा आवी तेथी तेणे गूढरीते पुछ्यु एटले तेनो उत्तर पण अमे गूढरीते आप्यो

आ प्रमाणे तेनु वृत्तात सभळावीने प्रभुए कह्यु के, हे भविप्राणीओ ! आ ससारमा पाच इद्रियो तेने वश थयेला प्राणीओने घणी विडवना करे छे अने भवोभव ससारमा रखडाय छे

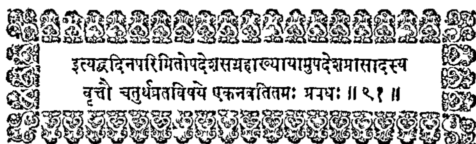
आवा वीर प्रभुना वाक्य साभळी ते विप्रे सवेग पामी प्रभुनी पासे चारित्र लीधु पछी ते चोरनी पल्लीमा गयो त्या ते विप्रमुनिए प्रतिबोध पमाडेला बीजा ४९९ चोरोए पण तेनी पास व्रत ग्रहण कर्यु

अहीं वीरप्रभुनी तथाप्रकारनी वाणी साभळी मृगावती बोली के, हे स्वामी ! चंडप्रद्योतन राजानी आज्ञाथी हु पण दीक्षा लइश पछी तेणे चडप्रद्योतन राजाने कह्यु के, हे राजेंद्र ! जो मने आज्ञा आपो तो हु श्रीवीरप्रभुनी पासे व्रत धारण करू ? प्रभुना प्रभावथी वैर रहित थयेला चडप्रद्योतने आज्ञा आपी एटले मृगावतीए पोताना पुत्रने चडप्रद्योतन राजाना उत्सगमा बेसारी श्रीवीरप्रभुनीपासे

दीक्षा लीधी ते समये चडप्रद्योतन राजानी अगारवती विगेरे आठ स्त्रीओए पण मृगावतीनी साथे दीक्षा लीधी चडप्रद्योतन राजाए मृगावतीना पुत्र उदयनने कौशाबीना राज्यउपर स्थापित कर्यो अने पोते पोताना अवतिदेशमा चाल्यो गयो

पेलो अनगसेन सोनीनो जीव स्त्रीपणे उत्पन्न थई कामना परवशपणाथी घणा भवोमा परिभ्रमण करशे "

"यासा एवा शब्दवडे सदेहने पुछता एवा चोरने प्रभुए सा सा एवो उत्तर आप्यो तेथी प्रतिबोध पामी तेणे दीक्षा लई बीजा चोरोने प्रतिबोध पमाड्या अने तेओए व्रत ग्रहण कर्यु "



इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादस्य वृत्तौ चतुर्थव्रतविषये एकनवतितमः प्रबधः ॥ ९१ ॥

व्याख्यान ९२ मुं.

स्त्रीओ स्वभावथीज बहु कामी होय छे छतां कोई कोई स्त्रीओ स्वीकार करेला व्रतने आपत्तिमां पण छोडती नथी.

आपद्रूपे महत्यग्नौ । नयति शीलकांचनं ।
नैर्मल्य या स्त्रियः काश्चित्ता· स्यु केषां न चित्रदा· ॥ १ ॥

व्याख्या

जे कोई स्त्रीओ आपत्तिरूप मोटा अग्निमा शीलरूप सुवर्णने निर्मल करे छे, तेवी स्त्रीओ कोने आश्चर्य न पमाडे ? आ विषे अजना सतीनो प्रबध छे ते आ प्रमाणे–

अंजनासतीनी कथा.

जंबूद्वीपमां आवेला प्रल्हादन नामना नगरने विषे प्रल्हादन नामे राजा अने प्रह्लादनवती नामे राणी हती. तेमने पवनंजय नामे कुमार हतो ते समये वैताढ्यगिरि उपर अंजनकेतु राजा अने अंजनवती राणीने अंजना नामे पुत्री थई हती ते यौवनवती थता तेनु पाणीग्रहण करावबाने अजनकेतु राजा अनेक

कुमारोना चित्रो पटउपर आलेखावी मगावी तेने पतावतो हतो, तथापि कोइ कुमारना रूप उपर तेने प्रीति थती नहोती एक वखते राजाए भविष्यदत्त अने पवनंजय कुमारना रूप चित्रपटउपर आलेखी मगावी तेणीने बताव्या बने कुमारना कुल, शील, बळ अने रुप सुदर जोइ ते चित्रो तेणे पोतानी पासे राख्या

एक वखते राजा अजनकेतु मत्रीओनी साथे ते कुमारोना गुण विगेरेनो विचार करवा लाग्यो तेणे मुख्य मत्रीने पुछ्युं, के आ बने कुमारमा विशेष कोण छे ? मत्रीए कह्यु " महाराज ! भविष्यदत्त कुमारमा जोके घणा गुणो छे तथापि श्री भगवंते कह्यु छे के, ते भविष्यदत्त अढार वर्षनी वये मोक्ष पामशे, तेथी ए आपणी कन्याने योग्य वर नथी पण सर्व रीते आ पवनजय कुमारज योग्य छे " आ प्रमाणे मत्रीना कहेवाथी राजाए तेनी साथे अजनाना लग्न निर्धार्या.

आ खबर पवनजय कुमारने थता ते रुपभदत्त नामना पोताना मित्रने साथे लइ अजनानु लावण्य तथा तेनो प्रेम जोवा माटे त्या आव्यो बने नील वस्त्र धारण करी रात्रे गुप्त रीते श्वसुरगृहना अत पुरमा दाखल थया त्या मधुर आलाप थतो साभळवामा आव्यो कोइ सखी अजनाने कहेवा लागी-स्वामिनी ! तमे छेवटे जे बे कुमारोना चित्र जोया हता, तेमा जे भविष्यदत्त छे ते गुणोथी अधिक अने धर्मज्ञ छे, पण ते अल्प आयुष्यवाळो छे एवु जाणी तेने छोडी दीधो छे, अने बीजो पवनजय दीर्घायु होवाथी तेनी साथे आपना सबध थयो छे ते साभळी अजना बोली, " सखी ! अमृतना उटा थोडा पण मीठा अने दुर्लभ होय छे अने विष हजार भार होय तोपण ते कशा कामनु होतु नथी " ते साभळी पवनजय कुमार तेना उपर क्रोधायमान थइ खड्ग खेंचीने तेने मारवा तैयार थयो तेने मित्रे वार्यो अने कह्यु, मित्र ! आ वखते रात्र छे, आपणे पारके घेर आव्या छीए, वळी आ कुमारी कन्या छे, ज्यासुधी तेने तमे परणी नथी त्यासुधी ते परकीया छे, तेथी तेने हणवी योग्य नथी पछी त बने त्याथी पोताने स्थानके चाल्या गया त्यारथी पवनजय तेनी उपर अत्यत खेद वहन करवा लाग्यो

पछी तेनी साथे पाणी ग्रहण करवाने ते इच्छतो नहीं हतो, तथापि तेना पिता विगेरेए तेने माडमाड समजावीने तेने परणाव्यो. परतु चोरी मडपमा पवनजय कुमारे रागथी तेना मुख सामु पण जोयु नहीं अने परण्या पछी पण तेणीने तेणे बोलावी नही आथी ते निरतर दु खी स्थितिने अनुभववा लागी घणा उपाये पण तेने भर्त्तानु सुख प्राप्त थयु नही एवी रीते बार वर्ष वीती गया.

ए अवसरे प्रतिवासुदेव रावण वरुण विद्याधरने साधवा गयो हतो त्याथी तेनो एक दूत प्रह्लादन राजाने बोलाववा माटे आव्यो प्रह्लादन राजाने त्या जवा तैयार थता जोई पवनजय तेमनु निवारण करी, तेमनी आशीष लई, दृष्टि मार्गे रहेली अजनानी सामु पण जोया वगर त्याथी चाली निकळ्यो प्रयाण करता मार्गे मानससरोवर आव्यु त्या पडाव कर्यो त्या कमलवनने विकाश पामेलु जोई ते आनद पाम्यो रात्रीए एक चक्रवाक पक्षीनी स्त्रीने करुणस्वरे विलाप करती तेणे साभळी के आ प्रमाणेः—

आयाति याति पुनरेति पुनः प्रयाति ।
पद्मांकुराणि वितनोति धुनौति पक्षौ ॥
उन्मादति भ्रमति कुजति मंदमदं ।
कांता वियोग विधुरा निशि चक्रवाकी ॥ १ ॥

ते सूचवती हती के, "पतिना वियोगथी आतुर एवी आ चक्रवाकी रात्रीने विषे आवे छे,जाय छे, फरीवार आवे छे,कमलना अकुरने ताणे छे, पाखो फफडावे छे, उन्माद करे छे, भमे छे अने मदमद बोले छे" आ प्रमाणे साभळी तेणे पोताना मित्र ऋषभदत्तने तेनु कारण पुछ्यु, एटले ते बोल्यो के–मित्र! दैवयोगे आ पक्षीओने रात्रे वियोगज थाय छे. आ पक्षिणी आम पोकार करती करती मृतप्राय थई जशे अने प्रातः काल पडशे एटले तेनो पति ज्यारे तेने मळशे त्यारे पाछी ते नवीन देहवाळी थशे

आ वखते अजनानु पूर्वे बाधेलु भोगातराय कर्म क्षीण थई गयु, तेथी पवनजयना मनमा तत्काळ एवो विचार आव्यो के, अरे! मारी पत्नी अजनाने छोड्या मने बार वर्ष वीती गया छे तो ते बीचारीना ते वर्षो शी रीते व्यतीत थता हशे? माटे चाल अहींथी एकवार पाछो घेर जई तेने मळी आवु आम विचारी कुमार रात्रे गुप्त रीते पाछो घेर आव्यो अने ते दिवसेज ऋतुस्नाता थयेली अजनाने तेणे प्रेमपूर्वक भोगवी अने पोताना नामथी अकित मुद्रिका तेने निशानी माटे आपी ते पाछो पोताना कटकमा आव्यो. तेना गया पछी अनुक्रमे अजनाने उदर वृद्धि थता तेनापर कलक आव्यु तेणीए पोताना पतिना नामथी अकित मुद्रिका बतावी, तथापि ते कलक गयुं नहीं अने तेने एक दासीनी साथे गृहनी बहार काढी मुकी त्याथी निकळीने पोताना पिताने घेर आवी,परतु त्या पण कलकनी वार्त्ता जाणीने तेणे राखी नहीं एटले तेणीए मात्र एक दासी साथे वनमा भटकवा माड्यु पूर्ण मास थता तेणे एक पुत्रने जन्म आप्यो, अने मृगबाळनी जेम ते तेनु पालन करवा लागी

एक वखते दासी जल लेवा गई हती त्या तेणे मार्गमा एक मुनिने कायोत्स रहेला जोया तेणे अजनाने ते वात करी एटले अजना तेनी पासे जई नमस्का करीने बेठी मुनिए कायोत्सर्ग पारी धर्मदेशना आपी ते साभळी अजना पोताने पडेला दु खनु कारण पुछ्युं मुनिए अवधिज्ञानथी तेनो पूर्वभव जणाव्यो के हे अजना ! कोई गाममा एक धनवान् श्रेष्टीनी तु मिथ्यात्वी स्त्री हती तारे एक बीज सपत्नी हती ते परमश्राविका हती ते प्रतिदिन जिन प्रतिमानी पूजा करीने पछी भोज लेती हती तु तेनी उपर द्वेष धारण करती सती हमेशा तेना अपवाद दर्शावती अ तेना मर्मनु ऊद्घाटन करती हती एक वखते ते तेनी जिन प्रतिमाने कचरामा सताड दीधी तेथी जिनपूजा कर्या वगर तेणीए मूखमा जळ पण नाख्यु नही, पण ते घण आकुळ व्याकुळ थइगइ एटले तेणे जेने तेने प्रतिमा विषे पुछवा माड्यु तेवामा काइ कचरामा रहेली प्रतिमा बतावबा माडी, पण ते बतावबा न देता तेनी उपर धु नाखी एवी रीते बार मुहूर्त सुधी राखता ज्यारे ते घणी दु खी थइ, त्यारे ते द लावी तेने प्रतिमा लावी आपी ते पापथी तारे तारा पति साथे बार वर्षनो वियो थयो हतो हवे ते कर्म क्षीण थवाथी तारो मामो अहीं आवी तने पोताने घेर ल जशे त्या तारो स्वामी पण तने मळशे. आ प्रमाणे मुनि कहेता हता तेवामा एक विद्य धर उपर थइने जतो हतो तेनु विमान त्या स्खलित थयु विद्याधरे तेनु कारण जा णवा नीचे जोयु त्या पोतानी भाणेज अजनाने तेणे ओळखी एटले तत्काळ नीच उतरी दासी अने पुत्र सहित तेने पोताना विमानमा बेसाडी आकाशमार्गे चाल्यो

अजनानो बाळक घणो चपल अने उग्र पराक्रमी हतो तेथी चालता विमानन घुघरीओनो नाद साभळी ते बाळकने घुघरी लेवानु कौतुक थयु, तेथी तेणे घुघरी लेवा चपलताथी आगल आगळ हाथ लबाववा माड्यो एम करता अकस्मात् विमा नमा थी नीचे पडी गयो आ जोइ अजनाने महा दु ख उत्पन्न थयु तेणे आक्र स्वरे रुदन करवा माड्यु के, "अरे प्रभु, आ शो गजब! अरे हृदय! शु तु वज्रथी घडा एलु छे ! अथवा वज्रना जेवु छे ? के पतिना वियोगे पण तु खडे खड थइ गयु नही" आ साभळी तेनी पछवाडे तेनो मामो भूमिपर उतर्यो तेणे शिलाना चूर्ण (रेती) उपर पडेला बाळकने तत्काळ उपाडी तेनी माताने आप्यो, पछी ते विद्याधरे पो ताने घेरे पहाची अजनाने बाळक सहित नेर मुकी पोतानु कोइ कार्य करवा माटे अन्य स्थानके गयो अहीं पवनजय वरुण विद्याधरने साधी घेर आव्यों माता पि ताने प्रणाम करी पोतानी पत्नीना वासगृहमा गयो तो त्या स्त्रीने जोइ नहीं तत्काळ माता पिताने पुछयु, त्यारे तेमणे कलक लागवाथी काढी मुक्या सबधी वार्त्ता कही ते साभळी पवनजय विरह व्याकुळ थइ मरणने माटे चदननी चिता रचीं वळवा

तैयार थयो ते समये तेना मित्र ऋषभदत्ते कह्यु, सखे, जो त्रण दिवसमा अजनाने न लावु तो पछी तारे अवश्य चितामा बळवु आ प्रमाणे कही तेनु निवारण करी ऋषभदत्त विमानमा बेसी आकाशमार्गे परिभ्रमण करता त्रीजे दिवस सूर्यपुरे आवी पहोंच्यो. त्या उपवनमा स्त्रीओनी तथा बालकोनी गोष्टी थती तेणे साभळी ते वखते कोइ बालके कह्यु, मित्रो ! अहो अजना नामे कोइ सुदरी पुत्र सहित आवेली छे ते आपणा राजा सूर्यकेतुनी सभामा दररोज आवे छे आवा शब्दो अकस्मात् साभळी ऋषभदत्त हर्ष पाम्यो अने तत्काल तेने आवीने मळ्यो अजना तेने जोई लज्जाथी नम्र मुख करीने पोताना मामानी पाछळ उभी रही ऋषभदत्त पासेथी पतिना दिग्विजयनी तेमज तेना विरह व्याकुळपणानी वार्त्ता साभळी त्या जवाने उत्सुक थई पछी तेणे मामानी आज्ञा लीधी विद्याधरे पण पुत्र सहित तेने सोंपी एटले ऋषभदत्त तेने लई वेगथी पवनजयना नगरमा आव्यो तेना आव्याना खबर साभळी पवनजय घणो हर्ष पाम्यो, अने मोटा उत्सवथी तेणे स्त्री पुत्रने नगर प्रवेश कराव्यो सर्व लोको पण परम आनद पाम्या

पवनंजय अने अजना बन्ने दपतीने प्रतिदिन प्रीतिमा वृद्धि थवा लागी ते पुत्रनु नाम तेमणे **हनुमान्** पाडयु ते अतुल बलवान् थयो एक वखते वीशमा तीर्थंकर श्रीमुनिसुव्रत स्वामीना तीर्थना कोई मुनिओ त्या पधार्या तेमनी देशना साभळी पवनजय अने अजनाए वैराग्य पामी दीक्षा लीधी. पछी महावीर श्रीहनुमान राजा थयो ते अति हठीलो अने वाचाळ हतो तेथी ते श्रीरामचद्रनी सेनानो अध्यक्ष तथा महाबलवान् थयो पवनजयमुनि अने सती अजना साध्वी निरतिचार व्रतने पाळी स्वर्गे गया

"आ प्रमाणे सती अजनानु सुदर चरित्र साभळी तेने हृदयमा धारण करीने भव्य प्राणीओए शीलना सुगधथी हृदयने सुगधी करवु."

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादस्य
वृत्तो शीलविषये द्विनवतितमः प्रबध ॥ ९२ ॥

व्याख्यान ९३ मु.

हवे स्त्रीओना अग जोईने मोह पामे छे तेओने शिक्षा आपे छे,

वामांगीना मुखादीनि, किंवीक्ष्य वीक्ष्य हृष्यसि।
क्षण हर्षमिषाद्दत्ते, श्वभ्रादिषु रुजं पराम् ॥ १ ॥

व्याख्या

" अरे मूर्ख ! सुदरस्त्रीओना मुखविगेरे जोईने तु शुं हर्ष पामे छे ? ते क्षणवार हर्ष आपवाना मिषथी नरकादिकमा महा मोटी पीडाने आपे छे " आ विषे एवी भावना करवी के कवि स्त्रीना मुखने चद्रनी उपमा आपे छे, पण ते श्लेष्म अने थुक विगेरे निंद्य वस्तुओथी भरपूर छे अने ते मुख रत्नप्रभादि नारकीना प्रयाणनुं मुख छे स्त्रीना काला केशरी वेणी मोक्षमार्गे जता आडी सर्पणीरूप छे तेनो सुदर सीमत (सेंथो) सीमत नामना नरकावासने आपनार छे तेनी नासिका स्वर्गनी नाशिका (नाशकरनारी) छे स्त्रीना बिंबाधरनु पान करनार पोताने सर्वस्व मळेलु माने छे, पण तेथी क्षणे क्षणे यमराज तेनु आयुष्य पीवे छे ते जाणतो नथी मूढ कामी तेना कुचकुभने आलिंगन करी सुवे छे, पण ते तेनाथी थनारी कुंभीपाकनी वेदनाने भूली जाय छे अज्ञ माणस स्त्रीने भुजानु आलिंगन दइने सुवे छे अने तेमा बहु सुख माने छे, पण गर्भनी वेदना अने योनिमाथी नीकलता थयेला दु खनुं तेने विस्मरण थइ जाय छे आ सर्वनो विचार करीने जे वामागीनो त्याग करे तेने खरेखरो विवेकी समजवो कह्यु छे के,—

दर्शनात् स्पर्शनात् श्लेपात् या हंति समजीवीत ।
हेयोग्रविपनागीव, वनिता सा विवेकीभि ॥ १ ॥

" जे स्त्री दर्शनथी, स्पर्शथी अने आलिंगनथी समतारूप जिवितने हणे छे, ते सर्पिणी जेवी स्त्री विवेकी पुरुषोए तजी देवा योग्य छे " स्त्रीओना ससर्गथी थतु दु ख तो सिंहादिकना सबधथी थता दु खथी पण अधिक छे कह्यु छे के,—

निरकुशा नरे नारी, तत्करोत्यसमजसा ॥
यत्क्रुद्धा सिंहशार्दुला , व्याला अपि न कुर्वते ॥

"निरकुश थयेली स्त्री पोताना पुरुषउपर जे अघटित आचरे छे तेवु क्रोधी थयेला सिंह, शार्दुल के सर्पो पण आचरता नथी " आ विषे सुकुमालिका स्त्रीनो प्रबध छे ते आ प्रमाणे—

---

१ रुद महत्–इत्यपि पाठ –तेनो अर्थ-महा रुदन करावे छे

सुकुमालिकानी कथा.

चपापुरीमा जितशत्रु नामे राजा हतो तेने यथार्थ नामवाली सुकुमालीका नामे राणी हती राजा जितशत्रु तेनापर एटलो बधो आसक्त हतो के, ते राज्यादिकनी पण चिंता करतो नहीं आवी राजानी वर्त्तणुकथी प्रधानवर्गे राजाने स्त्री सहित मदिरापान करावी अरण्यमा तजिदीधो अने तेना पुत्रने राज्यउपर बेसार्यो ज्यारे मद्यनो नीसो उतरी गयो त्यारे ते बंने राजाराणी विचार करवा लाग्या. अरे, आपणे अहिं क्याथी ! आपणी महा कोमळ शय्या क्या गई ! आपणा राजवैभवनु शु थयु ! आम विचारता बने त्याथी आगळ चाल्या थोडे दूर जता सुकुमालिकाने तृषा लागी तेना कठ अने ताळु सुकाइ गया तेणे राजाने कह्युं, स्वामी ! मारा जिवितने बचाववा जळ लावी आपो राजा जळ लाववाने गयो पण कोई ठेकाणे जळ जोवामा आव्यु नहीं पछी खाखराना पत्रनो पडीओ करी तेमा पोताना बाहुनी नसमाथी रुधिर काढी ते पडीओ पूर्ण भर्यो ते लावी राणीने कह्यु के, प्रिये ! आ खाबोचीआनु जळ अती मलीन छे तेथी नेत्र मीचीने पी जा राणीए तेम करीने पान कर्युं पछी क्षणवारे ते बोली–स्वामी ! मने क्षुधा बहु लागी छे तेथी राजाए दूर जइ छरीवडे पोताना साथळनु मास छेदी तेने अग्निमा पकावी राणीने पासे मुक्यु अने पक्षीनु मास कही तेणीने खवराव्यु अनुक्रमे त्याथी कोई देशमा आवी पोताना आभूषणो वेची काइक व्यापार करीने राजा तेनु पोषण करवा लाग्यो

एक वखते राणीए कह्यु, स्वामी, ज्यारे तमे व्यापार करवा बहार जाओ छो त्यारे हु एकली घरमा रही शकती नथी आवा वचन साभळी राजाए एक पागला माणसने चोकीदार तरीके घरपासे राख्यो ते पागला माणसनो कठ घणो मधुर हतो, तेथी राणी मोह पामी अने तेने स्वामी तरीके स्विकार्यो त्यारथी सुकुमालीका पोताना पतिने मारवाना छिद्रो जोवा लागी एक वखते राजा राणीने लईने वसतऋतुमा जलक्रीडा करवा माटे गगातटे गयो राजाए मधुपान कर्युं ज्यारे राजा बेभान थयो त्यारे राणीए तेने गंगाना प्रवाहमा वहेतो मुकी दीधो. पछी राणी सुकुमालिका पेला पागलाने स्वेच्छाथी गायन करावती काधउपर बेसारी भीख मागती भमवा लागी ते जोई लोको तेने पुछवा लाग्या के, आ कोण छे ? त्यारे ते कहेती के, मारा मातापिताए आवो पति जोयो छे, एथी तेने स्कध उपर वहन करु छु

अहिं जितशत्रु राजाने गगामा तणाता एक काष्ट प्राप्त थयु तेनायोगे ते तरीने बहार नीकल्यो अने नदी कीनारे कोई एक वृक्षनी तळे सुई गयो. ते समये

त्या समीपे आवेला कोई नगरनो राजा अपुत्र गुजरी गयो, तेथी तेना मत्रीओए पंचदिव्य कर्या ते त्या आवीने उभा रह्या एटले राजाने जाग्रत करी मत्रीओए तेने राज्य उपर वेसार्यो दैवयोगे पेली सुकुमालिका पगुने लईने तेज नगरमा आवी चडी ते बने सतीपणाथी अने गीतमाधुर्यथी ते नगरमा विख्यात थया. ते विख्याती साभळी राजाए तेमने पोतानी पासे बोलाव्या तेने जाताज राजाए ओलखी लीधा तेथी तत्काल ते बोल्यो के, हे बाई! आवा विभत्स पागलाने उपाडीने तु केम फरे छे? ते बोली मातापिताए जेवो पति आप्यो होय तेन सतीओए इद्रना जेवो मानवो ते साभळी राजा बोल्यो-हे पतिव्रता! तने धन्य छे पतिना बाहुनु रुधिर पीधु अने साथळनु मास खाधु तोपण छेवटे गगाना प्रवाहमा नाखी दीधो अहो, केवु तारु सतीपणु! आ प्रमाणे कही ते न्यायी राजाए स्त्रीने अवध्य जाणी पोताना देशनी हदपार करी अने आवु प्रत्यक्ष स्त्रीचरित्र जोई तेणे सर्व स्त्रीओनो त्याग करवारुप महाव्रत लीधु

"सुकुमालिकानु चरित्र जोई जितशत्रु राजा विषय सुखथी विरक्त थयो अने काम क्रोधादि शत्रुओनो जय करी तेणे पोतानु जितशत्रु नाम सार्थक कर्यु"

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य वृत्तौ स्त्रीत्यागविषय त्रिनवतितमः प्रबध ॥ ९३ ॥

व्याख्यान ९४ मु.

स्त्रीजाति अनेक गुणनी हानि करे छे ते कहे छे.

गुणिना गुणतोभ्रंश कर्तुं कूट रचेद्बहु ।
या सा स्त्री परिहर्त्तव्या विघ्नकर्त्री शुभे पथि ॥ १ ॥

व्याख्या

"जे स्त्री गुणी पुरुषोने गुणमाथी भ्रष्ट करवा बहु कपट रचे छे तेवी स्त्रीने शुभ मार्गमा विघ्न करनारी जाणी दूरथी छोडी देवी" लौकिकमा गुणी पुरुषो शकर विगेरे कहेवाय छे तेने तेमनी स्त्रीए भीलडीनेरुपे मोहित कर्या हता. ते स्त्रीना वचनथी नृत्य करता शकर देवताने हास्य करवा योग्य बन्या हता सेवाळ अने जलमात्रना आधार वडे निर्वाह करनारा तापसो पण स्त्रीओना विलासथी भ्रष्ट थएला छे ते विषे जैनना शास्त्रमा कहेवाय छे के,—

सुशुप्तानामपि प्राय, इंद्रियाणां न विश्वसेत् ॥
विश्वामित्रोपि सोत्कंठ, कंठे जग्राह मेनका ॥ १ ॥

"इंद्रियो भले प्रकारे गोपवेली होय तोपण तेनो विश्वास करवो नहीं. कारणके विश्वामित्र जेवाए पण उत्कंठित थईने मेनकाने कंठवडे ग्रहण करी हती " ते विषे नीचे प्रमाणे कथा छे

महाशय विश्वामित्र सूक्ष्म फळ अने जळनो आहार करी सूर्यसामे नेत्र राखी तपस्या करता हता तेथी तेमनामा नवु स्वर्ग बनाववानी शक्ति उत्पन्न थई हती. आ खबर इंद्रने थवाथी तेणे तेमने तपथी भ्रष्ट करवा मेनकाने त्या मोकली मेनकाना विविध विलासथी मुनि ध्यान भ्रष्ट थया अने तीव्र अनुरागवडे तेने भोगवी. चिरकाळे ध्यानभग स्थितिमा रहेता पाछु चैतन्य प्राप्त थवाथी जाग्रत थयेला मुनिए मेनकाने पुछ्यु के, तमे मारु ध्यान भग कर्यु त्यारपछी केटलो समय व्यतीत थयो. मेनका बोली–नवसो अने सात वर्ष नवमास अने त्रण दिवस वीती गया आवी रीते वारवार अप्सराओ मोकलीने इंद्रे तेना तपनो भग कर्यो हतो जेथी ते शक्तिहीन थई गया हता ते विषे विस्तारथी वृत्तात भारतमाथी जाणी लेवो.

वळी ते विषे लोकोत्तर (जैन) शास्त्रमापण आषाढभूति, आर्द्रकुमार अने अरणिक वगेरे गुणवान् मुनिओ पण स्त्रीओना रचेला कपट जालमा पडेलाना दृष्टातो छे तेथी तेवी स्त्रीओ त्याग करवा योग्यज छे वळी वल्कलचीरीए पण स्त्री सगमा घणा दोषो जाणी तेनो त्याग कर्यो हतो तेनो प्रबध आ प्रमाणे—

श्री वल्कलचीरि मुनिनो प्रबंध.

पोतनपुरनामना नगरमा **सोमचंद्र** नामे राजा हतो, तेने **धारणी** नामे पत्नी हती एक वखते धारणी पोताना पति सोमचद्रना माथाना केश कांसकीथी ओळती हती ते महाकार श्वेत केश जोई बोलीके—हे स्वामी ! आ जरावस्थानो दूत आव्यो राजा पोताने आवेला धोळा केशने जोईने विचारवा लाग्यो के, मारा वृद्ध वडिलोए तो योवन वयमा व्रत ग्रहण करेलु छे, मने धिक्कार छे जे हु अद्यापि माथे पळी आव्या तोपण धर्म आचरतो नथी ते साभळी राणी बोली हे स्वामी, अद्यापि धर्मकार्यमा विलब करो नही, ते साभळी राजा सोमचद्रे पोताना पुत्र **प्रसन्नचद्र**ने राज्य उपर बेसारी तत्काळ तापस व्रत धारण कर्यु धारणी राणी गर्भवती हती तथापि एक धात्रीने साथे लई पति साथे चाली नीकली समय पूर्ण थता अनुक्रमे धारणीने पुत्र थयो परतु प्रसवनी उग्र पीडामा ने मृत्यु पामी एटले

सोमचंद्र तापसने चिंता थई पडी के, हवे आ माता वगरनो पुत्र शी रीते उछरशे ? स्वर्गमा गयेली देवी धारणी अवधिज्ञाने पोताना तापसपतिनी चिंता जाणी भेंसनुं रूप लई त्या आवी अने पोताना बालकने धवराव्यो एवी रीते देवमाता अने धात्रीए पालन करेलो ते बालक मोटो थयो तेना तापसपिताए ते बालकने वल्कलं वस्त्रोमा वींटाळी तेनु वल्कलचीरी एवु नाम पाड्यु अनुक्रमे त्रण वर्षनो थयो त्यारे भेंसरूपे आवेली पूर्वभवनी माता देवलोकमा चाली गई पछी तापसे वनफल तथा धान्यथी पोषण करेलो ते बालक अनुक्रमे सोळवर्षनो थयो ते पुत्र मात्र तात, तात, एटलुज बोलतो अने तेना पिताने नमस्कार करतो हतो. तेमज वनफळ लावी पितानु पोषण करता शीख्यो हतो

एक वखते प्रसन्नचंद्र राजा कोइ भिल्लना मुखथी पोताना सहोदरनो प्रबंध जाणी तेने मळवाने उत्सुक थयो तेथी तेणे वेश्याओने बोलावीने कह्यु के, तमे कोईपण उपाये लोभावी मारा बधुने अहीं लावी आपो पण तमारे तेने दूरथी जोवो, नहींतो सोमचंद्र तापस तमने शापथी भस्म करशे आवा तेना वचनथी ते वेश्याओ तापसोनो वेष लई सोमचंद्र तापसना आश्रमपासे आवी वल्कलचीरीए तेमने दूरथी आवती जोई एटले तेणीओ तापसरूपे होवाथी तेमने तापस जाणी तेणे नमस्कार कर्यो पछी वनमाथी लावेला फल तेमना आहारने माटे आगल धर्या ते फलोने जोईने कपट मुनिओ बोल्या,'महाराज, आवा नीरसफलोने अमे शु करीए? अमारे तो पोतनपुरना फलो जोइए हे मुनि [1] तमे अमारा आश्रमना फलनी वानकी जुवो ' एम कही ते कपटी वेश्याओए तेने एकातमा नेसारी खाड, साकर, अने द्राक्ष विगेरे मधुर मेवा विगेरेनो आग्रहथी आहार कराव्यो ते मधुर फलना स्वादथी हर्ष पामी ते मुनि बोल्या, आमली अने कोठीना फळो जे पोते खातो हतो तेना स्वादमा उद्वेग पाम्यो जेम जेम ते मुनि लोभायो तेम तेम तेओ विशेष स्वादवाळी वस्तुओ तेने खावा आपवा लागी पछी ते मुनिना हाथने पोताना स्तन अने कोमल गाल विगेरे उपर मुक्यो तेथी ते तापस बोल्यो के महाशय ! तमारु शरिर आवु कोमळ केम छे? अने आ तमारा हृदय उपर बे वेदिका शेनी छे? ते बोली अमारा पोतन आश्रमना फळोनु आस्वादन करवाथी आवा अग थाय छे तेथी तमे पण आ आश्रमने छोडी पोतनाश्रममा आवो पछी वल्कलचीरी तेमनी साथे त्या जवानो सकेत करी पोताना पात्रो एकाते गोपविने फरीवार तेमनी पासे आव्यो. कह्युं छे के —

---

१ झाडनी छालना बनावेला वस्त्रो

तावन्मौनी यति ज्ञानी, सुतपस्वी जीतेंद्रिय. ।
यावन्न योषितां दृष्टि, गोचरे याति पुरुषः ॥

"ज्यासुधी पुरुष सुंदर स्त्रीओने दृष्टिगोचर थयो नथी त्यासुधी ज ते मुनि, यति, ज्ञानी, तपस्वी अने जितेंद्रिय रहे छे " आ समये सोमचद्रऋषि आम तेम फरता त्या आवता हता तेमने दूरथी आवता जोई अगाउथी सकेत करी वृक्ष उपर राखेला पुरुषोए ते स्त्रीओने तेना खबर आप्या एटले तत्काल तेओ शापना भयथी नाशी गई अने राजानी आगल आवीने ते वृत्तात जणाव्यो ते साभळी राजाए "अहो ! मारो बंधु वनथी भ्रष्ट थयो, तेथी तेना शा हाल थशे ? " आवुं चिंतवी तेनी दिलगीरीमा आखा नगरमा गीत नृत्यादिकनो प्रतिषेध कर्यो.

हवे अहिं वल्कलचीरी वनमां भमतो हतो त्या कोई रथवाळाए तेने दीठो एटले पुछ्यु के—मुनि ! तमे क्या जाओ छो ? ते बोल्यो, हु पोतनाश्रममा जवा इच्छुं छु एटले रथवाळाए कह्यु के—हु पण त्याज जउ छु तेथी वल्कलचीरी रथनी पछवाडे चाल्यो ते रथमा रथवाळानी स्त्री बेठी हती तेने मुनि 'हे तात' 'हे तात' एम कहेवा लाग्यो. त्यारे ते स्त्रीए तेना पतिने कह्यु के, आ मुनि, स्त्री पुरुषनो भेद पण जाणतो नथी पछी रथिके तेने मुग्धजाणी मोदक खावा आप्या तेनो स्वाद लई मुनि बोल्या ह ह जाणवामा आव्यु, आ फल पूर्वे मने पेला महाशयोए आप्या हता तेज छे. पछी आगल जता रथिके एक चोरने युद्ध करी जिती लीधो चोरे रथिकने घणुं धन आप्यु ते लई रथिक पोतनपुरमा आव्यो त्या रथीए मुनिने कह्यु के, हे बाल-मुनि, आ धनल्यो धन वगर अहींआ स्थान भोजन मळशे नहीं पछी तेने केटलुंक धन आपी आ "पोतनाश्रम" एम कही ते रथी त्याथी चाल्यो गयो हवे बालमुनि नगरमा चाल्यो त्या दुकानोनी श्रेणी अने हवेलीओ जोई विचार करवा लाग्यो के हु क्या आव्यो ? आ आतु शु हशे ? वळी मार्गे कोई नर के नारी मले तो ते, तेने 'तात' वदना करु छु ' एम कहेवा लाग्यो लोको तेने तेम करता जोईने हसवा लाग्या आम करता कोई वेश्या तेना जोवामा आवी, एटले तेने मुनि जाणी मूल्य आपीने निवास तथा फलादिकनी तेणे याचना करी. तेणीए तेने पोताना घरमा बोलावीने अभ्यगस्नान कराव्युं मुनिए उपसर्गनी जेम ते सहन कर्युं. पछी तेणीए तेनी साथे पोतानी पुत्रीनु पाणीग्रहण कराव्यु सोमचद्रना पुत्र बालमुनि वेश्याना गीत नृत्य साभळी अने जोइ चिंतवन करवा लाग्या के आ बधा शु भणे छे ? तेओ मने फळ केम आपता नथी ? आ वखते राजाए ते वेश्याने घेर थतो मृदग ध्वनि साभल्यो तेथी तत्काल तेने बोलावी राजाए पुछ्यु के मारे घेर शोक छता तु वाद्य केम वगाडे छे ? वेश्या बोली—दैवज्ञ (जोषी)ना वचनथी में

एक तापस कुमारने कन्या आपी छे तेना हर्षमा मारे त्या वाद्य वागे छे आ वार्त्ता साभळी तेज वखत राजानु दक्षिण अंग फरक्यु. तेथी तेने निश्चय थयो के, जरूर मारो बधुज त्या आव्यो हशे-आथी राजा तरत ते वेश्याने घेर गयो त्या पोताना अनुज बधुने जोई राजाए प्रेमथी तेनु विवाहमंगळ कर्यु अने पोताना बधुने ते स्त्री सहित दरबारमा लाव्यो. अनुक्रमे ते सर्व कळामा कुशळ थयो पछी राजाए आ सर्व वृत्तात पोताना पिता सोमचद्रने जणाव्यो तेथी ते शोक रहित थयो.

हवे राज्यमा रहेता अने स्त्री साथे विषयसुख भोगवता वल्कलचीरीने बार वर्ष वीती गया एकदा अर्धरात्रे जाग्रत थता वल्कलचीरीने विचार आव्यो के, 'अहो, मारा अकृतज्ञपणाने धिक्कार छे अने मारा अजितेंद्रियपणाने पण धिक्कार छे, के जेथी हु मारा पिताने मुकी जईने अहीं पड्यो रह्यो छु' आ प्रमाणे विचारीने ते पोताना पिताने जोवा अति उत्सुक थयो तेथी प्रात काळ भाईनी आज्ञा लईने पिता पासे जवा चाल्यो वडीलभाई पण लघुबंधुनी साथे जवाने तैयार थयो अने भाईए वनमा जई पिताने प्रणाम कर्यो सोमचद्रमुनिए पोताना लघुपुत्रने उत्सगमा बेसारी तेना सर्व समाचार साभळ्या. ते वखते हर्षना अश्रु आवता तेमना ज्ञानना पडल उतरी गया. पछी वल्कलचीरी पूर्वे गोपवी राखेला तापसपणाना उपकरणो काढी तेने उत्तरीयवस्त्रना छेडाथी प्रमार्जन करता विचारमा पड्या के, अहो, मे पूर्वे आवु जोयु छे, ए प्रमाणे उहापोह करता तेने जातिस्मरणज्ञान उत्पन्न थयु तेथी तेणे पोतानो पूर्वभव दीठो एटले तेणे जाण्यु के-अहो, हमणा गतभवमाज मुकेलु साधुपणु पण मारा जाणवामा आव्यु नहीं माटे स्त्रीविषयना लपटपणाने धिक्कार छे आ प्रमाणे शुभ ध्यान ध्याता तेने त्याज केवळज्ञान उत्पन्न थयु तेनी देशनाथी तेना पिताए पण दीक्षा लीधी अने प्रसन्नचद्र ब्रह्मचर्य व्रत अगीकार करी घेर गयो

प्रत्येकबुद्ध वल्कलचीरी मुनि श्री वीरप्रभुनी पासे गया अने अनुक्रमे मोक्षे गया एवी रीते वल्कलचीरी मुनि पोताना आत्मप्रदेशने लागेली कर्मनी वर्गणाने तापसपणाना वल्कलादि उपकरणोनी रजनी सारे मार्जन करी दूर अने भाववी रजपणाने दूर करता सता कामदेवने जितनारा अने प्रत्येकबुद्ध थया.

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद ग्रन्थस्य वृत्तौ स्त्रीसगत्यागविषये चतुर्नवतितम प्रबध ॥ ९४ ॥

व्याख्यान ९५ मुं.

मातर स्वसुतां जामि रागांधो नैव पश्यति ।
पशुवद्रमते तत्र रामापि स्वसुतादिषु ॥ १ ॥

व्याख्या.

" कामरागथी अंध थयेलो पुरुष पोतानी माता, पुत्री के बेनने पण जोतो नथी, तेनीसाथे पशुनी जेम रमे छे, तेवीरीते स्त्रीपण पण पोताना पुत्र पितादिनी साथे पशुनी जेम रमे छे " जेम पशु पोतानी माता विगेरेनी साथे अविवेकीपणाने लीधे स्वेच्छाए क्रीडा करे छे, तेवी रीते कामांध एवो पुरुष के स्त्री पण अविवेकीपणे पुत्रपुत्र्यादिकमां प्रवर्त्ते छे आ विषे अढार नातरानो प्रबंध कहेवाय छे ते आ प्रमाणेः—

अढार नातरानो प्रबंध.

मथुरापुरीमां कामदेवनी सेना जेवी कुबेरसेना नामे एक वेश्या हती ते प्रथम गर्भना भारथी खेदित थई त्यारे तेणे पोतानी माताने ते दु.ख जणाव्युं. माताए कह्यु, वत्से ! तारो गर्भ पाडी नाख तेथी तने खेद दूर थाय वेश्या बोली के, तेम करवु ते अयुक्त छे पछी समय आवता तेणीए एक पुत्र अने पुत्रीने जन्म आप्यो ते वखते तेनी माता बोली के, वत्से ! आपणो उद्यम मात्र यौवन उपर छे, अने आ बे स्तनपान करनारा बालको तारा यौवनने हरी लेशे कह्यु छे के- " वेश्या जाति यौवन उपर जीवनारी छे तेथी तेणे जिंदगी पेठे यौवननी रक्षा करवी " माटे आ जोडलाने विष्टानी जेम बहार त्यजी दे वेश्याए ते स्वीकार्युं पछी दश दिवस सुधी तेनु पालन करी, कुबेरदत्त अने कुबेरदत्ता एवा बे नामथी अंकित बे मुद्रिका करावी तेमनी आगळीमा पहेरावी, अने तेमने एक पेटीमा पूरी ते पेटी यमुनानदीना प्रवाहमा वहेती मुकी दीधी

जलना तरंगोना प्रवाह साथे तणाती तणाती ते पेटी सौर्यपुर समिपे आवी त्या कोई बे गृहस्थ श्रेष्ठीओए ते पेटी ग्रहण करी अने ते बालकोने बने श्रेष्ठीए पुत्र पुत्रीपणे राखीने मोटा कर्या अनुक्रमे ज्यारे तेओ यौवनवयने प्राप्त थया त्यारे ते बनेने परस्पर योग्य जाणी तेमनो मोटा उत्सवथी विवाह कर्यो ए दंपती परस्पर अति स्नेहथी रहेवा लाग्या.

एक वखते तेओ सोगठावाजी रमता हता तेवामां कुबेरदत्तना करमाथी नीकळीने पेली नामांकित मुद्रिका कुबेरदत्ताना उत्संगमा पडी. ते लईने जोता

कुबेरदत्ता विचारमा पडी अने बोली के, आ बने मुद्रिका आकृति विगेरेथी तुल्य छे तेथी एम जणाय छे के, आपण बने सहोदर युगलीआ हईशु, परतु दैवयोगे आपणा विवाह थई गयो छे पछी ते बनेए जइने पातपोतानी माताने पुछ्यु त्यारे माताए तेमनो पूर्व वृत्तात जणाव्यो ते साभळी बने बोल्या के, हे माता ! तमे आवु अकृत्य केम कर्यु ? माता बोली–वत्सो, हजु तमारु मात्र पाणीग्रहणज थयु छे बीजु काई पाप थयु नथी तेथी ए सबध त्यजी द्यो अने कुबेरदत्तने कह्यु के, तु व्यापार करवा माटे परदेश जवा इच्छे छे तो हाल परदेश जा त्याथी कुशळक्षेम पाछो आव्या पछी तारो बीजी स्त्रीनी साथे विवाह करशु ते साभळी कुबेरदत्त पोतानी घेन गणी वेचवा माटे अनेक प्रकारना करीयाणा लइने कुबेरदत्त मथुरा पुरीए गयो. अनुक्रमे केटलेक दिवसे त्या पेली कुबेरसेना वेश्यानी साथेज तेने सबंध थयो तेनी साथे सुखभोग भोगवता तनाथी एक पुत्र उत्पन्न थयो

अहीं कुबेरदत्ताए विषयविरक्त थईने दीक्षा लीधी उग्र तपस्या करता तेने अवधिज्ञान प्राप्त थयु. तेथी तेणे कुबेरदत्तने मातानी साथे विलास करतो जोयो तेने प्रतिबोध करवा माटे ते साध्वी मथुरापुरी आव्या अने तेना घरनी नजिक आवेला एक उपाश्रयमा निवास कर्यो त्या रहीने तेणीए धर्मदेशना आपी एक वखते ते वेश्यानो पुत्र पारणामा सुतो सुतो रोतो हतो तेने साध्वी आ प्रमाणे हुलावती सती हालरडा गावा लागी ते विषे श्री परिशिष्टपर्वमा आ प्रमाणे लख्यु छे के –

"हे वत्स ! रो नहीं, तुं मारो भाइ थाय छे, पुत्र थाय छे, दीयर थाय छे, भत्रीजो थाय छे, काको थाय छे, अने पुत्रनो पुत्र थाय छे हे बालक ! जे तारो पिता छे, ते मारो सहोदर बधु थाय छे, पिता थाय छे, पितामह थाय छे, स्वामी थाय छे, पुत्र थाय छे अने सासरो थाय छे हे बालक ! तारी जे माता छे, ते मारी माता थायछे, मारा पितानी माता थाय छे, भोजाई थायछे, वहु थाय छे, सासु थाय छे अने सपत्नी थाय छे

ते साभळी कुबेरदत्त बोल्यो के, हे साध्वी ! आवु अघटित केम बोलो छो ? साध्वीए कह्यु के, साभळो–आ बालक मारो सहोदर बधु छे, कारण के अमे बे एक उदरथी उत्पन्न थया छीए, वळी आ बालक मारा पतिनो पुत्र होवाथी मारो पण पुत्र थाय छे, तेमज मारा पतिनो अनुज बधु होवाथी मारो दीयर पण थाय छे, वळी ते मारा भाईनो पुत्र छे, तेथी मारो भत्रीजो पण थाय छे, तथा ते मारी माताना पतिनो (पिता) भाई छे तेथी मारो काको पण थाय छे, अने मारी सपत्नी जे कुबेरसेना तेनो पुत्र जे कुबेरदत्त तेनो आ पुत्र छे तेथी ते मारा [illegible]

कहेवाय छे. हवे तेना पितानी साथे जे मारे छ संबंध छे ते आ प्रमाणे—आ बालकनो जे पिता ते मारो भाई थाय कारण तेनी अने मारी एक माता छे तथा आ बालकनो जे पिता ते मारो पिता थाय कारण के ते मारी मातानो स्वामी छे वळी जे आ बालकनो पिता ते मारो पितामह थाय कारण मारी माता कुबेरसेना तेनो पति कुबेरदत्त तेनो आ बालक अनुजबधु छे तेथी काको अने तेनो पिता कुबेरदत्त तेथी ते वृद्ध पिता थाय, तथा जे आ बालकनो पिता ते मारो स्वामी थाय कारण के तेनी साथे मारो विवाह थयेलो छे वळी ए मारी शोक्यनो पुत्र छे तेथी मारो पुत्र पण थाय तथा जे आ बालकनो पिता ते मारो सासरोपण थाय कारण के ते मारा दीयरनो पिता छे वळी मारे आ बाळकनी माता साथे छ संबंध छे ते आ प्रमाणे—जे आ बालकनी माता ते मारी पण माता थाय कारण तेणीथी मारो जन्म थयेलो छे तथा जे आ बालकनी माता ते मारी पितामही थाय कारण ते मारा काकानी माता छे तथा जे आ बालकनी माता ते मारी भोजाई थाय कारण मारा भाईनी स्त्री थाय छे तथा जे आ बालकनी माता ते मारी पुत्रवधू पण थाय कारण मारी शोक्यना पुत्र कुबेरदत्त तेनी ते स्त्री थाय छे तथा जे आ बालकनी माता ते मारी सासु पण थाय कारण के मारा पतिनी माता थाय छे तथा एनी माता मारी शोक्य पण थाय कारण मारा पतिनीज ते बीजी स्त्री थाय छे

आ प्रमाणे सांभळी कुबेरदत्ते तेनो सर्व वृत्तांत पुछ्यो साध्वीए कही बताव्यो, ते सांभळी वैराग्य पामीने तेणे दीक्षा लीधी अने कुबेरसेनाए पण श्राविकापणु स्वीकार्यु

आ प्रमाणे जे विवेकी पुरुष विषयना दोषने चित्तमा धारी रागाधपणाने मुकी दे अने शुभशीलनु आचरण करे ते कुबेरदत्तानी जेम जगतमा उत्तम संपत्तिने पामे छे

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायां व्याख्यायामुपदेश प्रासादग्रंथस्य वृत्तौ विषयत्यागे पचनवतितमः प्रबंधः ॥ ९१ ॥

व्याख्यान ९६ मुं.

हवे विषयमां सुख अल्प छे अने विडंबना घणी छे ते बतावे छे.

सुखं विषयसेवायां मत्यल्पं सर्षपादपि ।
दुःखं नाल्पतरं क्षौद्र बिंदास्वादकमर्त्यवत् ॥ १ ॥

व्याख्या

" विषयसेवामां सर्षवना दाणाथी पण घणु थोडु सुख छे अने दुःख घणु छे. जेम मधुना टीपाना आस्वादन करनारने थयुं हतुं तेम " विषयसेवामां अल्पसुख छे, ते विषे आगममां पण कह्युं छे के, " जेमां सुख क्षणवार छे अने दुःख बहुकाळ पर्यंत छे, दुःख अत्यंत मळे छे अने सुख दूर रहे छे एवुं अनर्थनी खाणरूप कामभोगजन्य संसारसुख मोक्षनुं प्रतिपक्षी छे " वळी कह्युं छे के, " कंप, खेद, श्रम, मूर्छा, फेर, ग्लानि, बळनो क्षय, अने राज्यक्ष्मा (क्षय) विगेरे रोग मैथुन-सेवाथी उत्पन्न थाय छे " वळी उपदेशमालामां कह्युं छे के, " जेम पामा (खस) रोगवाळा मनुष्यने मीठी खुजली आवे ते वखते खंजवाळवाथी परिणामे दुःख थाय छे छतां ते वखत सुख माने छे तेम मोहातुर पुरुष विषयसुखने परिणामे दुःखरूप छतां सुखरूप माने छे " पामाने खुजली करनार जेम ते वखत सुख माने छे पण ते दुःखरूप छे तेम पुरुषने विषयसेवानुं सुख पण दुःखरूप जाणवुं वळी कह्युं छे के " हे गौतम, देव द्रव्यनुं भक्षण करवाथी अने परस्त्रीनी सेवाथी प्राणी सातवार सातओ नारकीए जाय छे " वळी कह्युं छे के " कोइपण पुरुष परस्त्रीना साथे जेटला आखोना मीचकारा करे तेटला हजार कल्पसुधी ते नरकाग्निवडे पचाय छे " आ प्रमाणे विषय जन्यसुख मधुबिंदुने आस्वादन करनार पुरुषनी जेम दुःखरूप छतां सुखरूप लागे छे ते मधुबिंदुनुं दृष्टांत आ प्रमाणे छे —

मधुबिंदुनु दृष्टांत.

कोई पुरुष साथेथी भुलो पडी मोटा अरण्यमां पेठो त्यां जाणे साक्षात् यमराज होय तेवा कोई हस्तीए तेने अवलोकन कर्यो ते उन्मत्त हाथी ते पुरुषनी सामे दोड्यो तेना भयथी दवानी जेम वंटोळीआथी पडतो ते पुरुष नाठो थोडे जतां आगळ एक कुवो जोवामां आव्यो तेथी तेणे विचार्युं के, आ हाथी जरूर मारा प्राण लेशे तेथी आ कुवामां झंपापात करवो सारो आवुं धारी ते कुवामां पड्यो ते कुवाना कांठा उपर एक वडनुं वृक्ष उग्युं हतुं तेनी वडवाईओ कुवामां लटकी रही हती, तेथी पडतो एवो ते पुरुष ते वडनी वडवाई साथे वचमां लटकी रह्यो तेणे

नीचे दृष्टि नांखीने जोयुं तो कुवानी अंदर जाणे बीजो कुवो होय तेवो एक अजगर मुख फाडीने रहेलो जोवामा आव्यो वळी ते कुवाना चारे खुणामा धमणनी जेम फुफाडा मारता चार सर्पो जोवामा आव्या उपर नजर करता तेणे आलंबन करेली वडनी शाखाने छेदवाने माटे काळो अने धोळो एवा बे उंदर पोताना करवतना जेवा दातथी प्रयत्न करता नजरे पड्या तेमज उन्मत्त गजेंद्र पण तेने मारवाने माटे वडनी शाखाने सुंढवडे वारंवार हलाववा लाग्यो. तेथी ते वृक्षनी शाखा उपर रहेला एक मधपुडामांथी उडीने केटलीक मक्षिकाओ पेला पुरुषने दंश करवा लागी आ प्रमाणेनी पीडाथी दुःखी थता ते पुरुषे कुवामांथी निकळवाने माटे उंचु मुख कर्युं तेवामा पेला मधपुडामांथी मधना बिंदु टपकवा लाग्या ते पेला पुरुषना ललाट उपर पडीने मुखमा आव्या तेनो स्वाद पामीने ते सुख मानवा लाग्यो ते वखते कोई विद्याधर तेने आपत्तिमांथी मुक्त करवाने माटे विमान सहित त्या आवी कृपाथी बोल्यो के, हे मनुष्य ! चाल, आ विमानमा बेसीने सुखी था तेणे कह्यु के, हे देव ! क्षणवार राह जुवो, जेटलामा हु आ मधुना बिंदु चाटी लउ पछी विद्याधरे फरीवार पुछ्यु, तथापि तेणे तेवोज जवाब आप्यो छेवटे विद्याधर कटाळी पोताने स्थानके चाल्यो गयो

आरना दृष्टांत विषे एवो उपनय छे के, जे उन्मत्त हाथी ते मृत्यु समजवु ते सर्व जीवोनी पछवाडे भम्या करे छे, ते विषे श्रीवस्तुपाळ चरित्रमा कह्यु छे के,

लोकः पृच्छति मे वार्त्ता, शरीरे कुशलं तव ॥
कुतः कुशलमस्माकं, आयुर्याति दिने दिने ॥

"कोइ प्रसंगे नगरजनोए मंत्री वस्तुपालने कुशळता पुछी, त्यारे मंत्री बोल्या के, लोको मने शरीरनी कुशलता पुछे छे, पण मारी कुशलता शी रीते कहेवाय ? कारणके आयुष्य तो दिवसे दिवसे चाल्यु जाय छे" वळी अन्यत्र कह्यु छे के-"आ विश्व शरण वगरनु, राजा वगरनुं अने नायक विनानुं छे के जेथी कोईपण उपाय न चाले तेम यमराजरूप राक्षसथी तेनो ग्रास थया करे छे" "वळी जुओ के जे श्रेणिकराजाने इंद्र स्नेहथी आलिंगन करीने पोताना अर्धासन उपर बेसाडतो हतो, तेवो श्रेणिकराजा पण अशरण थइ अभीतव्यदशा (मरणदशा) ने पामी गयो" "वळी जेम पशुओ मृत्युनो उपाय जाणता नथी, तेम विद्वानो पण तेनो उपाय जाणता नथी आवी उपाय जाणवानी मूढताने धिक्कार छे" हवे जे कुवा कह्यो ते संसार जाणवो ते गमनागमनरूप जळथी भरेलो छे जे अजगर ते

भयंकर नरकभूमि समजवी चार खुणे जे **चार सर्पो** हता ते क्रोधादि चार कषायो जाणवा जे **वडवृक्ष** ते मनुष्यनुं आयुष्य समजवुं जे **काळो अने धोळो बे उंदर** कह्या ते मनुष्यना आयुष्यने छेदन करनारा शुक्लपक्ष अने कृष्णपक्ष समजवा जे **मक्षिकाओ** ते ज्वर, अतीसार, वायु विगेरे व्याधिओ समजवा अने जे **मधुबिंदु** ते विषयराग समजवो, के जे मात्र क्षणवार सुख आपनार छे

अहिं कोई शंका करे के, जे देवताने सुख मळे छे ते अल्प नथी, पण घणुं छे, केमके ते घणो काळ रहे छे देवताने एक भवमां अनेक स्त्री साथे संभोग प्राप्त थाय छे ते विषे शास्त्रमां कह्युं छे के, "इंद्रना एक अवतारमां बे कोडाकोडी पचाशी लाख करोड, एकोतेर हजार करोड, चारसो क्रोड, एकवीश क्रोड, सत्तावन लाख, चौद हजार, त्रसो अने पचास देवीओ थाय छे" एथी देवताने विषयनुं सुख मधुबिंदुना सुखनी जेम अल्प केम कहेवाय ? ए सत्य छे पण हे वत्स, अनादिकाळपर्यंत भोगवेला निगोदादि दुःखने आश्रीने देवनुं सुख पण तेना जेवुंज अल्प छे वळी देवतामांथी चवेलो प्राणी तिर्यंचादि गतिमां अनंतकाळ सुधी वारंवार भम्या करे छे, एथी ते अपेक्षाए पण तेनुं सुख मधुबिंदुना जेवुं स्वल्पज छे जेम कोई पुरुषे कंठसुधी मिष्टान्न खाधं होय ते विकार पामी अजीर्णरूप थतां वमन, विरेचन, अने लंघन विगेरेनुं घणुं दुःख ते अनुभवे छे तेम कामभोगादि सुख देवादिकने पण परिणामे महा भयंकर छे एम जाणी मुनिजनो मनथी पण ते सुखने इच्छता नथी

"आ प्रमाणे काम भोगसंबंधी सुख किंपाकना फलनी जेम परिणामे दारूण अने मधुबिंदुनी जेवुं अल्प छे, एवुं मनमां विचारी कयो सद्बुद्धिमान् अने शीलदृष्टिवाळो पुरुष तमां रागने प्राप्त थाय ?"

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायां व्याख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य वृत्तौ मधुबिंदुदृष्टांतेन विषयत्यागविषये षण्णवतितम प्रबंध ॥ ९६ ॥

व्याख्यान ९७ मुं.

हवे महासतीनुं लक्षण कहे छे

या शीलभंगसामग्रीसंभवे निश्चला मतिः ।
सा सती स्वपतौ रक्तेतरा सति गृहे गृहे ॥ १ ॥

व्याख्या

" शीलनो भंग थवानी सामग्रीनो संभव छतां पण जेनी बुद्धि निश्चल रहे अने जे पोताना पतिमांज रक्त होय ते स्त्री सती कहेवाय, बाकी बीजी (असती) स्त्रीओ तो घेर घेर छे " आ उपर शीलवतीनी कथा छे ते आ प्रमाणे—

शीलवतीनी कथा

जंबुद्वीपने विषे नंदन नामना नगरमा रत्नाकर नामे श्रेष्ठी हतो तेने पुत्र नहोतो तेथी तेणे अजितनाथ भगवंतनी शासनदेवी अजितबलानी आराधना करी एथी अजितसेन नामे पुत्र थयो ते मोटो थइ शीलवती नामे स्त्रीनी साथे परण्यो शीलवती शकुनशास्त्रादि भणेली हती, तेथी शकुनशास्त्रने अनुसारे अनेक वखत द्रव्य बतावी आपवाथी ते घरनी अधिष्ठात्री थइ पडी हती तेनो स्वामी अजितसेन बुद्धिना प्रबळथी राजानो मन्त्री थयो हतो एक वखते राजाए कोई सीमाडाना राजा उपर चडाइ करवा जतां पोतानी साथे आववा मन्त्रीने पण आज्ञा करी मन्त्रीए शीलवतीने पुछ्युं के, " प्रिया ! मारे राजानी साथे जवुं पडशे पाछळ तुं एकाकी घेर शी रीते रहीश? कारण के स्त्रीओनुं शील तो पुरुष समीपे होवाथीज रहेछे जे स्त्री प्रोषित भर्तृका (जेनो पति परदेश गयो होय तेवी) होय छे ते उन्मत्त गजेंद्रनी जेम घणीवार स्वेच्छाथी क्रीडा करे छे " पतिना आवा वचनो सांभळी नेत्रमां अश्रु लावीने शीलवतीए शीलनी परिक्षा बतावनारी एक पुष्पनी माळा स्वहस्तवडे गुंथी पतिना कंठमां आरोपण करी अने बोली के, हे स्वामी, ज्यांसुधी आ माळा करमाय नहीं, त्यांसुधी मारुं शील अखंड छे एम समजवुं पछी मन्त्री निश्चिंत थइने राजानी साथे बहार गाम गयो

एक वखते राजा अजितसेन मन्त्रीना कंठमां वगर करमायली माळा जोई विस्मय पाम्यो, अने ते विषे पासेना माणसोने पुछ्युं, त्यारे तेणे तेनी स्त्रीनुं सतीपणुं वर्णवी बताव्युं पछी कौतुकी राजाए सभावच्चे आवी परस्पर हास्यवार्त्ता करनारा मन्त्रीओने कह्युं के, आपणा अजितसेन मन्त्रीनी स्त्रीनुं सतीपणुं खरेखरु छे. ते सांभ-

ळी एक वीजो मत्री बोली उठ्यो–महाराज' तेमने तेमनी स्त्रीए भमाव्या छे स्त्रीओ मा सतीपणु छेज नही शास्त्रमा कह्यु छे के, "ज्यासुधी एकात के रखत मळे नही त्यासुधीज स्त्रीनुं सतीपणु छे " माटे जो तमारे परीक्षा करवी होय तो मने त्यां मोकलो पछी **अशोक** नामना ते हास्य करनारा मत्रीने अर्ध लाख द्रव्य आपीने राजाए शीलवती पासे मोकल्यो.

अशोक उज्वल वेश धारण करी नगरमा गयो त्या कोई माळीनी स्त्रीने मळीने कह्यु के, तु शीलवतीनी पासे जइ कहे के, कोई सौभाग्यवान पुरुष तने मळवाने इच्छे छे. मालणे कह्यु, ते वार्त्तामा द्रव्य घणु जोईशे कारण के धन एज मनुष्योनु उत्तम वशीकरण छे अशोके कह्यु के जो ते कार्य सिद्ध थशे तो हु अर्ध लक्ष द्रव्य आपीश आथी मालण सतुष्ट थइ शीलवतीनी पासे गइ अने शीलवतीने बधो वृत्तात जणाव्यो शीलवतीए मनमा विचार्यु के, परस्त्रीना शीलनु खडन करवा इच्छनार आ पुरुष तेना पापनु फळ भोगवो एम विचारी तेणे ते वात कबुल करी, अने मालणनी पासे अर्ध लक्ष द्रव्य माग्यु मालणे ते स्वीकार्यु एटले मळवानो दिवस नकी कर्यो पछी शीलवतीए पोतानी बुद्धिथी विचार करी घरना एक आरडामा कुवा जेवो उडो खाडो कराव्यो अने तेनी उपर पाटी वगरनो माचो मुकी तेनी उपर ओछाड पोचो पोचो वाथी राख्यो मळवानो समय थता अशोक मत्री पोताना आत्माने कृतार्थ मानतो अर्ध लक्ष द्रव्य साथे लइ त्या आव्यो अगाउथी शिखवी राखेली दासीए कह्यु के, लाव द्रव्य मने आपो अने अदर माचा उपर जइने वेसो अशोक अर्ध लाख द्रव्य तेने आपी उतावळो ते अधकारवाळा ओरडामा जइ माचा उपर वेठो तेवो तरतम ससारमा बहुकर्मी प्राणी पडे तेम ते खाडामां पड्यो "रावणनी जेम व्यसनीने आपत्तिओ सुलभ छे " खाडामा पडेलो अशोक ज्यारे क्षुधातुर थतो त्यारे उपरथी शीलवती खप्परपात्रमा अन्न आपती हती एवी रीते बहु दिवस तेमा रहेवाथी 'अ' उडी जवाने लीधे **अशोक** मत्री **शोक**रुप थइ रह्यो

एक मास वीत्या छता अशोक मत्री पाछो न आववाथी **कामांकुर** नामे बीजो मत्री तेवीज प्रतिज्ञा लईने आव्यो शीलवतीए तेनी पासेथी पण अर्ध लक्ष द्रव्य लईने तेज खाडामा तेने नाख्यो पछी एक मासे **ललितांग** नामे त्रीजो मत्री आव्यो तेने पण अर्ध लाख द्रव्य लइ तेज खाडामा नाखी दीधो चाथे मासे **रतिकेलि** नामे मत्री आव्यो तेने पण अर्ध लक्ष द्रव्य लइ तेज खाडामा नाख्यो आ प्रमाणे ते चारे मत्रीओ चतुर्गति रुप ससारमा दु खनो अनुभव करता जीवोनी जेम पाताळ जेवा खाडामा दु खनो अनुभव करवा लाग्या

अनुक्रमे सिंहराजा शत्रुनो जय करी पाछो आव्यो अने मोटा उत्सवथी तेणे नगरमा प्रवेश कर्यो ते समये पेला मत्रीओए शीलवतीने कहुं, . हे स्वामिनी ! अमे तमारुं माहात्म्य जोयुं, तेम अमारा कृत्यनुं फल पण भोगव्युं, माटे हवे अमने बहार काढो शीलवतीए कहुं के, ज्यारे हु " भवतु (थाओ) " एम कहुं त्यारे तमारे बधाए साथे "भवतु" एम कहेवु मत्रीओए ते कबुल कर्यु. पछी शीलवतीए पोताना पतिने कहीने राजाने भोजननु आमत्रण कर्यु आगले दिवसे सर्व रसवती तैयार करी ते खाडावाळा ओरडामा गुप्त रीते राखी मुकी भोजन करवा आववाने दिवसे रसोडामा अग्नि पण सळगाव्यो नही अने जळने स्थाने जळ पण राख्यु नहीं, तेम काई पण भोजननी सामग्री पण त्या रसोडामा राखी नहीं राजा भोजन करवाने आव्यो पण तेणे भोजननी सामग्री काई जोई नही. तेथी चमत्कार पामी राजा भोजन करवा बेठो पछी शीलवती स्नान करी पेला ओरडामा जइ पुष्पमाला हाथमा राखी धूप दीप करी बेठी अने अदरथी बोली के—राजा भोजन करवाने माटे आव्या छे माटे नाना प्रकारना पकान्न " भवन्तु " (थइ जाओ) एटले खाडानी अदरथी ते चारे मत्रीओए उचे स्वरे कहुं के, " भवन्तु " (थइ जाओ) पछी मोदक विगेरे सामग्री ते ओरडामाथी बहार लाववामा आवी पछी घृत विगेरेने माटे पण उपर प्रमाणे कह्यु, वली विलेपन, तथा शाक विगेरेने माटे पण तेमज कह्यु, ते बधी वखते तेओए " भवन्तु " ए शब्द कह्यो एवी रीते राजानु भोजन सपूर्ण थयु पछी ताबूल विगेरे आपीने मत्री अजितसेन राजाना चरणमा पड्यो एटले राजाए पुछ्यु के, मत्री आ प्रमाणे रसोई विगेरे शाथी तैयार थइ? मत्रीए कह्यु के— ते ओरडामा मने प्रसन्न थयेला चार यक्षो छे ते जे मागीए ते आपे छे राजाए कह्यु के ते अमने आपो कारण के ज्यारे नगरनी बहार जवु पडे छे, त्यारे त्या जे भोजन मागीए ते वचन मात्रमा थइ जाय राजाना आग्रहथी मत्रीए आपवानु कबुल कर्यु पछी गुप्त रीते ते चारेने खाडामाथी काढी सारा मोटा कडीआमा तेमने नाख्या अने सारा वस्त्रथी तेने ढाकी आ यक्षोनुं स्वरूप कोईने बताववु नहीं, एम कही राजाने अर्पण कर्या राजा ते कडीआने रथमा मुकी पोते आगळ पेदल चाली रस्ते पवित्र जळ छटावतो दरबारमा लाव्यो अने एरनी स्त्रीओ पाछळ पाछळ चालती ते यक्षोना गुण गावा लागी आवी रीते तेमने दरबारमा लावीने एक पवित्र स्थानके राख्या, अने सवारने माटे रसोई तैयार करवानी रसोईयाने ना पाडवामा आवी प्रभातकाल थता भोजन वखते पवित्रपणे तेमनी पूजा करी राजाए विज्ञप्ति करी के, स्वामी, पक्वान्न तथा दाळ भात आपो, अने जातजातना शाक अने भोज्य पदार्थ आपो एटले ते चारे जणे "भवतु" एम कह्यु, पण काई थयु नहीं एटले राजाए कडी-

अतर्विषमया ह्येतत् बहिरेव मनोहरा।
गुंजाफलसमाकारा, योषित' केन निर्मिता ॥

" अहो, स्त्रीओ अदर विषमय छे अने बहारथी मनोहर लागे छे आवी च नोठीना फळ जेवी स्त्रीओ कोणे बनावी हशे, " आवी कुळवान उत्तम जणाती स्त्री पण कुळटा छे परतु शास्त्रमा कह्यु छे ते सत्य छे के, " जळमा जेम माछलाना पग ला अने आकाशमा पक्षीओना पगला जोवामा आवता नथी तेम स्त्रीओना चरित्र नो ब्रह्मा पण पार पामी शकता नथी " आ प्रमाणे चिंतवी राजा शखे बे चडाळीने आज्ञा करी के, तमारे कलावतीने हुं वनमा मोकलावु त्या जइने तेनी बाजुबध हित बने भुजा छेदीने मारी पासे लाववी पछी राजानी आज्ञाथी शय्यापालक कळावतीने रथमा बेसारी कोई वनमा मुकी आव्यो एटले पेली बे चडाळणीओए आवी तेना बे हाथ छेदी नाख्या अने राजानी पासे लावी हाजर कर्या

कलावतीए हाथनी पीडाथी तत्काल एक पुत्रने जन्म आप्यो ते वखते तेने पवित्र करवाने हाथ न होवाथी पगे पगे समिप रहेली नदीने काठे लइ गइ तेवामा ते नदीमा पूर आव्यु तेथी पुत्रनु रक्षण करवु मुश्केल थइ पडयुं आ प्रमाणे सर्व तरफथी आपत्ति आवेली जोई कलावती नवकार मत्रनु स्मरण करीने बोली के, " जो मे त्रिकरण शुद्धिए शील पाळ्यु होय तो आ नदीनु पूर विगेरे आपत्तिओ दूर थइ जाओ ' तत्काळ शासन देवीए तेना भुज नवपल्लवित कर्या अने नदीनु पूर शात करी आका शमा रहीने पुष्पवृष्टि करी तेवामा कोई तापस त्या आव्यो कलावतीने पोताना आ श्रममा लई गयो अने पुत्रीनी जेम तेनी रक्षा करी तेनु तथा पुत्रनु लालन पालन करवा लाग्यो

अहिं राजाए पोताना मित्र श्रेष्ठीपुत्र दत्तने पुछयु के, आजकाल पटराणीने पियरथी कोई आव्यु छे? श्रेष्ठी पुत्रे कह्यु, स्वामी' आजेज एक माणस आवेल छे तेनी साथे पटराणीने माटे तेना भाई जयसेने बे बाजुबंध मोकलाव्या छे ते में पटरा णीनेज पहोचाड्या छे आ खबर साभळी शख राजा मूर्छा खाईने पृथ्वी उपर ढळी पड्यो तेना मित्रे चदन विगेरेथी तेने सावधान कर्यो, एटले ते पोतानी मूर्खताने निं दवा लाग्यो अरे' मारा जेवा अविचारीने धिक्कार छे नीतिमा कह्यु छे के.—

अविमृश्यकृत न्यस्त, निश्वस्तं दत्त माहत ।
उक्त भुक्त च तत्मायो, महाऽनुशयकृन्नृणा ॥

"जे विचार्या वगर करे, स्थापे, विश्वास करे, आपे, आदरे, बोले अने जमे ते प्राय माणसने पश्चात्ताप करावनार थाय छे " वळी कह्यु छे के, " जे काई कार्य गुणवान्

के गुणरहित करवामां आवे तेमां पंडित पुरुषे तेनुं परिणाम प्रयत्न पूर्वक प्रथम विचारवु कारण के जे कार्य अतिसाहसथी करवामां आवे छे तेनुं परिणाम एवी विपत्तिमां आवे छे के जेनो विपाक हृदयने दहन करे तेओ शल्य रुप थइ पडे छे" वळी राजा विचारे छे के--हवे हुं कोने मुख बतावीश? तेथी चितामां आ देहने दग्ध करी नाखु आ प्रमाणे विचारे छे तेवामां कोई मुमुक्षु मुनि उपवनमां आवीने देशना आपे छे ते खबर सांभळी शंख राजा ते सांभळवा माटे त्यां गयो.

मुनिए देशनामां कह्यु के, "आ संसार रूप अरण्यमां जीव पूर्व कर्मने वश थइ मृगतृष्णानी जेम भ्रांतिए भरेला थइ मृगनी जेम वृथा भम्या करेछे" आ देशनाने अंते राजाए पोतानी पत्नीने मळवानो उपाय पुछ्यो अने पोताने आवेला स्वप्ननी वात कही मुनि बोल्याके, "तने आवेला स्वप्नने अनुसारे ते राणीए एक पुत्रने जन्म आप्यो हशे अने ते तने थोडा दिवसमां मळशे" आप्रमाणे सांभळी राजा प्रसन्न थइने नगरमां आव्यो अने तत्काल तेनी शोध करवा जवानी दत्तश्रेष्ठीने आज्ञा करी.

दत्तश्रेष्ठी फरतो फरतो पेला तापसना आश्रममां आव्यो त्यां कलावती तेना जोवामां आवी श्रेष्ठीए कह्यु, हे सुशीले! अग्निमां प्रवेश करता तारा पतिने आवीने बचाव तत्काळ कलावती कुळपतिनी रजा लइने पोताना नगरमां आवी. तेने जोइने राजा नीचुं मुख करीने रह्यो अने पोताना दुष्ट आचरणनी निंदा करी मिथ्या दुष्कृत आप्युं कलावती पण ते सघळु पोतानाज करेला कर्मोनुं फळ मानी सुखे रही.

एक वखते ते दंपतीए कोई ज्ञानीने पोताना पूर्वभवनो वृत्तांत पुछ्यो. मुनिए ज्ञानदृष्टिथी जोईने कहेवानो आरंभ कर्यो--"पूर्वे श्रीमहाविदेह क्षेत्रने विषे नरविक्रम नामे राजा हतो तेने सुलोचना नामे पुत्री हती तेणीए क्रीडा करवाने माटे एक पोपट पांजरामां राख्यो हतो अने हमेशा मधुर मधुर फळ खवरावीने तेनु पोषण करती हती एक वखत ते सुलोचना पोपटने साथे लई सीमंधरप्रभुना जिनने वांदवा माटे गई वीतरागना जिनना दर्शन थताज शुकने जातिस्मरण ज्ञान थयु तेथी पूर्वभवे व्रतनी विराधना करेली तेना जाणवामां आवी तेने याद आव्युं के, मे पूर्वभवे विहरमान एवा श्रीसीमंधरादि प्रभुनी स्तुति अने वर्णन श्रद्धाथी कर्यु हतु ते आप्रमाणे--"मेरुथी पूर्व महा विदेह क्षेत्रने विषे पुष्कळावती विजयमां पुंडरीकिणी नामे नगरी छे त्यां कुंथुनाथ अने अरनाथना आंतरामां श्री सीमंधरस्वामीनो जन्म थयो श्रीमुनिसुव्रतस्वामी अने नमिनाथना आंतरामां राज्य

छोडीने दीक्षा लीधी अनागत चोवीशीना उदय अने पेढाळ जिनने आतरे ते मोक्ष पामशे विहरमान एवा विशे तीर्थंकरोने दरेकने सो कोटी साधुओ अने दशलाख केवलज्ञानीनो परिवार छे सर्व सख्याए बे कोटी केवलज्ञानी बे हजार कोटी साधुओ थाय छे तेओने हु अहर्निश नमु छु " (तेमना श्रावक श्राविकानी सख्या तो साभळी नथी) इत्यादि जिनगुणना पठन पाठनमा हु तत्पर हतो पण मुनिनी क्रियामा शिथिल हतो तेथी चारित्रनी आराधना करी शक्यो नहीं माटे ते पापनी आलोचना कर्या वगर काळ करवाथी हु पोपट थयो छु हु मारो मनुष्य जन्म अने रत्नत्रय फोगटमा हारी गयो छु हवेथी हु हमेशा ए प्रभुने नमीने पछी भोजन करीश—आवो तेणे अभिग्रह धारण कर्यो—सुलोचना ते पोपटने पाजरास॰ हित लईने घेर आवी बीजे दिवसे भोजन समये ते पक्षी राजकुमारीना कर माथी उडीने सत्वर श्रीतीर्थंकरने नमवा चाल्यो गयो ते पक्षीना वियोगथी सुलोचना वारवार विलाप करवा लागी ते खबर जाणीने राजाए तेने पकडी लाववा सेवकोने आज्ञा करी, एटले पक्षीने पकडनारा पुरुषोए कोई वृक्ष ऊपर रहेला ते पोपटने गुप्तरीते पकडी लीधो अने राजकुमारीने सोप्यो सुलोचनाए फरीवार उडीजाय नहीं तेवु धारीने तेनी बने पाखो छेदी नाखी पछी ए पक्षी समाधिथी मृत्युपामीने सौधर्म देवलोकमा देवता थयो अने पूर्वना प्रेमथी ते राजकुमारी पण तेनी देवागना थई त्याथी चवी ने कीरपक्षी शखराजा थयो अने सुलोचना राजकन्या ते आ कलावती थयली छे "

आ प्रमाणे पोतानो पूर्वभव साभळी जेमने जातिस्मरण थयु छे, एवा ते दपतीए कर्मना फळनो निश्चय करी घेर जई राज्यऊपर पुत्रने बसारी दीक्षा ग्रहण करी सुशीलपणे घणा काळ सुधी निरतिचार चारित्र पाळी तेओ देवलोके गया ते धर्मशील दपती त्याथी चवी कुकर्मना लेशमात्रने क्षीण करी अनुक्रमे मोक्षने प्राप्त थशे

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेश सग्रहाख्याया व्याख्यायामुप
देशप्रासादस्य वृत्तौ शीलविषये अष्टनवतितम प्रबध ॥ ९८ ॥

व्याख्यान ९९ मुं.

हवे तत्वने जाणनारा दंपती संकटने विषे पण पोतानुं ब्रह्मव्रत छोडता नथी ते विषे कहे छे.

कुत्रचिद्दपतीयोगः स्याच्छीलव्रततत्पर. ।
तेन सर्वसुखावाप्ति' प्राप्ते दु खेऽपि जातुचित ॥ १ ॥

व्याख्या.

"शीलव्रत पाळवामा तत्पर एवा दपतीनो पण कोई ठेकाणे योग थाय छे तेवा दंपतीने पूर्व कर्मना उदयथी कदि दु ख प्राप्त थाय तोपण प्राते सर्व सुखनी प्राप्ति थाय छे" ते उपर चदनमलयागिरिनो प्रबध छे ते आ प्रमाणे—

चदन मलयागिरिनी कथा

कुसुमपुर नामना नगरमा चदन नाम राजा राज्य करतो हतो तेने मलयागिरि नामे शीलवती पत्नी हती तेमने सायर अने नीर नामे बे पुत्रो हता एक वखते राजा वासगृहमा सुतो हतो, तेवामा कुलदेवीए आवीने कह्यु के, हे राजा, तारी माठी दशा थशे, माटे सत्वर राज्य छोडीने बीजे चाल्यो जा कारण के, "मनुष्यने सुख के दु ख जे प्राप्त थवानु होय छे ते अवश्य प्राप्त थाय छे दैव पण तेनु उल्लघन करवाने समर्थ नथी" आ प्रमाणे साभळी राजाए चितव्यु के, "मित्रने के शत्रुने आपत्ति तो अवश्य थवानी, तेथी जे तेनी सामे चाले ते सुभट अने जे नाशी जाय ते हीन सत्व कहेवाय" आवु विचारी बे पुत्र अने स्त्रीने लइ राजा रात्रे चाली नीकळ्यो फरतो फरतो अनुक्रमे कुशस्थळ नगरे आव्यो त्या राजा चदन देवनो पूजारी थयो अने राणी मलयागिरि वनमाथी काष्ट लावी नगरमा वेचवा लागी. एक वखते काष्ट वेचवा गयेली मलयागिरि कोई सार्थवाहनी दृष्टिए पडी सार्थवाह तेना रूप अने स्वरथी मोह पामी गयो तथी ते तेना उधणा लईने दररोज तेनु अधिक मूल्य आपवा लाग्यो एवी रीते तेणे तेना मनमा विश्वास वेसारी दीधो एक वखते प्रयाण करवु हतु त्यारे तेने मूल्य आपवाना मिषथी आगळ करी प्रपचथी लोभावीने दूर लइ गयो पछी बलात्कारे रथमा बेसारी दई मार्गे चाल्यो मलयागिरि पति वियोगथी निश्वास नाखवा लागी त्यारे सार्थवाहे कह्यु के, "हे सुभ्रु! मारी साथे सुख भोगवो अने मारा कामसतापने शात करो" मलयागिरि बोली—

"अग्नि मध्य जलवो भलो; भलोज विषको पान ।
शील खडवो नहि भलो, नहि कुछ शील समान" १

माटे हे वीर, तु मने छोडी दे, शा माटे तु मारो अत लेछे? कदि ठनात कोप था
हु आ भवमा शील खडन करीश नही "

अहि राजा चदने वखतसर न आववाथी मलयागिरिने चार तरफ शोधी प
ते मली नही तेथी ते बे पुत्रनी साथे विलाप करवा लाग्यो —" ज्यारे दैव प्रति
कूळ थाय छे त्यारे अमृत पण झेर थाय छे, रज्जु सर्प थाय छे अने उदरनु दर पाना
ळरूप थाय छे " पछी राजा तेनी शोधने माटे ते नगर छोडी पुत्रसहित गामे गा
फरवा लाग्यो मार्ग एक नदी आवी तेने उतरवा माटे एक पुत्रने आ काठे वृक्ष
साथे बाधी राखी एक पुत्रने स्कध उपर चडावी नदी उतरी गयो पछी बीजा पुत्र
ने लेवा आववा माटे नदीमा पेठो अनराले आवता नदीमा मवल पूर आव्यु एटले
ते तणायो ते समये स्त्री अने पुत्रना विरहथी पीडित थइने ते बोल्यो के—

"किहा चदन मलयागिरि, किहा सायर किहा नीर,
जो जो पडे विपत्तडी, सो सो सहे शरीर " १

आम बोलतो आमतेम फाफा मारवा लाग्यो, तेवामा एक काष्ठनो खड वेना हाथम
आव्यो, तेने आधारे तरी काठे नीकळी ते विचार करवा लाग्यो के, अहो, मे राज्य
भोगव्यु ते पण मने दैवयोगे विपाकने अर्थे थयु ' दैव दुष्कृति प्राणीओने दु खने माट
जीवित आपे छे, जेम कीरमजनो रग बनाववा माटे पकडेला मनुष्योनु पोषण ते दु ख
उपजाववा माटेज होय छे " हवे बारे जीविने शु करवु, वळी तेणे फरीने विचार्यु के,
मृत्यु पामता पण जीवने कर्म छोडता नथी कह्यु छे के, "मृत्यु पामता पण पोतानु
करेलु पाप तो अवश्य भवातरे पण भोगववु पडे छे, त्यारे ते अहिज भोगववु सारु
छे " आवु विचारी ते मृत्यु न पामता आनदपुर नामना नगरमा आव्यो

आनदपुरमा कोईना घरमा जईने चदने विश्राम कर्यो, त्या कोई एक स्त्री तेने
जोईने मोह पामी ते तेनी सेवा चाकरी करीने बोली के,

दोहा—"तुम परदेशी लोक हो, हओ न कोसो साथ ।
जओ रहो तव जन्म लगे, हमतुम एकठ साथ '

आवा वचन साभळी पोताना शीलव्रतनो भग थाय एवी बीकथी तेणे दुकामान तेने
उत्तर आप्यो के "हे सुदरी, जेनु चित्त स्थीर नथी एवा दु खी नरनी साथे प्रीति
करवाथी तमने शो लाभ थवानो छे " आवो उत्तर आपी ते त्याथी अन्यत्र जवा
चाल्यो मार्गमा श्रीपुर नगरनी नजिक आवेला कोई वृक्ष नीचे जईने ते बेठो क्षण
वार बेसीने ते निद्रावश थई गयो तेवामा ते नगरना राजा अपुत्र मृत्यु पामवाथी
मत्रीओए पच दिव्य कर्या ते पांच दिव्य आ राजानी उपर थया तेथी तेने राज्य

मळ्युं चदन राजा न्यायथी राज्य करवा लाग्यो एक वखते प्रधानोए तेना चरणमा पडी स्त्री परणवा कह्यु तथापि तेणे कोईनी साथे पाणिग्रहण कर्यु नही

अहिं सायर अने नीर जे नदीने बे काठे बे वृक्ष पासे रह्या हता तेमने कोई सार्थवाहे जोया तेथी पोताना पुत्रनी जेम तेमनी सार सभाळ करतो ते तेमने पोताना नगरे लई गयो अनुक्रमे सायर अने नीर यौवन वयने प्राप्त थया त्यारे तेओ सार्थवाहनी आज्ञा लई *श्रीपुर* नगरे जईने कोटवालना तावामा नोकर रह्या *ए नगरमा* तेमनो पिता चदन राज्य करे छे तेवामा पेलो सार्थवाह के जे मलयागिरि उपर मोह पामीने तेने उपाडी गयो हतो ते फरतो फरतो मलयागिरिने लईने श्रीनगरमा आव्यो ते केटलीएक भेटो लई चदन राजाने मळवा गयो भेट आगळ धरी एटले राजा खुशी थईने बोल्यो सार्थवाह! तमारे जे जोईए ते मागी ल्यो सार्थवाहे रात्रे पोताना साथनी अने सामाननी रक्षा करवाने माटे पेहेरेगीरोनी मागणी करी राजाए कोटवालने आज्ञा करी एटले तेणे पेला बे भाई सायर अने नीरने त्या रक्षा करवाने मोकल्या ज्यारे रात्रि पडी अने सर्व पहेरेगीरो भेगा थई पोतपोतानो वृत्तात कहेवा लाग्या. ते वखते सायर अने नीरे पण पोतानु सर्व वृत्तात कही संभळाव्यु ते वृत्तात तंबुमा बेठेली मलयागिरीना साभळवामा आव्यु, तेथी तत्काल तेमने पोताना पुत्र जाणी ते बहार आवी अने हर्षथी भेटी पडी पुत्रोए पण पोतानी माताने नमी तेनु वृत्तात साभळ्यु अने कह्यु के माता! प्रभातमा सर्व सारु थशे, चिंता करशो नहिं. प्रात काल थयो एटले ते माता अने पुत्रो राजानी पासे गया अने पोतानी सर्व हकीकत कही राजा चदने तेमने पोताना परिवार पणे ओळख्या एटले पेला अन्याय करनारा सार्थवाहने शिक्षा करीने नगर बहार काढी मूक्यो पछी चार वर्षनो वियोग दूर करी बने राज्यना सुखने अनुभवतो चदन राजा आनदथी रहेवा लाग्यो. छेवटे ते दपती शीलनु प्रतिपालन करीने स्वर्गे गया

" मनुष्य पूर्व पुण्यना योगथीज समान धर्मवाळु दापत्य पामे छे. तेओ दु खमा पण जो पोतानु शील मुकता नथी तो तेमनो यश आखा विश्वमा फेलाय छे "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्याया व्याख्यायामुपदेश प्रासादस्य वृत्तौ शीलविषये नवनवतितमः प्रबध ॥ ९९ ॥

व्याख्यान १०० मु

' एक रूपवत स्त्रीने घणा पुरुषो इच्छे छे ' एम मानी जे स्त्र त्याग करे छे तेज ज्ञानी छे ते विषे कहे छे

श्लोक–मिथो हिंसा समीहते एक स्त्री स्पृहया नरा ।
ततस्ता परिमुचति त एव विबुधेश्वरा ॥ १ ॥

व्याख्या

" पुरुषो एक स्त्रीने माटे परस्परने मारी नाखवानी चाहना करे छे, आवु धा रीने जेओ तेवी स्त्री जातिनोज त्याग करे छे तेज श्रेष्ट ज्ञानी कहेवाय छे " ते विष इलायची कुमारनो प्रबध छे ते आ प्रमाण—

इलायची कुमारनी कथा

वसतपुर नगरमा अग्निशर्मा नामे ब्राह्मण हतो तेने प्रीतिमती नामे एक स्त्री हती ए दपतीए धर्म वाणी साभळीने योग्य अवसरे जिनोक्त मतने (चारित्रने) अगीकार कर्यु तथा विविध जातिना थयेला मुनिओने जाणी शौचाचारमा तत्पर रही अत करणमा जाति मद करवा लाग्या माते ए दुष्कृतनी आलोचना कर्या वगर अनुक्रमे मृत्यु पामीने तेओ वैमानिक देवता थया

• अहि एलावर्धन नगरमा इभ्य नामे श्रेष्ठी हतो तेने धारणी नामे स्त्री हती तेना उदरमा अग्निशर्मानो जीव पुत्रपणे उत्पन्न थयो धारणीए शुभ मुहूर्ते पुत्रने जन्म आप्यो, इलादेवीना वरदानथी ते पुत्र थयो हतो तथी ते इलापुत्रना नामथी प्रख्यात थयो अनुक्रमे मातापिताए भणाव्यो अने यौवन स्थने प्राप्त थयो तेना पूर्व भवन स्त्री स्वर्गथी चवीने जाति मद करेल हावाथी नटकुलमा उत्पन्न थई ते विलास हास्य युक्त मारी नर्तकी थई एक वखते नृत्य करती मृगाक्षी इलापुत्रना जोवामा आवी तेणीना सुदर नेत्र, मुख, स्तन अने हाथ, पग विगेरे जोई हाथिणीना दर्शनथी हाथी नी जम ते दुर्मदावस्थाने प्राप्त थयो " कामी पुरुष काईपण कृत्याकृत्यने जाणतो नथी " ते विष कह्यु छे के, "ज्या सुधी मृगाक्षीना लोचनना कटाक्ष तेना पर पड्या नथी त्या सुधीज विद्वाननी बुद्धि अने तेनो निर्मल विवेक रुपी दीपक स्फुरे छे " कामरुप सर्पे डसेला इलापुत्रे जागुली विद्यानी जेम ते नटीनुज स्मरण करता सता एवी प्रतिज्ञा करी के, " जो आ विकासित कमल जेवा लोचनवाळी स्त्री साथे मारो विवाह न थाय तो प्राण उपर पणरोप धारण करीने हु अग्निमा प्रवेश करीश "

वा माठा सकल्पवडे व्यग्रचित्तवाळो थयो मतो ते घेर आव्यो तेने चपळ चित्तवाळो जोइ मातापिताए आग्रहथी पुछ्यु एटले तेणे पोताना हृदयनी वात करी संभळावी ते साभळी मातापिता जाणे वज्रथी हणाया हाय तेवा थइने बोल्या के, पुत्र ! तु इस जेवो थइ कागडाने योग्य कर्मनी इच्छा करता केम लाजतो नथी ? ते बोल्यो–" मारु मानस (मन अथवा सरोवर) ए स्त्री विना आनद पामतु नथी. एटलामां जाणी लेजो ते विषे बहु कहेवाथी सर्यु " आ प्रमाणेना तेना वचन साभळी पुत्रने सुधारवानु अशक्य धारी " श्रेष्टी मौन धरीने रह्यो

एलाकुमारे तो लज्जा छोडी दइने पोतानी मेळेज नट लोकोने घणुं द्रव्य आपवावडे ते नर्त्तकीनी मागणी करी नट बोल्यो के–आ कन्या तो अमारो अक्षय भंडार छे तेने शी रीते आपी शकाय ? ते उता जो तमारी इच्छा एनी उपरज होय तो नट थइने ज्या ज्या अमे जइए त्या त्या अमारी साथे चालो एलापुत्र लज्जा छोडी ने नट लोकोनी साथे चाली नीकल्यो थोडा दिवसमा तेमनी पासेथी नृत्य पण शीखी गयो पछी ते नट बोल्यो के, " हे पुरुष ! हवे नृत्य करीने धन उपार्जन करी आपो जेथी अमे तमारो विवाह करीए एला कुमार ते वात कबुल करीने तेओनी साथे कमावा नीकल्यो

नट फरता फरता वणातटे पहोंच्या अने ते नगरना राजानी पासे नाटक करवा गया त्या तेमणे आकाश सुधी उचा एक वास खोड्यो तेनी उपर मोटु एक काष्ट मुक्यु तेमा बे मजबूत खीला रोप्या पछी एलापुत्र पगमा पादुका पेहेरीने ते वासपर चड्यो अने एक हाथमा तीक्ष्ण खड्ग अने बीजा हाथमा त्रिशूल लइ ते वाम उपर रमवा लाग्यो तेनु अद्भुत नृत्य जोइ सर्व लोको बहु खुशी थया पण राजानी पेहेला कोइए दान आप्यु नहीं राजानी दृष्टि पेली नटी उपर पडी तथी ते तेना उपर रागथी मोह पामी गयो अने चिंतवन करवा लाग्यो के, जो आ नट वामना अग्रभाग उपरथी पडे तो हु नटीने स्वाधीन करु

आवी बुद्धिथी नाटक करीने नीचे आवेला इलापुत्रने तेणे कह्यु के, ' अरे नट, ' तु फरीथी खेल कर्य के जेथी हु सारी रीते जोऊ तेणे विशेष धन मलवाना लोभथी फरीवार खेल करी बताव्यो तथापि शठपणाथी राजाए काई आप्यु नहीं एवी रीते एलापुत्रने वामपरथी पाडवानी इच्छाए राजाए त्रीजी वार पण नृत्य कराव्यु त्रीजीवार नाटक करीने उतर्या पछी वळी राजा ए कह्यु, हवे चोथी वखत नृत्य कर्य, हुं तारा दारिद्रने दूर करीश तेणे लोभथी तेम कर्यु. बीजा लोको राजानो अभिप्राय जाणीने तेनी निंदा करवा लाग्या एलापुत्रे पण विचार्यु के, जरुर राजानु मन आ नटीमा कामार्त्त थयु छे कारण के, आकार अने मनोभावथी ते जणाई आवे छे माटे अहो, आ कामावस्थाने, मने

अने राजाने धिक्कार छे अरे, में मारा उत्तम कुलने मलीन कर्यु आ प्रमाणे तेना मनमा पूर्ण वैराग्य उत्पन्न थयो तेरामा वास ऊपर रहेला एलापुत्रे कोई धना ढ्यने घेर इंद्रियोने जितनारा मुनिने एषणापूर्वक गोचरी फरता सुदर स्त्रीथी प्रतिलाभित थता अने वहाता जोया ते जाई एलापुत्रे चिंतव्यु के, अहो, जी वाजीवादि नवतत्वने जाणनारा, स्त्रीसभोगथी पराङ्मुख रहेनारा, पोताना देहनी पण दरकार नहीं राखनारा अने केवल मोक्षाभिलाषी एवा आ मुनिओने धन्य छे के जेओने आवी सुदर शरीरवाळी, मारी नटीथी पण असख्याधिक रूपवाली स्त्री मोदक विगेरे पदार्थो आपवाने विनति करे छे, तथापि ते मुनि, कागडाना मैथुननी जेम तेनी सामु पण जोता नथी, अने हु केवो रागाध छु, के जे आ नीच कन्या ऊपर आसक्त थइ पडयो छु अहो ! मारा आवा कृत्यने धिक्कार छे, तेमज आ ससारना स्वरूपने पण धिक्कार छे—आ प्रमाणे विषयमा तदन विरक्त थई शुभ ध्यान ध्याता एलापुत्रने सामायिक चारित्रथी माडीने यथाख्यात चारित्र पर्यंत फ- रसी गया तेना प्रभावथडे तेना घाटा घातीकर्मनो क्षय थवाथी लोकालोकने प्रकाश करनारु केवल ज्ञान, जाणे सकेत करी राखेल होय तेम तेने उत्पन्न थयु

पछी वास उपरथी नीचे आवता इलापुत्र केवळीने देवताओए साधुनो व अर्पण कर्यो ते धारण करीने एलापुत्रे धर्मदेशना आपी ते साभळी राजा प्रमुख सभ्योए तेमने नटी उपर थयेला रागनु कारण पुछ्यु केवलीए पोताना पूर्वभवन वार्ता कही सभळावी तेमा जणाव्यु के पूर्वे ब्राह्मणना भवमा मे स्त्रीसाथे दीक्ष लीधी हती पण अमे बनेए जातिमद कर्यो हता ते पापनी आलोचना कर्या वग मृत्यु पामीने हु वणिक कुळमा जन्म्या छता नट थयो अने मारी पूर्वभवनी स्त्र जातिमदथी आ नटी थयेली छे पूर्वभवमा मारो कामराग तेनी उपर गाढ हतो तेथी आ भवमा पण मने तेनापर अतिराग थयो कारण के प्राणीओने वैर अने स्नेह भवातरगामी थाय छे आ प्रमाणे पोतानो पूर्वभव साभळी ते नटीने जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न थयु तेणे विचार्यु के, मारा रूपने धिक्कार छे के जेने लीधे आवा धनाढ्यना पुत्रो अने राजा प्रमुख घणा लोको पण दुर्व्यसनमा आवी पडे छे हवे मारे विषयसुखथी सर्यु आवी भावना करता ते नटीने केवल ज्ञान उत्पन्न थयु ने वखते नाटक जोवा बेठेली राजानी राणीए चिंतव्यु के, अहो ! आ राजा थइने पण महाअधम कुळमा उत्पन्न थयेली नटी ऊपर मोह पाम्या माटे एवा विषय विलासने धिक्कार छे आवी भावना भावता तेने पण केवलज्ञान उत्पन्न थयु राजा ए पण चिंतव्यु के, पोताना उत्तम कुलने छोडी आ एलापुत्र नट जातिनी स्त्रीपर मोह पामी धननी इच्छाथी आ मारी पासे रमवा आव्यो अने में

पण तेवी नीच जातिनी स्त्रीनी इच्छा करी. माटे कामदेवने धिक्कार छे आवी भावना भावता ते पण केवळी थया आप्रमाणे महाज्ञानी एलापुत्रे घणा जीवोने तार्या जे एलापुत्र उत्तम वंशमा उत्पन्न थयेला होवाथी शुभवश (वास) नो आश्रय करता कुवंश (नठाराकुल) ना आचाररूप संसार नृत्यने छोडी दई मुनिनु आचरण जोई छेवटे चिदात्मरूपे तद्रुप थई गया

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेश सग्रहाख्याया व्याख्यायामुपदेश प्रासा दवृत्तस्य वृतौ एलापुत्रचरिते शततमः प्रबधः ॥ १०० ॥

व्याख्यान १०१ मुं.

ए शीलव्रतनो श्रीजिनेंद्र भगवते पण आदर करेलो छे तेथी ते आचरवा योग्य छे ते विषे कहे छे.

येषामुक्ति र्ध्रुवं भावि, शील चरंति तेऽपि हि ।
तदा संसारि जीवानां, कार्योऽजस्रं तदादरः ॥ १ ॥

व्याख्या

" जे जिनेद्रोनी अवश्य तेज भवे मुक्ति थवानी छे, ते जिनेद्रो पण शीलने आचरे छे, माटे ससारी जीवोए तो शील पालवामा हमेशा आदर करवो १ " आ विषे श्रीमल्लिप्रभुनो सबध छे ते आ प्रमाणे—

श्री मल्लिनाथनी कथा

अपर विदेह क्षेत्रने विषे सलिलावती विजयमा वीतशोका नगरीने विषे महाबल नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने वैश्रमण, चंद्र, धरण, पूरण, वसु अने अचल नामे छ मित्रो हता अन्यदा ते बालमित्रोनी साथे तेणे दीक्षा लीधी, अने तेमनी साथे मासक्षपण विगेरे तपस्या करवा लाग्यो परतु तेमनाथी तपमा वधवा माटे रोगनु बानु काढी तपने अते पण ते पारणु करतो नहीं अने तपो वृद्धि करतो हतो आवी रीते मायाथी अधिक तप करवावडे पोताना मित्र साधुनी वचना करवाथी तेणे स्त्रीवेद बाध्यो अने विश स्थानकनी आराधना निमित्ते

उग्र तप करवाथी तीर्थंकर नामकर्म पण संपादन कर्युं अने ते छ मित्रो साथे चारित्र पाळी मृत्युपामीने जयंत विमानमा देवता थया

महाबलनो जीव त्याथी चवीने विदेह देशनी मिथिला नगरीमा कुंभराजानी स्त्री प्रभावतीनी कुक्षिमा पुत्रीरूपे उत्पन्न थया जन्म्यापछी माता पिताए मल्लि एवु नाम पाडयुं बीजा छ मित्रो जुदा जुदा देशमा उत्पन्न थया मल्लि कुमारी का ईक उणा सो वर्षना थया, एटले अवधिज्ञानथी पोताना पूर्व मित्रोनी स्थिती जाणी तेमने प्रतिबोध करवाने माटे जेनी फरता छ गर्भगृह (अदर देखी शकाय तेवा ओरडा) छे एवा एक घरमा एक पोतानी सुवर्णनी पोली प्रतिमा करावीने मुकी ते प्रतिमा ना मस्तक उपर छिद्र कराव्यु हतु अने तेने कमळवडे ढाकेलुं हतु पछी प्रतिदिन एक एक ग्रास मल्लि कुवरी तेमा नाखवा लाग्या

अचळ नामना मित्रनो जीव साकेत नगरने विषे प्रतिबुद्धि नामे राजा थयो हतो एक वखते ते राजा प्रिया साथे नागदेवनी यात्राने अर्थे गयो त्या अतिमोटी पुष्प दामना आभूषणथी भूषित पोतानी प्रियाने जोईं विस्मय पामीने राजाए मंत्री ने कह्यु के, हे मत्री, तमे आवु पुष्प आभूषण काई ठेकाणे जोयुं छे? मत्री बोल्यो-हे देव ! तेमा शो आग्रह! त्रण जगतमा कुभ राजानी पुत्री मल्लि कुमारीनु स्वरूप पणु आश्चर्यकारी छे तेना जेवी पुष्पाभरणनी शोभा काईपण जोवामा आवती नथी मत्रीना आवा वचन साभळी राजा प्रतिबुद्धिन तेनापर प्रेम उत्पन्न थयो, तेथी मल्लि कुमारीनी मागणी करवा माटे एक दूतने मोकल्यो

बीजा मित्र धरणनो जीव चपा नगरीमा चंद्रछाय नामे राजा थयो हतो एक वखते अर्हन्नक नामे कोई वाहाणवटी श्रावके आवी राजाने दिव्य कुडल भेट कर्या राजाए पुछ्यु पथ्वीपर फरता काई आश्चर्य तारा जोवामा आव्यु ? ते बोल्यो-स्वामी ! हु समुद्रमा वाहाण लईने जतो हतो त्या कोई देवताए आवी मारा वाहाण ने डोलावीने कह्यु के, तु जैन धर्म छोडीने मारो आश्रय कर्य तो हु तारा वाहाणने तारु बीजा पण घणा उपसर्ग कर्या तथापि हु निश्चलरह्यो तेथी तणे प्रसन्न थई मने चार कुडल आप्या तेमाथी एक कुडलनी जोडी में कुभ राजाने भेट करी तेणे पोतानी पुत्री मल्लि कुमारीना हाथमा ते आपी हे राजा ! ए कन्या विश्वने आश्चर्य करनारी मारा जोवामा आवी छे ते साभळी राजा चद्रछाये तेनी मागणीने माटे दूत मोकल्यो

त्रीजा मित्र पूरणनो जीव श्रावस्ती नगरीमा रुक्मी नामे राजा थयो हतो एक समये तेणे पोतानी पुत्रीने सुवर्ण मडपमा स्नान करावताना मोटो महोत्सव कर्यो ते समये

कोई पुरुष घणा देशमा मुसाफरी करीने त्या आव्यो तेने राजाए पुछ्यु के, ते कोई ठेकाणे आवो श्रेष्ठ महोत्सव जोयो छे? तेणे कह्यु हे देव ! विदेह राजानी पुत्री मल्लि कुमारीना जन्मोत्सव आगळ लाखमेअंशे पण आ रमणीय नथी ते साभळी राजाए तत्काळ तेने माटे दूत मोकल्यो

चोथा मित्र वसुनो जीव वाराणसी नगरीमा शंख नामे राजा थयो हतो अहीं अर्हन्नके आपेला मल्लि कुमारीना देवार्पित कुडल भागी गया, तेने समा करवा माटे सुवर्णकारोने बोलावीने आप्या पण सोनी लोको ते सुधारी शक्या नहीं, तेथी राजाए तेओने नगरनी बहार काढी मुक्या तेओ शख राजानी सभामा आव्या. शख राजाए तेमने पुछ्यु, एटले तेओए पोताने मिथिला नगरी छोडवी पड्यानु वृत्तात सविस्तर कही सभळाव्यु तेथी आश्चर्य पामी राजाए तेमने पुछ्यु के, ते मल्लि कुमारी केवी छे? एटले तेओए तेनु अलौकिक स्वरूप वर्णवी बताव्यु ते साभळी शंख राजाए तेने माटे दूतने मोकल्यो

पाचमा मित्र वैश्रवणनो जीव हस्तिनापुरमा अदीनशत्रु नामे राजा थयो हतो. अही मल्लि कुमारीने मल्लदिन नामे एक अनुज बधु हतो ते चित्रकारोनी पासे पोतानो खानगी सभा मडप चित्रावतो हतो त्या कोई चतुर चित्रकार के जेने देवतानु वरदान हतु, तेणे पडदामाथी मल्लिकुमारीनो अगुठो जोईने तेमनु बधुं रूप यथार्थ चित्रमा आलेखी लीधु तेवामा मल्लदिन कुमार पोतानी स्त्रीनी साथे ते चित्रशाळामा आव्यो त्या पोतानी मोटी बेन मल्लि कुमारीने प्रत्यक्ष जोई लज्जाथी पाछो वळ्यो त्यारे तेनी धात्रीए कह्यु के, तेतो चित्र छे तत्काल पेला चित्र करनारने पकडीने तेनो वध करवानी आज्ञा करी बीजा चित्रकारोए तेनु कारण समजावीने तेने माड माड छोडाव्यो तथापि कुमारे ते चित्रकारनी आगळी छेदीने देश बहार काढी मुक्यो ते त्याथी नीकळीने हस्तिनापुरमा रहेला अदिनशत्रु राजाने मळ्यो राजाए तेन मिथिलामाथी नीकळवानु कारण पुछ्यु त्यारे तेणे पोतानो वृत्तात कहेता मल्लिकुमारीना अद्भूत रूपनु पण वर्णन करी बताव्यु, तेथी मोह पामी राजाए तेने माटे दूतने मोकल्यो

छठा मित्र अभिचद्रनो जीव कापिल्य नगरमा अजितशत्रु नामे राजा थयो हतो अहीं एकदा मल्लिकुमारीए कोई तापसीने वादमा हरावी तेथी ते कोप करीने कापिल्य नगरमा अजितशत्रु राजा पासे आवी अने मल्लिकुमारीना अनुपम रूपनु तेनी पासे वर्णन कर्यु जे साभळी राजाए तेने माटे दूत मोकल्यो

आ प्रमाणे ते छए दूतोए एक साथे आवीने कुभ राजा पासे मल्लिकुमारीनी मागणी करी राजाए ते नहीं स्वीकारता छए दूतोने अपद्वारथी काढी मुक्या दूतोना

अपमानयुक्त वचन साभळी ते छए राजाओने क्रोप उत्पन्न थयो तेथी सर्वेए मिथि ला उपर चडाइ करी कुभ राजाने तेमने जितवानो उपाय सुज्यो नहीं तेथी चित्तमा आकुल व्याकुल थवा लाग्यो पिताने तेवी स्थितिमा जोई मल्लिकुमारीए आश्वासन आपीने कह्यु के, हे पिता' तमे दूत मोकलीने ते छए राजाओने कहेवरावो के, तमने हु कन्या आपीश, एटले विश्वास आपीने तेओ जुदा जुदा अहीं आवशे, एटले हु तेने समजावीश कुभराजाए ते प्रमाणे कहेवरावता साथे एवी गोठवण करी के जेथी तेमने प्रथम मल्लि कुमारीए पेला गर्भगृहमा जुदा जुदा द्वारथी प्रवेश कराव्यो, तेमा पूर्वे युक्तिथी बनावेली मल्लिकुमारीनी प्रतिमाने जोई तेओ 'आ मल्लिकुमारीज छे' एम मानता तेना रूपने विषे मोह पामी निर्निमेषपणे ते प्रतिमाने जोई रह्या एटलामा मल्लिकुमारीए आवीने तालुस्थाने रावेला ढाकणाने दूर कर्यु एटले तेमाथी मृत्यु पामेला सर्पादिकना तथा मनुष्यना शबथी पण महा उत्कट दुर्गंध उछळ्यो तेथी ते छए राजाओ पोतपोतानी नासिका ढाकवा लाग्या त्यारे मल्लिकुमारीए कह्यु के, अरे राजाओ' तमे आम पराङ्मुख केम थया? तेओ बोल्या के, अमे आ दुर्गंधथी पराभव पामी गया छीए मल्लिकुमारी बोल्या अरे, देवानुप्रियो' हमेश उत्तम आहारनो एकेक कोळीओ क्षेपन करवाथी आ सुवर्णनी पुतळीमा पण तेनो पुद्गळ परिणाम आवा दुर्गंध रुप थयो तो आ औदारिक देह के जे मास रुधिरादि सात धातुओथी बनेलो छे तेमा दररोज बहाता अशना ३२ कवळथी केवो पुद्गळ परिणाम थाय ते विचारो. हे राजाओ' तमे मारा पर मोह पामो छो पण विचारो के आ स्त्री देहमा सारभूत शु छे? वळी हे राजाओ' तमे पूर्वे मोटु देवसबधी आयुष्य भोगव्यु छे तेना सुखना प्रमाणमा आ मनुष्य भवनु सुख शी गणत्रीमा छे आ प्रमाण कहीने तेमनो पूर्वभव कही समळाव्यो ते साभळी तेओने जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयु पछी मल्लिकुमारी बोल्या के, अरे भाईओ' हवे मारे तो दीक्षा लेवी छे तमे शु करशो? तेओ बोल्या के अमे पण दीक्षा लईशु आ प्रमाणे कही ससार मार्थी निर्वेद पामी तेओ पोतपोताना राज्यमा गया अने पोतपोताना पुत्रोनो राज्य उपर अभिषेक कर्यो

श्री मल्लिप्रभुए सावत्सरिक महादान आप्या पछी पोष शुक्ल एकादशीने दिवसे अष्टम भक्त करी अश्विनी नक्षत्रनो चद्र थता जन्मथी सो वर्षनी वये त्रणसो राजाओ अने त्रणसो स्त्रीओ साथे सिद्ध भगवतनी साक्षीए महाव्रतने अगीकार कर्या तेज दिवसे तेमने केवलज्ञान उत्पन्न थयु पेला छ राजाओए पण तेमनी पासे दीक्षा ग्रहण करी तेमना शासनमा भिषग् विगेरे अट्ठावीश गणधर, चालीश हजार साधुओ, पचावन हजार साध्वीओ, त्रणलाख ने सीतेर हजार श्राविका, अने

एकलाखने एशींहजार श्रावको थया पोताना परिवार साथे मल्लिप्रभु विहार करी पचावनहजार वर्षनु आयुष्य भोगवी पाचसो साधु अने पाचसो साध्वीओ नी साथे फाल्गुन शुक्ल द्वादशीए भरणी नक्षत्रमा श्रीसमेतशिखरगिरी उपर मोक्षने प्राप्त थया

" आप्रमाणे अवश्य मोक्षने पामनारा श्रीमल्लिनाथ प्रमुए पण जेम शीलने पालन कर्यु तेम भव्य प्राणीओ ए अवश्य शीलनु पालन करवु "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्याया व्याख्यायामुपदेशप्रासाद ग्रथस्यवृत्तौ शीलविषये एकोत्तरशततमः प्रबध' ॥ १०१ ॥

व्याख्यान १०२ मु.

हवे मैथुन सेववाथी घणागुणनी हानि थाय छे ते कहे छे.

वाक्यमंत्ररसादीनां, सिद्धिः कीर्त्यादयो गुणा. ।
नश्यन्ति तत्क्षणादेव, अब्रह्मसेवनान्नृणाम् ॥ १ ॥

व्याख्या

"अब्रह्म (मैथुन) सेवन करवाथी मनुष्योना वचनसिद्धि, मत्रसिद्धि, रसादिकनी सिद्धि अने कीर्त्ति विगेरे गुणो तत्काल नाश पामी जाय छे " ते विषे सत्यकि विद्याधरनो सबध छे जे आ प्रमाणे

सत्यकि विद्याधरनी कथा.

चेटक महाराजानी पुत्री सुज्येष्ठा नामे साध्वी हती ते एकदा आतापना करती हती ते वखते तेनु सौंदर्य जोई पेढाळ नामे विद्याधर तेनापर मोह पामी गयो तेथी तत्काल धूमाडो विकुर्वी तेने दिग्मूढ करी तेणे भ्रमर रूपे तेने सेवी तेनाथी सत्यकि नामे एक पुत्र थयो ते अनुक्रमे विद्या ग्रहणने योग्य थयो. त्यारे सोनाना पात्रमा वाघनु दूध राखवानी जेम विद्याओ आपवा सारु पेढाळ विद्याधरे साध्वी पासेथी अपहरीने तेने विद्यामत्र आप्या. रोहिणी विद्याए सत्य-

कीना जीवने तेनु आराधन करता पाच जन्मसुधी मृत्यु पमाड्यो हतो, छठे जन्मे छ मास आयुष्य बाकी रह्यु ते वखते प्रसन्न थई पण तेणे आदरी नहोती, ते आ सातमे भवे पूर्व जन्मना साधनथी वगर आराध्ये सतुष्ट थई अने ललाटमा छिद्र करी ते द्वारा हृदयमा जईने रही दिव्य अनुभावथी ते ललाटनु छिद्र दिव्य नेत्र रुप थई गयु पछी पोताना पिता पेढाळने साध्वीना शीलनो लोप करनार जाणी सत्यकीए मारी नाख्यो अने माताना तथा जिनेश्वरना वचनथी तेणे दृढ समकित अगीकार कर्यु पछी त्रिकाळ जिनपूजा करवाथी तेणे तीर्थंकर नामकर्म सपादन कर्यु थी लोकप्रकाशमा कह्यु छे के " सत्यकी महादेव एवा नामथी विख्यात अग्यारमो रुद्र थया ते सत्यकि विद्याधरनो जीव आवती चोवीशीमा सुव्रत नामे अग्यारमा तीर्थंकर थशे "

सत्यकी अविरतिपणाने लीधे स्त्रीओमा आसक्त थई अनेक राजादिकनी स्त्रीओने बलात्कारे सेवन करतो हतो तेथी एकदा उज्जयिनी नगरीना चडप्रद्योत राजाए एवो पडो वगडाव्यो के, सत्यकिने वश करी शके तेवी को स्त्री छे? ते वखते उमा नामनी वेश्याए कह्यु के, हु ते निशाचरने वश करीश पछ राजाए तेने तेनी इच्छा प्रमाणे करवानी आज्ञा आपी एक वखते उमाए चद्रशाळा (अगाशी) उपर रही तेने पोतानु सौंदर्य बताव्युं ते जोताज सत्यकि सत्वर त्या आवी तेने सेववा लाग्यो एक वखते वेश्याए एकातमा पुछयुं के, तमारीपासे कई कई विद्या छे? तेणे कह्यु के, "मारीपासे रोहिणी विगेरे विद्याओ छे अने ते सर्वदा मारा अगमाज रहे छे पण ज्यारे हु मैथुन करुं छु त्यारे ते विद्याओने अने खड्गने दूर मुकुछु, ते वखते मारामा जरापण बल रहेतु नथी " आ वात वेश्याए राजानी आगल निवेदन करी अने कह्यु के " जो कोई शब्द वेधी पुरुष ज्यारे ते मारी साथे मैथुनासक्त होय त्यारे जो तेने मारेतो ते मरी जाय अन्यथा मरशे नहीं पण ते पुरुष एवो चतुर होवो जोईए के, जे मारो बचाव करीने तेने एकलानेज हणी शके तेवो पुरुष कोई छे? " पछी तेवा पुरुपनी शोध करता राजानी पासे रहेनारा केटलाक शस्त्र कुशल पुरुपोए पोताना चातुर्यनी परिक्षा आपी ते एवी रीते के, कमलना पत्रा उपराउपर राखीने राजाए कह्यु के, उपरना आटला पत्र वींधवा अने नीचेना आटला बचाववा एटले तेओए उपरना तेटलाज वींध्या अने नीचेना बचाव्या पछी राजाए ते कळा वेश्याने बतावीने कह्यु के, आ युक्तिथी तारु रक्षण करशु वेश्या ते वात स्वीकार करीने पोताने घेर गइ पछी ते सुभटोए सकेत ममाणे गुप्त रही उमा वेश्या साथे मैथुन करता एवा सत्यकिने जोई ते युक्तिथी तेने

मारी नाख्यो. ते साथे उमाने पण विपकदळी रूप जाणी मारी नाखी सत्यकि मृत्यु पामीने नरके गयो.

पछी काळ संदीपक नामे सत्यकीना मित्र विद्याधरे उज्जयनी आखी नगरी चूर्ण करी नाखवा माटे आखी नगरी उपर शीला रची एटले राजाए तेने भोगादिक धर्या ते विद्याधरे आकाशमा रहीने पोताना मित्र सत्यकीनु महत्व वधारवा माटे सत्यकीना नामथीज कह्यु के तमे मने कामभोग करता मारी नाख्यो छे तेथी जो मैथुनाशक्त अवस्थाने रुपे मारी मूर्ति करीने मारी पूजा करो अने शंकर पार्वतीना नामथी अमारा गुण गाओतो जवता मुकु. अन्यथा मुकीश नही. लोकोए ते प्रमाणे करवु कबुल कर्यु " मृत्युना भयथी प्राणी शुं करता नथी ? " अनुक्रमे इश्वरनु लिंग जळाधारी रुप योनीमा राखीने तेनी पूजा प्रवर्ती " विषयलंपट पणाने धिकार छे के जेनी आसक्तिथी आवो बळवान् सत्यकी पण पोतानी शक्तिने कुठित करी नाखीने नरके गयो "

॥ इति सत्यकी विद्याधर प्रबंध ॥

हवे सुज्येष्टाए केवी रीते दीक्षा लीधी तेनु वृत्तात आप्रमाणे-विशाळा नगरीमा चेटक राजानी एक पुत्री सुज्येष्टा नामे हती एक वखते तेणीए मिथ्यात्वने स्थापन करती कोई एक तापसीने वादमा जिती लीधी ते तापसीए तेनु स्वरूप चित्रपट उपर आलेखी श्रेणिक राजाने बताव्यु ते जोइ श्रेणिक राजा मोह पामी गयो तेनी प्रेरणाथी तेना मंत्री अभय कुमारे विशाळा नगरीमा आवी राजमहेल पासे एक दुकान मांडी तेमा चित्रपट उपर श्रेणिक राजानु चित्र आलेखी नित्य तेनी पूजा करवा लाग्यो एक वखते ते चित्र सुज्येष्टानी दासीओना जोवामा आव्यु तेमणे ते लइ जइने सुज्येष्टाने बताव्यु श्रेणिकनु स्वरूप जोई सुज्येष्टा मोहपामी गइ एटले तेणे पोतानो अभिप्राय अभयकुमारने जणाव्यो पछी अभयकुमारे तेना महेलथी राजगृहीना सीमाडा सुधी एक सुरंग करावी श्रेणिक राजाए ते द्वारा त्या आवी तेने लइ जवानु जणाव्यु. सुज्येष्टा चिल्लणाने लइ तैयार थईने आवती हती तेवामा पोताना आभूषणनो डाबलो भूली गइ ते लेवाने पाछी गइ राजा श्रेणिक चेटक राजाना भयथी तत्काल सुज्येष्टाने बदले चेल्लणाने लइने कागडानी जेम नाशी गयो. सुज्येष्टा संकेत स्थले आवी त्या तो चेल्लणाने के राजाने जोया नहीं एटले तेणे उचे स्वरें पोकार कर्यो के कोइ चेल्लणाने हरी जायछे ते साभळी चेटक राजा त्या दोडी आव्यो तेणे श्रेणिक राजाना अंग रक्षक सुलसाना बत्रीश पुत्रोने एक बाणे मारी नाख्या. कारण के तेओ सर्व साथे जन्मेला अने समदायी के कर्भ

बधवाला हतो पछी चेटक महाराजाए पोताना नगरमा आवीने सुज्येष्ठाने श विवाहनी सामग्री तैयार कराववा माडी त्यारे सुज्येष्ठाए पिताने वारीने दीक्षा ग करी. कारण के ते सती होवाथी वचन साक्षीए श्रेणिक राजाने वरेली होवाने बीजा पुरुषने वरी नही पण पेढाल विद्याधरे कपटथी तेने भोगवी जेथी तने ग रह्यो एटले गणधरे तेना सतीनुं विषे वीर भगवतने पुछयुं वीर भगवते कह्यु " ते सुज्येष्ठानो दोष नथी ते तो निरन्तरशील पाळीने रहेली छे श्रेणिक राजाना सगना अभावथी तेणे मनसाक्षीए सर्वथा शील अगीकार कर्युं छे " पछी सुज्येष्ठा साक्षीए यावज्जीवसुधी मन, वचन, कायाथी शुद्ध एवु शील व्रत पाळ्युं ने ति कहेवाय छे के. " चेटक राजाने सात पुत्रीओ हती, ते सर्वे शीलवती हती एम ताव करोए तेमनी श्लाघा करेली छे " इति सुज्येष्ठा प्रबध

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्याया व्याख्यायामुप-
देशप्रासादस्य वृत्तौ शीलविषय द्व्युत्तरशत
तम. प्रबंध ॥ १०२ ॥

व्याख्यान १०३ मुं

स्त्रीचरित्र जाणवाने कोईपण कुशल नथी ते विषे कहे छे.

सुश्लिष्टामपिच स्त्रीणामहो कपटनाटकम् ।
न स्याद्रेगापि मेधावी तस्य तत्वावबोधने ॥ १ ॥

व्याख्या

" स्त्रीओनु कपट रुप नाटक एवु योजाएलु होय छे के जेनु तत्व समजवाने बुद्धिवाननु डहापण पण काम लागतु नथी " ते विषे नुपुर पंडितानु दृष्टात छे ते आ प्रमाणे —

नुपुरपंडितानी कथा.

राजगृह नगरमा देवदत्त नामे एक सोनी हतो तेने देवदिन्न नामे एक पुत्र हतो तने दुर्गिला नामे स्त्री हती एक वखते ते झीणा अने आर्द्र वस्त्र पेहेरी नदीमा स्नान करती हती तेवीज स्थितिमा कोई नागरिक पुरुषना जोवामा आवी, ते जोई मोहपामीने ते पुरुष आ प्रमाणे बाल्यो " हे सुदरि ! आ नदी अने वृक्षो तें

सारी रीते स्नान कर्यु ? एम पुछे छे अने हुं तो तारा चरण कमलमा पडीने पुछुं छु " दुर्गिलाए तेने उत्तर आप्यो के-" मने स्नान विषे पुछनारा नदी तथा वृक्षोनुं कल्याण थाओ, अने मने ते विषे पुछनार पुरुषनु मन इच्छित हु पूर्ण करीश " आ साभळी ते नागरिक तेने मळवाने उत्सुक थयो पछी ते कोइ तापसीने मळ्यो अने तेने पोतानी इच्छा समजावी दुर्गिलाने घेर मोकली. तेणीए दुर्गिलाने पेला नागरिकना प्रेमनी वात करी एटले दुर्गिला बोली-" अरे पाखंडीनि, तु आवु अश्राव्य केम बोले छे, मारा घरमाथी चाली जा " आम कही निकलती ते तापसीना पृष्ट उपर तेणे कज्जलनो थापो आप्यो तापसीए नागरिक पासे आवी पोताना अपमाननु वृत्तात जणाव्यु, अने पृष्ट भाग बताव्यो ते जोइ नागरिक, समजी गयो के, ते चतुराए मने कृष्णपक्षनी पचमीनी रात्रे मळवानो संकेत आप्यो. पण ते कया स्थळे मळवु ते जणाव्यु नथी तेथी तेणे तापसीने पुन भिक्षा मागवाना मिषे तेने घेर मोकली तापसी त्या जइने बोली के हे सुदरी, ते नागरिकने मळवानु स्थळ कहे. एटले दुर्गिलाए रोष करी तेने हाथे पकडी पछवाडेना वाडामा आवेला अशोक वृक्ष तळे थइने पाछले द्वारे काढी मुकी तापसीए ते वात पेला पुरुष आगळ जणावी एटले तेणे जाण्यु के, कृष्णपचमीए वाडामा अशोक वृक्ष तळे तेनुं मळवु थशे ज्यारे सकेतनो दिवस आव्यो त्यारे ते त्या गयो बने त्या मळ्या अने विनोद करता तेमना नेत्र मुद्रित थइ गया ते वखते तेनो सासरो देवदत्त मूत्रोत्सर्ग करवाने त्यां आव्यो त्या पुत्र वधू साथे बीजा पुरुषने जोइ तेना डाबा पगमाथी एक नुपूर काढी लीधु तत्काल दुर्गिलाना जाणवामा ते वात आवी, एटले तेणीए पेला जारने जगाडी शिखडावीने तेने घेर मोकल्यो पछी पोताना घरमा जइ पोताना पतिने मधुर वाणीथी जगाडीने कह्यु के, प्राणेश, चालो, आजतो आपणे अशोक वृक्ष नीचे जइने निद्रा लइए पतिए कबुल कर्यु, एटले बने जण त्या जइने सुता. थोडी वार पछी निद्रा पामेला पतिने जगाडीने तेणीए कह्यु के, तमारा कुळमा आ केवा रीत कहेवाय के सासरो जाते आवी पुत्र वधूना पगमाथी नुपूर काढी ले. ते साभळी तेना पतिने क्रोध चड्यो तेथी प्रात काळे तेणे पोताना पिताने कह्यु के, अरे पिता, रात्रे हु मारी स्त्री साथे सुतो हतो, ते वखते तमे नुपूर लइ गया ते शु ? पुत्र वधूनु गुप्त सासराए जोवु योग्य नथी पिताए कह्यु, अरे पुत्र ! कोइ जार तेनी साथे सुतो हतो तेथी में तेम कर्यु हतु अने पछी त्या लइ जइ तने सुवारीने तेणे आ कपट कर्यु छे

ते साभळी दुर्गिला बोली के, ते वात असत्य छे, हुं मारु सत्य देवतानी आगळ बतावीश एम कही ते सर्वने लइ नगर बाहेर रहेला कोइ प्रभाविक यक्षनी

पासे पोतानु सत्य बताववा चाली मार्गमा प्रथमथी संकेत करी राखेलो पेलो जार जुदो वेप लइ गाडो बनीने आव्यो, अने दुर्गिलाने गळे वृक्षने जेम वानर वळग ता वळगी पड्यो तेने दूर करी यक्षना मंदिर पासे आवी पवित्र थइ तेने पूजीने बोली के, " हे देव, आ गाडो पुरुष अने मारो पति ते शिवाय जो कोइ त्रीजो पुरुष मने स्पर्श थयो होय तो तमे मने योग्य शिक्षा करजो" ते सांभळी यक्ष विचारमा पड्यो के आनु सत्य असत्यरुप छे माटे तेनु शु करवु ? तेटलामा तो ते स्त्री तेनी बे जंघा वच्चे थइने नीकळी गइ, एटले लोकोए तेनी प्रशंसा करी अने त्यारथी नुपूरपंडिता एवा नामथी ते प्रख्यात थइ आवा तेना चरित्रथी विस्मय पामेला देवदत्त सोनीनी ते दिवसथी निद्रा उडी गइ

देवदत्तना ते गुणथी राजाए तेने पोताना अंत पुरनो अधिकारी रक्षक निम्यो राजाना अंत पुरनी मुख्य राणी कोइ हाथीना महावत साथे आसक्त हती तेने मेहेल्नी पासे हाथी रहेता तेथी रात्रे ते द्वारा ते माहावतने मळती हती आजे आ नवीन सोनी पहेरेगीर थवाथी अंत पुरमा जागतो हतो एटले ते राणी वारवार तेने जावा आवती पण तेने जागतो जोइ पाछी फरती हती पछी राणीनु वृत्तान्त जाणवानी इच्छाथी देवदत्त कपटनिद्राथी सुइ गयो एटले राणी तेने सुतेलो जोइ मेहेलना गोख पासे आवी त्या पेला जार महावते हाथी उभो करी राखेलो हतो तेणे पोतानी सुंढवडे राणीने नीचे उतारी एटले महावत तेना वासामा हाथीनी साकळ मारीने बोल्यो के, मोडी केम आवी ? त्यारे तेणे नवा नीमायेला पहेरेगीरनी वार्त्ता कही पछी रात्रिना छेल्ला पोहोरे पाछी महावते तेवी रीतेज उपर पोहोंचाडी दीधी आ सर्व चरित्र देवदत्तना जोवामा आव्यु तेथी तेणे विचार्यु के, ज्यारे राजानी स्त्रीओनु पण आवु आचरण छे तो पछी बीजा साधारण माणसोनी स्त्रीओ कुशील होय तेमा शु आश्चर्य ! आ प्रमाणे विचारवाथी ते चिंता रहित थइ गयो तेथी तेने छमासे तेज रात्रीए पूरी निद्रा आवी गइ तेनी निद्रानो वृत्तांत जाणी ज्यारे ते जाग्यो त्यारे राजाए तेनु कारण पुछ्यु तेणे सर्व वृत्तांत स्पष्टपणे कही जणाव्यु पछी राजाए ते राणीने ओळखी काढवा सारु अंत पुरनी सर्व स्त्रीओने कह्यु के, तमे सौ उघाडे वासे उभी रहो, अने हु कमळना दडानो प्रहार करु ते सहन करो सर्व स्त्रीओए ते स्वीकार्यु अनुक्रमे ते प्रमाणे करता ज्यारे पेली कुल्टा राणीनो वारो आव्यो, त्यारे कमळपुष्पथी तेनापर प्रहार करताज ते कपटवडे मूर्छा पाइने पृथ्वीपर पडी गइ राजा तेना स्त्री चरित्रने जाणीने बोल्यो के, "अरे स्त्री ! तु मदोन्मत्त हाथी साथे रमे छे छता कर्दम हाथीथी बीहे छ, अने लोढानी साकळनो मार खाइ हर्ष पामे छे छता आ कमळपत्रना घातथी मूर्छा पामे छे' आ

प्रमाणे कही राजाए क्रोधथी आज्ञा करी के, आ हाथी, महावत अने राणीने पर्वतना ऊंचा शिखर उपर चडावीने झंपापात करावो पछी महावत ते राणीने हाथी उपर बेसाडी हाथीने पर्वतना शिखर उपर लइ गयो त्या हाथीनो पहेला एक पग ऊचो कराव्यो, पछी बे पग ऊचा कराव्या अने छेवटे त्रण पग उचा राखावी एक पगे उभो राख्यो हाथीनी आ कळाथी रंजित थयेला लोकोए राजाने विनंती करी के, स्वामी, आवा गजेंद्ररत्नने मारवो योग्य नथी. राजाए तेने अभयदान आप्युं, अने महावतने कह्युं के, ते हाथीने गिरिथी नीचे उतारी दे. महावते कह्यु के, जो अमने अभयदान आपो तो हुं तेने कुशळताथी नीचे उतारुं. राजाए तेने पण अभयदान आप्यु एटले तेणे हाथीने हळवे हळवे क्षेमकुशळ नीचे उतार्यो पछी राणीने अने महावतने राजाए देशपार कर्या

राणी अने महावतने त्याथी नीकळीने आगळ जता मार्गमा एक देवालय आव्यु, त्या रात्रि पडवाथी ते बने सुइ गया तेवामा कोइ चोर गाममाथी चोरी करीने त्या आव्यो कोटवाळने तेनी खबर पडता तेणे आवीने देवालयने घेरी लीधु. अदर महावत तो निद्रावश थइ गयो हतो पण पेला चोरना कर स्पर्शथी राणी जाग्रत थइ, अने तेने जोइने बोली के, तु मने स्त्री तरीके अगिकार कर चोरे कह्यु के, जोतु प्रात:काळे कोटवाळ पासे मने तारो स्वामी कही मारा जीवितनी रक्षा करे तो हु तारो स्वामी थइ तने स्वीकारु तेणीए ते वात कबुल करी प्रात:काळे कोटवाळे सुभटो साथे अदर प्रवेश करीने पुछ्यु के, तमारामा कोण चोर छे ? राणीए दृष्टिनी सज्ञा करीने महावतने बताव्यो एटले तेओए तेने पकडी गुन्हो साबित गणीने शूळीए चडावी दीधो शूळी उपर रह्या सता तेने तृषा लागी, तेथी मार्गे चाल्या जता कोइ श्रावकने देखीने तेणे तेनी पासे जळ माग्यु. श्रावक तेने नवकार मत्रनु पद आपी जळ लेवा गयो तेना आव्या अगाउ शूळी उपर नवकार मत्रने स्मरण करतो महावत मृत्यु पामीने व्यंतरनी कायमा देव थयो

अहिं पेली दुष्ट राणी चोरनी साथे चाली नीकळी मार्गमा एक नदी आवी नदीमा पूर जोइ चोरे कह्यु के, प्रथम तारा वस्त्रादि मने आप तेने पेले तीर मुकी आवीने पछी हु तने सुखेथी लइ जइश हु ज्या सुधी आवुं त्या सुधी तु आहें रहेजे; तेणीए तेम कर्यु चोरे नदीने सामे तीरे जइने विचार्यु के, आ स्त्री पोताना पतिनी जेम मने पण दु खमा पाडशे तेथी एनो सग करवो योग्य नथी आवु विचारी ते चोर पोतानो स्वार्थ साधी तेने छोडीने परभार्यो चाल्यो गयो

अहिं राणी नग्नपणे हताश थइ सतीवनमां भमती पोकार करवा लागी. एवामा व्यतर थयेलो तेनो पति १५ ...र लइने तेने प्रतिबोध करवा आव्यो.

तेणे मुखमां मास राख्यु हतु, ते मासनी पेशी नदीना तीर उपर मुकी नदी काउे आ मत्स्यने पकडवा दोड्यो एटले मत्स्य तो नदीना जळमा पेसी गयो, अने पछु इतु ते समडी उपाडी गइ ते वखते शीयाळ शीलखो थइ आमतेम जोवा ला ते जोइ दुर्गिला बोली के–अरे, मूर्ख ! तु उभय भ्रष्ट थयो, हवे शु जुवे छे ? शीय बोल्यो–अरे, स्त्री ! तुं तो त्रणथी भ्रष्ट थइ छु, हवे बीजाना दोष शामाटे जुए छ ए प्रमाणे कहीने तेणे दिव्यरुप प्रगट करी कह्यु के, अरे पापिणी ! ते जेने मा नखाव्यो हतो ते हु महावत छु जैन धर्मना प्रभावथी मने आ उत्तम गति प्राप्त थ छे माटे तु पण ते धर्मने अगीकार कर्य राणीए ते वात स्वीकारी एटले तेणे ह कोइ साध्वी पासे मुकी त्या तेणे दीक्षा ग्रहण करी अनुक्रमे सद्गतिने पामी

" आ प्रमाणे ते राणी माते पवित्र शीलव्रतने पाम्या छता नुपूर पडितानी असतीपणानी अपकीर्त्तिनो नाद अद्यापि विराम पामतो नथी "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेश सग्रहाख्याया व्याख्यायामुपदेशप्रासाद स्ववृत्ती स्त्रीचारित्रविषये त्र्युत्तरशततम प्रबध ॥ १०३ ॥

व्याख्यान १०४ मु.

चोथा व्रतने धारण करनार श्रावक आषाढ चातुर्मास्यना सत्कृत्य अवश्य करे छे, तेथी हवे चातुर्मास्यना कृत्योनु वर्णन करे छे.

आषाढाख्यचतुर्मास्या विशेषाद्विधिपूर्वकम् ॥
अभिग्रहा· सदाग्राह्या सम्यगर्हा विवेकिभि ॥ १॥

व्याख्या

" विवेकी पुरुषोए आषाढ चातुर्मासने विषे हमेशा पोताने योग्य एवा अ ग्रहो वि[illegible]पूर्वक विशेषे ग्रहण करवा " आनो भावार्थ एवो छे के, प्रथम द्वा व्रतनु [illegible] करवा वखते जेणे पाचमु व्रत आदर्यु होय तेणे अवश्य करीने नियमामा [illegible]रेक चातुर्मासे सक्षेप करवो एटले मोकळु राखेल होय तेनाथी ओ करी न [illegible] यमो पाळवा अने जेणे पाचमु व्रत अगीकार कर्यु न होय तेणे पण प्रत्ये चातुर्मासे [illegible]ग्य अभिग्रहो स्वीकारवा तेमा पण आषाढादि चातुर्मास्यना ता विशेषणे वि[illegible]पूर्वक ग्रहण करवा

वर्षाऋतुमा गाडा हाकवा, रथ जोडवा, हळथी खेड करवी, घोडेस्वार थई फरवु विगेरे निषेध करवा योग्य छे, कारणके भूमि साथे मेघना जळनो स्पर्श थवाथी लीला घासना अकुरो, सूक्ष्म समूर्छिम देडकीओ, पाचे वर्णनी लीलफुल, अळसीया, शखजातिना जीवो, ममोला, कात्रा, चुडेलना गुच्छो अने भूमि छत्र (बीलाडीना टोप) विगेरे अनेक जीवोनी उत्पति थवानो संभव छे. तेथी, चातुर्मास्यमा एवा जीवनी रक्षाने माटे पूर्वोक्त शकटखेटनादिनो अभिग्रह धारण करवो योग्य छे कदि जो कृषि कर्म विगेरेथीज आजीविका होय तो एक बे विगेरे क्षेत्र खेडवानी छुट राखी तेथी विशेष क्षेत्र खेडवानो त्याग करवो. मुख्यरीते तो वर्षाकाळमा सर्व दिशाओमा गमनागमन करवानो निषेध करवो उचित छे, जेवो नियम कृष्ण वासुदेवे अने कुमारपाळे लीधो हतो कह्यु छे के, "सर्व जीवोनी दयाने माटे वर्षाऋतुमा एक स्थाने वसवु" पूर्वे श्री नेमि प्रभुना उपदेशथी श्रीकृष्ण वासुदेवे चातुर्मास सुधी द्वारकानी बहार जवानो नियम लीधो हतो अने कुमारपाळे श्रीहेमचद्रसूरिना वचनथी तेवो नियम लीधो हतो ते आ प्रमाणे–"सर्व चैत्योनु दर्शन अने गुरुनु वदन मुकीने प्राय नगरने विषे पण भमीश नहीं"

एकवचनीपणामा युधिष्ठिर जेवा कुमारपाळ राजाए अगीकार करेला पूर्वोक्त नियमने मोटु कार्य पड्ये छते पण छोडी दीधो नहोतो शकदेशनो म्लेच्छ राजा कुमारपाळना ए नियमनी वात जाणीने तेना देशनो भग करवाने माटे आव्या छता अभिग्रह धारी कुमारपाळ राजा वर्षाऋतुमा तेनी सामे युद्ध करवा गयो नही राजाने धर्ममा स्थिर करवाने माटे हेमचद्रसूरिए देव शक्तिथी ते म्लेच्छराजने बाधी अणाव्यो अने पोताना राज्यमा छ मास पर्यंत जीव न हणवानी कबुलत कराव्या पछी तेने छुटो कर्यो.

जो के वर्षाऋतुमा सर्व दिशाओमा गमन करवानो निषेध छे, छता कदि सर्व दिशानो नियम न करी शकाय तो जे दिशामा गया वगर निर्वाह थाय तेम न होय ते शिवाय बीजी दिशाओमा जवानो नियम लेवो एज प्रमाणे जो सर्व सचित्त वस्तुओनो त्याग थइ शके नहीं तो जेना विना निर्वाह न चाले ते सिवाय बीजी वस्तुओनो त्याग करवो तेमज जेने जे वस्तु प्राप्त थवा संभव न होय अथवा जे काळे जे वस्तु उत्पन्न थती न होय तेनो पण त्याग करवो जेम निर्धनने हाथी घोडा अने मरुदेशमा नागरवेल, तेमज पोतपोताना समय वगर आम्रफळ विगेरे अप्राप्य छे तेनो ते स्थितिमा, ते देशमा, ते काळे पण त्याग थाय तो तेथी विरतिरुप महाफळ प्राप्त थाय छे अन्यथा ते ते वस्तुनु ग्रहण करवापणु प्राप्त नही थता छतापण पशुनी जेम अविरतपणु लागे छे अने ते ते नियमना फळथी वचित थवाय छे जेम एकज वार भोजन कर्या छता

पण पच्चखाण कर्या वगर एकाशणानु फळ मळे नहीं तेम समजवु अछती वस्तुनो पण नियम लीधो होय तो कदि कोइ वार तेनो योग मळी जाय तोपण नियम ग्रहण करेलो होवाथी ते वस्तुनु ग्रहण थतु नथी, तेथी तेने नियमनु फळ स्पष्टरीते थाय छे. जेम वंकचूळ नामना चोरना स्वामीए गुरु पासे अजाण्या फळ न खावा एवो नियम लीधो हतो, ते एकवार अरण्यमा बीजा चोर साथे गयो त्या सघळा क्षुधार्त थया, त्यारे चोर लोको किंपाक जातिना विषफळ लइ आव्या ते खावानी बीजाओए घणी प्रेरणा करी तथापि अजाण्या फळना नियमने लीधे वंकचूले ते खाधा नहीं अने बीजा साथेना चोरोए खाधा तेथी तेओ मृत्यु पामी गया अने वंकचूळ बच्यो माटे एक पक्षनो, एक मासनो, बे मासनो, त्रण मासनो, चार एक, बे, के त्रण वर्ष सुधीनो यथाशक्ति नियम लेवो जे माणस ज्या सुधी नियमो पाळी शके त्या सुधीने माटे नियमो ग्रहण करवा पण क्षणवार पण नियम वगर रहेवु नहीं कारणके विरतिनु मोटु फळ छे अने अविरतिथी घणा कर्मोनो बंध थवा विगेरे अनेक दोप छे

वर्षा चातुर्मास्यमा विशेषपणे नियम ग्रहण करवा ते आप्रमाणे–दररोज बे वार त्रणवार अष्टप्रकारी पूजा करवी, सपूर्ण देववदन करवु, (त्रणकाळ दे- वादवा) सर्व जिनबिंबनु अर्चन अने वदन करवु, स्नात्र महोत्सवो करवा, गुरुने द्वादशावर्त्त वदना करवी, अपूर्व ज्ञाननो अभ्यास करवो, वैयावच्च करवी, ब्रह्मचर्य पाळवु, प्रासुक जळ पीवु, सचित वस्तुनो त्याग करवो, वळी वादळामाथी जळ वृष्टि थाय त्यारे रायण, आंबा विगेरेना फळमा एळो पडे छे तेथी तेनो त्याग करवो आर्द्रा नक्षत्र बेसता पक्व आम्र फळमा तेमज तेना रसमा कीडा जेवा तेना जेवाज वर्णवाळा जीवो उत्पन्न थाय छे तेमज वासी कणेकथी बनेला पुडला, वडा विगेरेनो त्याग करवो पापड, वडी, सुकी शाक भाजी, सर्व जातना ताजलजा विगेरे पत्र शाक, खारेक, टोपरा, सुकी रायण, खजुर, द्राक्ष, नहीं धोयेली खाड अने सुठ विगेरेमा लीलफुल अने कुथुवा तथा येल विगेरे उत्पन्न थवानो सभव होवाथी ते ते पदार्थो त्यजी देवा कदि ओषधी विगेरेमा तेमाथी कोइ चीजनी जरुर पडे तो तेने यतनाथी शोधीने ग्रहण करवी

वनीश्रकेतो चोमासामा खाटला उपर सुवु, दातण अने जोडा विगेरेनो त्याग करवो, वर्षा चातुर्मास्यमा पृथ्वी खोदवानो, नवीन वस्त्र रगाववानो अने ग्रामातर गमन करवा विगेरेनो निषेध करवो वस्त्र धोवरावयवानु पण परिमाण बाधवु वर्षाऋतुमा पृथ्वीउपर लिंपवानो अने छाणा थापवानो सर्वथा निषेध करवो कारण के छाणमा बे घडी पछी अनेक जीवो उत्पन्न थाय छे, तेमापण वर्षाऋतुमा तो

विशेषे थाय छे वळी घरनी भींतो, स्तंभ, पलंग, कमाड, पाट, पाटला, सींका-घी, तेल तथा जळविगेरेना पात्रो, इंधण अने धान्यप्रमुख सर्व वस्तुओने लीलफुल-थीरहित रहेवाने माटे यथायोग्य सुखी गरमीमा राखवी, रक्षा चोपडवी, चुनो चोप, डाववो, मेल कढाववो, हवाना भेजविनानी जग्यामा मुकवी, पाणीने बे त्रण वार गळवु तेल, गोळ, छास अने जळविगेरेना पात्रोने सारीरीते ढाकवा. ओसामण अने स्नानतु जळ नीळ फुलरहीत अने जे दर विगेरेथी पोली न होय तेवी भूमिमा छुटु छुटुं थोडु थोडु ढोळवु चुलो अने दीवा उघाडा न राखवा खाडवु, दळवु, राधवु, तेमज वस्त्र अने भाजनो धोवा-विगेरेमा सारी जतना करवी अने जिन प्रासाद तथा उपाश्रय विगेरे धर्मालयो पण सारीरीते जोइ, समरावीने यथायोग्य जतना करवी

अन्यमतीओना शास्त्रोमा पण आ बाबत केटलाक नियमो कहेला छे. वशिष्ट कहे छे के, " हे ब्रह्मा ! चोमासामा श्रीविष्णु भगवान् समुद्रमा जइने शामाटे सुवे छे ? ते समये कया कया कार्योनो त्याग करवो ? अने ते प्रमाणे त्याग करवाथी शु फल थाय ? ते कहो." ब्रह्मा कहे छे के—"देवाधिपति विष्णु भगवान् सुता नथी तेम जागता पण नथी पण वर्षाऋतुमा तेवो उपचार करेलो छे. तेथी ज्यारे श्री विष्णु चोमासामा योग ध्यानमा लीन थाय छे, ते समये जे जे वर्जवा योग्य छे ते साभळो—वर्षाऋतुमा प्रवास करवो नही, मृत्तिका खोदवी नहीं, वृताक (रिंगणा), अडद, चोळा, वाल, कलथी, तुवेर अने कालींगडा[1], विगेरे वस्तुओ तथा मूळा, ताजलजा विगेरे पत्रशाक खावा नहीं अने एकज वार जमवु. चातु-र्मास्यमा जे ए प्रमाणे वर्त्ते ते पुरुष चतुर्भुज थइ परमगतिने पामे छे वळी कायम रात्री भोजन करवु नहीं. चातुर्मास्यमा तो विशेष करीने रात्रे खावु नहीं. जे प्राणी ए प्रमाणे वर्त्ते ते आलोकना तथा परलोकनी सर्व कामनाने पामे छे वळी विष्णु शयन करे ते समये जे मद्य मासनो पण त्याग करे तेने मासे मासे सो अश्वमेधयज्ञोनु फळ मळे छे इत्यादि " वळी मार्कंड मुनि कहे छे के, " हे राजा ! जे माणस चातुर्मास्यमा तैल मर्दन करे नही, ते घणा पुत्र तथा धनवडे युक्त अने नीरोगी थाय छे जे पुष्पादि भोगनो त्याग करे ते स्वर्गलोकमा पूजाय छे जे कडवो, खारो, तीखो, मीठो, कषायलो अने खारो ए छ रसने वर्जे छे ते कदिपण निर्भागीपणु पामतो नथी. तांबूल तजवाथी भोग अने लावण्यने पामे छे जे पाका कद मूळ

---

१ कालिंगडा वनस्पति नहीं पण कोइ जातिनु कठोळ धान्य होवु जोइए. मूळमा कलिंग शब्द छे

कामशास्त्रना कर्त्ता वात्स्यायन पण योनिमा जतुनी उत्पत्ति जणावे छे। कहे छे के, "योनिरूपमा कोमळ मध्यभागे सूक्ष्म जतुओ उत्पन्न थाय छे" ए प्रमाणे स्त्रीना सगथी असख्य जीवोनो घात थाय छे माटे हे मूढ ! तु ए विषयमा शु सार जुए छे ? लौकिक शास्त्रमा पण कह्यु छे के,

भिक्षाशन तदपि निर समेकवार,
शय्या च भू परिजनो निज देह मात्र।
वस्त्र तु शीर्णपटखडमयी च कथा,
हाहा तथापि जतु विषयाभिलाषी ॥ १ ॥

" भिक्षाथी भोजन मळे ते पण एकज वार अने नीरस मळे छे, भूमिउपर सुवानु छे, पोतानु शरीरज मात्र परिजन होय छे, जीर्ण अने फाटेली कथा ते वस्त्रमा होय छे तथापि खेदनी वात छे के, प्राणीओने विषयनी अभिलाषा थया करे छे" ए काम भोगमा मात्र सकल्पज सारनो छे, परमार्थे जोता तेमा बीजो काइपण सार जोवामा आवतो नथी

जे प्राणी भावथी स्त्री सगनो त्याग करे छे तेज ब्रह्मचारी कहेवाय छे तेविषे कह्यु छे के—

रामा सग परित्यज्य, व्रत ब्रह्म समाचरेत् ।
ब्रह्मचारी स विज्ञेयो, नपुन वैद्ध घोटक ॥ १ ॥

"स्त्रीनो सग भावथी छोडीने जे ब्रह्मचर्यपाळे तेज ब्रह्मचारी कहेवाय, का बाधेला अश्वनी जेम ब्रह्मचर्य पाळे ते ब्रह्मचारी नही" अर्थात् जे स्त्रीमा आसक्ति छोडीने भावथी शीळ पाळे तेज खरेखर ब्रह्म व्रतधारी जाणवो स्त्रीओने लौकिकशास्त्रमा तेमज लोकोत्तर शास्त्र (जैन शासन) मा दोषनी खाणरूप कहेली छे एटलुज नही पण तेओ प्रत्यक्ष राक्षसी छे, स्वजन स्नेहनो विघात करावनारी छे अने घणी मायावी छे तेविषे कह्यु छे के,

नसा कला न तत्ज्ञानं, न सा बुद्धिर्न तद्बल ।
ज्ञायते यद्वशालोके, चरित्र चल चक्षुषा ॥ १ ॥

"तेवी कोइ कला, तेवु कोइ ज्ञान, तेवी कोइ बुद्धि अने तेवु कोइ वल नथी के जेथी चपल नेत्रवाळी स्त्रीओनु चरित्र जाणी शकाय" स्त्रीना सगथी मुज राजाने मोटु दुःख प्राप्त थयु हतु तेनी कथा आ प्रमाणे—

मुंजराजानी संक्षेप कथा.

मालव देशमा परमारवंशी श्रीसिंहभट नामे एक राजा हतो ते एक वखते वननी शोभा जोवाने शरकटना वनमा गयो हतो त्या एक तरतनो जन्मेलो बालक मुंजना घासमा पडेलो तेना जोवामा आव्यो तेथी तेनु मुंज नाम पाडी पुत्रकरीने राख्यो त्यार पछी सिंधल नामे ते राजाने पुत्रथयो अनुक्रमे सिंहभट राजा गुजरी जवाथी मुंज राज्य उपर आव्यो तेणे पोताना भाई सिंधलने उग्र पराक्रमवालो जाणीने कारागृहमा नाख्यो सिंधलने श्रीभोज नामे पुत्र थयो तेना जन्म वखते मुंज कोई निमित्तियानी पासे तेनु भाग्य वल जोवराव्यु निमित्तिए लग्नबळ जोइने कह्युके "आ भोजकुमार पचाश वर्ष सात मास अने त्रण दिवस सुधी गौडदेश सहित दक्षिणदेशनु राज्य भोगवशे " आप्रमाणे साभळी मुंजराजाना मनमा आव्यु के, आ भोजकुमार छता मारा पुत्रने राज्य मळशे नही, तेथी भोजकुमारने मारी नाखवा माटे चडालोने सोंपी दउ आवु विचारी तेने चडाळने सोंप्यो चडाळो ज्यारे तेने वधस्थाने लई गया, त्यारे तेओए कह्यु के, तु इष्टनु स्मरण कर वाळक भोजे वुद्धिथी विचारी पोताना काका योग्य एक पत्र उपर आ प्रमाणे काव्य लखी आप्यु —

मांधाता च महिपति कृतयुगालंकार भुतो गत
सेतुर्येन महोदधौ विरचितः क्वासौ दशास्यां तकृत।
अन्ये चापि युधिष्ठिरप्रभृतायो याता दीव भूपते
नैकै नापि सम गता वसुमति नून त्वया यास्यति ॥ १ ॥

" कृतयुगना अलंकाररूप मांधाता पण चाल्यो गयो, जेणे समुद्र उपर पाज वाधी हती एवा रावणना मारनार रामचद्र पण चाल्या गया, ते शिवाय बीजा युधिष्ठिर विगेरे राजाओ पण गया, परतु ते कोइनी साथे आ पृथ्वी गइ नथी पण मने लागे छे के, तमारी साथे तो जरुर पृथ्वी आवशे " चडाळोने दया आववाथी भोजने बचाव्यो अने पेलु पत्र लइ जइ तेमणे राजाने आप्यु ते वाची मुंज राजा तत्काळ क्रोध रहित थइ गयो अने सत्वर भोजकुमारने बोलावी युवराजपद आप्यु.

एकदा मुंजराजा भोजकुमारने राज्य सोंपी तैलग देशना राजानी साथे युद्ध करवा गयो तैलग भूपे तेने जिती लइ कारागृहमा नाख्यो. त्या मृणालवती नामनी ते राजानी वेन हती तेनी साथे वार्त्ता विनोद करता मुंजने सबंध जोडायो भोजकुमारे मुंजराजाने छोडाववा माटे कारागृह सुधी एक सुरंगा खोदावी अने ते

द्वारा मुजने आववानो संकेत आप्यो एक वखत मुजराजा दर्पणमा पोतानु स्वरुप जोतो हतो, तेवामा मृणालवती पछवाडेथी गुप्तरीते आवी पोतानु मुख पण तेमा जोवा लागी ते वखते पोताना मुख उपर जरावस्थानो आभास थतो जोइ ते खेद करवा लागी तेने मुजे कह्यु के, "हे मृणालवती, योवन चाल्यु गयु तेनो तु खेद कर नहीं, कारणके साकरने खाडीए तो पण तेनी मीठाश जती नथी" आ प्रमाणे तेने शात करी मुज पोताना स्थान प्रत्ये जवाने तैयार थया परतु मृणालवतीमा लुब्ध होवाथी तेने कह्यु के, प्रिया ! अहिंथी एक सुरगा करावी छे, तेवडे हु मारे स्थानमा जाऊ छु, माटे जो तम साथे आवो तो हु तमने त्या लइ जइने पटराणी करीश मृणालवती बोली के, नाथ ! थोडीवार राह जुओ, हु विचार करी लऊ पछी तेणे विचार कर्यो के, जो आ त्या जशे तो जरुर मने छोडी देशे, माटे ते अहिंज रहे तेवी गोठवण करु आवु विचारी तेणे आ खबर गुप्त रीते पोताना भाइने आपी दीधा ते खबर जाणी राजाए तेनी उपर विशेष जापतो कर्यो, अने तेने प्रत्येक घरे भिक्षा मागवा मोकल्यो—घेरघेर भिक्षा माटे भटकता कटाली गयेलो मुज आ प्रमाणे बोलतो हतो—

"इथ्यो पसग मत को करो, तिय विसास दु ख पुंज,
घर घर तिम नचावीओ, जीम मकड तिम मुज ॥ १ ॥

" स्त्रीनो प्रसग कोइपण प्राणी करशो नहि तेमा पण स्त्री जातिनो विश्वास तो दु खना ढगलारुपज छे जुओ तेना विश्वास करवाथी मर्कटनी जेम आ मुंजने ते घेरघेर नचावे छे " वणी मोटा यतिओना वेष छोडी जेओ था दासी जेवी स्त्रीओ उपर राचे छे, ते पुरुष आ मुजराजानी पेठे घणा पराभवने सहन करेछे वळी जे बुद्धि पछवाडे उपजी, ते जो पेहेली उपजी होत तो आ मुजराजानी मृणालवतीए जे दशा करी ते थात नहीं "

एक वखते मुजराजे कोइने घेर जइ स्त्रीनी पासे भिक्षा मागी, ते स्त्रीए गर्वथी मुजनो तिरस्कार कर्यो, त्यारे मुजराजे कह्यु के, "हे धनवती स्त्री, आतारा घरमा गायाना समुहने जोइने तु आटलो बधो गर्व कर नहीं, केमके आ मुजराजाना चौदसो ने छेतेर हाथीओ चाल्या गया छे " एकदा अक्षयतृतियाने दिवसे मुज राज कोइने घेर भिक्षा मागवा गयो त्या कोइ गृहस्थनी स्त्रीए घीना बिंदुए टपकतो माडो हाथमा लइ मोढावडे वटकु भर्यु ने जोइ मुज बोल्यो के—

रेरे मंडक मा रोदी यदह खडितो न या ।
राम रावण मुजाद्या स्त्रीभि केके न खडिता ॥

" अरे माडा ! मने आ स्त्रीए खडित कर्यो एम धारी तु रो नही, कारणके राम रावण अने मुज विगेरे कया कया पुरुषोने स्त्रीओए खडित नथी कर्या ? " आगळ जता कोइ घरमा कोइ स्त्री रेंटीयो फेरवती हती तेनो अवाज साभळी मुज बोल्यो के-" अरे रेंटीआ, आ स्त्री तने भमावे छे तेम जाणी तुं रो नहीं, कारण के स्त्री कोने नथी भमावती ? एक खोटा कटाक्षना आक्षेप मात्रमा भमावी दे छे तो जेने हस्तवडे आकर्षण करे तनी तो वातज शी करवी ! " वळी ते चद्रलेखानी जेवी कुटील छे, सध्यानी जेवी क्षण राग[1] धरनारी छे अने नदीनी जेम नीचा स्थळमा जनारी छे तेवी स्त्री सर्वथा छोडी देवा योग्य छे "

आ प्रमाणे मुजराजाने घणा वखत सुधी भिक्षा मगावी छेवटे तेने यमरा जनो अतिथि कर्यो

उपर प्रमाणे लौकिक शास्त्रमा पण स्त्रीनो सग त्याज्य[2] कहेलो छे तो जैन शास्त्रमा तो विशेष प्रकारे कहेल छे एम समजवु स्त्रीना सगनो जे भावथी त्याग करे तेनेज खरा ब्रह्मचारी जाणवा, पण बाधेला घोडानी जेम निरुपाये ब्रह्मचर्य पाळे तेने ब्रह्मचारी न जाणवा केमके बाधेला घोडा द्रव्यथी विषय सेवन नथी करता पण मनमा वारंवार घोडीनुं स्मरण कर्या करता होवाथी ते बहु कर्म बाधे छे अश्व ब्रह्मचर्य उपर एक दृष्टात कहेवाय छे ते आ प्रमाणे—

कोइएक राजानी पासे कोइ पुरुषे आवी एक उत्तम अश्व भेट कर्यो राजाए तेने अश्वशाळामा बधाव्यो एकदा ते अश्वशाळानी पासे एकात प्रदेशमा कोइ मुनि चातुर्मास रह्या ते हमेशा धर्मोपदेश करता हता, तेमा अन्यदा तेमणे कह्यु के, "शील व्रतना द्रव्य अने भावथी चार भेद थाय छे तेमा प्रथम भेद द्रव्यथी शील पाळे पण भावथी नहीं वस्तुनी अप्राप्तिथी भवदवनी पेठे तेमज नैषधपति नळ राजा ए दीक्षा लीधी त्यार पछी पूर्वे लाखो वर्ष सुधी सुख भोग भोगव्या छता दमयति साध्वीने जोइ पाछो राग उत्पन्न थयो दमयतीए पोताना व्रतनु खडन थशे एवा भयथी अनशन कर्यु मृत्यु पामीने देवता थइ पछी नळ राजाने प्रतिबोध करवा आवी नळराजा पण मृत्यु पामी वैश्रमण (कुबेर) भडारी थयो कह्यु छे के, "विधिथी धर्म आदर्यो होय पण जो तेमा सरागपणु रहे तो ते धर्म मुक्तिने साधे नहीं नळराजा स्थवीर (वृद्ध) थया छता पण सरागपणु रहेवाथी ते उत्तराधिपति कुबेर नामे लोकपाळ थयो " आ प्रथम भेद जाणवो वळी कोइ जीव द्रव्यथी स्त्री सग (स्पर्शमात्र) करे पण भावथी शिळव्रतपाळे छे एक शय्यामा सुनारा विजय शेठ अने विजय राणीनी जेमतेमज

---

१ रागनो पक्षे रग एवो अर्थ समजवो २ तजवा योग्य

पाणी ग्रहण समये जंबू स्वामीनी जेम ए बीजो भेद जाणवो. कोइ जीव द्रव्य अने भाव बनेथी शील पाळे राजीमती अने मल्लीनाथजीनी जेम ए त्रीजो भेद जाणवो अने केटलाक जीवो द्रव्यथी पण शील पाळे नहीं अने भावथी पण पाळे नहीं आ जगमा अमारा जेवा घणा जीवो जाणवा ए चोथो भेद समजवो" ए प्रकारे धर्मदेशनाने सांभळता एवा अश्वे मनवडे ब्रह्मचर्य ग्रहण कर्युं

एक वखते राजाए तेनी ओलाद वधारवाने माटे ते अश्वने घोडी साथे संगम कराववा माड्यो पण ते अश्वे ते कार्यमा उत्साह कर्यो नहीं तेथी राजाए विस्मय पामी गुरु पासे जइने पुछ्युके भगवन, आ अश्व घोडीने केम सेवतो नथी ? मुनि बोल्याके, तेणे मनथी ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण कर्युं छे राजा बोल्यो-महाराज ! आ अश्वे तो प्रथम घणीवार काम सेव्यो छे, फक्त आ वखतेज आम करे छे, पण मारा बीजा घणा अश्वो छे के जेमणे जन्मथी ब्रह्मचर्य पाळ्यु छे, तथी आ अश्व करता तो तेओ उत्तम अने प्रशंसनीय जणाय छे गुरु बोल्या के, हे राजा, एम न समजवु कारणके ते तारा बांधेला घोडा ब्रह्मचारी कहेवाय नहीं केमके तेओ प्रतिदिन विषयने याद कर्या करे छे तेथी तेओमा शीलनो एक अंश पण गणाय नहीं वळी आ अश्व तो ब्रह्मचर्यथी स्वर्गने पामशे ते सांभळी राजा प्रतिबोध पाम्यो अने तत्काळ श्रावक धर्म अंगीकार कर्यो

आ कथानो उपनय मनमा धारीने जे प्राणी ब्रह्म व्रतने ग्रहण करे तेने खरे खरो गुणी समजवो

हवे आ व्रत संबंधी वर्णननो उपसंहार करे छे के, " त्रण लोकमा पण ब्रह्म चारी जेवो कोइ गुणी नथी, माटे हे भवी प्राणीओ ! तमे ए ब्रह्म व्रतनु आ चरण करो " आ चोथु व्रत सूत्र वचनने अनुसारे यथा मतथोडी में विवरी बताव्यु छे, ते लखवाथी मने जे पुण्य उपार्जन थयु होय तेवडे मने सर्वदा सुखनी प्राप्ति थाओ

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादस्य
वृत्तौशीलविषये पंचोत्तरशततमः प्रबंधः ॥ १०९ ॥

इति सप्तम स्तंभः

श्री उपदेश प्रासादे.

अष्टम स्तंभ प्रारंभ.

व्याख्यान १०६ मु.

हवे परिग्रह परिमाण नामे पांचमु व्रत कहे छे.

परिग्रहाधिक प्राणी, प्रायेणारंभकारक ।
स च दु खखनिर्नूनं, तत कल्प्या तदल्पता ॥ १ ॥

व्याख्या

"प्राणी प्राये अधिक परिग्रहने माटे आरभ करे छे, अने ते प्राणीने निश्चे करीने दु खनी खाण रूप थाय छे तेथी परिग्रहनी अल्पता करवी जोइए " समस्त प्रकार धनादिनु जे ग्रहण करवु ते परिग्रह कहेवाय छे तेवा परिग्रहवडे जे अधिक होय ते **परिग्रहाधिक प्राणी** कहेवाय छे तेवा प्राणी प्राये अधिक आरभ करे छे कोइ प्राणी **संप्रतिराजा**नी जेम तेवा परिग्रह (धन) ने शुभ क्षेत्रमा पण वावे छे तेथी मुळ श्लोकमा प्रायेण–प्राये करीने ए पदनु ग्रहण करेलु छे ते परिग्रह निश्चये दु.खनी खाण रूप छे माटे तेनी अल्पता (ओछापणु) करवी एटले आटलुंज धन राखवु एवो नियम करवो अहिं एवी भावना छे के, परिग्रह बे प्रकारनो छे बाह्य अने आभ्यतर धनधान्यादि ते बाह्य परिग्रह अने रागद्वेषादि ते आभ्यतर परिग्रह, अथवा सचित्त अने अचित्त एवा पण परिग्रहना बे प्रकार छे. **सचित्त** पशु दासी (द्वीपद, चतुष्पद) विगेरे अने **अचित्त** वस्त्र आभूषण विगेरे. तेमा गृहस्थे (श्रावके) सचित्तादि परिग्रहना अपरिमाणपणाथी विराम पामवु एटले के ते संबंधी इच्छानु परिमाण करवु ए पाचमु अणुव्रत कहेवाय छे

हवे तेनु फळ बतावी परिग्रहनो नियम करवानी आवश्यकता बतावे छे

परिग्रहमहत्वाद्धि, मज्जत्येव भवाम्बुधौ।
महा पोत इव प्राणी, त्यजेत्तस्मात्परिग्रहम् ॥ २ ॥

व्याख्या.

"जेम घणा भारथी वहाण समुद्रमा डुबी जाय छे, तेम प्राणी परिग्रहना घणा बोजाथी आ ससार सागरमा डुबी जाय छे तेथी ते परिग्रहने तजी देवो" अर्थात् परिमाणवगरना परिग्रहने धारण करनार प्राणी तेवा वहाणनी जेम आ ससारमा एटले के नरकादिक दुर्गतिमा डुबी जाय छे तेथी गृहस्थे धनादिक परिग्रह विषे इच्छा परिमाण करवु ते विषे विद्यापतिनो सबध छे ते आ प्रमाणे—

विद्यापतिनी कथा

पोतनपुर नगरमा सूर नामे राजा हतो ते नगरमा विद्यापतिनामे धनाढ्य अने जैन श्रेष्ठी रहेतो हतो ते श्रेष्ठीने शृगारमजरी नामे स्त्री हती एकदा विद्यापतिने स्वप्नमा लक्ष्मीदेवीए आवीने कह्यु के, "हु तारा घरमाथी आजथी दशमे दिवसे चाली जइश" विद्यापति तरतज जागी गयो अने 'हु निर्धन थइ जइश' एवी चिंता करवा लाग्यो "आ लोकमा जे प्राणी प्रकृतिथी (मूळथी) निर्धन होय तेने तेवी पीडा थती नथी के जेवी पीडा द्रव्य मेळव्या पछी निर्धन थयेलाने थाय छे" शृगारमजरीए पतिने उद्वेगनु कारण पुछयु, त्यारे तेणे स्वप्ननु स्वरूप कही बताव्यु अने जणाव्यु के, "आलोकमा जेनी पासे धन होय तेने शत्रु पण स्वजन थाय छे अने दरिद्रीने स्वजन होय ते पण शत्रु थाय छे जे अपूज्य छता पूजाय छे, जे अमान्य छता मान पामे छे अने जे अवंद्य छता वदाय छे, ते धननो प्रभाव छे" शृगारमजरी बोली—"स्वामी तमे शामाटे खेद करो छो लक्ष्मी धर्मथीज स्थिर थाय छे ज्यासुधी पाचमु परिग्रह परिमाणव्रत न लीधु होय त्यासुधी त्रण भुवननी लक्ष्मीना परिग्रहथी जे पाप थाय ते अविरतिवडे लाग्या करे छे" आवा प्रियाना वचनथी विद्यापतिए पाचमु व्रत अगीकार कर्यु अने सात क्षेत्रमा लक्ष्मी वापरवा माडी आठ दिवसमा सर्व लक्ष्मी वापरी नाखी आठमा दिवसनी रात्रीए तेणे विचार्यु के, हवे लक्ष्मीविना प्रात काळे याचकोने मुख शीरीते बतावीश काले, ...देशमा चाल्या जवु तेज उत्तम छे आवी चिंता करतो ते सुइ गयो निद्रामा

क्ष्मीथी परिपूर्ण तेना जोवामा आव्यु. जाग्रत थयो एटले प्रत्यक्ष लक्ष्मीने
थ काढी चतुर्विध संघने शत्रुंजयनी यात्रा कराववामा धन व्यय करवानो
हवे ज्यारे नवमो दिवस पुरो थयो त्यारे तेणे विचार्युं के, आवती
दिवस छे तेथी कदि लक्ष्मी जवानी होय तो भले सुखेथी जाओ,
ते सुइ गयो. लक्ष्मीए स्वप्नमा आवीने कह्यु के, हु तारा पुण्यथी
ने तारा घरमा स्थिर थइ छु, कारणके,—

त्रिभिर्वर्षैस्त्रिभिर्मासैस्त्रिभिः पक्षैस्त्रिभिर्दिनैः ।
अत्युग्र पुण्य पापाना मिहैव फलमश्नुते ॥

" अति उग्र करेला पुण्य अने पापनु फळ त्रण वर्षे, त्रण मासे, त्रण पखवाडीए अथवा त्रण दिवसे अहिंज प्राप्त थाय छे " एम शास्त्रमा कहेलु छे वळी ते विषे श्रीहर्ष कवि लखे छे के, "संपत्ति अने विपत्ति पूर्व पुण्यना वैभवना वधथी अने नाशथी प्राप्त थाय छे अर्थात् पुण्य वैभवना वधथी संपत्ति प्राप्त थाय छे अने पुण्य वैभवना नाशथी विपत्ति प्राप्त थाय छे, तेथी ए संपत्तिने सुपात्रना कर कमलमा अर्पण करवी. कारणके ते विधिए बतावेलु तेनु शांतिक पुष्टिक कर्म छे अर्थात् संपत्तिने जो सुपात्रमा अपाय तो ते विपत्तिने अटकाववामा शांतिक पुष्टिक कर्मरुप थाय छे " माटे हे श्रेष्टी ! हु हवे तारा घरमांथी नीकळी शकु तेम नथी. तेथी यथेच्छ रीते मने भोगव जे विद्यापतिए जाग्रत थइ पोतानी प्रियाने कह्युं, प्रिये ! लक्ष्मी आपणा घरमा स्थिर थइ छे, परंतु जो तेथी आपणा पांचमा व्रतनो भंग थाय तेम होय तो आपणे तेने छोडीने अहिंथी चाल्या जइए स्त्रीए तेम करवावी संमति आपी एटले ते दंपति प्रातःकाळे घर छोडीने चाली नीकळ्या

नगरनी बहार नीकळताज पंचदिव्यथी राज्य मळ्यु मंत्री विगेरे प्रार्थना करीने विद्यापतिने राज भुवनमा लइ गया तेणे व्रत भंगना भयथी राज्याभिषेक करवानी नापाडी तेवामा आकाशवाणी थइ के, " अरे श्रेष्टी ! अद्यापि तारे भाग्य कर्म छे, तेथी लक्ष्मीनु फल ग्रहण कर " आ प्रमाणे साभळ्यु एटले तेणे राज्य सिंहासन उपर श्रीवीतरागनी प्रतिमा बेसारी, मंत्रीओने राज्य कार्य सोंपी दीधु अने न्यायपूर्वक जे द्रव्य आवे ते बधु जिन नामथी अंकित करवा माड्यु पोते ग्रहण करेलो नियम छोड्यो नहीं

अनुक्रमे पोताना पुत्रने राज्य उपर बेसारी पोते दीक्षा लइने देवलोके गयो त्याथी च्यवी पाच भव करीने विद्यापति श्रेष्टी मोक्षपदने प्राप्त थयो.

" आ प्रमाणे विद्यापतिनुं दृष्टांत सांभळी धर्मनी स्पृहावाळा भव्य प्राणीओए परिग्रह परिमाण रुप पांचमु व्रत ग्रहण करवामा तत्पर थवु "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्यवृत्तौ पंचम परिग्रह परिमाणव्रतविषये षष्टोत्तरशततम प्रबंधः ॥ १०६ ॥

व्याख्यान १०७ मु.

हवे वर्जवा योग्य पाचमा व्रतना पाच अतीचार कहे छे

धनधान्यस्य कुप्यस्य गवादे क्षेत्रवास्तुन. ।
तारस्य हेम्नश्च संख्यातिक्रमोऽत्र परिग्रहे ॥ १ ॥

व्याख्या

" १ धन धान्य २ सामान्य धातुना पात्रादिक, ३ गाय विगेरे पशुओ तथा दासदासीओ, ४ क्षेत्र तथा वास्तु, ५ रुपु अने सुवर्ण-तेनी परिमाण करेली संख्यानो जे अतिक्रम-ते पाच अतिचार छे "

धन चार प्रकारनु छे १ गणिम, गणी शकाय तेवु जायफळ, सोपारी विगेरे २ परिम, तोलनी धारण करीने वेची शकाय तेवु केशर गोळ विगेरे. ३ मेय, मापीने वेची शकाय तेवु घी, तेल, लूण, विगेरे अने ४ परिच्छेद्य, छेदीने अथवा परीक्षा करीने वेची शकाय तेवुं रत्न वस्त्र विगेरे धान्य एटले डांगरविगेरे चोवीश प्रकारनुं धान्य ते चार प्रकारना धन अने चोवीश प्रकारना धान्यना करेला प्रमाणनो जे अतिक्रम ते प्रथम अतीचार एटले तेनो मूडा माप विगेरेथी परिमाण बांधीने नियम करेलो होय तेना मोटा मूडा विगेरे बांधवा ते इति प्रथम अतीचार.

कुप्य-एटले सोनारुपा शिवायनी त्रांबुं, कांसु, पीतळ विगेरे धातु, तेना पात्रो, माटीना वासना अने काष्टना पात्र तथा हळ विगेरे पदार्थो, शय्या, माचा अने गालमसूरीआ विगेरे घरनो उपस्कर (घरवकरी) तेनु परिमाण संख्यादिवडे थाय छे जेमके आटला थाळी, पात्रो अथवा कचोळा विगेरे राखवा एवी नियमित संख्या राखी होय तेनो अतिक्रम करवो, संख्या बराबर राखवामाटे पात्र भागीने भाग करावया विगेरे ते बीजो कुप्यातिक्रम अतिचार कहेवाय छे इति द्वितीय परिग्रहातिचार

गाय विगेरे पशुओ, बळदा, भेंसो, आदि शब्दथी, बे पगा दास दासी विगेरे तथा चार पगा प्राणीओ पाडा विगेरे अने हस, पोपट विगेरे पक्षीओनो समुह जाणवो तेनी करेली संख्यानो अतिक्रम ते गवादिअतिक्रम जेमके अमुक संख्या प्रमाणे गाय, महिषी, घोडी, दास दासी विगेरे राखला होय तेमना गर्भथी थयेला बच्चा होय ते परिमाणथी अधिक संख्याए थता होय उना न गणवा ते अतिचार इति तृतीय गवादि परिग्रहातिचार

हवे क्षेत्र एटले धान्यनी उत्पत्तिनी भूमि ते सेतु, केतु, अने उभय एवा भेदथी त्रण प्रकारनु छे तेमा जेमा रेटविगेरेथी पाणी पवाय ते सेतु क्षेत्र, जे वरसादना पाणीथी नीपजावाय ते केतु क्षेत्र अने ते बने प्रकारे जेमा जळपवाय ते उभय क्षेत्र वास्तु एटले घर विगेरे, तथा गाम नगर विगेरे, तेमा गृहादि त्रण प्रकारना छे. खात, उच्छ्रित अने खातोच्छ्रित-तेमा जे भूमि गृहादि (भुयरा विगेरे) ते खात, मेहेल माळ विगेरे ते उच्छ्रित, अने भूमिगृह तथा तेनी उपर रहेला घर ते खातोच्छ्रित ते क्षेत्र तथा वास्तुनी करेला परिमाणथी अधिक अभिलापावडे नाना मोटा करी सख्या सरखी राखवी-वचेथी वाड के भिंत काढी नाखवी ते क्षेत्रवास्तु प्रमाणातिक्रम इति चतुर्थ क्षेत्रवास्तु प्रमाणातिक्रम अतिचार

हिरण्य ते सोनु अने रजत ते रुपु तेनु परिमाण कर्यु होय तेथी अधिक थये छते स्त्री पुत्रोने आपी देवु—तेना निमित्तनु ठरावषु, ते सुवर्ण रुप्यातिक्रमनामे परिग्रहनो पाचमो अतिचार थाय छे इति परिग्रहनो पाचमो अतिचार.

आ पाचमा अणुव्रतमा ए पाच अतीचारनो त्याग करवो, कारणके अतिचार लगाडवाथी व्रतनी मलिनता थइ जाय छे अहि एवी भावना छे के, विवेकी मनुष्ये मुख्य वृत्तिएतो धनधान्यादि परिग्रह जे प्रथम पोतापासे होय तेनो पण सक्षेप करी नाखवो परतु जो तेम करवानी शक्ति न होय तो इच्छा परिमाण तो अवश्य करवु कारणके तेनु पोतानी इच्छा प्रमाणे परिमाण करवु ते तो सर्वने सेहेलु छे अहि कोइ शका करे छे के, घरमा तो सो रुपीया पण न होय अने इच्छा परिमाणमा हजार, लाख विगेरेनी परिमाणनी मोकळाश राखे तो तेथी शो गुण थाय ? तेना समाधानमा कहे छे के, जे परिमाण बाध्यु तेथी अधिक द्रव्यनी इच्छा न करवी, तेज मोटो गुण छे कारण के जेम जेम अधिक द्रव्य मेळववानी इच्छा, तेम तेम अधिक दु:ख छे घरमा सुखे निर्वाह चालता छता जे माणस अधिक अधिक धन उपार्जन करवा प्रवर्त्ते छे ते निरतर अनेक कलेशने अनुभवे छे ते विषे सिंदूर प्रकरणमा कह्यु छे के—" आ प्राणी जे मोटी अटवीमा भटके छे, विकट देशमा भमे छे, गहन समुद्रमा पेसे छे, अतुल कलेशवाळी खेती खेडे छे, कृपण स्वामीनी सेवा करे छे, अने धनथी अध थयेली बुद्धिवाळो गजेंद्रोनी घटाथी दुश्चर एवी रणभूमिमा मरणने पण स्वीकारे छे ते सधु लोभनुज चेष्टित छे " तेथी जो परिग्रह अल्प होय तो अल्पदु.ख अने अल्पचिता रहे छे, ते विषे धर्मशास्त्रमा लखे छे के—

जहजह अप्पो लोहो, जहजह अप्पो परिग्गहारंभो ।
तहतह सुहं पवढ्ढइ, धम्मस्सय होइ ससिद्धि ॥

"जेम जेम अल्प लोभ अने जेम जेम अल्प परिग्रहारंभ, तेम तेम सुख वृद्धि पामे छे अने धर्मकार्यनी सिद्धि थाय छे" तेथी कोइपण प्रकारे इच्छानो नसार अटकावीने आ मतने स्वीकारवु आ व्रत विषे पेथड श्रावकनो प्रबंध छे—

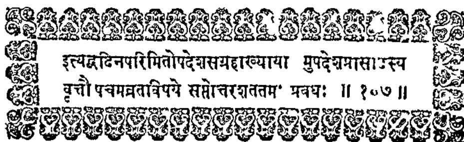
पेथड श्रावकनी कथा.

काकरेजनी नजिकना एक गाममा पेथड नामे एक उर्ध्वकेश (ओसवाळ) ज्ञातिनो भलो वणिक रहेतो हतो तेने पद्मिनी नामे पत्नी हती. तेमने झडाण नाम एक पुत्र थयो ते बालक दरिद्र अवस्थाने लीधे दु:खी थतो हतो. एवामा श्री धर्मघोष नामे आचार्य त्या पधार्या तेमनी पासे पाचमु परिग्रह परिमाण व्रत अंगिकार करता पेथडे एक हजार द्रव्य उपरात वधारे द्रव्य मारे राखवु नहीं एम कह्यु, एटले गुरुए कह्यु के—"ज्ञान अने चेष्टावडे तमारु भाग्य बहु मोटु छे एम जणाय छे माटे हे श्रावक ! एटलाज द्रव्यथी तमारे शु थशे ?" पेथड बोल्यो—"भगवन् ! हमणा तो मारी पासे काइपण द्रव्य नथी पण कदि आपना कहेवा प्रमाणे आगळ मळे तो मारे पाच लाख उपरात द्रव्य धर्म मार्गे खर्ची नाखवु" तेनी दृढता जोइ गुरुए तेने ते प्रमाणे पच्चखाण कराव्यु त्यारपछी दरिद्रावस्थानु दु:ख वृद्धि पामता पुत्रने सुडलामा मुकी माथे उपाडीने ते माळवा तरफ चाल्यो अनुक्रमे ते देशना मुख्य गाममा पेसता आडो सर्पने उतरतो जोयो, एटले ते अटकीने उभो रह्यो तेवामा एक शुकनवेत्ता त्या आवी चड्यो तेणे पेथडने पुछ्यु के—केम उभो रह्यो ? तेणे सर्पने आडो उतरतो बताव्यो शुकनज्ञाताए सर्प तरफ दृष्टि करीने जोयु तो तेना मस्तक उपर काल्ढदेव (चकली) ने बेठेली जोइ, तेथी तत्काळ ते बोल्यो के, "जो तु अटक्याविगर चाल्यो गयो होत तो तने माळवानु राज्य मळत तथापि आ शुकनने मान आपी हजु अंदर प्रवेश कर आ शुकनवडे तु महा धनवान् थइश" शुकन शास्त्रमा कह्यु छे के, "जो गामथी नीकळता डाबो खर थाय, सर्प जमणो थाय, अने डाबी तरफ शीयाळ बोले तो स्त्री स्वामीने कहे छे के, स्वामीनाथ ! साथे काइ भातु लेशो नहीं, आ शुकनज भातु आपशे"

पोताने थयेला शुकननु फळ साभळी पेथड गाममा गयो त्या गोगा राणाना मत्रीने घेर सेवक थइने रह्यो एकदा राजाए घणा अश्वो वेचाती लीधा, तेनु धन आपवाने मंत्रीने कह्यु, एटले मत्रीए कह्यु के, मारीपासे धन नथी एटले राजाए कह्यु के, धन क्या गयु ? नामु बतावो मत्री दिग्मूढ थइ गयो तेथी काइ ज्वाब स्फुर्यो नहीं तत्काळ राजाए पहेरामा बेसार्यो आ खबर मत्रीनी स्त्रीने थता तेणीए ते वृत्तात पेथडनी आगळ जणाव्यो पेथड राजानी पासे आव्यो अने बोल्यो के,

स्वामी 'मंत्रीने जमवा मोकलो' राजाए कह्युं के, नामुं आप्यावगर मोकलीश नहीं पेथडे कह्यु के, स्वामी ! एक वर्षनो हिसाब हु आपीश. हुं पेथड नामे तेनो सेवक छु पछी राजाए तेने छुटो कर्यो मंत्री भोजन करी पाछो राजा पासे आव्यो त्या पेथडे युक्तिथी आखा वर्षनो हिसाब राजा पासे रजु कर्यो राजाए पेथडने चतुर जाणी पोतानो मंत्री बनाव्यो तेथी अल्प समयमा पेथडनी पासे पाच लाख द्रव्यनी संपत्ति एकठी थइ गइ त्यारपछी जे अधिक लाभ थयो तेवडे तेणे चोवीश तीर्थंकरोना चोराशी प्रासादो कराव्या पोताना गुरु त्या पधार्या त्यारे तेमने नगरमा प्रवेश करावता बोंतेर हजार द्रव्य वापर्यु बत्रीश वर्षनी वय थइ एटले शीलव्रत ग्रहण कर्युं शत्रुंजयथी गीरनार सुधीनी एक ध्वजा सोनेरी रुपेरी पट्टावाळी चडावी बावन धडी प्रमाण सुवर्ण देवद्रव्यमा आपीने इन्द्रमाळ पहेरी अने सिद्धगिरि उपर श्री ऋषभदेव प्रभुना चैत्यने एकविश धडी सुवर्णवडे मढीने जाणे सुवर्णनुं शिखर होय तेवु सुवर्णमय बनाव्यु आ प्रमाणे तेणे घणु द्रव्य धर्म कार्यमा वापर्यु

" आ पाचमु जे परिग्रह प्रमाण नामे व्रत छे ते धर्मने विषे सर्पाननु एक महत् स्थान छे, तेने संपादन करीने जेम पेथड श्रावके स्थाने स्थाने समृद्धि अने सुख संपादन कर्युं, तेम तमे पण ते व्रतने दृढताथी धारण करवावडे करो "


इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादस्य वृत्तौ पंचमव्रतविषये सप्तोत्तरशततमः प्रबंधः ॥ १०७ ॥

व्याख्यान १०८ मुं.

हवे परिग्रह परिमाण व्रत ग्रहण न करवाथी शुं दोष प्राप्त थाय ते कहे छे,

श्रुत्वा परिग्रहक्लेशं, मम्मणस्य गतिं तथा ।
धर्मान्वेषी सुखार्थी वा, कुर्यान्न च परिग्रहम् ॥

व्याख्या.

" परिग्रहथी थतो क्लेश अने तेथी थयेली मंमण नामना शेठनी गति सांभळीने धर्मने शोधनारा अथवा सुखार्थी पुरुषे (घणो) परिग्रह राखवो नहीं मम्मण शेठनो प्रबंध नीचे प्रमाणे छे—

व्याख्यान १०७ मुं–मम्मण शेठनो प्रबध

राजगृह नगरमा श्रेणिक नामे राजा हतो, तेने चिल्लणा नामे पत्नी हती, एक वखते अर्ध रात्रे चेल्लणा गोखमा बेठी हती, तेवामा नदीना पूरमा तणाइ आवता काष्टने बहार खेंची काढतो एक पुरुष विजलीना प्रकाशथी तेना जोवामा आव्यो ते जोइ तेणीए श्रेणिकराजाने कह्यु के, " हे स्वामी ! तमे पण मेघनी जेम भरेलानेज भरो छो तमारा नगरमा आवो गरीब स्थितिनो माणस छे, तेनी तो तमे चिंता पण नथी करता आ तो तमारी मोटी चतुराइ छे ! " आवा प्रियाना वचन साभळी श्रेणिके माणस मोकली ते गरीब माणसने बोलावीने पुछ्यु के अरे तु कोण छु अने शामाटे अत्यारे नदीमाथी काष्ट खेंचे छे ? ते बोल्यो के–हु ममण नामे वणिक छु मारे घेर बे बळद छे, तेमा बीजा बळदनु एक शींगडु आछु छे, ते पूरु करवा माटेज आ प्रयास छे आ प्रमाणे साभळी राजा आश्चर्य पाम्यो अने कौतुकथी देवी साथे ते वणिकने घेर गयो घरने त्रीजे माळे सुवर्णना बे मोटा वृषभ तेणे राजाने बताव्या तेना शींगडा रत्न जडित हता ते जोइ विस्मय पामेला राजाए देवीने कह्यु, प्रिया, आपणे घेर आवु एक पण रत्न नथी तो आने शु आपवु ? ममण बोल्यो–स्वामी, आ शींगडाने माटे मारा पुत्रो वाहाणवटीनो व्यापार करे छे मारे घेर जोइ चोळा अने तेल विना काइ खातु नथी जो हु बीजे व्यापार करु तो मारे दुकान विगेरे लेवी पडे अने तेमा खर्च थइ जाय तेथी आ वर्षा समयमा रात्रे नदीमाथी काष्ट काढी, तेने वेची द्रव्य उपार्जन करु छु– आ प्रमाणे तेनी बेहद कृपणता जोइ राजा मस्तक धूणावतो पोताने घेर गयो अने ममण शेठ छेवट सुधी अपूर्ण मनोरथवाळो रही मृत्यु पामीने नरके गयो

इति मम्मण प्रबध

" आ प्रमाणे केटलाएक महा पापी अपरिमित परिग्रहनी इच्छावडे नरके जाय छे तेथी परिग्रहनु परिमाण करवु, ते उत्तम छ " ते विषे शास्त्रमा कह्यु छे के, "सगर राजा पुत्रोथी तृप्त थयो नही, कुचिकर्ण गायोना धणथी सतोष पाम्यो नहीं, तिलकश्रेष्ठी धान्यथी तृप्त थयो नहीं अने नदराजा सोनाना ढगलाओथी पण तृप्त थयो नही "

सगर राजानो प्रबध आगळ कहेवाशे आरो बाकीना त्रण प्रबध टुकामा आ प्रमाणे—मगध देशमा कुचिकर्ण नामे श्रेष्टी हतो तेने लाखो गायो हती अनेक गोवाळो दिवसे निमे तेमने ऊछेरता हता ते हमेशा नव नवी गायाना दुध दहीं नो हतो एक वखते दुध विगर अतिशय खावाथी आकुळ व्याकुळ थइ गायो- नाज ध्यानथी मृत्यु पामीने तिर्यच योनिमा उत्पन्न थयो

अचलपुरमा **तिलक** नामे श्रेष्टी हतो तेणे एक समये दुकाळ पडवाथी पूर्वे करेला धान्यमा मोटो लाभ उपार्जन कर्यो त्यारपछी फरीने वळी कोइ निमित्तिकना वचनथी अगाउथी दुकाळ पडवानो जाणी तेणे गामोगाम धान्यना मोटा कोठार भराव्या अने घणा धान्यनो सग्रह कर्यो तेमा अनेक क्रोडोगमे जीवोनी हिंसा थती तेने पण तेणे गणी नहीं दैवयोगे ते वर्षमा पाछळथी घणो वर्षाद पड्यो जेथी दुकाळ पड्यो नहीं अने तेना कोठारोमा पाणी पेशी जवाथी धान्य फुली गयु एटले तेना सर्व कोठारो फुटी गया धान्य वधु तणावा लाग्यु ते देखी तेनु हृदय फाटी गयु अने मृत्यु पामी नरके गयो

पाटलीपुर नगरमा **उदायी** राजा राज्य करतो हतो तेना कोइ शत्रुए साधुने वेषे आवी तेने मारी नाख्यो तेने काइ सतान नहोतु, तेथी तेनु राज्य शून्य थइ गयु आ अवसरमा ते नगरने विषे एक नापित अने वेश्या थकी उत्पन्न थयेलो **नंद** नामे छोकरो हतो, तेने एवु स्वप्न आव्यु के, तेणे पोताना आतरडाथी पाटलीपुरने वींटी लीधु प्रात:काले तेणे पोताना उपाध्यायने ए स्वप्ननु फळ पुछ्यु, उपाध्याए कह्यु के, ' आ स्वप्नथी तने आ नगरनु राज्य मळशे ' तरतज उपाध्याये पोतानी पुत्री तेने परणावी नद कन्यानु पाणिग्रहण करी मोटा महोत्सवथी पोताने घेर जता राजमार्गे आव्यो, तेवामा राज्यना मत्रीओए मत्रवडे अधिवासित करेला हाथीए आवीने नदनी उपर कळश ढोळ्यो, एटले तत्काळ तेने राज्य उपर बेसारवामा आव्यो केटलाएक सामतो नदनी आज्ञाने मानवा न लाग्या, एटले नदे मेहेलनी भींत उपर चीतरेला सुभटोनी सामु जोयु तेथी तत्काळ तेओए भींतथी भूमिपर उतरीने तेमाथी केटलाकने मारी नाख्या पछी सर्व सामतो तेनी आज्ञा मानवा लाग्या नदे घणा आकराने अणघटता कर लइ घणु द्रव्य एकठु कर्यु, अने समुद्रने काठे तेणे ते द्रव्यवडे सोनानी नवडुगरीओ करावी त्यारथी तेनु **नवनद** एवु नाम पृथ्वीमा प्रख्यात थयु प्रजा उपर घणो जुलम करवाथी ते अपकीर्त्तिनु अने पापनु भाजन थइने नरके गयो

" द्रव्य अल्प होय पण जो ते विश्वोपकारी थायतो ते प्रशसा करवा योग्य छे, पण नदराजानी जेम उपकारवगरनु अपरिमित द्रव्यपण शा कामनु ? जुओ ! जगतमा जेवो हिमरुचि (चद्र) प्रीतिकारक छे तेवो हिमसमूह नथी अने जेवो अल्पजल आपनार पण मेघ प्रिय छे तेवो घणा जलवाळो समुद्र प्रिय नथी "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्याया मुपदेशप्रासादग्रथस्य वृत्तौ परिग्रहपरिमाणव्रतविषये अष्टोत्तरशततमः प्रबध.॥ १०८ ॥

व्याख्यान १०९ मु.

परिग्रहमां आसक्त एवो पुरुष अनेक प्रकारना पापो करे छे, ते विषे कहे छे

परिग्रहार्थमारंभमसंतोषाद्वितन्वते ।
संसारवृद्धिस्तेनैव गृहीततदिदं व्रतम् ॥ १ ॥

व्याख्या

"परिग्रहने अर्थे असंतोष होवाने लीधे आरंभ वधे छे अने तेथी संसारनी वृद्धि थाय छे माटे आ परिग्रह परिमाणव्रत अवश्य ग्रहण करवु " एटले के धनने माटे ज्यारे संतोष थतो नथी त्यारे तेथी थयेली तृष्णानी वृद्धिवडे खेती विगेरे अनेक प्रकारना आरंभो करे छे सगा बंधुनो पण वध करवा तत्पर थाय छे अने तेवा आरंभवडे संसारनी वृद्धि थाय छे, तेथी परिग्रहनो अवश्य नियम ग्रहण करवो आ विषे बे भाइओनो प्रबंध छे ते आ प्रमाणे—

सोम अने शिवदत्त नामे बे भाइओनो प्रबंध.

अवंती नगरीमां सोम अने शिवदत्त नामे बे भाइ रहेता हता, तेओ द्रव्य मेळववाने माटे सौराष्ट्र देशमां गया त्यां अनेक जातना अधर्म तथा कर्मादानना व्यापारो करीने तेमणे केटलुक द्रव्य उपार्जन कर्युं पछी ते द्रव्यनी वासळी कटीए बांधी बन्ने भाइ पोताना नगर तरफ चाल्या मार्गमां वारा फरती वासळी पोत पोतानी केडे बांधता ते ज्यारे मोटा भाइनी केडे हती त्यारे तेने विचार थयो के, जो हु आ अनुज बंधुने मारी नाखु तो पछी मारी पासे कोइ भाग मागे नहीं आवा कुविचारथी ते अनुजबंधुने हणवा माटे तत्पर थयो बंने गंधवती नदीने तीरे आव्या एटले तेने विचार थयो के, अहो, आ धन केवु अनर्थकारी छे के जेथी मने आवो कुविकल्प थयो तेथी आनो त्याग करवो तेज योग्य छे आवु धारीने तेणे द्रव्यनी वासळी नदीना धरामां नाखी दीधी अनुज बंधुए पुछ्यु के, भाइ ! आम केम कर्युं ? त्यारे तेणे पोतानो माठो अभिप्राय जणाव्यो एटले नाना भाइए पण कह्यु के, ते घणु सारुं कर्युं के जेथी मारी दुष्टबुद्धि पण नाश पामी पछी तेओ पोताने घेर आव्या

हवे पेली द्रव्यनी वासळी कोइ मत्स्य गळी गयो ते मत्स्यने कोइ माछीए जाळमां पकड्यो ते मत्स्य ते बन्नेनी माताए वेचातो लीधो माताए पोतानी पुत्रीने

आप्यो मत्स्यने विदारता तेणीए द्रव्यनी वासळी दीठी, एटले, तत्काळ तेणे खोळामा गोपवी दीधी माताए पुछ्यु, खोळामा शुं छे ? तेणीए कह्यु के, काइ नथी पछी माता शकाने लीधे जेवी ते जोवा तेनी पासे आवी तेवो पुत्रीए छरीनो घा कर्यो, तेथी तेनी माता घायल थइने मृत्यु पामी तेवामा तेना बने भाइओ घरे आव्या तेमणे बेनना खोळामाथी पडती पेली द्रव्यनी वासळी जोइ तेथी तत्काळ विचार्यु के, अहो, द्रव्य केवु अनर्थदायक छे ! पछी वैराग्य पामीने तेओ गुरु पासे गया त्या गुरुना मुखथी आ प्रमाणेनी वाणी साभळी—" आ जगतमा तृष्णारुपी खाण एवी ऊडी छे के ते कोइथी पूरीशकाती नथी, तेमा मोटा मोटा पदार्थो नाखीए तो तेथी ते उलटी वधारे खोदाय छे तृष्णावाळो जीव धन प्रगट करवाने माटे घणा पापो करे छे, पण तेथी शु तेने काइपण सुख थाय छे ? नथी थतु. केम के पाप द्रव्यथी शु सुख होय ? वळी धर्म ऋद्धि, भोग ऋद्धि अने पाप ऋद्धि-एम त्रण प्रकारनी ऋद्धि कहेवाय छे तेमा धर्म ऋद्धि तेके जे धर्म कार्यमां उपयोगी थाय छे भोग ऋद्धि ते के जे शरीरना भोगमा वपराय छे अने पाप ऋद्धि ते के जे धर्म कार्यमा वपराती नथी तेम शारिरीक भोगमां पण वपराती नथी पण मात्र अनर्थरुप फळनेज आपे छे तेवी ऋद्धि पूर्वकृत पापना योगे प्राप्त थाय छे अने पुनः पाप करावे छे, ते उपर एक नीचे प्रमाणे दृष्टात छे ते साभळो—

वसतपुरमा ब्राह्मण, क्षत्रीय. वणिक अने सोनी ए चार ज्ञातिना चार मित्रो हता, तेओ द्रव्य मेळववाने माटे देशातर चाल्या मार्गमा रात्रि पडता एक उद्यानमा वड वृक्षनी नीचे तेओ विश्रात थया त्या ते वृक्षनी शाखा साथे लटकतो एक सुवर्णनो पुरुष तेओना जोवामा आव्यो ते सुवर्ण पुरुष बोल्यो के, हु अर्थ छु पण अनर्थने आपनार छु ते साभळी तेओए भय पामीने तेनो त्याग कर्यो परतु सोनीथी तेनो लोभ मुकायो नहीं, एटले सोनीए ते पुरुषने ' पड ' एम कह्यु एटले ते पड्यो सोनीए बीजाओथी छानो तेने एक खाइमा गोपव्यो, पण सर्वनी दृष्टि तेनापर पडी पछी आगळ चालता बे जण कोइ गामनी बहार रह्या अने बे जणने गाममा भोजन लेवा मोकल्या जे बे बहार रह्या हता तेमणे चितव्यु के, आपणे गाममा गयेला बे आवे के तेमने मारीने पेलु सुवर्ण लेवु बे जणा जे गाममा गया हता तेमणे चितव्युं के, आपणे अन्नमा विष भेळवीने लइ जवु के जे खाइने बहार रहेला बे मृत्यु पामे तो आपणने बेने वधु सुवर्ण मळे. आवा विचारथी तेओ विषान्न लइने बहार आव्या जेवा तेओ पेला बेनी पासे आव्या के ते बनेए सकेत प्रमाणे तेमने खड्गथी मारी नाख्या पछी पेलु विषान्न तेओ जम्या के जेथी तेओ पण मृत्यु पामी गया आ प्रमाणे चारे मृत्यु पाम्या आवी ज ऋद्धि ते पापर्द्धि समजवी

उपरनु दृष्टांत सांभळी भवि प्राणीओए हमेशा पोतानी समृद्धि धर्म कार्यमा वापरवी–मारी पासे अल्प धन छे इत्यादि कारणने लइने धर्म कार्य करवामा विलंब करवो नही कह्यु छे के,

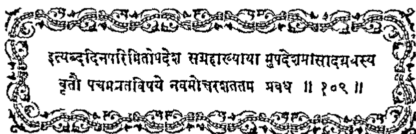
देय स्तोकादपिस्तोक, नव्यपेक्षो महोदय. ।
इच्छानुसारिणी शक्ति कदा कस्य भविष्यति ॥

" थोडामाथी थोडुं पण धर्म कार्यमा वापरवु, वधारे द्रव्य थवा उपर मूलतवी राखवु नही कारण के, इच्छा प्रमाणे द्रव्यनी शक्ति क्यारे थशे तेनो काइ निश्चय नथी " वळी कह्यु छे के,

स्वकार्यमद्यकुर्वीत, पूर्वान्हे वा परान्हिके ।
नहि मृत्यु प्रतिक्षेत, कृत वा सनया कृत ॥

" आवती कालनु काम आजे करवु, अने मध्यान्हे करवानु होय ते सवारे करवु, कारणके मृत्यु पवी राह जोतु नथी के, आणे कर्यु छेके नथी कर्यु ? " केटलाएक जीवो कृपणताथी द्रव्यनी हानिना भयवडे धर्म कार्यमा द्रव्यनो व्यय करता नथी तेमज परिग्रहनु परिमाण पण करता नथी तेथी तेओ चक्रीपणा विगेरेनी उची पद्वीने पामता नथी परतु अतिलोभथी पराभव पामीने अशोक चद्रनी जेम नरके जाय छे घणा पुरुषो धननी इच्छाथी पारावार दु खने पाम्या छे आ प्रमाणे गुरुना वाक्यथी ते बंने भाइओ प्रतिबोध पाम्या पछी त बने भाइओ पाचमुं व्रत अगीकार करी, निरतिचारपणे पाळीने स्वर्गे गया

" जे प्राणीओ परिग्रहमा आशक्त होय छे तेओ निर्दयपणाथी असत्य, चौर्य विगेरे अनेक पापो आचरे छे, अने तेथी करीने तेओ ससार समुद्रमा अधो गमन करे छे, माटे उत्तम पुरुषोए आ व्रतने अवश्य ग्रहण करवु के जेथी शिवपदने प्राप्त थवाय "


इत्यब्ददिनपरिमितोपदेश सग्रहाख्याया मुपदेशप्रासादग्रथस्य वृतौ पचमव्रतविषये नवमोत्तरशततम प्रबध ॥ १०९ ॥

इत्युक्त सातिचार पचमव्रतम् ।

व्याख्यान ११० मुं.

हवे छठुं दिग्विरति रुप व्रत कहे छे.

दशदिग्गमने यत्र, मर्यादा कापि तन्यते ॥
दिग्विरताख्यया ख्यातं, तद्गुणव्रतमादिमम् ॥ १ ॥

व्याख्या

"जेमा दशदिशाओमा जवाने काइक मर्यादा करायछे ते दिग्विरति नामे पहेलु गुणव्रत कहेवाय छे " एटले जे व्रतमा पूर्व, अग्नि, दक्षिण, नैऋति, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान, अधो अने उर्ध्व-ए दश दिशाओमा गमन करवाने काइपण मर्यादा कराय छे ते प्रथम गुणव्रत छे अने ते उत्तर गुणरूप व्रत कहेवाय छे गुणव्रतनो अर्थ एवो छे के, अणुव्रतनो गुण जे उपकार तेने अर्थे जे थाय ते गुणव्रत कहेवाय तेमा पहेलु गुणव्रत दिग्विरति नामे छे आ व्रत लेवाथी पापस्थानोनी पण विरति थाय छे ते कहे छे—गमनागमननी मर्यादावडे स्थावर जगम जीवोना मर्दननी निवृत्ति थती होवाथी तपावेला लोढाना गोळा जेवा गृहस्थे आ व्रत ग्रहण करवामा आदर करवो—एटले त्रस स्थावर प्राणीओनी गमनागमन करवाथी हिंसा थाय छे, ते हिंसानो गमनागमन बंध थयेल स्थानमा रोध थवाथी गृहस्थने आ व्रत आदरवा योग्य छे हिंसानो निषेध थता असत्यादिक बीजा पापोनो पण निषेध थइ जाय छे. अहिं कोइ शका करे के, त्यारे आ व्रत साधुए पण ग्रहण करवु जोइए, तो तेना खुलासा माटे गृहस्थने लोढाना तपावेला गोळानु विशेषण आपे छे के-गृहस्थ आरभ परिग्रहमा निरतर तत्पर होवाथी ते ज्या जाय, खाय, सुवे, अथवा काइ व्यापार करे, तेमा तपेला लोढाना गोळानी जेम अनेक जीवोनुं मर्दन करे छे, अने साधु तेम करता नथी कारण के ते तो पचसमितिने त्रिगुप्तिमान् होय छे, तेथी तेमने ए दोष लागतो नथी

आ व्रतनो स्वीकार करनारा गृहस्थने त्रस तथा स्थावर जीवोने अभयदान तथा लोभ समुद्रनी नियत्रणा इत्यादि महान् लाभ थाय छे गृहस्थ तपावेला लोढाना गोळा जेवोछे. ते विषे सर्वज्ञ भगवत सिद्धातमा पण कह्यु छेके-"अग्निना तणखाओथी प्रकाशमान लोढाना गोळा जेवो गृहस्थ निरतर होय छे अने अविरतिरूप पाप तेने पोताने तेमज समस्त जीवोने पण बाळे छे " वळी कह्यु छे के, " जीव सर्व स्थाने पोताना देहवडे जोके गमनागमन करतो नथी तो पण ते अविरति होवाथी तेने अविरतिपणाथी थवातु पाप निरतर लाग्या करे छे " वळी पूर्वभवमा तजी दीधेला

देहवडे जो कोइपण जीवोनो वध थाय छे तो तेनु पाप पण अविरतिवडे ज्या सुधी देह धर्या होय त्या ते जीवने लागे छे पण जो पूर्वनो देह विनाश पामी जाय अथवा व्रत ग्रहण होय तो तथी तेना पापनो बंध थतो नथी; माटे विरति करवामा कल्याण छे, एवु वृद्ध पुरुषोनु वाक्य छ

हवे पेहेला गुणव्रतनु फळ कहे छे—" जे प्राणी दिग्विरति व्रत लइने गमनागमनमा सकोच करे छे, ते प्राणी सिंहनी जेम ससारनु उल्लघन करवामाटे फाळ मारवानो आरभ करे छ " आ विषे सिंहश्रेष्टीनी कथा छे ते आ प्रमाणे—

वसतपुर नामना नगरमा **कीर्त्तिपाल** नामे राजा हतो तेने **भीम** नामे एक पुत्र हतो अने जेना हृदयमा जैन धर्मनी वासना हती एवो **सिंह** नामे एक श्रेष्टी मित्र हतो ते पोताना कुमारथी पण राजाने विशेष प्रिय हतो. एक वखत कोइ एक पुरुषे राज सभामा आवीने कह्यु के, हे देव ! नागपुरना राजा नागचंद्रने **रत्नमजरी** नामे एक रुपवती कन्या छे—तेना एक रोमरायना दर्शन करवाथी पण बे ब्रह्मनो अनुभव थाय छे अने तेनु दर्शन न थवाथी बे कामदेवथी पूर्ण थवाय छे ते कन्याने तुल्य कोइ बीजी कन्या नथी ए कन्या तमारा कुमारने योग्य छे एवु चिंतवी तेमणे मने विश्वासी जाणी तमारी पासे प्रार्थना करवा मोकल्यो छे माटे तेने वरवा सारु तमारा कुमारने मारी साथे मोकलो दूतना आवा वचन साभळी राजाए पोताना प्रिय मित्र सिंहने कह्यु, मित्र ! आपण बनेमा काइपण अतर नथी, माटे तमे कुमारने लइने नागपुर जाओ अने तेनो विवाह करी आवो सिंह श्रेष्टीए अनर्थ दडना भयथी राजाने काइ पण उत्तर आप्यो नहीं एटले राजा जरा क्रोध लावीने बोल्यो के—शु तमने आ सबध रुचतो नथी ! श्रेष्टी बोल्यो, " राजेंद्र ! मने रुचे छे पण मे सो योजन उपरात जवा आववानो नियम लीधो छे अने इहाथी नागपुर सवासो योजन दूर थाय छे तेथी व्रत भग थवाना भयथी हुं त्या जइश नहीं " आ प्रमाणे साभळताज घी होमवाथी अग्निनी जेम राजाना कोपाग्निनी ज्वाला विशेष प्रज्वलित थइ अने ते बोल्यो के—अरे ! शु तु मारी आज्ञा नहीं माने? तने उट उपर बेसारी सहस्र योजन सुधी मोकली दइश सिंह बोल्यो—स्वामी ! हु तमारी आज्ञा प्रमाणे करीश ते साभळी तरत राजा हर्ष पाम्यो पछी पोताना पुत्रने सैन्य साथे तैयार करी अने सिंह श्रेष्टीने सर्व क्रियामा आगेवान ठरावी कुमारसाथे रवाने कर्यो मार्गमा सिंहे प्रतिबोध आपीने भीमकुमारनी ससार वासना तोडी नाखी सो योजन चाल्या पछी सिंह श्रेष्टी आगळ चाल्यो नहीं एटले सेनिकोए एकाते कुमारने जणाव्यु के, कुमार ! अमने राजाए गुप्तपणे आज्ञा करी छे के, जो

सिंहश्रेष्ठी सो योजनथी आगळ न चाले तो तमारे तेने बांधीने नागपुर लइ जवो आ विचार कुमार पोताना धर्मगुरूने निवेदन कर्यो सिंहे राजकुमारने कह्यु, कुमार! आ असार संसारमा प्राणीने शरीरपण पोतानु थतु नथी तो बीजु कोइ शेनु थाय? माटे हु तो अहीं पादपोपगम अनशन करीश पछी तेओ मने बांधी लइ जइने शु करशे आ प्रमाणे कहीने सिंह श्रेष्ठी सिंहनी जेम अनशन लेवा चाल्यो कुमार पण तेनी साथे गयो एवामा रात्रि पडी सैनिकोए कुमारने अने सिंहने जोया नहीं एटले तेओ चारे तरफ तेमने शोधवा लाग्या एम करता थोडे दूर आवेला कोइ पर्वतउपर ते बने तेमना जोवामा आव्या परतु दीक्षा अने अनशन आदरी बेठेला तेमने जोइ सैनिको प्रमाण करीने बोल्या के—हे महाशयो! अमारो अपराध क्षमा करो पण हे स्वामी! आ खबर जाणी महाराजा अमने घाणीमा घालीने पीली नाखशे आ प्रमाणे तेमणे घणा कालावाला कर्या, तथापि तेओ जरा पण क्षोभ पाम्या नहीं कह्यु छे के, "सतोषरुपी अमृतवडे तृप्त थयेला योगी भोगनी इच्छा करता नथी. कारण के ते तो माटी अने सुवर्णमा अने शत्रु तथा मित्रमा एक बुद्धि राखे छे."

अनुक्रमे आ खबर कीर्तिपाळराजाना साभळवामा आवी तेथी तेने बहु क्रोध चड्यो तेणे निश्चय कर्यो के, कुमारने बांधीने परणाववो अने सिंहने शत्रुनी जेम मारी नाखवो आवा विचारथी राजा तेमनी पासे आव्यो त्या तो व्याघ्रादिक प्राणीने ते बनेना चरणनी सेवा करता जोइ राजा आश्चर्य पाम्यो अने विचार्यु के आ बनेने भक्ति वचनोथीज बोलाववा—आवु चिंतवीने तेणे चाटु वाक्योथी तेमने बोलाववा माड्या परतु दृढ प्रतिज्ञावाळा तेओ किंचित् पण चलित थया नहीं अनुक्रमे मासोपवासने अंते केवलज्ञान पामी सुरासुरोए नमेला ते बने मुक्तिने प्राप्त थया. तेमनु मुक्ति प्रयाण जाणी कीर्तिपाळ राजाए उंचे स्वरे कह्यु के—

न योजन शतादूर्द्ध यास्यामि तव निश्चयः ।
असख्यैर्योजनैर्मित्रमां मुक्त्वा किमगाच्छिव॥

"हे मित्र! तारो एवो निश्चय हतो के, मारे सो योजनथी वधारे जवु नहीं, पण आ वखते तु मने मुकीने असख्य योजन दूर रहेला शिवनगरमा केम चाल्यो गयो?" आ प्रमाणे विलाप करतो कीर्तिपाळ राजा पोतानी राजधानीमा आव्यो

प्राण त्याग करवा ते सारा पण स्वीकार करेला व्रतनो त्याग करवो ते सारु नहीं आवो दृढ विचार राखी भव्य प्राणीओए सिंह श्रेष्ठीनी जेम दिग्विरति व्रत ग्रहण करवु

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेश सग्रहाख्यायामुपदेश प्रासादग्रंथस्य वृत्तौ षष्ठे दिग्विरति व्रते दशोत्तरशततम. प्रबंध ॥११०॥

व्याख्यान १११ मुं.

हवे दिग्विरति व्रतना पाच अतिचार कहे छे.

स्मृत्यन्तर्धानमूर्ध्वाधस्तिर्यग्भाग व्यतिक्रमा ।
क्षेत्रवृद्धिश्च पचेति स्मृता दिग्विरतिव्रते ॥ १ ॥

व्याख्या

"करेला क्षेत्र प्रमाणनु भुली जवु, उचानीचा अने तिरछा निमेला क्षेत्रनु उल्लघन करवु, अने करेली क्षेत्र मर्यादामा वधारो करवो–ए पाच छट्ठा व्रतना अतिचार छे " भावार्थ एवो छे के, कोइए पूर्व दिशामा सो योजननु प्रमाण बाध्यु होय पण जती वखते व्याकुळता विगेरेथी तेने विस्मरण थाय के, में पचाशनु परिमाण कर्यु छे के सो नु ? एवा सदेहथी ते पचासथी वधारे गमन करे तोपण तेने दोष लागे ते प्रथम अतिचार कहेवाय जो के ए अतिचार सर्व अतिचारने साधारण छे पण पाचनी सख्या पूर्ण करवाने पृथक् ग्रहण करेलो छे तेथी ग्रहण करेला व्रतनु वारवार स्मरण करवु, कारण के सर्व आचरण स्मरण मूल छे, नियमित करेला क्षेत्रथी बीजे लाभ थतो होय तोपण ते त्यजी देवो इति प्रथम अतिचार

बीजा अतिचारमा ऊर्ध्वभागे एटले पर्वतना शिखर विगेरे पर जवाने करेलो नियम, त्रीजा अतिचारमा अधो भागे एटले अधो गाम, भूमिगृह तथा कुप विगेरेमा जवानो करेलो नियम अने चोथा अतिचारमा तिरछु पूर्वादि दिशाओमा जवामाटे करेलो नियम, जे नियम बे त्रण योजनथी माडीने अनुकुळता प्रमाणे करेलो होय तेनु उल्लघन करवु ए बीजो, त्रीजो अने चोथो अतिचार जाणवो इति द्वितीय, तृतीय अने चतुर्थ अतिचार

उपर कहेला ऊर्ध्व दिशा विगेरेना त्रण अतिचारोने माटे आवश्यक निर्युक्तिनी वृत्तिमा आवो विधि कहेलो छे के, ऊर्ध्व दिशाए गमन करवानु परिमाण करेलु होय अने वानर के कोइ पक्षी वस्त्राभरण लइने ते परिमाणथी वधारे दुर जाय तो नियमने लीधे त्या जवु कल्पे नही, पण जो ते वस्तु त्याथी पडे अने कोइ लावी आपे तो ग्रहण करवी कल्पे आवी हकीकत हाल पण समेतगिरि विगेरे उपर सभवे छे एवीरीते सर्व दिशाओ माटे जाणी लेवु योग शास्त्रमा तो एम कह्यु छे के— जे प्रमाणे व्रत लीधु होय ते प्रमाणे वर्तवु

हवे पाचमो अतिचार कहे छे–पूर्वादि दिशानु क्षेत्र नियमित कर्यु होय तेमा वधारो करवो एटले जुदी जुदी दिशाओमा सो सो योजन जवानो नियम लीधेलो

व्याख्यान ११२ मुं

लोभनो प्रसार पण छठा व्रतथी निवृत्त थाय छे ते कहे छे.

जगदाक्रममाणस्य प्रसरल्लोभवारिधे ।
स्खलनं विदधे तेन येन दिग्विरतिः कृता ॥ १ ॥

व्याख्या.

" जे प्राणी आ दिग्विरति रूप छट्ठु व्रत ग्रहण करे छे, ते आ जगत बधानुं आ क्रमण करनार लोभरुपी महा समुद्रनी स्खलना करे छे " भावार्थ एवो छे के, आ लोभरुपी समुद्र विविध कल्पना करवाथी प्रसरे छे, ते आखा जगतने दबावे छे, कारण के, जे लोभने वश थाय छे तने त्रण लोकनी संपत्ति अने इंद्र, चक्रवर्ती तेमज पाताळपति नागेंद्रनु स्थान मेळववाना मनोरथ थाय छे ए रीते ते सर्व जगतने दबावे छे एवा लोभरुपी समुद्रनी स्खलना ते करीशके के जेणे आ दिग्विरति व्रत ग्रहण कर्युं होय कारण के, ते प्रतिज्ञा करेली सीमाथी आगळ जवाने इच्छतो न होवाथी प्राये करीने करेली सीमानी बहार रहेला सुवर्ण, रुपुं, अने धन धान्य विगेरेनो ते लोभ करतो नथी, अने जेने तेवो नियम होतो नथी ते तृष्णावडे सर्वत्र भ्रमण कर्या करे छे आ विषे चारुदत्तनो प्रबंध छे ते आ प्रमाणे—

चारुदत्तनी कथा.

चंपा नगरीमां भानु नामे श्रेष्ठी रहेतो हतो, तेने चारुदत्त नामे पुत्र हतो. ते यौवनवयने प्राप्त थयो एटले पिताए योग्य कन्या साथे परणाव्यो पण कोइ कारणने लइने वैराग्य आववाथी ते विषयथी विरक्त थइ पोतानी स्त्री पासे पण जतो नहीं अन्यदा तेना पिताए चातुर्य शीखववाने माटे तेने एक गुणिकाने घेर मोकल्यो. चारुदत्त हळवे हळवे ते गुणिका उपर आसक्त थयो छेवटे तेणे वेश्याना प्रेमने वश थइ पोतानु घर पण छोडी दीधु अने बार वर्ष सुधी वेश्याने घेर रह्यो एक वखते तेना पिता भानु श्रेष्ठीनो अंतसमय आव्यो, एटले तेणे पुत्रने बोलावीने कह्यु के "हे वत्स ! तें जन्मथी माडीने मारु वचन मान्युं नथी पण हवे आ छेवटनु एक वचन मानजे ते ए के, ज्यारे तने संकट पडे त्यारे नवकार मंत्रने संभार जे " आ प्रमाणे कही तेनो पिता मृत्यु पाम्यो थोडा दिवस पछी तेनी माता पण मृत्यु पामी. [illegible] माता पितानी सर्व लक्ष्मी उडावी दीधी चारुदत्तनी स्त्री

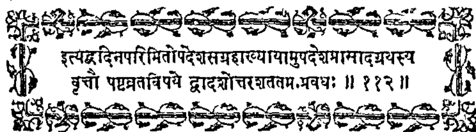
देवता पण सहाय करे छे माटे जो तारे स्वहित करवु होय तो देवताओ पण जेनी शक्तिनु उल्लघन करी शकता नथी एवा आ वज्रपंजररूप धर्मात्मा राजानी शरणे जा तत्काल यवनपति भय, उद्वेग, अने लज्जाने प्राप्त थयो पछी सूरि प्रणाम करी श्रीकुमारपाळराजाने नम्यो अने बोल्यो के–" हे राजन् ! मारा अ राधने क्षमा करो, आजथी हु यावज्जीव तमारी साथे संधि करीश अत्यारे मारा जीवनी रक्षा करीने ' जगज्जीव पालक ' एवा तमारा बिरुदने सत्य करो प्रथम तमारु पराक्रम मे साभळ्यु हतु पण ते भुली जइने हु अहिं आव्यो हवे कदिपण तमारी आज्ञानु उल्लघन करीश नहीं तमारु कल्याण थाओ, अने मने मारा आश्रममां पहोचाडो " राजर्षि कुमारपाळ बोल्यो के–" हे यवन ! जो तु तारा देशमां छ मास सुधी अमारी प्रवर्त्तावे तो हु छोडु तारे मारी एटली आज्ञानो अमल करवा तेज मारी इच्छा छे बळात्कारथी के छळथी जीव रक्षा कराववी एवो मारो निश्चय छे अने एम करवाथी मने अने तने बनेने पुण्य थशे " यवनराज आवु, ते बलिष्ठ राजानु वचन उल्लघन करवाने समर्थ थयो नहीं पछी कुमारपाळ तेने पोताना मेहेलमां लइ गयो अने त्रण दिवस सुधी राखी घणो सत्कार करी, जीवदयानी शिक्षा आपीने पोताना आप्तजननी साथे तेने स्थानके पहोचाड्यो कुमारपाळना सेवको गीझनीमां छ मास सुधी जीव रक्षा करावी, यवनपतिए आपेली अश्व विगेरेनी भेटो लइने कुमारपाळनी पासे पाटणमा आव्या अने ते वार्त्ता कहीने चौलुक्य पतिने आनद पमाड्यो.

आ प्रमाणे सर्व राजाओए अने मुनिओए स्तुति करेला मार्गमा चालनारा कुमारपाळराजाए सैकडो कष्ट भोगवीने पण छठ्ठा व्रतनु पालन कर्यु

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्याया मुपदेशप्रासादवृत्तौ पष्ठव्रतनिषये एकादशोत्तरशततम प्रबंध ॥ १११ ॥

द ऋषि नारकीमाथी नीकळी पाच भव सुधी बकरो थयो ते पाचे भवमा यज्ञमाज मायो छट्ठे भवे पण बकरो थयो परतु ते भवमा आ चारुदत्ते अनशन करावी नकार मंत्र सभळाव्यो तेना महिमाथी मृत्यु पामीने स्वर्गे गयो ते हु देव थयो । अवधिज्ञानथी पूर्व भव जाणीने आ मारा गुरुए आपेला नवकार मन्त्रनो महिमा देवाने अने उपकारी गुरुने वाढवाने हु अहिं आव्यो छु पूर्वना मारापरना महान् उपकारथी में प्रथम तेने वदन करीने पछी साधुने वदना करी छे आ प्रमाणेनी हकीकत साभळी चारुदत्ते वैराग्य पामीने दीक्षा ग्रहण करी. अने अनेक प्रकारनी तपस्या करीने स्वर्गे गयो

जेम चारुदत्त दिग्विरति व्रत लीधेलु न होवाथी अनेक स्थाने भमी भमीने दु खी थयो तेम जे प्राणी ते व्रत ग्रहण नहीं करे ते दु खी थशे तेथी भव्यप्राणीओए छट्ठु दिग्विरति व्रत अवश्य ग्रहण करवु



इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रथस्य वृत्तौ षष्ठव्रतविषये द्वादशोत्तरशततम प्रबधः ॥ ११२ ॥

व्याख्यान ११३ मुं.

केटलाएक विकट संकट आवे तोपण आ छठ्ठुं व्रत छोडता नथी ते उपर कहे छे.

स्वल्पकार्यकृतेऽप्येके त्यजंति तृणवद्व्रतम् ।
दृढ व्रता नरा· केचित् भवंति सकटेऽप्यहो ॥ १ ॥

व्याख्या.

"केटलाएक हीनसत्वी जीवो अल्प कार्यने माटे पण ग्रहण करेला व्रतने तृणनी जेम छोडी दे छे अने केटलाएक पुरुषो सकटमा पण दृढव्रतवाळा रहे छे " ते विषे महानद कुमारनी कथा छे ते नीचे प्रमाणे—

महानंद कुमारनी कथा.

अवती नगरीमा धनदत्त नामे एक कोटीध्वर श्रेष्ठी रहेतो हतो ते जैनधर्मी हतो तेने पद्मा नामे प्रिया हती. सैकडो मनोरथ करता तेमने जयकुमार नामे एक

अहीं ज्यारे धन खुटी गयु त्यारे स्वार्थी वेश्याए तेने घरमाथी काढी मुक्यो एटले ते सासराने घेर आव्यो सासरेथी थोडु धन लइ कमावामाटे वहाणे चड्यो दैवयोगे वहाण भाग्यु, पण पुण्ययोगे पाटीयु मेळवी कुशळक्षेम कीनारे आव्यो त्याथी पोताना मामाने घेर गयो त्याथी द्रव्य लइ कमावामाटे पग रस्ते चाल्यो मार्गे धाड पडी एटले सघळु द्रव्य चोर लइ गया पाछो दु खी थइ पृथ्वीपर भटकवा लाग्यो एवामा कोइ योगी मळ्यो तेणे अर्धोअर्ध भाग ठरावी रस कूपिकामाथी रस लेवाने माची उपर वेसारीने तेने उतार्यो रसनो कुभ भरीने उपर आव्यो एटले कुभ लइने योगीए माची कूपिकामा नाखी दीधी चारुदत्त कुवामा पड्यो ने योगी नाशी गयो त्या कोइ मृत्यु पामता पुरुषने तेणे नवकार मत्र सभळाव्यो त्रीजे दिवसे चदनघो त्या आवी रस पीवा लागी त्रण दिवसनो क्षुधातुर चारुदत्त तेने पुछडे वळगीने घणा कष्टे वहार नीकळ्यो आगळ चालता तेना मामानो पुत्र रुद्रदत्त तेने मळ्यो रुद्रदत्ते कह्यु के, वे घेटा लइने आपणे सुवर्णद्वीपे जइए चारुदत्ते हा पाडी एटले वे घेटा लइने तेओ समुद्रने तीरे आव्या पछी रुद्रदत्ते कह्यु के आ वे घटाने हणीने तेना चमनी अदर छरी लइने पेशीए अहीं भारड पक्षी आवशे ते मासनी बुद्धिथी आपणने उपाडीने सुवर्ण द्वीपे लइजशे एटले आपणे चामडाने छेदी वहार नीकळीने त्याथी सुवर्ण लावशु चारुदत्त वोल्यो के—ए वात खरी पण आपणाथी जीवनो वध केम थाय ? एटलामा तो रुद्रदत्ते शस्त्रनो घा करीने एक घेटाने मारी नाख्यो पछी जेवो वीजाने मारवा जाय छे तेवो चारुदत्ते ते घेटाने नवकार मंत्र सभळाव्यो घेटाए अनशनव्रत ग्रहण कर्यु. पछी वने जणा ते घेटाना चर्मनी धमणमा पेठा एटले भारड पक्षी ते धमण लइने आकाशे उड्यु मार्गमा वीजु भारड मळवाथी तेनी साथे युद्ध थता तेना मुखमाथी चारुदत्तवाळी धमण पडी गइ धमण सहीत चारुदत्त एक सरोवरमा पड्यो तेमाथी वहार नीकळीने ते ठेकाण ठेकाण भमवा लाग्या अनुक्रमे एक चारण मुनि तेना जोवामा आव्या मुनाने नमीने ते पासे वेठो मुनि वोल्या—रे भद्र ! आ अमानुष स्थळमा तु क्याथी आव्यो ? तेणे पोतानु सर्व दु ख जणाव्यु एटले मुनिराजे छठु व्रत वर्णवी वताव्यु चारुदत्ते प्रीतिथी ते व्रत ग्रहण कर्यु

आ अरसामा कोइ देवे त्या आवी प्रथम चारुदत्तने अने पछी मुनिने वदना करी ते समये कोइ वे विद्याधर ते मुनिने वादवा आव्या हता तेमणे पेला देवने पुछ्यु के, हे देव ! तमे साधुने मुकीने प्रथम आ ग्रहस्थने केम नम्या ? देव वोल्यो के—पूर्वे पिप्पलाद नामे ब्रह्मर्षि घणा लोकोने यज्ञ करावी, पापमय शास्त्रो प्ररूपीने हतो, (तेनी उत्पत्ति त्रीजा व्रतनी कथाना प्रसगे कहेली छे.) ते पिप्प-

एक सहस्र द्रव्यनु ऋण छे ते आपीने जा" भय पामेला धनदत्ते तरतज तेटलु द्रव्य लावीने त्या मुक्यु. पछी ते बाळकने ते उद्याननां माळीए घेर लइ जइ पुत्र करीने राख्यो कह्यु छे के, "मनुष्यो जेनी इच्छा करता नथी तेवी वस्तु सहजमा प्राप्त करे छे अने जेनी हमेशा इच्छा करे छे ते कदिपण प्राप्त थती नथी अहो, विधातानु विपरीतपणु पण केवु छे ?"

धनदत्त शेठने त्यार पछी पूर्वनी जेवाज स्वप्नथी सूचित एवो वीजो पुत्र थयो. धनदत्ते तेने पण पूर्वनी जेम छोडी दीधो ते समये आकाश वाणी थइ के, श्रेष्टी ! आ कुमारनुं तारे दश हजारनु करज छे, ते मुकीने पछी जा तेणे तेवी रीते कर्यु ते त्याग करेलो पुत्र कोइ धनपाति लइ गयो पछी शुभ स्वप्नथी सूचित त्रीजो पुत्र थयो, स्त्रीए घणु वार्या छतापण श्रेष्टी तेने उद्यानमा तजी देवा गयो त्या दिव्य वाणी थइ के, अरे श्रेष्टी ! आनी पासे तारु कोटानुकोटी द्रव्य लेणु छे, ते लीधा वगर एने शामाटे छोडी दे छे? आवी वाणी साभळी हर्षित थइने तेने पाछो लावी स्त्रीने अर्पण कर्यो अने तेनु महानंद एवुं नाम पाडयुं महानद कुमार प्रतिदिन वृद्धि पामतो सतो यौवनने प्राप्त थयो अनुक्रमे सर्व कळाओनु पात्र थयो. बाल्यवयमाज तेणे समकितमूळ श्रावकना बार व्रत ग्रहण कर्या तेमा छठा दिग्विरति व्रतमा चारे दिशाए तिरछा सो सो योजननु परिमाण राख्यु योवन वयमा आवता पिताए तेने एक धनाढ्य श्रेष्टीनी कन्या परणावी पछी व्यापार करता अल्प दिवसमाज कोटी गमे द्रव्य तेणे संपादन कर्यु

दातव्यलभ्यसंबंधो वज्रबंधोपमो ध्रुवं ।
धनश्रेष्टीह दृष्टात स्त्रिकुपुत्र सुपुत्र युग् ॥

"आ ससारमा लेणा देणानो जे सबध छे ते निश्चय वज्रबधना जेवो छे. तेनी उपर त्रण कुपुत्र अने एक सुपुत्रवाळा धन श्रेष्टीनु पूर्ण दृष्टात छे" महानद कुमारे सात कोटी द्रव्य सात क्षेत्रमा वापर्यु

एक वखते कोइ योगी आकाशगमनी विद्या साधवाने माटे कोइ उत्तर साधकने शोधतो हतो तेणे महानद कुमारने जोइने कह्यु के—हे पुण्यवान ! तमे मने साहाय करो के जेथी मारी विद्यानी सिद्धि थाय महानदे ते कबुल कर्यु अने रात्रे पर्वतना कोइ भागमा योगीनी साथे गयो त्या योगीना मत्र जपना बळथी कोइ देवी प्रगट थइने बोली के, हे योगी ! हु तारा उत्तर साधकने विद्या आपुं छु, तारा कर्ममा ते विद्या नथी अने विधाता पण कर्ममा होय तेथी अधिक आपवाने समर्थ नथी कह्यु छे के,

पुत्र थयो ते पुत्रना जन्म वखते, नाम पाडवाने वखते अने अन्नप्राशन विगेरे संस्कारोमा पिताए मोटा महोत्सवो कर्या कह्यु छे के— " राग, प्रेम, लोभ, आकार, प्रीति, अने कीर्ति एटला स्थानोमा कोण द्रव्यनो व्यय नथी करतु ? " ज्यारे जयकुमार योवन वयने प्राप्त थयो त्यारे तेणे व्यसनासक्त थइ पिताना ऐश्वर्यने उडावी दीधु कह्यु छे के—" व्यसनरुपी अग्निमा द्रव्यरुपी घीनी आहूति पडवाथी ते व्यसनाग्नि अधिक अधिक वधे छे, अने पछी ज्यारे दारिद्ररुपी जळनो योग थाय छे त्यारे ते तत्काळ शमी जाय छे " एक वखते जयकुमार कोइ धनाढ्यना गृहमा चोरी करवा गयो त्या अकस्मात् सर्पे दंश कर्यो विष चडवाथी ते तत्काळ मृत्यु पाम्यो प्रात काळे राजाए तेना पिताने पकडीने केद कर्यो. महाजने राजानी पासे जइ तेना पुत्रनी हकीकत कहीने तेने छोडाव्यो.

धनदत्तने पहेली स्त्रीथी बीजो पुत्र थयो नहीं एटले ते स्त्रीए पोताना स्वामीने आग्रहथी कह्यु के, ' स्वामी बीजी स्त्रीनुं पाणिग्रहण करो ' पण वळी रखे बीजो दुष्ट पुत्र थाय एवा भयथी धनदत्ते ते वात ध्यानमा लीधी नहीं कह्यु छे के " जेमनु हृदय दुर्जनना दोषथी दुषित थयु होय छे तेवा पुरुषोने एकाएक सज्जन उपर पण विश्वास आवतो नथी उष्ण दूधथी दाझेलो बालक दहींने पण फुंकीने पीवे छे " एक दिवसे पत्नीए बहु आग्रहथी कह्यु के— " हे स्वामी, तमे शामाटे भय राखो छो ? बधा पुत्रो काइ तेवा थता नथी शास्त्रमा चार प्रकारना पुत्रो कह्या छे—प्रथम **अभिजात** जे पिताथी अधिक थाय ते, बीजा **अनुजात** पितानी तुल्य थाय ते, त्रीजा **अपजात** पिताथी काइक न्यून थाय ते अने चोथा **कुलागार** कुलमा अंगाराुप थाय ते तेओमा प्रथम प्रकारना पुत्र श्रीआदीश्वर प्रभु विगेरे जेवा, बीजा प्रकारना पुत्र भरतचक्रीना पुत्र सूर्ययशा विगेरे जेवा, त्रीजा प्रकारना पुत्र सगर चक्रवर्तीना पुत्र जन्हुकुमार विगेरेजेवा अने चोथा प्रकारना पुत्र कौणिक राजा जेवा समजवा वळी सर्व वृक्षो काइ काटाळा थता नथी माटे हे स्वामी, तमे पुन पाणिग्रहण करो "

आवा स्त्रीना युक्ति पूर्वक आग्रहवाळा वचनथी धनदत्ते कोइ धनवंत शेठनी **कुसुदति** नामनी कन्या साथे पाणि ग्रहण कर्युं अनुक्रमे कुसुद्वती सगर्भा थइ. एकदा 'कोइए आवी रातु कासानु कचोलु लइ लीधु' एवु तेने स्वप्न थयु ते वार्ता धनदत्तने जणाववा तेणे कह्यु के, ' आपणो पुत्र बीजाने घेर रहेशे ' अनुक्रमे पुत्र पूर्व पुत्रना भयथी धनदत्ते तेने एक जीर्णोद्यानमा जइने त्यजी दीधो तेने पाछा वळता आकाशमा देव वाणी थइ के हे श्रेष्टी ' आ तारा पुत्रनु तारे

एक वखते धनदत्तशेठनी प्रेरणाथी पोताना कुटुंबनो पूर्व भव पुछवाने माटे महानद कुमार आकाश मार्गे सीमधर प्रभुनी पासे गयो त्या प्रभुने प्रणाम करीने तेणे पोताना कुटुंबनो पूर्व भव पुछयो प्रभु बोल्या-" धनपुर नगरमा सुधन नामे श्रेष्ठी हतो. तेने धनश्री नामे स्त्री हती. ते सुधन श्रेष्ठीने धनावह नामे एक बालमित्र हतो तेओ बने साथे व्यापार करता हता सुधन पोताना मित्रनुं धन घरमां वापरतो तेम वापरता तेणे सो सोनैया द्रव्य तेनु वगाड्यु बीजा कोइ एक वणिकना विश सोनैया आपवा नाहता ते तेणे उतावळथी आप्या नहीं एटले तेनी पासेज रही गया त्रीजा कोइ वणिके सुधननुं लेणु आपता दश सोनैया भ्रांतिथी वधारे आपी दीधा सुधनना जाणवामा ते वात आवी, पण तेणे लोभथी पाछा आप्या नहीं. आ त्रण शल्यनी तेणे गुरुपासे आलोचना पण करी नहीं अन्यदा तेणे कोइ साधर्मीने एकसो सोनैया आपीने यावज्जीवित सुखी कर्यो कह्युं छे के, " मूर्छीत थयेला माणसने ते अवसरे जो एक अंजलि जळ आप्यु होय तो ते मरतो वची जाय छे पण तेना मृत्यु पाम्या पछी सो घडा पाणी रेडे तोपण तेथी काइ थतुं नथी "

अनुक्रमे सुधन, धनश्री, तेनो मित्र, पेला बे वणिक अने पेलो साधर्मी ए छ ए जणा श्रावकधर्म पाळी मृत्यु पामीने सौधर्म देवलोकमा गया. त्याथी चवीने ते स्त्री पुरुष धनदत्त अने कुमुद्वती नामे तारा माता पिता थया अने बाकीना चार तेना पुत्रो थया तेमा सुधननो जीव ते तारो पिता अने पेला साधर्मिकनो जीव ते तुं थयो छु तारा पिताने जे पेलो पुत्र थयो हतो ते धनावहनो जीव हतो पूर्वे तारा पिताए पोताना मित्र धनावहनी सो सोनैयानी हानि करी हती तेथी तेणे पुत्र थइने तेनु सर्वस्व गुमाव्यु तेणे मनमा धर्म निंदा करी हती तेथी ते अल्प आयुष्यवाळो थयो बे वचला पुत्र जे तारा पिताने थया हता, तेमनु पूर्वभवनु देवु हतुं, तेथी ते पचास गणुने हजार गणु आपवुं पडयु आ कुमुद्वतीए पूर्वभवमा एक वखते पोताना घरनी महिषी (भेंस) ने बे पाडा अवतर्या हता त्यारे एवु दुर्ध्यान कर्युं हतु के, जो कोइ आ बे पाडाने हरी जाय तो सारु आवा दुर्ध्यानथी आ भवमा तेने जन्मताज बे पुत्रनो वियोग थयो "

आ प्रमाणे श्री सीमधर प्रभु पासेथी पूर्वभव साभळी महानद कुमार घणो आनद पाम्यो, अने निःसदेह थइने पोताने घेर आव्यो त्या ते सर्व वृत्तात तेणे मातापिताने जणाव्यो ते साभळी तेना मातापिता वैराग्य पामी दीक्षा लइने स्वर्गे गया. महानद कुमारे पोताना पेला बे सहोदर बंधुने शोधी काढी धर्म पमाड्यो पछी पोते योग्य समये दीक्षा लइ माहेंद्र देवलोकमा देवता थयो त्याथी चवीने सिद्धिने पामशे.

" आ प्रमाणे भव्य प्राणीओए जेमा दिशाओनो घणो सक्षेप कराय छे तेवा दिग्विरति व्रतने स्वीकारी कष्टमा पण पोतानी बुद्धि निश्चळ राखी धनदत्त शेठना पुत्र महानद कुमारनी जेम ते व्रतनु पालन करवु "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेश सग्रहाख्यायामुपदेश प्रासादग्रन्थस्य वृत्तौ दिग्विरति व्रतविषये त्रयोदशोत्तरशततम. प्रबन्ध ॥११३॥

ब्रह्मा येन कुलालवन्नियमितो ब्रह्माड भाडोदरे ।
विष्णुर्येन दशावतारग्रहणे क्षिप्तो महासकटे ॥
रुद्रो येन कपालपाणिपिटके भिक्षाटन कारितो ।
सूर्यो भ्राम्यतिनित्यमेव गगने तस्मै नम कर्मणे ॥१॥

" जेण आ ब्रह्माडरूपी भाजन बनाववाने ब्रह्माने कुभार करेलो छे, विष्णुने दश अवतार लेवाना महा सकटमा नाख्यो छे, अने शिवन खापरीनुं पात्र ला भिक्षाटन करावेलु छे तेमज जे हमेशा सूर्यने आकाशमा भमावे छे, ते कर्मने नम स्कार छे " आ प्रमाणे कही ते देवी विजळीनी जेम अन्तर्धान थइ गइ महानद कुमारने तेवी महा विद्या प्राप्त थइ तोपण सवरने धारण करनार साधुनी जेम तेण ते वात कोइने जणावा दीधी नहीं अने समुद्रनी जेम गोवे करेली दिश मर्यादानु उल्लघन पण कर्युं नहीं अनुक्रमे महानदने एक पुत्र थयो

एक वखते ते बाळकने दुष्ट सर्पे दश कर्यो त्यारे धनदत्त शेठीए तेने निर्विष करवा माटे आखा शेहेरमा पडो वगडाव्यो ते साभळी एक विदेशी ब्राह्म कह्यु के, हे श्रेष्ठी ! अहींथीं मारु नगर एकसो त्रश योजन दूर छे, त्या मारी स्त्री घणी विद्यावाळी छे जो कोइ तेने अहीं लइ आवे तो आ बाळक सद्यसजीवन थाय ते साभळी धनदत्ते महानदने कह्यु के, हे पुत्र ! विद्याना बळथी तु सत्त्व त्या जा अने ते स्त्रीने लइ आवा महानदे पोताने निग्गिरति व्रतनो जे नियम छे ते कह्यो धनदत्ते दरेक व्रतमा छ आगार रहेला छे ते समजावीने कह्यु के आ कारणे जवामा तने दोप नथी तथापि महानदे मान्यु नहीं ते वात साभळी ते नगरना राजाए आवीने कह्यु के, हे महानद ! आ नाना बाळकने जीवित आपवा जेवो बीजो उत्कृष्ट धर्म कोइ नथी अने तेवा धर्म कार्यमा अने तीर्थ यात्रामा एक हजार योजन जवामा पण गृहस्थने कोइ दोप लागतो नथी तथापि महानदे ते वात कबुल करी नहीं त्या रहेला बीजा अनेक लोको कहेवा लाग्या के, अरे आ महानदनु हृदय केवु कठोर छे के आवी बाळहत्यानी पण ते भय मानतो नथी महानदे राजाने प्रणाम करीने कह्यु के, " स्वामी ! आ पुत्र मने प्राणथी पण प्रिय छे, पण तेथी मने धर्म अधिक प्रिय छे माटे स्वीकार करेला व्रतने कराजे पग हुं छोडीश नहीं " ते साभळी राजा बोल्यो—महानद, जो तु धर्मिष्ट होय तो तारुं महात्म्य सर्वने बताव्य ते समये विद्यादेवीनी वाणी थइ के—अरे कुमार ! जळनी अंजलिवडे ते बाळकने तु सिंचन कर्य आ साभळी महानदे तेम कर्युं एटले तत्काळ बाळक विष रहित थइ गयो अने लोकोमा जैन धर्मनो घणो महिमा थयो

अचित्तपणु आ प्रमाणे छे काचुं पाणी तो सर्वथा सचित्तज छे जो गृहस्थ हमेशा तेन त्यजी देवाने अशक्त होय तो तेणे एक अथवा बे घडा विगेरेनु परिमाण करवु. पण जळ पण अमुक काळ सुधी अचित्त रहे छे-ते विषे लख्यु छे के, "अग्नि उपर त्रण उकाला आवे त्यारे जळ प्रासुक थाय, तेवु जळ साधुने कल्पे. पण तेमा एटलुं विशेष के ग्लान विगेरेने माटे त्रण पोहोर उपरात एक मुहूर्त सुधी ते राखी शकाय ते अचित्त जळने मुकवानु पण जो योग्य स्थान न होय तो ते एक मूहर्त्तनी अदर पण सचित्त थइ जाय छे. जो त्रिफला अथवा राख के चुना विगेरेथी प्रासुक कर्यु होय ते त्रण मुहूर्त्त (छ घडी) पछी प्रासुक थाय छे एम श्रीजिनेंद्र प्रभुए कह्यु छे अने प्रासुक कर्या पछी पाछु छ घडी ए ते सचित्त थाय छे. एम रत्नसंचय नामना ग्रथमा लख्यु छे-वली कह्युं छे के, ग्रीष्म ऋतुमा उष्ण जळ पाच प्रहर पछी सचित्त थाय, शीतकालमा चार पोहोर पछी सचित्त थाय अने वर्षा ऋतुमा त्रण प्रहर पछी सचित्त थाय, तेनो भावार्थ एवो छे के रोगी ग्लान आदि साधुओने माटे राखेला प्रासुक जळनी ग्रीष्म ऋतुमा पाच पोहोर पछी सचित्तता थाय कारण के, ते ऋतु अतिरुक्ष छे तेथी चिरकाळे जीवोत्पत्ति थाय छे शीतकाळनी ऋतु स्निग्ध छे तेथी शिशिर ऋतुमा चार पोहोर पछी जळ सचित्त थाय छे अने वर्षाऋतु अति स्निग्ध छे तेथी तेमा प्रासुक जळ त्रण पोहोरे सचित्त थइ जाय छे उपर कहेली मर्यादाथी अधिक काळ सुधी जो राखवुं होयतो तेमा क्षार चुनो अथवा वकरानी लीडीओ नाखवाथी ते सचित्त थतु नथी. आ प्रमाणे प्रवचन सारोद्धारना १३६ मा द्वारमा कहेलु छे तेथी जाणी लेवु हवे ते जळ वहारना अग्नि विगेरे शस्त्रना सपर्कथी वर्ण गध विगेरे बदलाइने अचित्त थाय त्यारे वापरवुं, पण जे स्वभावे करी अचित्त थयुं होय ते वापरवु नहीं महा ज्ञानीओ पण बाह्य शस्त्रना योग विना अचित्त थयेला जळने ग्रहण करता नथी कारण के, तेम करवाथी व्यवहार मर्यादा विचारता घणा दोष लागवानो भय रहे छे ते उपर एक कथा प्रसग छे-

एक वखते श्रीवीर प्रभु घणा शिष्यो साथे विहार करता हता, मार्गमा एक अचित्त सरोवर तेमना जोवामा आव्यु, तेमा त्रस जीव के सेवाळ पण बीलकुल न होती तथापि तेमणे पोताना तृषातुर शिष्योने ते जळ पीवानी आज्ञा आपी नहीं तेवीज रीते एक वखत विहार करता घणा शिष्यो बहुज क्षुधातुर थया अने देह चिंता'थी पीडित थया, ते वखते अचित तलनुं भरेलु गाडु जोवामा आव्यु तेमज बाह्य शस्त्र विना थयेल अचित स्थडिल पण दीठी ते छता ते तिल वापरवानी के तेवा स्थंडिल उपर बेठे जवानी आज्ञा आपी नहीं श्रुत ज्ञाननु प्रमाणपणु बतावधाने माटे

१ वडीनीति-स्थडिल जवु ते.

व्याख्यान ११४ मु.

हवे भोगोपभोग नामे बीजु गुणव्रत कहे छे.

सकृत्सेवोचितो भोगो ज्ञेयोऽन्नकुसुमादिक. ।
मुहु सेवोचितस्तूपभोग स्वर्णांगनादिक ॥ १ ॥

व्याख्या

" एक वखत सेववा योग्य अन्न, पुष्प विगेरे ते **भोग** कहेवाय अने वारं वार सेववा योग्य सुवर्ण, स्त्री विगेरे ते **उपभोग** कहेवाय छे " आ भोगोपभोग नामनु बीजुं व्रत, **भोगथी** अने **कर्मथी** बे प्रकारनु छे तेमा भोग बे प्रकारनो छे. जे एक वार कोठामा क्षेपन करवा विगेरेथी भोगवाय ते **भोग** जेवा के, आहार पुष्प विगेरे अने जे वारवार शरीरना बाह्य भागथजि भोगवाय ते **उपभोग** जेवा के सुवर्ण, स्त्री विगेरे-आ भोगोपभोग व्रत भोगववा योग्य वस्तुओनुं परिमाण करवाथी थाय छे कह्यु छे के-" जेमा यथाशक्ति भोगोपभोग वस्तुनी सख्या विगेरेनुं परिमाण थाय ते **भोगोपभोग मान** नामे बीजु गुणव्रत कहेवाय छे " आ जगतमा भोगोपभोगनी वस्तुओ अपरिमित छे, तेथी श्रावके तेनुं परिमाण करवु जोइए. मुख्य वृत्तिए उत्सर्गे तो श्रावके अचित्त भोजीज थवुं जोइए, पण जो तेम न बनी शके तो सचित्त विगेरेनु परिमाण बाधवुं ते परिमाण बाधवा योग्य वस्तु आ प्रमाणे-सचित्त, द्रव्य, विगइ, उपान, ताबूल, वस्त्र, पुष्प, वाहन, शय्या, विलेपन, ब्रह्मचर्य, दिशा गमन, स्नान अने भक्तपान-आ चौद प्रकारना नियमो करवाना छे. जे सजीव ते सचित्त कहेवाय छे ते सजीव द्रव्य पूर्वाचार्ये कहेली गाथावडे जाणी लेवा तेमा पिष्ट (लोट) नु सचित्तपणु आ प्रमाणे कहेलु छे-श्रावण तथा भाद्रपद मासमा पाच दिवस सुधी चाळ्या वगरनो मिश्र पिष्ट रहे छे, आसो अने कार्त्तिक मासमा चार दिवस मिश्र रहे छे मागशर अने पोष मासमा त्रण दिवस मिश्र रहे छे, माघ अने फाल्गुन मासमा पाच पोहोर मिश्र रहे छे, चैत्र अने वैशाख मासमा चार पहोर सुधी मिश्र रहे छे, अने जेठ तथा अषाड मासमा त्रण प्रहर मिश्र रहे छे-त्यार पछी ते अचित्त थइ जाय छे पण जो चाळ्यो होय तो एक मुहूर्त पछी अचित्त थाय छे अचित्त थया पछी केटले काळे पाछो बगडे छे, ते विषे प्रथमां लखेलु जोवामा आवतुं नथी पण ज्या सुधी तेना वर्णादि बदलाय नहीं अथवा जीवात पडे नही त्या सुधी ते कल्पे छे. हवे जळने माटे सचित्त अने

उपर प्रमाणे भोगोपभोगमा विरक्त अने परद्रव्यमा निःस्पृह एवा परमार्हत कुमारपाळे आ सातमु व्रत ग्रहण कर्यु हतु

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेश संग्रहाख्याया मुपदेशप्रासादग्रंथस्य वृत्तौ सप्तमव्रतविषये चतुर्दशोत्तरशततमः प्रबधः ॥ ११४ ॥

व्याख्यान ११५ मुं.

आ भोगोपभोग व्रतमा बावीश प्रकारना अभक्ष्यनो पण त्याग करवो जोइए. ते बावीश अभक्ष्यमां प्रथम चार महा विकृतिनुं स्वरूप कहे छे.

मद्य द्विधा समादिष्टं, मांस त्रिविधमुच्यते ।
क्षौद्रं त्रिधापि त्याज्यच, म्रक्षण स्याच्चतुर्विधम् ॥ १ ॥

व्याख्या

" मद्य बे प्रकारनुं कहेलु छे, मास त्रण प्रकारनु कहेवाय छे, मधु त्रण प्रकारनुं मानेलुं छे अने माखण चार जातनु होय छे—ए सर्व त्याग करवा योग्य छे " आ चारे विकृतिओने अभक्ष्य जाणी विवेकी पुरुषोए त्यजी देवी कारण के तेमां तत्समान रंग विगेरेथी जोवामा आवी शके नही तेवा अनेक जीवोनी उत्पत्ति थया करे छे. "

मद्य काष्ट अने पिष्टथी उत्पन्न थतुं होवाथी बे प्रकारनुं छे—सर्व अभक्ष्यमां प्रथम मद्यनु ग्रहण तेने सर्वथी महा अनर्थना हेतु भूत जाणीने करेलु छे, ते विषे शास्त्रमा कह्यु छे के, " मद्य दुर्गतिनु मूळ छे अने ते लज्जा, लक्ष्मी, बुद्धि, तथा धर्मने नाश करनारु छे " वळी कह्युं छे के " मद्य पानवडे उन्मत्त थयेलो पुरुष, बाळा, युवति, वृद्धा, ब्राह्मणी अने चडाली–गमे तेवी परस्त्रीने पण भोगवे छे " एक वखत कृष्ण वासुदेवे श्रीनेमिनाथने पुछ्यु के, " स्वामी आ मारी नगरीनो विनाश शा वडे थशे ? " प्रभु बोल्या–" मदिराथी " ते साभळी कृष्णे आखा नगरमाथी मदिराने कढावी नाखी. एक वखते साम अने प्रद्युम्न बने दूर वनमां गया, त्यां मदिरा जोइने तेनु पान कर्यु पछी मद विव्हल थइ तेमणे द्वैपायन तापसने बाध्यो ने मार्यो तत्काळ ते तापसे "हुं यादवोनो तथा तेना नगरनो दाहक थाऊं"

छठ्ठा नियममा वस्त्र एटले पचाग वेष—तेमा धोती, धोतीके राजिय पोरवानुं वस्त्र विगेरे न गणवु

सातमा नियममा पुष्प जे मस्तके अने कठे पेहेरवाने योग्य छे, तेनो नियम करवो कदि तेनो त्याग कर्यो होय तो पण ते देव पूजामां कल्पे छे

आठमो नियम 'वाहन' एटले रथ, घोडीया तथा सुखपाळ विगेरे.

नवमो नियम शयन एटले खाटला विगेरे.

दशमा नियममा विलेपन एटले देहना भोगने अर्थ चदन, फुलेल तथा अत्तर विगेरे—तेनो नियम करवो तेनो नियम छता पण देवपूजादिकमा ललाटे तिलक करवु, हाथे ककण करवुं अने हाथ धुपवा विगेरे कल्पे छे.

अग्यारमा नियममा ब्रह्मचर्य एटले रात्रि दिवस सबधी पोतानी विवाहित पत्नी आश्रि अब्रह्म सेवननु प्रमाण बाधवु मोकळापणु टाळवु

बारमो नियम दिक्परिमाण जेना अर्थ दिग्विरति व्रतमां लखायेल छे. वळी आगळ दशमा व्रतमा लखशु

तेरमो नियम स्नान एटले तेल विगेरे चोळी आखे शरिरे स्नान करवुं ते. तेनं प्रमाण करवुं

चौदमो नियम भात एटले राधेलु धान्य, सुखडी विगेरे तेनु त्रण शेर चार शेर विगेरे प्रमाण करवु, खडबु जा विगेरेनु ग्रहण करवाथी घणा शेर पण थाय छे

आ प्रमाणे चौद नियमो जेणे पूर्वे स्वीकार कर्या होय तेणे प्रतिदिन सक्षेपव एटले पूर्वे जावजीवसुधीने माटे धारेला होय तेमाथी नित्य यथाशक्ति सक्षेपव एटले तेथी ओछा ग्रहण करवा हमेशा प्रात काळे जुदा जुदा स्पष्ट नाम लइने तेनं नियम करवो अने रात्रे तेनो सक्षेप करवो आ प्रमाणे नियम धारवा विषे कुमार पाळ राजानो प्रबध छे ते आ प्रमाणे—राजा कुमारपाळ आ सातमा व्रतने वि चौद नियम प्रतिदिन धारता हता तेमा ते राजा दिवसे सचित्तमा एक नागरवेलन पानज राखता तेना पण आठ बीडा राखता हता अने रात्रे तो चतुर्विध आहारना पच्चखाण करता हता वर्षाऋतुमा एक घीनी विकृति (विगइ) ज छुटी, सर्व जातनी लीलोतरीनो त्याग, तपमा सर्वदा एकासणु, पारणा अने उत्तर पारणा शिवाय दिवसे ब्रह्मचर्य, सर्वपर्वमा शील पाळवु अने सचित्त तथा विगइनो त्याग, इत्यादि नियमोमा तत्पर रहेता हता भोगोपभोगमा जोके नि.स्पृह हता तो पण राजधर्मना परवशपणाने लीधे परिमित अने निष्पाप भोगोपभोग आचरता हता आ प्रमाणे तेणे पनर कर्मादान नथी आवती श्रावकनो निषेध करी तेना लिखित पट्टाने नाख्या हता

'मांस भक्षण करवामा, मद्य पीवामां अने मैथुन सेववामां कांइ दोष नथी, ए तो प्राणीमात्रनी प्रवृत्ति छे, जो तेथी निवृत्ति राखे तो ते मोटुं फळ आपे छे." आ श्लोकनो अर्थ आ प्रमाणे करवा अयोग्य छे. कारण के जे आचरवाथी दोष नथी लागतो, छता तेथी निवृत्ति करवी ते महा फळ आपे छे आवो अर्थ देखीतोज अघटित छे अने तेवो अर्थ करवाथी तो निर्दोष एवा शुभ धर्मथी पण निवृत्ति करवानो प्रसग आवे, तेथी ए श्लोकनो अर्थ आ प्रमाणे करवो योग्य छे-" मांस भक्षण करवामा अदोषपणु नथी (मांस भक्षणेऽदोषोन) एवी रीते मद्य पिवामा अने मैथुन सेववामा पण अदोषपणु नथी कारण के, ते मद्य मांस ने मैथुन प्राणीओनी उत्पत्तिनु स्थान छे अर्थात् तेमा असख्याता ने अनंता जीवो उपजे छे. अहीं जीवोनी उत्पत्ति रूप प्रवृत्ति समजवी तेथी मद्य, मांसने मैथुनथी निवृत्ति करवी ते महा फळवाळी छे."

वळी मांस अग्नि प्रमुख उपायथी पण अचित्त थतुं नथी, बीजी सर्व वस्तुओ उपायथी प्रासुक थाय छे पण मांस तो कदिपण थतुं नथी. एथीज तेने माटे उपर कहेली गाथामा (आमासुअ) एवुं पद छे वळी मांस शिवाय बीजी वस्तुओ अग्नि विगेरे शस्त्रथी अचित थाय छे पण अग्निथी संस्कार कराता मांसमा तो निरतर ने वखते पण निगोदीया जीवो उत्पन्न थया करे छे तेथी उपर गाथामा [विपच्चमाणासु] एवु पद छे. वळी कह्यु छ के, " जे पुरुष सैकडो कृमिथी आकुल, परु, रुधिर अने चरबीथी मिश्रित एवा मांसनु भक्षण करे छे, ते पुरुषने शुद्ध बुद्धिवाळा पुरुषो श्वान जेवोज गणे छे."

हवे मध त्रण प्रकारनु छे माक्षिक [माखीथी थयेलुं] कौतिक [कुत्ताथी थयेलु] अने भ्रामर [भमराथी थयेलु] आ त्रणे प्रकारनु मध त्याग करवा योग्य छे. कह्युं छे के, " माखीओना मुखनी लाळथी थयेलु, अने लाखो जतुओना नाशथी बनेलु एवुं क्षुद्र मध केजे नरकने आपनारु छे, तेने बुद्धिमान् पुरुषो शामाटे स्वीकारे ?" पुराणमा पण कह्यु छे के,

सप्तग्रामेषु यत्पाप मग्निना भस्मसात् कृते ।
तदेतत जायते पाप, मधुबिंदु प्रभक्षणात् ॥ १ ॥

" सात गाम बाल्याथी जे पाप लागे तेटलु एक मधना बिंदुनु भक्षण करवाथी लागे छे "

यो ददाति मधु श्राद्धे, मोहितो धर्मलिप्सया ।
स याति नरक घोर, खादकैः सह लपटः ॥ २ ॥

एवुं नियाणु कर्युं ते सांभळी रामकृष्ण तेनी पासे आव्या अने प्रणाम कर्या तोपण बोल्यो के—हुं तमारा बे विना बीजा सर्वने हणीश रामकृष्णे घणु समजाव्या पण समज्यो नहीं अनुक्रमे ते मृत्यु पामी अग्निकुमार देव थयो तरतज ते क्रोधायमान थइने यदुपुरीने दहन करवा आव्या ते समये नगरीना लोकोए बारवर्षसुधी आचाम्ल व्रत कर्युं, तथी ते तेमनो पराभव करी शक्यो नहीं अन्यदा कोइ लौकिक पर्वमां लोकोए आचाम्ल कर्युं नहीं एटले ते छळ पामी तेणे आखु द्वारकानगर बाळी नाख्यु राम अने कृष्ण जीवता बाहार नीकळ्या रोहिणी, देवकी अने वसुदेव नगरनी प्रतोळीमा दबाई मृत्यु पामीने स्वर्ग गया एम संभळाय छे के, " मद्यथी अंध थयेला एवा साबे सर्व यादवकुलने हणी नाख्यु अने पितानी नगरीने पण बाळी नाखी अर्थात् तेना कारण भूत थया "

मद्यना त्याग विषे पंचम काळमा उत्पन्न थयेला अवागणिआ श्रावकनो संबंध छे,[2] ते श्रावकनी जेम मद्यनो त्याग करवो

मांस त्रण प्रकारनु छे जलचर मांस, स्थलचर मांस, अने खेचरमांस अथवा चर्म रुधिर अने मांस एवा पण त्रण भेद छे मांस पण अत्यंत दुष्ट छे कह्युं छे के,

आमासुअ पक्कासुअ, विपच्चमानासु मंसपेसीसु ।
सययचिय उववाओ, भणिओअ णिगोअ जीवाणं॥

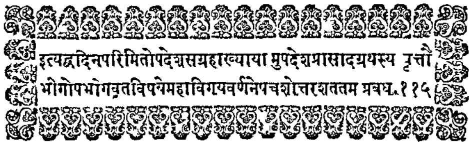
" काचा मांसमा, पक्व मांसमा, रंधाता मांसमा अने तेनी पेशीओमां, तेना जेवा वर्णवाळा निगोदीआ (लीलफुल आदी) अनंत जीवो निरंतर उत्पन्न थाय छे " वळी योग शास्त्रमा पण कह्यु छे के, " क्षणे क्षणे उत्पन्न थता असंख्य समूर्छिम जीवोनी संततिवडे दूषित एवु मांस—जे नरकना मार्गमा पाथेय समान छे, तेनुं कयो बुद्धिमान् पुरुष भक्षण करे ? " मांसमा अनंता निगोदीया जीव क्षणे क्षणे विसामा वगर पुन पुन उत्पन्न थया करे छे—आ प्रमाणे ते श्लोकनी टीकामा कहेलुं छे वळी लौकिक शास्त्रमा पण कह्यु छे के, " शुक्र अने शोणितथी उत्पन्न थयेलु मांस विष्टारूप कहेवाय छे वळी ते पुरिषमाथी उत्पन्न थाय छे तेथी उत्तम पुरुष तेनो त्याग करवो " वळी " अग्नि, मधु विष, शस्त्र, मद्य अने मांस ए छ वस्तु पंडितोए ग्रहण करवी नही, तेम आपवी पण नहीं " वळी स्मार्तलोको कहे छे के—

न मांस भक्षणे दोषो, न मद्ये न च मैथुने ।
प्रवृत्तिरेषा भूतानां, निवृत्तिस्तु महाफला ॥

[1] छए विगयना त्याग सहित एकवार जमवु ते (आंबिल) २ आ संबंध आप्यो नथी

तो तेमां पूर्वेपण संभव छे, अने तेनेमाटे तो काई कालनो नियम नथी आउपरथी एम जणाय छेके, चारमहाविगयमां निगोदना जीववडे भक्ष्य अभक्ष्यपणु नथी पण असंख्य एवा रसोत्पन्न जीववडेछे आ प्रसंग विचारवा योग्यछे अत्र प्रसंगोपात् तेनो विचार दर्शाव्यो छे

"उपर बतावेली चार विकृतिओने जे भवीप्राणीओ त्यजेछे, ते श्रीजैनधर्मनाधारक गृहस्थो देवतादिकनी संपत्तिने पामेछे"



व्याख्यान ११६ मुं.

हवे बाकीना अभक्ष्य कहेछे.

बहुजीवाकुलाभक्ष्य, भवेदुंबरपंचकम् ।
हिमं विषं तथा त्याज्या, करका· सर्वमृत्तिकाः ॥१॥

व्याख्या.

"घणा जीवोथी व्याप्त एवा उदुंबर विगेरे पांच जातिना फळो अभक्ष्यछे, तथा बरफ, विष, करा अने सर्व जातनी मृत्तिकाओपण अभक्ष्य होवाथी त्याग करवा योग्यछे" तेनो भावार्थ एवोछेके, उंबरडा विगेरे पांच जातिनाफळ मशलाना जेवी आकृतिवाळा घणा सूक्ष्म जंतुओथी सर्वदा व्याप्त होयछे तेथीते अभक्ष्यछे ते पांच जाति आप्रमाणे- वडनाफळ, पीपरनाफळ, उंबरडानाफळ, पीपळाना टेटा अने काकोदुंबरनाफळ ए पांचे जातिना फळोनो त्याग करवो

हिम एटले बरफ तेमां शुद्ध असंख्यात अपकायजीवो रहेलाछे तेथी तेत्याज्यछे.

विष एटले सोमल, अफीण विगेरे औषधीप्रयोगे निर्विष करेलु होयतो पण ते भक्षण करवाथी उदरमां रहेला गंडोलक विगेरे घणा जीवोनो घात करेछे तेथी अभक्ष्यछे.

पाणीना करा पण असंख्य अपकाय जीववाळा होवाथी त्याग करवायोग्य छे अहिं कोई शंका करेके, 'एवीरीते गणशोतो जळपण अभक्ष्यथशे' ते सत्यछे, पण

"जे धर्मनी इच्छाथी मोह पामी श्राद्धमा मध आपे छे, ते तेना खानारा लंपट पुरुषोनी साथे घोर नरकमा जाय छे" वळी कह्युछे के, "जे माणस औषधनी इच्छाथी मध खाय छे ते पण थोडा काळमा घणु उग्र दुःख पामे छे, केमके जीववानी इच्छाए भक्षण करेलु विष शु तत्काळ जीवितने शिक्षा नथी करतु? अर्थात् करे छे"

हवे माखण चार प्रकारनुं छे गायनु, भेंशनु, बकरानु अने गाडरनु-तेना दोष विषे कह्यु छे के, "जेमा सूक्ष्म शरीरवाळा प्राणीओ निरंतर उपजे छे एवु माखण तेने सेवनारा प्राणीओने तेना पापथी तत्काळ नरक गति पामे छे" छाश माथी बाहार काढीने राखेला माखणमा एक अंतर्मुहूर्त्तमा घणा सूक्ष्म जीवो उत्पन्न थाय छे तेवा माखणने विवेकी पुरुषो केम भक्षण करे?

एवी रीते उपर कहेली चार वीगइने अभक्ष्य (भक्षण करवाने अयोग्य) जाणी धर्मज्ञ एवा विवेकी पुरुषोए त्यजी देवी, कारण के, तेमा तत्समान वर्णवाळा तज्जातीय अनेक सूक्ष्म जीवो उत्पन्न थाय छे के जे आपणी जेवा सामान्य जीवोनी दृष्टिने अगोचर छे, अतींद्रिय ज्ञानीओ तेने जोई शके छे कह्यु छे के--

मज्जे महुम्मि मंसम्मि, नवनीयम्मि चउत्थए ।
उव्वज्जंति अणंता, तव्वण्णा तत्थ जंतुणो ॥

"मद्य, मधु, मांस अने माखणमा तेना जेवा वर्णवाळा अनंता जीवो उपजे छे" अहिं मद्य विगेरेना वर्ण जेवाज वर्णवाळा अनंता निगोद रुप जंतु उत्पन्न थाय छे एम समजवु एथी ते चारे वीगई अभक्ष्य छे आ गाथानो अर्थ करता कोईक एम विचार करे छे के, "निगोदीआ जीव तो सर्वत्र चौद राजलोकमा अवारितपणे उपजे छे, तेथी जो ते निमित्ते त्याज्य गणगुतो सर्व वस्तुनो त्याग करवो जोईशे माटे एनो अर्थ पूर्वे कर्यो छे तेवो चित्तमा बंध बेसतो नथी, तेनो अर्थ एम संभवे छे के, निगोदीआनी जेवा सूक्ष्म एटले रसमा उत्पन्न थता बेइन्द्री जीवोनी उत्पत्ती जाणवी आवा कारणथी केटलीक प्रतमा ते गाथाना त्रीजा पादमा [अणंता] ने बदले [असंखा] एवो पण पाठ देखाय छे. वळी मदिरामा रसोत्पन्न जीवनी उत्पत्तिने लीधे असंख्यात जीवपणु श्रीहेमी नाममाळामा पण कह्यु छे "रसजामद्यकीटाद्या" एटले रसथी उत्पन्न थयेलाजीव ते मदिरा विगेरेमा उत्पन्नथता जीवोजाणवा ए वाक्यथी एम सिद्ध थायछे के, मदिरादिकमा रसथी उत्पन्न थता बेइंद्रिय जीवो असंख्याता उपजे अनंता नहीं वळी तेमणेज श्रीयोगशास्त्रमा कह्यु छेके, "अंतमुहुर्त पछी तेमाजीवोनी उत्पत्तिछे" आ श्लोकमा जीवनी उत्पत्तिना काळ प्रतिपादन

...द जीवोनी उत्पत्ति संभवती नथी कारणके तेमनी उत्पत्तिनो

हवे चौदमु रात्रि भोजन नामनुं अभक्ष्य कहेछे.

चतुर्विधं त्रियामायामशनं स्यादभक्ष्यकम् ।
यावज्जीवं तत्प्रत्याख्या धर्मेच्छुभिरुपासकैः ॥१॥

व्याख्या.

"रात्रे चारे प्रकारनु अशन अभक्ष्य छे, तेथी धर्मनी इच्छावाळा उपासको (श्रावकोए) यावज्जीवसुधी तेना पच्चखाण करवा " चार प्रकारनु एटले अशन, पान, खाद्य अने स्वाद्य ते चारेप्रकारनु भोजन रात्रे अभक्ष्यछे कारणके, ते समये तेमा घणा जीवो उद्भवेछे. तेविषे श्रावक दिनकृत्यमा कह्यु छे के,

तज्जोणिअ जीवाणं, तहा संपाइमाणयं ।
निसिभत्ते वहोदीठो, सव्वदंसीहिं सव्वहा ॥

"चारेप्रकारना आहाररूप योनीथी उत्पन्न थता तेमज उपरथी पडता अनेक त्रसजीवोनो सर्वथाप्रकारे सर्वज्ञोए रात्री भोजनमा विनाश दीठेलो छे."

साथवा विगेरे राधेलापदार्थमा निगोदनी जेम उरणीकादि जीव उपजे छे तेथी तेओ ते योनिवाळा कहेवायछे वळी सपातिम एटले उपरथी आवीने पडता पतगीआ, फुदा, कुंथुवा, कीडि विगेरेनो पण रात्रे वधथतो सर्वज्ञ पुरुषोए जोयेलो छे शीतयोनिवाळा त्रसजीवो भूमि, वस्त्र अने आहारादिमा रात्रे उत्पन्न थायछे तेथी रात्रे असख्य जीवोनो घात कहेलोछे वळी आकाशमार्गे एटले अगासीमातो दिवसना आठमा भागथी अपकाय जीवोनी वृष्टि थायछे ते प्रभाते चारघडी दिवस चडे त्यासुधी रहेछे, तेथी जो आकाश स्थले बेसीने भोजन करे तो अनत जीवोनो पण घात थायछे कारणके "जथ्थजल तथ्थवणं " ज्या जळ त्या वनस्पति होयज एम सिद्धातमा कहुंछे अने वनस्पती अनत जीवात्मक पण होयछे

वळी रात्री भोजन करवाथी आलोक आश्री पण घणा प्रकारनी हानीनो सभव छे भोजनमा कीडि आवी जाय तो बुद्धिने हणे छे, मक्षिका आवे तो वमन थाय छे, जु आवे तो जलोदर थाय छे अने करोळीओ आवे तो कुष्ट रोग थाय छे. वळी रात्रे पात्र धोता अने एठु नाखताकुथुवा विगेरे घणा जीवो हणाय छे-इत्यादि रजनी भोजनना दोष कहेवाने कोण समर्थ छे रात्री भोजनना दोष घणा छे, अने ते कहेवानु आयुष्य थोडु छे, तथापि सक्षेपमा तेना दोष कहु छु—

कोइ एक जीव छन्नु भव सुधी जीव हिंसा करे तेटलु पाप एक सरोवरने शोषवाथी लागे छे, एकसो आठ भव सुधी तेवा सरोवरने शोषनारने जे पाप लागे

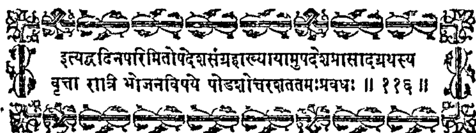
तेटलु पाप एकवार दावानळ लगाडनारने लागे छे, एकसो एक भव सुधी दव आ- पनारने जेटलुं पाप लागे तेटलुं पाप एक कुव्यापार करनारने लागे छे, एकसो चुमाळीस भवसुधी कुव्यापार करवावडे जेटलु पाप लागे तेटलु एक कुकर्मीने लागे छे एकसोचुमाळीसभवसुधीकुकर्मीने जेटलु पाप लागेतेटलु पाप एकवार खोटु आळ आपनारने लागे छे, एकसो एकावन भवसुधी खोटु आळ आपनारने जेटलुं पाप लागे तेटलु पाप एकवार परस्त्रीगमन करनारने लागेछे, नवाणुं भवसुधी परस्त्रीगमन करनारने जेटलुं पाप लागे तेटलु पाप एकवार रात्रि भोजन करनारने लागे छे आ प्रमाणे **रत्नसञ्चय** नामना ग्रथमा कह्यु छे. तेनु तत्व तो बहुश्रुत जाणे छे

वळी कह्युं छे के, " जे बुद्धिमान पुरुषो सर्वथा रात्रे आहार वर्जे छे, तेमने एक मासे पक्षोपवासनु फल थाय छे " ते माटे श्रावकोए यावज्जीव सुधी रात्री भो जननो त्याग करवो. दररोज रात्रे चतुर्विध आहारना पच्चखाण करवा जो चारे आहार त्यजवानी शक्ति न होय तो अशन तथा स्वादिमतो अवश्य त्यजवा अने स्वादिमते सोपारी विगेरे दिवसे सारी रीते शोधी राखी रात्रे ग्रहण करवा नहीं तो तेमा त्रस जीवोनी हिंसानो पण दोष छे मुख्य रीते तो प्रात काले अने साय काले रात्रिनी नजिकनी बे बे घडी आहारनो त्याग करवो कह्यु छे के, "रात्रि भोजनना दोषने जाणनार जे प्राणी दिवसना मुखमा अने अवसानमा बे बे घडी छोडीने भोजन करे छे, ते पुण्यनुं भाजन थाय छे " वळी " रात्रि भोजन करवाथी घुवड, काक, मार्जार, गीध, साबर, सुवर, सर्प, वींछी अने घोनो अवतार आवे छे." आ प्रमाणे रात्री भोजननु पारलौकिक फळ छे.

रात्री भोजनविष रामायणमा पण दोष जणाव्यो छे, ते सबध एवो छे के, लक्ष्मण अने सीतासहित रामचद्र वनवासमा गया हता, ते प्रसगमा एक दिवस कुबेर नगरनी बहार एक वडना वृक्षनी नीचे रात्री वासो रह्या हता ते नगरना राजा **महीधर** ने **वनमाळा**नामे एक पुत्री हती ते लक्ष्मणनी उपर प्रथमथी रागी थयेली हती ते लक्ष्मणनो वनवास साभळी खेदयुक्त थइ सती दैवयोगे तेज वनमा तेज रात्रे गळे फासो खावा आवी आ देखाव जागृत रहेला लक्ष्मणना जोवामा आव्यो लक्ष्मणे तेनी पासे जईने पुछ्यु एटले तेणीए जे सत्य हतु ते कही आप्युं तत्काल लक्ष्मणे पाश छेदी नाखीने तेनुं पाणिग्रहण कर्युं वनमाळा के जे शुभ लक्षण वाळी सुचरिता हती, तेणे पोतानी प्रतिज्ञा प्रमाणे लक्ष्मणने योग्य वर जाणी पोता- ना स्वामी कर्या पछी लक्ष्मणे तेणीने जणाव्यु के, हमणा तमे पिताने घेर रहो, ज्यारे हु वनवास पूर्ण करी पाछो वळीश त्यार तमने साथे लइ जईश तथापि ते

रागीरमणीए मान्यु नहीं पछी लक्ष्मणे स्त्री, गाय, बाल हत्या विगेरे सोगन लीधा. तो पण तेणीए मान्युं नही त्यारे लक्ष्मणे कह्यु के जे तमे कहो, ते सोगन हु लउं वनमाला बोली के—'आ जगतमा रात्री भोजन करनारने जेटलु पाप लागे तेटलु पाप जो हु पाछो न आवु तो मने लागे' आवा जो सोगन ल्यो तो हु सत्य मानु, लक्ष्मणे तेवा सोगन लीधा एटले तेणीए लक्ष्मणने मुक्त कर्या

उपरना दृष्टांतमा वनमाळाए स्त्री, गाय अने बाळहत्या करता पण रात्रि भोजननु पाप बहु मोटु मानीने लक्ष्मणने तेवा सोगन आप्या हता, तेथी रात्रि भोजननुं पाप घणु उग्रछे, एम सिद्धथायछे. माटे सर्वभवी प्राणीओए अवश्य ते नियम ग्रहण करवो


इत्यब्ददिनपरिमितोपदेशसंग्रहाख्यायामुपदेशप्रासादग्रंथस्य वृत्तौ रात्रि भोजनविषये षोडशोत्तरशततमःप्रबंधः ॥ ११६ ॥

व्याख्यान ११७ मुं.

रात्रि भोजनरूप अभक्ष्य दुस्त्याज्यछे एवु धारी पुनः तेनो प्रतिबोध करवा माटे विवेचन करेछे.

स्वपरसमये गर्ह्यं, आद्यं स्वभ्रस्य गोपुरम् ।
सर्वज्ञैरपि यत्त्यक्तं, पापात्म्यं रात्रिभोजनम् ॥ १ ॥

व्याख्या

"स्व अने पर शास्त्रमा निंदवायोग्य, नरकना प्रथम द्वाररूप अने सर्वज्ञोए त्यजेलु रात्रिभोजन पापरूपछे" आ श्लोकमा स्व अनेपर शास्त्रमा निंदित करेलु एम कह्युछे ते विषेस्व शास्त्रमा लखेछे के,-प्रासुक आहार होय अने महाज्ञानी पुरुषो कुंथुवा विगेरे सूक्ष्मजीवोने पण जोईशके तेमहोय ते छता तेओ रण रात्रिभोजनने टाळेछे कदि दीपक विगेरेना साधनथी कीडी विगेरे स्थूलजीवो देखी शकाय पण सूक्ष्मजीवनी दया नहीं पळावाथी मूळव्रतनी विराधना थाय माटे रात्रिभोजन निषेध्युछे. तेविषे परशास्त्रमा पण लखेछेके,

मृते स्वजनमात्रेपि, सूतक जायते किल ।
अस्तगते दिवानाथे, भोजन क्रियते किमु ॥ १ ॥

"मात्र स्वजन मृत्यु पामवाथी सूतक लागे छे तो सूर्य अस्तपामतां भोजन करवुं केम घटे"

मद्यमासाशनं रात्रौ, भोजन कदभक्षण ।
ये कुर्वंति वृथातेषा, तीर्थयात्रा जपस्तप ॥

"जे मद्य पीवे, मासखाय, रात्रिभोजनकरे, अने कदनु भक्षण करे तेओनी तीर्थ यात्रा, जप अने तप सर्व वृथा थायछे" तेमज तेनुकरेलु एकादशीनुव्रत, रात्री जागरण, पुष्करतीर्थनी यात्रा, अने चान्द्रायण व्रत पण वृथा थायछे एम पद्मपुराण मा कह्युछे वळी भारतना अढारमा पर्वमा लखछेके, हे युधिष्ठिर ! तपस्वीएतो विशेषे करीने रात्रे जळपण पीवु नहीं अने विवेकी गृहस्थे पण पीवु नहीं महाभारतमा कह्यु छेके, "रात्रे जल रुधिर समान अने अन्न मास समान थायछे, तेथी रात्रिभो जन करनार रुधिर अने मासनु भक्षण करेछे

वळी अन्य शास्त्रमा लखे छे के, " रात्रे आहुति, स्नान, श्राद्ध, देवार्चन अने दान करवा नहीं अने भोजन तो विशेषपणे नहीं करवु "

वळी प्रथम श्लोकमा रात्रि भोजन नरकनु आद्य द्वार छे एम कह्यु छे ते विषे पद्मपुराणना प्रभासखडमा लखे छे के,

चत्वारो नरकद्वारा, प्रथमं रात्री भोजनं ।
परस्त्रीगमन चैव, सधानानंतकायिके ॥

"चार नरकना द्वार छे, प्रथम द्वार रात्रि भोजन, बीजु परस्त्रीगमन, त्रीजु द्वार बोळ अथाणु अने चोथु द्वार अनतकाय (कदमूळ) नु भक्षण छे " वळी आयुर्वेदमा कह्यु छे के, " ज्यारे सूर्य अस्त पामे छे त्यारे हृदय कमळ तथा नाभिकमल सकोच पामे छे, एथी रात्रे भोजन करवु नहीं तेमज तेम करवाथी सूक्ष्म जीवनु भक्षण थइ जाय छे ते कारणथी पण करवु नहीं " स्कद पुराणमा रुद्रे रचेला सूर्यनी स्तुति रुप कपाळ मोचन स्तोत्रने विषे लखे छे के,

एक भक्ताशनान्नित्य, अग्नि होत्र फलं लभेत् ।
अनस्त भोजनान्नित्य, तीर्थ यात्रा फल लभेत् ॥ १ ॥

" हमेशा एक वार भोजन करवाथी अग्निहोत्रनु फळ मळे छे अने जेओ सूर्यास्त पछी भोजन करता नथी तओने नित्य तीर्थ यात्रानु फळ मळे छे "—

इत्यादि अनेक शास्त्र वचनोथी रात्रि भोजन पापात्मक छे, तेथी सर्व द्रव्यने जोनारा श्रीसर्वज्ञ पुरुषोए तेने तजी दीधेलुं छे, कारण के, तेओ सर्वज्ञ होवाथी रात्री समये भोजनमा उत्पन्न थता सुक्ष्म जीवोनो वध निवारवाने असमर्थ हता, अर्थात् तेवा अंतर्दृष्टिवाळा सर्वज्ञोए पण निषिद्ध कर्युं छे तो बाह्य दृष्टिवाळा आपणे तो विशेषपणे त्याग करवा योग्य छे-ए तत्वार्थ छे आ मत उपर त्रण मित्रनो संबंध छे ते आ प्रमाणे—

कोइ गाममा एक श्रावक, बीजो भद्रिक अने त्रीजो मिथ्यात्वी-एम त्रणे वणिक मित्रो रहेता हता एक वखते तेओए कोइ गुरु पासे आ प्रमाणे धर्म साभळ्यो-"रात्रे जळ पीवा करतां स्वादिम खावामा बमणुं पाप लागे छे, स्वादिमथी खादिममा त्रमणुं पाप लागे छे अने खादिम करतां अशनमा त्रण गणुं लागे छे" वळी "रात्रे अंधकारमा सूक्ष्म जीवो दृष्टिए पडता नथी तेथी जे रात्रे बनाव्युं ते दिवसे खाय तो पण तेने रात्रि भोजन सरखुं समजवुं" आ प्रमाणे **रत्नसंचय** ग्रंथमा लखेलु छे. आ प्रमाणे छता जे अज्ञानी प्राणीओ कदाग्रहथी रात्रि भोजनने वर्जता नथी तेओ एडकाक्ष तथा मरुकनी जेम बहु दुःख पामे छे ते एडकाक्षनो संबंध आ प्रमाणे छे—

एडकाक्षनी कथा.

दशार्णपुरमा धनश्री नामे एक श्रावकनी पुत्री हती, तेनो धनदेव नामे पति हतो धनश्रीए माड माड समजावी एक दिवस धनदेवने रात्रिए दिवस चरिमनु प्रत्याख्यान कराव्युं तेज रात्रीए कोई व्यंतर देवी धनदेवनी परीक्षा करवाने माटे तेनी बेननु रुप लइ भोजन आपवा आवी धनश्रीए घणो वार्यो तो पण धनदेव भोजन करवा बेठो तत्काल देवीए लपडाक मारीने तेना लोचन बहार काढी नाख्या पछी तेनी पत्नी धनश्रीए कायोत्सर्ग करीने कोई देवीने आराधी एटले ते देवीए आवीने कोइए तरतमा मारेला घेटाना नेत्र लावी तेने लगाडी दीधा तेथी ते देखतो थयो अने त्यारथी एडकाक्ष नामथी प्रसिद्ध थयो

मरुकनी कथा श्राद्धदिनकृत्य वृहद् वृत्तिथी जाणी लेवी

आ प्रमाणे रात्रिभोजन संबंधी देशना साभळी पेला श्रावक मित्रेतो कुलाचारने लीधे घणा नियमो ग्रहण कर्या. बीजा भद्रिक मित्रे बहु विचारी ने एक प्रस्तुत नियमज ग्रहण कर्यो अने जे मिथ्यात्वी हतो ते जरापण प्रतिबोध पाम्यो नहीं. पेला बने मित्रनु कुटुंबपण अनुक्रमे ते नियममा तत्पर थयुं. हवे जे श्रावक

हतो ते तो क्रमे क्रमे शिथिल थतोगयो कोई कोईवार तजवा योग्य एवी दिवसनी आद्यनी तथा अतनी वे बे घडीमा पण खावा लाग्यो अने छेवटे रात्रे पण भोजन करवा लाग्यो एक वखते ते श्रावक अने भद्रिक बने कोई राजकार्यमा जोडाया सवारे जम्या विना गयेला ते सायकाले पाछा घेर आवता भोजननु असूर थई गयु सूर्य अस्त पाम्यो. पछी तेमना सवधी अने मित्रोए घणो आग्रह कर्यो तोपण भद्रिके भोजन कर्यु नहीं अने पेल्गे श्रावक ' हजु क्यां पुरेपुरी रात्री पडी छे ' एम बोलतो अधकारमा पण नि शूकपणे भोजन करवा बेठो शास्त्रमा कह्यु छे के–

रयणी भोजने जे दोषा, ते दोषा अंधयारंमि ।
जे दोषा अधयारंमि, ते दोषा संकडंमि मुहे ॥

"रात्रिभोजनमा जे दोष छे ते दोष अधकारमा जमवाथी लागे छे अने अधकारमा भोजन करवामा जे दोष छे ते साकडा मुखवाळा पात्रवडे खावापीवाथी लागे छे" आप्रमाणे कह्यु छे, त्यारे पछी रात्रीए अधकारमा जमतां महान् दोष लागे तेमा शु कहेवु ?

हवे पेलो श्रावक भोजन करवा बेठो तेना भोजनमा तेना मस्तकमांथी जु पडी, तेनु भक्षण करवाथी तेने जलोदरनो भयकर व्याधि थया जेथी ते पचत्व पामी गयो त्याथी ते मार्जार[1] योनिमा आव्यो ते भवमा अशुभ ध्यानवडे मृत्युपामी पेहेली नरके गयो पेलो मिथ्यात्वीपण रात्रे सर्पना विषवाळा अन्नने जमवाथी मृत्युपामी मार्जार थयो अने त्याथी पेहेला नरकमा उत्पन्न थयो

भद्रकनो जीव मृत्यु पामीने सौधर्म देवलोकमा देवता थयो जे श्रावकनो जीव हतो ते पेहेली नारकीमाथी नीकळी एक निर्धन ब्राह्मणने घेर श्रीपुज नामे पुत्र थयो अने जे मिथ्या दृष्टि हतो, तेपण नारकीमाथी नीकळी तेनोज अनुज बधु थयो आहीं भद्रिकना जीवे अवधि ज्ञानवडे तेनी उत्पत्ति जाणी त्या आवी नियम भगनु फळ जणावीने तेमने प्रतिबोध आप्यो ते उपरथी ते बनेए सर्व अभक्ष्यना नियमो ग्रहण कर्या ते बनेना माता पिता ब्राह्मण अने मिथ्यात्वी होवा थी तेमणे तेमना कदाग्रहनो निग्रह करवाने माटे सर्वथा भोजन निषिद्ध कर्यु बनेने उपरा उपरी त्रण लघन थई निजी रात्रे पेला सौधर्मदेवे ते नगरना राजाना उदर मा पीडा उत्पन्न करी ते अनेक उपायोथी शात थई नहीं त्यारे ते देवे जणाव्यु के, 'रात्रि भोजनना नियमवाला श्रीपुंजना हस्त स्पर्शथी राजानी पीडा शात थशे'

---

१ बीलाडो थयो.

तत्काळ मंत्रीओए श्रीपुजने त्या बोलाव्यो ते उचे स्वरे बोल्यो के, 'जो मारूं व्रत सत्य होयतो आ राजानी पीडा शांत थाओ ' आ प्रमाणे कही तेणे राजाना शरीरे करथी स्पर्श कर्यो एटले तत्काळ राजा व्यथा रहित थयो. राजाए प्रसन्न थईने तेने पांचसो गामनुं आधिपत्य आप्युं श्रीपुंजे सर्वस्थले पोताना नियमनो महिमा फेलाव्यो अनुक्रमे आयु पूर्ण करीने श्रीपुंज अनुज वधु साथे सौधर्म देवलोकमा देवता थयो. त्यांथी च्यवी अनुक्रमे ते त्रणे सिद्धिपदने पामशे

व्रतात्तमात्रान्नहि धर्मपूर्णता निमित्तमुख्य परिणामसंगतं ।
सभद्रकोपासकयोः प्रबंधतः विचार्य तत्त्व निशिभोजनं त्यज ॥

"मात्र व्रत लेवाथी काई धर्मनी पूर्णता नथी, पण तेमा दृढता साथे शुभ परिणाम राखवा ते मुख्य छे आ हकीकत उपर भद्रक अने श्रावक ए बे मित्रनो प्रबंध छे ते उपरथी तत्वने विचारीने रात्रि भोजननो त्याग करो "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेश सग्रहाख्याया मुपदेशप्रासादग्रन्थस्य वृत्तौ रात्रिभोजनविषये सप्तदशोत्तरशततमः प्रबंधः ॥ ११७ ॥

व्याख्यान ११८ मुं.

हवे बाकीना अभक्ष्य विषे कहे छे

अनंतकायसंधाने बहुबीज च भक्ष्यकम् ।
आमगोरसमिश्रं च द्विदलं सूक्ष्म सत्वजम् ॥ १ ॥
तुच्छफलं च वृत्ताकं रसेन चलितं तथा ।
अज्ञातफलमेतानि ह्यभक्ष्याणि द्विविंशतिः ॥ २ ॥

व्याख्या

" १५ अनंतकाय, १६ बोळ अथाणा, १७ बहु बीज वाळा फळ, १८ काचा गोरसे मिश्र एवा द्विदळ के जेमा सूक्ष्म जंतु उपजे छे, १९ तुच्छ फल २० वृंताक, २१ चलित रस वाळी वस्तुओ अने २२ अजाण्या फळ ए प्रमाणे बावीश अभक्ष्य जाणवा.

अनंतकाय एटले साधारण वनस्पति, तेनुं भक्षण अनंत जीवनो घात थवामा हेतु रुप छे, तेथी ते अभक्ष्य छे तेनुं स्वरुप आगळ कहेवाशे.

सधान एटले लींबु, आवली, बीली विगेरेनु बोळ अथाणुं ते अनेक जीवाना उत्पत्तिनुं निमित्त छे, तेमज लवणवाळा शाक राइ साथे मिश्र करेला त्रण दिवसथी वधारे रहे तो अभक्ष्य थाय छे एवो व्यवहार प्रवर्त्ते छे परंतु क्षारमा नाखेला लींबु विगेरेनो वर्ण गंध रस विगेरे बदलाय तो त्रण दिवस तडके राखेला पण अनाचिर्ण थाय—एम वृद्धो कहे छे

बहु बीज एटले पपोटा, अजीर विगेरे दाडम विगेरे फळोनी जेम अतरपड वगरना केवळ बीजवाळा फळो, तेओमा प्रत्येक बीजे जीवनो घात थाय छे अने जे फळ बहु बीजवाळु होय पण अदर पड होय जेवा के दाडिम टिंडोरा विगेरे ते अक्ष्यय नथी.

आम गोरस, एटले उना कर्या विनाना दुध, दहींने छाश-तेमा जो द्विदल मिश्र थाय तो तेमा केवळीगम्य सूक्ष्म जतुंओ उपजे छे. शास्त्रमा द्विदलनु लक्षण आ प्रमाणे कह्यु छे—" जेने पीलवाथी तेल नीकळे नहीं अने पीलता बे दळ (दाळ) जुदा पडे ते द्विदळ कहेवाय छे, एरंडी राइ विगेरेने पीलवाथी बे दळ थाय छे पण तेमाथी तेल नीकळे छे माटे ते द्विदल न कहेवाय " आवा कठोळनी साथे टाढा दुध, दहीं के छाश खावा नही, ते विषे परशास्त्रमा पण लखे छे के—

गोरस माषमध्येतु मुद्गादिसु तथैव च ।
भक्षमाण भवेन्नुन, मास तुल्य च सर्वदा ॥

" अडद अने मग विगेरे कठोळमा गोरस भेळवीने भक्षण करे तो ते मास तुल्य थाय छे " तेथी घोळवडा एटले काचा दहींमा नाखेला वडा अभक्ष्य छे पण जो प्रथम काची छाश के दहींने गरमकरीने पछी तेमा द्विदल निष्पन्न पदार्थ नाखे तो ते दोष युक्त नथी एम वृद्धो पासेथी साभळ्यु छे आ वातने केटलाएक ढुंढीयादिक मानता नथी पण ते तेमनो दुराग्रह छे जेम विचार संसक्त निर्युक्तिमा कह्यु छे के, ' जो विया जातना वृक्षनी यष्टि अने अंकोल वृक्षनी धाणी करावीने तेमा सेलडी पीले तो तत्काळ समूर्छिम माछलाओ उत्पन्न थाय छे ' तेवी रीते अहिं पण जाणवु वळी कह्यु छे के, "मग तथा अडद विगेरे द्विदल काचा गोरसमा पडता तत्काळ त्रस जीव उत्पन्न थाय छे, तेमज बे दिवस उपरातना दहींमा पण त्रस जीव उपजे छे " कोइ ठेकाणे ' तिदिणुवरिं ' एटले त्रण दिवस पछी एवो पाठ छे, ते योग्य लागतो नथी कारण के बे दिवस व्यतित थयेलु दहीं अभक्ष्य छे एम आपोगशास्त्रमा कह्यु छे आटला उपरथी काचा गोरस साथे द्विदल मिश्र थवाथी

तेमां अनेक सूक्ष्म जीव उपजे छे. एम सिद्ध थाय छे तेथी ते अभक्ष्य जाणवु ए प्रथम श्लोकनो अर्थ थयो

हवे तुच्छ फल एटले महुडां, जाबू, बोर, कोठा विगेरे उपलक्षणथी तुच्छ पुष्प तथा पत्रनु पण ग्रहण करवु आहिं पुष्प ते केरडा विगेरेना लेवा अने पत्र ते वर्षाकाळमा थती तादळजा विगेरेनी भाजी लेवी तथा कोमळ मग चोलानी सींगो पण ग्रहण करवी कारण के, तेमां घणा जीवो हणाय छे अने तृप्ति थती नथी

हवे वृताक के जे कामोद्दीपक अने निद्रा वर्धक होवाथी दूषित छे ते विषे लौकिक शास्त्रमा पण लखे छे "शिव पार्वतीने कहे छे, हे प्रिये 'वृताक, कालींगडा अने मूळा विगेरेनो भक्षण करनार मूढ पुरुष अंतकाळे मने संभारशे नहीं" वळी "शास्त्रने जाणनार पुरुषे, वृत्ताक, धोळावृत्ताक, मूला अने रातामूला वर्जवा, एम मनुए कहेलुं छे" आ प्रमाणे भारतना शांतिपर्वना प्रथम पादमा लखे छे.

वळी रसथी चलित एटले वेस्वाद थयेला, वासी द्विदल, पुछा, वडा अने रांधेला कुर विगेरे ते शिवाय बीजु पण कोहेलु सर्व अन्न त्यजी देवु, कारणके ते बहु जीव ससक्त थई जायछे कह्यु छे के, "तेवु अन्न सचय करवाथी मिथ्यात्व वधे छे, वापरवाथी विराधना थायछे अने तेमा उदर विगेरे घणी जातना समूर्छिम जीवो उपजेछे, इत्यादि घणा दोष थाय छे" एनो भावार्थ एवो छे के, तेवु अन्न जो रात्रे वासी राख्यु होय तो ते जोईने बीजा मिथ्यात्व पामे छे अने केटलाक निंदा करे छे के, "जुओ आ श्रावक! केवो सचय करनाराछे!" वळी तेवी रीते वासि राखवाथी सयमनी पण विराधना थायछे, तेमज तेवा साधुवा विगेरेने राखी मुकवा थी करोळीयानी जाल तथा बीजा सूक्ष्म प्राणीओनी जाति तेमा उपजे छे पोळी, मालपुवा विगेरे वासी राखवाथी तेमा लालीया जीव उत्पन्न थायछे तेवा आहार नी अभिलाषा करवा उदर आवे छे, अने तेना करडवानो अवाज साभळी मार्जार विगेरे त्यां आवी तेमनु भक्षण करी जायछे इत्यादि घणा दोष थायछे ए प्रमाणे श्रीवृहत्कल्पनी टीकामा कहेलुं छे लालीया जीव द्वींद्रिय जातिना छे, एम वृद्ध संप्रदाय छे. केटलाएक दुढकादि आ चळीत रसने पण अभक्ष्य मानता नथी ते अयुक्त छे कारण के, रोटली विगेरेमा ते प्रत्यक्ष जणायछे उपलक्षणथी काळाति क्रम थयेला पक्वान्नने पण चळीत रसमा गणवु ते विषे एम लख्युं छे के, "जे दिवसे पक्वान्न कर्युं होय त्यारथी वर्षा कालमा पंनरदिवस सुधी कल्पे, शीत काळमा एक माससुधी कल्पे अने उष्ण ऋतुमा विश दिवससुधी कल्पे. मुनि त्या सुधी ते ग्रहण करे" केटला एक एम कहे छे के, ज्या सुधी वर्ण, गंध, रसादि

बगडयु न होय त्या सुधी कल्पे छे वली आर्द्रा नक्षत्रथी आंबानो रस, अने बे दिवस पछीनुं दही अने छाश पण सेववा योग्य नथी– आ प्रमाणे भक्ष्याभक्ष्यनो विचार सम्प्रदायथी जाणी लेवो

वळी अजाण्यु एटले जेनी जातिके नाम जाणवामा न होय तेवा फळ, पत्र, पुष्प अने मूळनो त्याग करवो ते विषे ब्रह्मांड पुराणमा लखे छे के, अभक्ष्यनु भक्षण करवाथी कठ रोग विगेरे थायछे शातातप ऋषिना रचेला शास्त्रमा पण कह्यु छे के, अभक्ष्यनु भक्षण करवाथी हृदयमा कृमि उत्पन्न थायछे.

उपर प्रमाणे सर्व मळीने बावीश प्रकारना अभक्ष्य छे ए बीजा श्लोकनो अर्थ कह्यो.

उपर कहेला सर्व अभक्ष्य पापरूप छे, तेथी श्रीजिनेंद्रना आगमना मर्मने जाणनारा व्रतधारी गृहस्थोए इंद्रियोने वश करीने सर्वदा सेववानहीं.



व्याख्यान ११९ मुं.

चलितरस एटले वासी अन्न विगेरे अभक्ष्य कह्यु छे. पण ते बाळ गोपाळ विगेरे सर्वथी त्याग करवु अशक्य छे माटे पुन तेनुं वर्णन करे छे

रसै चलितंनि स्वादं द्वयाक्षाणा योनिस्थानकं ।
पर्युषित कुत्सितान्नं भक्षणा दुःखमासदेत ॥

चलितरस एटले " रसथी चलित थयेलु, नि स्वाद थयेलु, बेइन्द्रिय जीवोनी उत्पत्तिनुं स्थानक, वासी रहेलु, अथवा कोही गयेलु अन्न भक्षण करवाथी प्राणी दु खने प्राप्त थाय छे " आ अर्थने दृढ करवाने नीचे प्रमाणे दृष्टात छे—

कनकपुर नामना नगरमा जिनचद्र नामे एक श्रेष्ठी हतो तेने शीलवती नामे पत्नी हती ते उभयथी गुणसुदर नामे एक पुत्र थयो हतो ते बाल्यवयथी

धर्म रहित हतो एक वखते तेनी माताए तेने कह्यु के, वत्स ! तु वासी भोजन कर नही, केमके वासी भोजन करवाथी देहमा धाधर, करोळीया, अने त्वचा विकार विगेरे तथा वात सबधी अनेक रोगो थशे, वळी बुद्धीनु हीनपणु थशे ते साथे त्रस जीवनी हिंसा लागशे ते सबधी विशेष दोषो जाणवा होयतो श्री समयामृतसूरिनी पासे जईने जाणी लेजे तेणे उद्यानमा रहेला ते गुरुपासे जईने तेना दोष पुछ्या. एटले गुरु बोल्या के, तूं सुभाग नगरमा जा त्यां थावर नामे एक चडाल छे, ते तने एना दोष कहेशे गुणसुदर सुभागनगरे गयो, त्या थावर चडालनु घर शोधी तेने वासीना दोष पुछ्या थावरे कह्युं के, हु कहीश पछी ते चडाळे एक गृहस्थनी दुकानेथी शाळ, दाळ विगेरे सीधु तेने अपाव्यु, तेणे लीधु अने ते कोई कृपणने घेर मूल्य आपीने रधाव्यु ज्यारे ते भोजन करवा बेठो त्यारे ते कृपणनी स्त्रीए पुच्छ्युं के, तमे क्याथी आव्या छो ? गुणसुदरे पोतानो सर्व वृत्तात जणाव्यो ते उपरथी ते स्त्रीए पोताना भाई तरीके ओळख्यो बीजे दिवसे गुणसुदर जवाने तैयार थयो, पण ते स्त्रीए आग्रहथी रोक्यो पछी तेणीए पोताना लुब्ध पति पासे शाळि विगेरे सारु भोजन राधवा माग्यु, एटले तेणे कह्युं के, 'वाल अने तेल लई जईने भोजन कराव्य, बीजु नही मळे' पण ते स्त्रीए तो बीजी दुकानेथी घी खाड विगेरे लावी गुणसुदरने माटे घेबर विगेरे करवा माड्या ते वातनी तेना पतिने खबर पडी एटले ते बहु खेद पाम्यो अने क्रोधथी तेणे वासी अन्न खाधु तेथी ते तत्काळ हृदय फाटी ने मृत्यु पाम्यो स्त्रीए जाण्यु के, में मारा भाईने भोजन करवा राख्यो तेथी आ बन्यु, पण तेणीए आ वात कोईने जणावी नही कारण के जो ते वात बहार पडे तो ते अपुत्र होवाथी बधु द्रव्य राजा लइ जाय आवा भयथी ते वात कोईने जणाव्या वगर तेणीए श्रेष्ठीना शबने घरमा खाडो खोदीने दाटी दीधु पछी तेणीए पोताना बधुने गुप्त रीते ते वात जणावी अने कह्यु के, भाई ! तु अहीं रहीने तारा बनेवीना चार कोटी द्रव्यनो व्यापार कर्य अने श्रेष्ठी विषे कोई तने पुछे तो तारे कहेवु के, ते दरीआ वाटे व्यापार करवा गया छे जो तेने जीवतो कहीशु तो मारे सौभाग्यवतीनो वेष रखाशे अने जो मृत्यु पामेलो कहेशु तो विधवापणु भोगववु पडशे तेथी शोक के रुदन काई करवु नहीं केमके तेम करवाथी उलटु नुकशान छे" आवा भगिनीना वचनथी गुणसुदर त्या रही दुकाने बेसीने व्यापार करवा लाग्यो.

हवे पेलो चडाल गुणसुदरने अन्न अपावी घेर गयो भोजन समय थतां तेनी स्त्रीए 'आ आजेज राध्यु छे.' एम कठोर अने असत्य वचन कही, ते चडाळने वासी भोजन खावा आप्यु ते साथे बावीश पोहोरनी छाश पण आपी ते समये काईक अधकार पण थयो हतो चडाळे ते वासी छे एम जाण्युं पण क्षुधार्त्त होवाथी

पोताना नियमने गण्यावगर तेणे खाधु तेथी शूलना रोगवडे गाढ निद्रामा मृत्यु पाम्यो अने गुणसुदरनी बेनना उदरमा पुत्रपणे उत्पन्न थयो (जे रात्रे शेठ जीवता हता.)

केटलाक दिवसो गया पछी गुणसुदर मातगना पाडामां गयो. त्या थावर मातगने घेर शोकयुक्त आक्रद साभळी तणे कोईने पुछ्युं, एटले तेणे थावर चंडाळ नु मरण जणाव्यु ते साभळी गुणसुदर खेद पाम्यो अने 'अरे' तेने अकस्मात् शु थयुं? तेना मरण पामवाथी मारो सदेह पण भाग्यो नहीं' एम विमासवा लाग्यो. पछी ते स्वदेश जवाने तैयार थयो पण तेनी बहेने पोताने पुत्रनो जन्म थता सुधी रोक्यो

एक दिवस गुणसुदर हाटे बेठो हतो तेवामा कोई स्त्रीए आवीने तेने कह्यु के, तने तारो भाणेज तेडावे छे ते विस्मय पामीने घेर गयो त्या तरतना जन्मेला बाळकने दीठो तेणे कह्यु के, तुं थावर चडाळने घेर जा, त्यां तरतना जन्मेला बालकने थावरनी स्त्री मारी नाखे छे तेने बचाव्य सुंदरे त्या जई चडालीने कह्यु के अरे! शामाटे हिंसा करे छे? चडाळी बोली-शु कहु, आ पुत्र ज्यारे उदरमा आव्यो त्यारे तमारो मित्र मृत्यु पाम्या अने घरमा अत्यत दारिद्र आव्यु' पछी सुदरे तेने घणु द्रव्य आपीने ते पुत्रने मृत्युथी बचाव्यो पछी ते घेर आव्यो एटले तेनो भाणेज बोल्यो के- मामा, तमारो सदेह भग्न थयो? मामाए कह्यु, भग थयो नथी त्यारे ते बोल्यो- हु थावर चडाळनो जीव छुं ते तारा जेवा साधर्मीनी भक्ति करवाथी अने अभक्ष्यनो नियम पाळवाथी अहिं चार कोटी द्रव्यनो स्वामी थयो छु तेमा पण मे किंचित् विराधना करी हती तेथी ते भवमा हु शूलरोगना महाव्याधिथी मृत्यु पाम्यो हतो अने जे तारा बनेली श्रेष्ठी लोभथी तेमज वासी अन्ननु भक्षण करवाथी मृत्यु पामीने थावर चंडालने घेर पुत्रपणे अवतर्यो छे, माटे हवे तमेपण आजथी अभक्ष्य खोवाना नियम अगीकार करो " आ प्रमाणेनी हकीकत जाणवाथी नि सदेह थयेलो सुदर तरतज ते नियम लई पोताने नगरे आव्यो, अने सर्व वृत्तात पोतानी माताने जणाव्यो ते साभली तेनी माता हर्ष पामी कह्यु छे के,

अधमा सान्वया सुना मध्यमा द्रविणार्जनै ।
उत्तमा रुष्यति माता तैस्तै सुकृत कर्मभि ॥

" अधम माता, पुत्रनो वश वधवाथी राजी थाय छे, मध्यम माता पुत्र द्रव्य कमाय तेथी हर्ष पामे छे अने उत्तम माता पुत्र अनेक प्रकारना सुकृत करे तेथी हर्ष पामे छे "

गुणसुंदरे एक वखत गुरु महाराजने पुछ्युं के—स्वामी! आपनी आज्ञा प्रमाणे करवाथी मारो सदेह तो दूर थयो पण मारा बाळक भाणेजने वाचा शी रीते

थइ ? गुरु बोल्या के, ते चंडाळे अंत समये पोताना मित्र कोइ व्यंतर देवने पुछ्यु हतु के, मित्र ! सुदरनो संशय माराथी भग्न थयो नहीं, तेनु मारे शु करु ? देवे कह्यु के, तु पेटा कारण श्रेष्ठीने घरे ज्यारे जन्मीश त्यारे हु तारा मुखमा प्रवेश करीने तेनो संशय दूर करीश एथी तेने बाळपणे पण वाणी थइ हती. आ प्रमाणे साभळी सुदर श्रावकधर्म पाळी, प्राते मुनिधर्मने पण स्वीकारी अंते स्वर्गने प्राप्त थयो.

"उपर कहेला चरित्रना तत्वने विचारी अने जेमा सर्व इंद्रियोनी पटुता प्राप्त थाय छे तेवु सन्मनुष्यपणु मेळवी भविप्राणीओ वासी अने कोहेला अन्ननो त्याग करवारुप व्रतने ग्रहण करो "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेश संग्रहाख्याया मुपदेशप्रासादग्रंथस्य वृत्तौ चलितरस अभक्ष्य विषये एकोनविंशोत्तरशततमः प्रबंध ॥ ११९ ॥

व्याख्यान १२० मुं.

हवे अजाण्या फळ संबधी गुण दोष कहे छे.

फलान्यज्ञातनामानि पत्रपुष्पाण्यनेकधा ॥
गुरुसाक्ष्यात्मसौख्यार्थं त्याज्यानि वंकचूलवत् ॥ १ ॥

व्याख्या.

" जेना नाम जाणवामा न होय तेवा अजाण्या फळ, पुष्प अने पत्रोने आत्मसुखने माटे गुरुनी साक्षीए वंकचूल नी जेम त्यजी देवा "

वंकचूलनो प्रबंध आ प्रमाणे—

वंकचूलनी कथा.

ढींपुरी नामे नगरीमा विमलयशा नामे राजा हतो. तेने पुष्पचूल अने पुष्पचूला नामे पुत्र पुत्री हता तेमा पुष्पचूल प्रकृतिथी बलवान् अने उद्धत हतो, तेथी लोकमा वंकचूल एवा नामथी प्रख्यात थयो हतो तेनी रंजाडथी कंटाळीने प्रजाए राजाने फरीयाद करी, राजाए क्रोध पामी तेने नगरीनी बहार काढी मुक्यो. तेना अनुरागथी तेनी स्त्री अने तेनी बेहेन पुष्पचूला तेनी पाछळ गया अरण्यमा जता भिल्ललोकोए तेने पोतानो राजा कर्यो.

एक वखते ते सिंहगुहा नामनी पाळमा कोइ आचार्य पधार्या तेमणे वर्षा काळना चारमास रहेवाने माटे वंकचूलनी पासे स्थाननी याचना करी वंकचूले कह्यु के, जो अहिं रहेवु होयतो मारी सीमामा धर्मोपदेश करवो नहि, मौन रहे सूरिए कह्यु के, ते अमारे मान्य छे, पण ज्यासुधी अमे रहीए त्यासुधी तमारे जीव हिंसा करवी नहीं वंकचूले ते स्वीकार्यु चार मास पछी विहार करवानो समय आव्यो एटले आचार्ये वंकचूलने जणाव्यु कह्यु छे के, "साधु, पक्षी, भ्रमरना टोळा, गोकुळ अने मेघ एक ठामे रहेता नथी " सूरिनी साथे केटलेक सुधी वंकचूल वळा वबा गयो ज्यारे पोतानी सीमा पूर्ण थवाथी ते उभो रह्यो त्यारे सूरि बोल्या के, हे भद्र! तु आटला अभिग्रह ले– १ अजाण्या फळ खावा नहीं, २ सात आठ पगला पाछा हठीने कोइनी उपर घा करवो, ३ राजानी स्त्रीने सेववी नहीं, अने ४ कागडा नु मास खावु नही आ नियम सुगम लागवाथी वंकचूले ग्रहण कर्या पछी ते गुरुने नमीने पोताने घेर गया

एक समये वंकचूल बीजा चोरोनी साथे कोई साथने लूटीने अरण्यमा पेठो ते वखते सर्वने क्षुधा लागी बीजा चोरलोकोए क्षुधार्त्तथई किंपाकना फळ खाधा अने वंकचूले अज्ञात फळनो अभिग्रह होवाथी ते फळनु नाम न जाणवाना कारण थी खाधा नहीं बीजा चोर मृत्यु पामी गया कारणके किंपाकना फळ विषमय होय छे ते जोई वंकचूले विचार्यु के, अहा, नियमनु फल केवु उत्तम!

पछी ते त्याथी रात्रे पोताना घरमा आव्यो, त्या पोतानी पत्नी साथे एक पुरुष ने सुतेलो जोयो एटले कोपथी तेने मारवाने तयार थयो त्या गुरुए आपेलो नियम याद आववाथी सात आठ पगला पाछो हठ्यो तेथी हाथमा उगामेलु खड्ग द्वार साथे अथडायु, तेना अवाजथी तेनी बेन जागीउठी अने बोली के, तु कोण छे? स्वर उपरथी बेनने ओळखीने तेणे पुछ्यु के, आवो पुरुषवेश केम लीधो छे? तेणीए कह्यु के, पुरुषनो (तारो) वेश लईने नटनु नृत्य जोवा सभामा गई हती त्याथी पाछी फरता थाकी जवाथी वेश बदल्या विना एमने एम मारी भाभी साथ सुई गई हती ते साभळी तेणे पोताना नियम देनारा गुरुनी प्रशसा करी

एक वखते पेला सूरिना शिष्यो त्या आव्या, तेमने नमी वंकचूले श्रीजिन प्रासाद कराववा विषे धर्मदेशना साभळी तेथी तत्काळ तेणे तेज पल्लीमा चर्मणवती नदीने तीरे एक जिनप्रासाद कराव्यो तेमा श्रीवीर भगवतनी स्थापना करी अनुक्रमे ते तीर्थ थयु ए तीर्थनी यात्रा करवाने कोई वणिक स्त्री साथे त्या आव्यो चर्मणवती नदी उतरवाने ते दपती वाहाणमा बेठा प्रासादनु शिखर जोता ते वणि-

कनी स्त्री चंदनादिक उत्तम द्रव्यो सुवर्णना कचोळामा लईलईने तेनी सामे नाखवा लागी एटलामा ते वणिकस्त्रीना हाथमाथी कचोळु नदीमा पडी गयु ते जोई वणिक बोल्यो–अरे भद्रे! बहु खोटु थयु–आ कचोळु राजानु छे, आपणे घराणे राख्यु छे, तेमा अमूल्य रत्न जडेलाछे, हवे हु तेने शु उत्तर आपीश? पछी ते वणिकनी आज्ञाथी कोइएक माछी ते लेवा नदीमा पड्यो अदर शोधता श्रीपार्श्वनाथना बिंबना खोळामा रहेलु ते कचोळु तेणे दीठु ते लईने तेणे वणिकने आप्यु. ते रात्रे खलासीने स्वप्न थयु के, नदीमा पुष्पमाळा नाखवी, ते माळा जे स्थाने स्थिर थाय तेनी नीचे श्री पार्श्वनाथजीना बिंबनी शोध करवी, अने ते एक बिंबज लइने वकचूलने आपवु खलासीए ते प्रमाणे कर्यु अने श्रीपार्श्वनाथजीनु बिंब काढीने वकचूलने आप्यु तेथी घणा खुशी थई तेणे ते माछीने पुष्कळ दान आप्यु अने श्रीवीरप्रभुना प्रासादनी बहार मडपमा ते बिंबने तेणे स्थापित कर्यु पछी नवीन चैत्य करावी तेमा स्थापवाने माटे ते बिंब लेवा माड्यु, घणा पुरुषोए मळीने प्रयत्न कर्यो, पण ते बिंब त्याथी चलित थयु नही त्याज रह्यु अद्यापि पण ते त्याज छे त्यारपछी एक दिवस पेला माछीमारे आवीने कह्यु के, हे स्वामी! बीजु एक बिंब अने सुवर्णनो रथ नदीमा ते स्थानके छे एटले वकचूले सभा वच्चे पुछ्यु के, आ बने बिंब विषे कोई काइपण हकीकत जाणे छे? एटले एक वृद्ध पुरुषे कह्यु के, "देव, पूर्वे प्रजापाळ नामे राजा शत्रुना सैन्य साथे युद्ध करवा गया हता, ते समये शत्रुना भयथी ते राजानी राणी पोतानु सर्वस्व अने आ बे बिंब सुवर्णरथमा राखीने आ चर्मणवती नदीने जळदुर्ग धारी तेमा एक वहाणमा रही हती एवामा कोइ दुर्जने आवीने तने कह्यु के, राजा मृत्यु पाम्या ते साभळताज तेणीए ते बिंब तथा रथ सहित वहाणज आक्रमण करावडे जळमा डुबाडी दीधु पोते जिनध्यानथी मृत्यु पामीने देवता थयेल हशे, नहीं तो आ बिंबनो महिमा कोण करे? ते बे बिंबमाथी एक बिंब तमे लाव्या छो अने बीजु एक बिंब त्या ज रहेल जणाय छे" आ प्रमाणे साभळी ते बिंब लेवाने माटे वकचूले अनेक उपाय कर्या पण ते निकळ्यु नहीं, एम सभळाय छे के, ते बिंब अद्यापि त्याज छे अने वर्षमा एक दिवस दर्शन आपे छे श्री वीरप्रभुना बिंबनी अपेक्षाए श्रीपार्श्वनाथना बिंब बहु नाना होवाथी श्रीवीर प्रभुनी आगळ ते बाळकरूप छे एवु धारी त्याना मेवाडी भिल्ल विगेरे लोकोए तेनु चेल्लण पार्श्वनाथ एवु नाम पाड्यु ते सिंहगुहा पल्लीने ठेकाणे अनुक्रमे मोटु नगर वसेलु छे अद्यापि श्रीवीर भगवतनी तथा चेल्लणपार्श्वनाथनी यात्रा करवा अनेक सघो त्या आवी तेमने आराधे छे.

" एक वखते वंकचूल उज्जयिनी नगरीमां घोना पुच्छे वळगीने राजाना भंडारगृहमां पेठो त्यां ते राजानी मुख्य पटराणीना जोवामां आव्यो, एटले तेणे कोप करीने पुछ्युं के, तुं कोण छुं? तेणे कह्युं के, हुं चोर छुं राणीए कह्युं के, भय पामीश नहीं मारी साथे संगम कर्य वंकचूले कह्युं के, तुं कोण छुं? ते बोली के, हुं राजानी राणी छुं, चोरे कह्युं के जो तुं राजपत्नी हो तो मारी माता छो माटे हुं पाछो जाऊं छुं ते सांभळी राणीए नखवडे पोतानुं शरीर विदारण करीने पोकार कर्यो, एटले तत्काळ रक्षकपुरुषोए आवीने वंकचूलने बांधी लीधो आ बधी हकीकत गुप्त उभेला राजाए सांभळी तेथी राजाए चिंतव्युं के, अहो, स्त्रीचरित्र केवुं दुर्लक्ष छे! प्रात काळे रक्षको तेने राजानी पासे सभामां लइ गया राजाए तेना बंधन छोडाव्यां एटले ते नमस्कार करीने आगळ बेठो राजाए पुछ्युं के तुं मारा मंदिरमां केम पेठो हतो? वंकचूल बोल्यो के, देव! हुं चोरी करवाने पेठो हतो, त्यां मने देवीए दीठो, एटले सीपाइओ पासे पकडाव्यो वंकचूले पेली नीच वार्त्ता कही नहीं, तेथी राजा घणो खुशी थयो अने तेने पुत्र करीने राख्यो राजाए पटराणीने मारवा मांडी त्यारे वंकचूले तेने बचावी आवी रीते प्रत्यक्ष नियमोनुं फळ देखी वंकचूल मनमां वारंवार विचारवा लाग्यो के, अहो, नियमोनुं फळ केवुं उत्तम छे

एक वखते राजाए तेने कोईनी साथे युद्ध करवा मोकल्यो त्यां ते शत्रुसैनिकोना गाढ प्रहारोथी घायल थयो राजसेवको तेने राजा पासे लइ आव्या राजाए तेना औषध माटे घणा वैद्योने एकठा कर्या वैद्योए कागडाना मांसनुं औषध बताव्युं, पण वंकचूले तेनो नियम करेलो होवाथी ते औषधनी इच्छा करी नहीं पछी राजाए तेना मित्र जिनदासने तेनी शालीग्रामथी बोलाव्यो जिनदास उज्जेणीए आवतो हतो त्यां मार्गमां बे देवीओने रुदन करती तेणे दीठी श्रेष्ठीए पुछ्युं के, भद्रे! केम रुवो छो? ते बोली के, भद्र! अमे बने भर्ता वगरनी सौधर्म देवलोक निवासी देवीओ छीए काकपक्षीनुं मांस न खाय तो वंकचूल अमारो पति थाय तेम छे पण तमारा वचनथी जो ते नियमनो भंग करशे तो ते दुर्गतिने पामशे अने अमे भर्त्तार विनानी रहेशुं, एथी अमे रुदन करीए छीए ते सांभळी जिनदास बोल्यो के-देवी! रुदन करो नहीं, हुं तेने विशेष दृढ करीश पछी जिनदास उज्जेणी आव्यो अने राजानी प्रेरणा छतां वंकचूलने तेणे कह्युं के, " मृत्यु आवे ते सारुं, दारिद्र्यनो संगम थाय ते सारुं, पण ग्रहण करेला व्रतनो भंग थाओ ते सारुं नहीं. " इत्यादि वचनोथी वंकचूल विशेषपणे व्रतमां दृढ थयो अने

छेवटे मृत्यु पामी अच्युतकल्पमां देवता थयो ज्यारे जिनदास त्याथी पाछो वळयो त्यारे पाछी पेली वने देवीओने मार्गमां रुदन करती तेणे दीठी एटले पुछ्युं के, भद्रे! हवे केम रुवोछो? मे तेने मांस भक्षण करवा दीधु नथी ते बोली के, भद्र! त नियमनी अधिक आराधना करवाथी अच्युत देवलोकमां देवता थयो, एटले अमे तो भर्त्तार विनानीज रही ते सांभळी जिनदास पोताने घेर गयो त्यारथी आ ढींपुरी तीर्थने निर्माण करनार **वंकचूल** अधिक प्रख्यात थयो.

" जेम श्री वंकचूल चोर छतां अंगिकार करेला नियमोने दृढपणे पाळवाथी अच्युतकल्पने पाम्यो, तेम अन्य भव्य प्राणीओ पण सर्व अभक्ष्यनो त्याग करवाथी अत्यंत सुखनी पुष्टिने पामेछे "

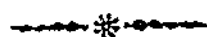
इत्यब्ददिनपरिमितोपदेश संग्रहाख्याया मुपदेशप्रासाद
ग्रथस्य वृत्तौ अभक्ष्यनियमविषये विंशत्युत्तरशततम.
प्रबंध. ॥ १२० ॥

आठमो स्तंभ समाप्त.



श्री उपदेश प्रासादे

नवम स्तंभ प्रारंभ.



व्याख्यान १२१ मु.

सातमा व्रतनी अतर्गत

अनंतकाय स्वरूप.

प्रसिद्धा आर्यदेशेषु, कदा अनत कायिका ।
द्वात्रिंश- सख्यया ज्ञेया, त्याज्यास्ते सप्तमे व्रते ॥ १ ॥

व्याख्या.

" आ आर्यदेशमा कद विगेरे बत्रीश प्रकारना अनतकाय प्रसिद्ध छे, ते सातमा व्रतमा त्याग करवा योग्यछे " कद प्रमुख अनतकाय बत्रीश प्रकारना छे, ते आ प्रमाणे-१ सूरण कद, २ वज्रकद, ३ लीली हळदर, ४ लीलु आदु, ५ लीलो कचुरो, ६ सतावरी, ७ बिराली (वरियाळो कद), ८ कुआर, ९ थोर, १० गलो, ११ लसण, १२ वशकारेला, १३ गाजर, १४ लुणीनी भाजी, १५ लोढीनी भाजी, १६ गिरिकर्णीका, १७ पत्रना कुपलीआ, १८ खरसुओ, १९ थेगी, २० लीली मोथ, २१ लोण रुखवली, २२ विल्लहुडा, २३ अमृत वेल, २४ मुळा (कादा), २५ भूमिमाथी नीकळता वीलाडीना टोप, २६ विदळना अकुरा २७ ढकवथ्थुलो, २८ सूअरवल्ल २९ पल्लक, ३० कोमळ (काची) आवली, ३१ आलु कद, ३२ पिंडालु-आ बधा नामे करी अनतकाय छे ते शिवाय बीजा लक्षणवडे अनतकाय छे आ सर्व कदजाति अनतकायिक छे तेओना प्रसिद्ध भेद नामथी कहेछे १ सूरण कद, प्रसिद्धछे २ वज्रकद, प्रसिद्धछे ३ आर्द्र (लीली) हळदर ४ आद्रकद, शृगबेर ते लोकमा 'आदु' एवा नामथी प्रसिद्ध छे ५ आर्द्रकचूरक ६ शतावरी ७ बिराळिका एक जातनी प्रसिद्ध वेल छे. ८ कुमारी एटले कुवार ९ थोर १० गडुची एटले गळो ११ लसुन ते लसण, १२ वश कारेला १३ गाजर १४ लवणक एक जातनी वनस्पति छे, जेने बाळवाथी सज्जिका (साजी) उत्पन्न थायछे १५ लोढक एटले कमलिनीनो कद १६

गिरिकर्णिका एक जातनी वेल १७ कुपलीआ–पात्रा–ते प्रौढ पत्र थया पेहेला वीज उगवाने समये जे अकूरा थायछे ते बधा लेवा आहिं शिष्य शका करेछे के, "शास्त्रमा कह्यु छे के, 'सर्व किशलय–कुपलीआ उगती वखते अनत काय कहेलाछे' ते वाक्य तो तमे सत्य कर्यु पण अन्यत्र शास्त्रमाज कहेलु छे के, "जोनियमूले जीवो सोविय पत्ते पढमया एति" एटले जे मूळनो जीव छे ते पण प्रथम उगता पत्रमा आवेछे ए वाक्यनु समाधान शु? एक ठेकाणे साधो छो तो बीजे ठेकाणे तुटेछे" गुरु कहेछे तेनो उत्तर साभळ, उतावळो न था जे बीज छे तेनो जीव वर्षाकाळ तथा पृथ्वी विगेरे सामग्री पामीने उगवानी अवस्थामा तेनो ते रहेछे अथवा बीजो पण होयछे बीज ने मूळप्रथम पत्रमा एक जीवपणु कहेलुछे, ते अमे पण जाणीए छीए पण कह्यु छ के, बीजमा मूलपणे उत्पन्न थईने ते बीजनो जीव अथवा बीजो जीव ते पछी थनारी उगवानी अवस्थाने उत्पन्न करेछे उद्गम वखते किशलय कुपलीयानी अवस्थामा जरूर अनता जीवो उत्पन्न थायछे तेथी ते मळनो जीव पोतानी स्थितिना क्षयथी विनाश पामी तेज जीव अनत कायपणाने प्राप्त करी ज्यासुधी प्रथम पत्र थाय त्यासुधी वधेछे एटले तेमा विरोध आवतो नथी केमके किसलयमा अनत कायपणु अने एक कायपणु बंने होयछे. केटलाएक आचार्यो प्रथम पत्र ए शब्दथी बीजनी पेहेली उगवानी अवस्थाज कहेछे. पछी ते प्रत्येक हो के साधारण हो सार ए छे के सर्व प्रकारना किशलय अनत कायिक छे १८ खरसुओ १९ थेग ते गोपीकद. २० लीली मोथ. २१ लवणनो बीजो पर्याय भ्रमर नामना वृक्षनी त्वचा ते त्वचा शिवाय तेना बीजा अवयव लेवा नहीं २२ बावीशमो भेद खिलोडा ते प्रसिद्ध छे. २३ तेवीशमो भेद अमृतावेलीछे २४ चोवीशमो भेद मूळाछे ते विषे भारतमा पण लखेछे के,

पुत्रमास वर भुक्त न तु मूलक भक्षणं ।
भक्षणान्नरकं गच्छे द्वर्जनात् स्वर्गमाप्नुयात ॥

"पुत्रनु मास खावु सारु पण मूळानु भक्षण करवु सारु नही जो मूळा खायतो नरके जायछे अने तेने वर्जवाथी स्वर्गे जवायछे" वळी कह्यु छे के—

रक्तमूलकमित्याहु स्तुल्यं गोमास भक्षण ।
श्वेतं तद्विधिकौंतेय मूलकं मदिरोपम ॥

"हे कुंताना पुत्र, जे रातो मूळोछे ते गायना मास जेवोछे अने श्वेत मूळोछे ते मदिरा जेवोछे." वळी कह्यु छे के–

यस्मिन् ग्रहे सदान्नार्थ्रे, कदमूलानि पच्यते ।
स्मशानतुल्य तद्वेश्म, पितृन्नि परिवर्जित ॥

" जेना घरमा हमेशा खावाने माटे कदमूळ रधायछे, तेनु गृहस्मशान जेवुं छे अने पितृओ तेने त्यजीदेछे "

२५ पचवीशमोभेद भूमिरुह एटले छत्रकनोछे ते वर्षा कालमा पृथ्वीने फोडीने उगी नीकळेछे, तेने बीलाडीना टोप कहेछे २६ छवीशमो भेद विरुढ एटले अकुरित थयेल्ला द्विदल धान्यनो छे २७ सत्तावीशमो भेद ढकवायलानो छे ते एक जातनुं शाक थाय छे २८ अठावीशमो भेद शुकर नामे वालनो छे, तेमा धान्यवाल लेवा नहीं. २९ ओगणत्रीशमो भेद पल्यक जातना शाकनो छे ३० त्रीशमो भेद कोमल आवलीनो छे ३१ एकत्रीशमो भेद आलुकदनोछ ३२ बत्रीशमो भेद पिंडालु नामे कद जातिनो छे आ प्रमाणे बत्रीश प्रकारनाज अनतकाय जाणवा नहीं पण सिद्धात युक्तिथी ते शिवाय बीजा पण जाणी लेवा कह्यु छे के, " जेनी नसो, सधीओ अने गाठो गुप्त होय, जेना भागता सरखा ककडा थाय अने जे छेद्या छता पण पाछा उगे ते साधारण शरीर कहेवाय अने तेथी विपरीत त प्रत्येक शरीर कहेवाय ते एक शरीरमा रहेल अनत जीवोने श्वासोश्वास तथा आहार विगेरे सर्व एकसा थेज हायछे, तेने दुःख पण अनतुछे ते साधारण वनस्पति कहेवायछे, तेना सोयना अग्र जेटला भागमा पण अनत जीवो कहेलाछ तेथी विपरीत लक्षण जेनामा होय ते प्रत्येक वनस्पति कहेवायछ आ विषे घणु कहेवानु छे पण ते लोकप्रकाश ग्रथथी तथा वनस्पति सप्ततिथी जाणी लेवु

लौकिक शास्त्रमा (३८११७६९७०) आटली सख्यानो एक भार कहेलोछे बीजे ठेकाणे त्रण क्रोड एकाशी लाख बार हजार एकसोने सीत्तेर (३८१२१७०) आटली सख्यानो एक भार कहेलोछे एक एक जातिना एक एक पत्रादिकनी जुदीजुदी गणत्री करता अढार भार वनस्पति थायछे एम कहेल छे ते आ प्रमाणे —

चार भार पुष्प, आठ भार फळ ने छ भार वेलो, एम त्रणे मळीने अढार भार वनस्पति थायछे एम नेपनागे कहेलुछे अथवा पक्षातरे एम पण कह्युछे–चार भार कटु, बे भार तिक्त, त्रण भार मिष्ट, त्रण भार मधुर, एक भार क्षार, बे भार कषाय, एक भार विषसहित, बे भार विषरहित, एम अढार भार छे अथवा छ भार कटक, छ भार सुगधी अने छ भार गधरहित, एम पण अढारभार कहेलाछे वळी एम पण कह्युछे के, चार भार पुष्पवगरनी वनस्पति, आठ भार फळवगरनी वनस्पति, अने छ भार फळ अने फुलवाळी वनस्पति एम अढार भार वनस्पति छे

जे अनत काय छे ते अभक्ष्य छे कदि ते अचित्त थयेल होय तोपण ते ग्रहण करवा योग्य नथी, तेमा जे सुठ विगेरे छे ते ग्राह्य छे आ प्रमाणे अनत कायनु स्वरूप जाणी ते सातमा व्रतमा त्याग करवा योग्यछे माटे ते अनत काय वस्तु भक्षण करवी नहीं. ए विषे धर्मरुचिनी कथा छे, ते आ प्रमाणे.–

धर्म रुचिनी कथा.

वसंतपुर नगरमा **जितशत्रु** नामे राजा हतो तेने **धारणी** नामे राणी हती तेमने **धर्मरुचि** नामे एक पुत्र थयो हतो एक वखते कोई तापस पासे दीक्षा लेवानी इच्छाथी राजा पुत्रने राज्य उपर बेसाडवाने उद्युक्त थयो ते खबर साभळी धर्मरुचिए पोतानी माताने पुछ्यु के, माता ! मारा पिताजी शामाटे राज्यनो त्याग करे छे ? माताए कह्यु, " पुत्र ! आ राज्यलक्ष्मी शा कामनी छे? आ राज्यलक्ष्मी चपळ, नरकादि सर्व दु खनी हेतुरूप, स्वर्ग तथा मोक्षना मार्गमा मुगलरूप, परमार्थे पापरूप अने आ लोकमा मात्र अभिमान करावनारी छे, एथी तारा सुज्ञ पिता तेनो त्याग करी सर्व सुखनो साधक धर्म करवाने उद्युक्त थया छे " ते साभळी धर्मरुचिए कह्यु के, हे जननी ! ज्यारे एवी आ राज्यलक्ष्मी छे त्यारे शु हु मारा पिताने एवो अनिष्ट छु, के ते सर्व दोषनी भूमिरूप राज्यलक्ष्मी मने वळगाडे छे आ प्रमाणे कही तेणे पण पितानी साथे दीक्षा लीधी अने सघळी तापसक्रिया ते यथार्थपणे पाळवा लाग्यो

एक वखते अमावास्याने आगले दिवसे (चौदशे) एक तापसे उचे स्वरे आघोषणा करी के, हे तापसो ! आवती काले अमावास्या होवाथी अनाकुट्टि छे माटे आजे दर्भ, पुष्प, समिध्, कद, मूळ तथा फळ प्रमुख लावी मुकवा योग्य छे ते साभळी धर्मरुचिए गुरु थयेला पिताने पुछ्यु, पिताजी ! आ अनाकुट्टि एटले शु ! तेमणे कह्यु, पुत्र ! लता विगेरेने छेदवा नहीं ते **अनाकुट्टि** कहेवाय छे ते अमावास्यानो दिवस के जे पर्व गणाय छे ते दिवसे न करवु कारण के, छेदनादि क्रिया सावद्य गणाय छे ते साभळी धर्मरुचि चिंतववा लाग्यो के, " मनुष्यादिकना शरीरनी जेम जन्मादि धर्मथी युक्तपणाने लीधे वनस्पतिमा पण सजीवपणु स्फुटपणे प्रतीत थाय छे " त्यारे जो सर्वदा अनाकुट्टि थाय तो वधारे सारु आम चिंतवनारा धर्मरुचिने अमावास्याने दिवसे तपोवननी नजीकना मार्गे चाल्या जता केटलाएक साधुओ जोवामा आव्या तेणे साधुओने पुछ्यु के, शु तमारे आजे अनाकुट्टी नथी, के जेथी आ वनमा प्रयाण करो छो ? तेओए कह्यु के,

अमारे तो यावज्जीवित अनाकुट्टी छे तेम कही साधुओ चाल्या गया ते सांभळी उहापोह करता धर्मरुचिने जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयुं तेथी तेने याद आव्यु के, हु पूर्वभवमा दीक्षा लई, मृत्यु पामी, देवलोकनुं सुख अनुभवीने अहीं आव्यो छु पूर्वे में सर्वे वनस्पति जीवने अभयदान आप्युं हतु, तो हवे आ भवमा पण तेनी हिंसा करवी मने योग्य नथी आवु विचारी ते प्रत्येक बुद्ध थयो पछी तेणे बीजा कंदादिकनु भक्षण करनारा तापसोने पण तेना पच्चखाण कराव्या

मेषोष्ट्रहस्त्यादिभवेषु भक्षणं वल्ल्यादिकाना बहुधा विधायितम् ।
श्राध्धत्वमृत्वाथ विधेहि रक्षणं तासां यथा धर्मरुचिर्मुनीश्वरः ॥ १ ॥

" बकरा, उंट, अने हाथी विगेरेना भवमा वल्ली प्रमुखनु बहु प्रकारे भक्षण करेलुं छे तो हवे श्रावकपणाने प्राप्त करीने हे जीव ! ते वल्ली विगेरेनुं रक्षण कर, के जेथी धर्मरुचि मुनींद्रनी जेम उत्तम फळ प्राप्त थाय १ "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेश संग्रहाख्याया मुपदेशमासादग्रंथस्य
वृत्तौ एकविंशोत्तरशततम प्रबंध ॥ १२१ ॥

व्याख्यान दिवस १२२ मो

भोगोपभोग व्रतना विश अतिचार छे तेमा प्रथम भोग संबंधी पांच अतीचार कहे छे.

सचित्तस्तेन संबद्ध. संमिश्रोऽन्निपक्वस्तथा ।
दुष्पक्काहार इत्येते भोगोपभोगमानगा ॥ १ ॥

" सचित्त, सचित्तनी साथे संबधवाळु, मिश्र, अपक्व अने दुष्पक्व, आ पांच प्रकारनी वस्तुओनो उपभोग करवो ते भोगोपभोग व्रतना पांच अतिचार छे " तेमा सचित्त ते कंद विगेरे जाणवा तेनो नियम लेनार कोई मनुष्य अना भोगपणे तेनु भक्षण करे ते पेहेलो सचित्त अतीचार जाणवो धान्यनु सचित्त पण एटला काळ सुधी छे के ज्यासुधीमा बीज निर्बीज थइ जाय के जे वाववाथी पुन अंकुरित न थाय ते विषे कह्यु छे के, " जव, गोधुम, अने शाली, ए त्रण वर्ष पछी निर्जीव थाय छे, तिल अने द्विदल ए पांच वर्ष पछी निर्जीव थाय

छे. अलसी, कोसवो, कोदरा विगेरे सात वर्ष पछी निर्जीव थाय छे " जघन्यथी अतर्मुहूर्त पछी योनि बीजनो विध्वस थाय छे तथा सेटुक-कपास ते त्रण वर्ष पछी निर्बीज थाय छे इत्यादि सचित्तनो विचार सूत्रथी जाणीने एना अतीचारनो त्याग करवो १

सचित्तनी साथे सबध प्रतिबध्ध् वस्तु एटले वृक्षादिकनी साथे सबंधवाळो तत्काळ ग्रहण करेल गुदर विगेरे अथवा रायण, खजुर, केरी, अने खारेक प्रमुख तेमज सचित्त बीज जेनी अदर रहेल छे एतु पाकेलु फळ ते पक्व छे तेथी प्रासुक छे माटे हु तेनु भक्षण करीश अने तेमा बीज अप्रासुक छे तेथी तेनो त्याग करीश एवी बुद्धिथी आखु फळ मुखमा नाखे ते सचित्त प्रतिबद्ध आहार-ए बीजो अतीचार छे २

जे सचित्तनी साथे मिश्र होय ते मिश्राहार कहेवाय अथवा तिल मिश्र जव धान्य विगेरे मिश्राहार कहेवाय अथवा सचित्तना सभववाळा अपक्व जव, अग्निथी



पेक विगेरे-तेने लोट छे एम जाणी अचित बुद्धिथी (लोट) चाळ्यो होय ते अंतर्मुहूर्त पछी अचित्त छे श्र छे कारण के, नहीं चाळवाथी तेमा धान्यना नखीया रिणतपणु सभवे छे मिश्रकाळनु मान पूर्वे कहेलु छे दिवडे अतीचार थाय ते त्रीजो अतीचार छे

क वस्तुओना सधानथी उत्पन्न थाय ते अथाणु, मदिरा, कार अथवा खाड विगेरे, अथवा तो सुरा थई शके एवा उपयोग-आ पण सावद्य आहारने छोडनाराने अना-यी जे अतीचार थाय ते चोथो अतीचार छे

क्व एवो आहार-जेम के, अर्धो सेकेलो साथवो, चणा, ..., अने तिंडुरा प्रमुख फलादि, तेमा दु पक्वपणाथी सचेतनपणानो सभव छे अने पक्वपणाथी अचेतन छे ते छता दु.पक्वने अचित्त धारी सचित्तना त्यागी एवा भक्षण करनारने जे अतीचार लागे ते पाचमो अतीचार छे

वळी ते विषे श्राद्ध प्रतिक्रमण सूत्रमा " अप्पोल० दुप्पोल० तुच्छो सहि० " इत्यादि गाथामा कहेल छे तेमा अपक्व अने तुच्छ औषधीनो आहार ते सचित्तनी अतर्गत जाणवो —आ पाच अतीचार भोगोपभोग परिमाण व्रतनी अंदर जाणी लेवा अने ते भोजन आश्री छोडी देवा आ विषे धर्मराजानुं उदाहरण छे, ते आ प्रमाणे.—

धर्मराजानी कथा.

कमलपुर नगरमा कमलसेन नामे राजा हतो एक वखते तेनी पासे कोई निमित्तिओ आव्यो तेणे राजाने कह्यु के, बार वर्षनो दुकाळ पडशे ते साभळी राजा अने लोको नित्य चितातुर रहेवा लाग्या तेवामा अषाडो मेघ अत्यत वर्ष्यो तथी सर्व अति हर्ष पाम्या ते उपर एक काव्य छे—

तावन्नीतिपरा धराधिपतयस्तावत्प्रजाः सुस्थिताः
तावन्मित्रकलत्रपुत्रपितर स्तावन्मुनीना तप ।
तावन्नीतिसुरीनिकीर्त्ति विमला स्तावच्च देवार्चन
यावत्स प्रतिवत्सर जलधर क्षोणीतले वर्षति ॥ १ ॥

भावार्थ—ज्यासुधी प्रतिवर्ष पृथ्वीपर मेघ वर्षे त्यासुधी राजाओ नीतिमा वर्ते छे, त्यासुधी प्रजा स्वस्थ रहे छे, त्यासुधी मित्र, स्त्री, पुत्र अने पितानो सबध रहे छे, त्यासुधी मुनिओथी तपस्या थाय छे, त्यासुधी नीति, रीति अने निर्मल कीर्ति प्रवर्ते छे अने त्यासुधी ज देवपूजा पण थाय छे १

पछी सर्व लोको पेला निमित्तिआनु उपहास्य करवा लाग्या अन्यदा कोई चतुर्ज्ञानी युगधर नामे मुनि त्या पधार्या राजा प्रमुखे तेमनी पासे आवी वदना करीने पुछ्यु के, हे गुरुमहाराज ! आ निमित्तिआनु कथन केम खोटु पड्यु ? गुरुमहाराज बोल्या—राजन् ! पुरिमताल नगरमा प्रवरदेव नामे कोई गृहस्थ रहेतो हतो तेनु कुळ छिन्नभिन्न थई गयु हतु अने ते निरतर अविरतिपणे सर्वभक्षी हतो एकदा तेने अजीर्ण थवाथी कुष्टरोग थयो लोकोए तेने धिक्कारवा माड्यो एक वखते कोई मुनिने जोईने तेणे पुछ्यु, महाराज ! मने कुष्टरोग थवानु शु कारण छे ? अने आ रोग शी रीते उपशमी जाय ? ते कहो मुनि बोल्या भद्र ! तारो आत्मा अविरत होवाथी असतोषीपणाने लीधे तु ज्या त्या जे ते वस्तु खातो हतो तेथी प्रबळ अजीर्ण थवाने लीधे तने कुष्टरोग उत्पन्न थयो छे जो हवे विरति थई चतुर्विध आहारनु परिमित भोजन करीश तो तारा रोगनो क्षय थशे मुनिना वचनथी तेणे त्यारथी एक अन्न, एक विगई, एक शाक अने प्रासुक जळ लेवानो नियम कर्यो एम मितभाजी थवाथी अनुक्रमे ते नीरोगी थई गयो पछी जेणे धर्मनु माहात्म्य जाण्यु छे एवो ते निष्पापवृत्तिथी वेपार करता अनुक्रमे काटी परिमित

धनवाळो थयो परतु पोते भोगोपभोगथी पराङ्मुख थई नियमित आहारनुज भोजन करनार अने सुपात्रने दान आपनार थयो

एक वखते दुकाळना वखतमा ते प्रवरदेवे लाखो महर्षिओने प्रासुक घृतादिकनु दान दीधु अने लाखो साधर्मीओनो अन्नदान आपीने उद्धार कर्यो एवी रीते यावज्जीवित अखंडितपणे व्रत पाळी छेवटे मृत्यु पामीने सौधर्म देवलोकमा शक्रेंद्रनो सामानिक देवता थयो

एक वखते ते देव स्वर्गना चैत्योने नमस्कार करता पोताना मृत्युने नजिक वखते आ प्रमाणे विचारवा लाग्यो के, " ज्ञान दर्शनथी शुद्ध एवा श्रावकना कुळमा दास थवु ते उत्तम छे पण मिथ्यात्वथी मोहित बुद्धिवाळा चक्रवर्त्ती थवु ते उत्तम नथी " आवी भावना भावता त्याथी चवीने आ नगरमा शुद्धबोध श्रावकने घेर विमला नामनी पत्नीना उदरमा ते उत्पन्न थयो तेना जन्मथी ग्रहचार विगेरेना योगथी दुष्काळ पडवानो हतो ते नष्ट थयेल छे

आवु गुरुनु वचन साभळी राजा विस्मय पाम्यो अने राणी विगेरे परिवारसहित ते शुद्धबोध श्रावकने घेर गयो त्या सर्व लक्षण सपन्न पुत्रने जोई राजा बहु खुशी थया पछी तेने पोताना खोळामा बेसारी राजाए आ प्रमाणे एक श्लोक कह्यो—

" मूर्त्तिमानिव धर्मस्त्वमित्थ दुर्भिक्ष भंगकृत् ।
इति तस्याभिधा धर्म इति धात्रीभृता कृता " ॥ १ ॥

" हे वत्स, तु जाणे मूर्तिमान् धर्म होय तेवो छु अने तु दुकाळनो भग करनार छु तेथी हु राजा तारु नाम धर्म एवु पाडु छु " हवेथी हु तारो कोटवाळ छु अने तु धर्म राजा छे आ प्रमाणे कही राजा घेर गयो पछी ते धर्मकुमार यौवनमा घणी राजकन्याओ परण्यो ते राजाना पुण्यथी निरंतर सुभिक्ष विगेरे थया अने सर्वत्र अद्वैतपणे हर्ष प्रवर्त्या

समकित मूळ बार व्रतनो आराधक ते धर्मराजा अनेक भोग भोगवी अनुक्रमे दीक्षा लई तेज भवे केवलज्ञान प्राप्त करीने मुक्तिने प्राप्त थयो आ प्रमाणे ते धर्मना बे भवनु वृत्तात साभळीने जैन धर्ममा तत्पर एवा श्रावकोए सातमु व्रत अंगीकार करवु

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेश सग्रहाख्याया मुपदेश प्रासाद
वृत्तौ द्वाविंशोत्तरशततम प्रबध ॥ १२२ ॥

व्याख्यान दिवस १२३ मो.

हवे कर्मादान संबधी पंदर अतिचार कहे छे.

अंगारवन शकट, भाटकस्फोट जीविका।
दंतलाक्षारसकेश, विष वाणिज्यकानि च ॥ १ ॥
यत्रपीडा निर्लांछन, मसती पोषण तथा।
दवदानंसर. शोष, इति पंचदश त्यजेत् ॥ २ ॥

भावार्थ–अंगारकर्म, वनकर्म, शकटकर्म, भाटककर्म अने स्फोटककर्म, ए पाच प्रकारना कर्म वडे आजीविका करवी दांत, लाख, रस, केश अने विषनो व्यापार करवो यत्रपीडा एटले घाणी विगेरे यत्रो चलाववा, निर्लांछन कर्म करवु, कुल्टा स्त्री विगेरेनु पोषण करवु, दावानळ मुकवो अने सरोवरने शोषवु–ए पनर कर्मादाननो त्याग करवो १–२

हवे पनर कर्मादाननुं विवेचन करे छे–उपरना श्लोकमा जे जीविका शब्द छे ते प्रत्येक कर्मादाननी साथे जोडवो

१ अंगारकर्म–एटले काष्ट दहन करीने नवा अगारा पाडवा–चुनो तथा इटनी भठ्ठी करनारा तेमज कुंभार, लुहार, कल्लाल, सोनी अने भाडभुजा विगेरेनु कर्म ते अगारकर्म कहेवाय छे तेनाथी जे आजीविका करवी ते अंगार आजीविका कहेवाय छे ए आजीविका मुख्यत्वे अग्निथी चाले छे जे अग्नि दश तरफ धारवालु (दशधारु) खड्ग छे कारण के, तेमा सर्व जगतने दहन करवानी शक्ति छे तेवी आजीविकामा 'छ जीवनिकायनो' वध थाय छे. तेथी ए व्यापार गृहस्थने त्याग करवा योग्य छे ए पहेलो कर्मादान संबधी अतिचार जाणवो

२ वनकर्म–वनस्पति संबधी छेदेला अने वगर छेदेला पत्र, पुष्प, फळ, कद, मूळ, तृण, काष्ट, अने वास विगेरे लावीने वेचवा तेमज बाग तथा वनकटी विगेरे करवा, ते 'वनकर्म' कहेवाय छे तेनाथी आजीविका करवी ते 'वनकर्म आजीविका कहेवाय छे ए आजीविका वृक्षने आश्रीने होवाथी तेमा वृक्षादिकना आश्रीत एवा त्रस प्रमुख जीवोनो वध थाय छे ए बीजो कर्मादान संबधी अतिचार जाणवो

३ साडीकर्म-गाडा अने गाडाना अवयवो पैडा विगेरे करवा, गाडा खेडवा अथवा ते वेचवा ते 'शकटकर्म' कहेवाय छे गाडा चलाववावडे आजीविका करवाथी मार्गमा रहेला षद् जीवनिकायनो वध थाय छे. ए त्रीजो कर्मादान सबंधी अतिचार जाणवो

४ भाडीकर्म-ऊंट, बळद, पाडा, खचर अने घोडा विगेरेना भाडा करवां एटले भाडे आपी भार वहन करावबु ते 'भाटककर्म' कहेवाय छे. तेथी भारवाहक प्राणीओने बहु दुःख थाय छे. ए चोथो कर्मादान सबंधी अतिचार जाणवो.

५ फोडीकर्म-जव, गोधुम, मग, अडद, अने चणा विगेरे धान्यनी करड कराववी, एटले धान्य छुटु पाडवु, साथवो करवो, दाळ कराववी, शालीने खडावी चोखा करवा, तळाव, वापी अने कुवाने माटे पृथ्वी खोदाववी, हळ खेडवु, अने खाणमाथी कढावी पाणा घडाववा-ए 'स्फोटककर्म' कहेवाय छे तेनाथी आजीविका करवी ते स्फोटक आजीविका छे तेमा कणना दलनथी वनस्पति काय जीवोनो, भूमि खोदवाथी पृथ्वी कायनो अने तेने आश्रीने रहेला त्रसादि जतुओनो वध थाय छे ए पाचमो कर्मादान सबधी अतिचार जाणवो.

हवे पांच वाणिज्य संबधी पाच अतीचार कहे छे.

१ प्रथम दंतवाणिज्य-एटले हाथीना दात, हस विगेरे पक्षीना रोम, मृगोना चर्म, चमरी मृगना पुच्छ, सावर विगेरेना शृग, तेमज शख, छीप, कोडी अने कस्तूरी विगेरेना उत्पत्तिस्थाने जइ ते ते प्रकारना त्रस काय जीवोना अंगादि ग्रहण करवा ने तेनो व्यापार करवो-ए 'दतवाणिज्य' कहेवाय छे कदि पोते ते जीवोनी हिंसा न करे पण तेना उत्पत्तिस्थाने व्यापारीने आवेला जोई भिल्ल विगेरे नीच लोको लोभथी तत्काळ हस्ती प्रमुख जीवोनो वध करे छे अने तेना व्यापारीओने जोईती चीजो लावी दे छे तेथी ते त्याज्य छे ए छठ्ठो कर्मादान सबधी अतिचार छे

२ बीजु लाक्षा वाणिज्य-एटले लाख विगेरे हिंसक वस्तुओनो व्यापार लाख मा त्रस जीवो घणा होय छे वळी तेना रसमा रुधिरनो भ्रम थाय छे. धावडी नी त्वचा अने पुष्प मदिरानु अंग छे अने तेनो कुट्टक घणा जीवोनी

उत्पत्तिना हेतुरुप छे **गळी** घणा जीवोना घातथी थाय छे **मनशिल** अने **हरताळमा** घणा माखी विगेरे जीवोनी हिंसा थाय छे **पटवास** त्रसजीवोथी व्याप्त होय छे टकणखार, साबु अने क्षारादिकमा प्रत्यक्ष महादोष जोवामा आवे छे लाख विगेरेना दोषयुक्तपणा विषे '**मनुस्मृति**' मा पण कह्यु छे "लाख, गळी, तिल, क्षार, कसुबा, दुध, घी, दहीं अने छाशने वेचनारो ब्राह्मण शूद्र कहेवाय छे" आ सातमो कर्मादान सबधी अतिचार छे.

३ त्रीजु **रसवाणिज्य** एटले मध, मदीरा, मास, माखण, दुध, दहीं, घी, अने तेल विगेरे रस पदार्थोनो व्यापार करवो ते तेमा पण प्रथम कहेली युक्तिथी दोषो जाणीलेवा दुध विगेरेमा सपातिमे जीवोनो पण वध थाय छे वे दिवस गया पछी दहीं अने छाशमा महान दोप उद्भवे छे तेमा पण छाश तो सोळ पोहोरनी अदर पण गळीने पीवा योग्य छे ते विषे कह्यु छे के, "जो छास गळ्या वगरनी ग्रहण करे तो घणा दोष उत्पन्न थाय छे कारण के, तेमा माखणनो योग होय तो तत्काळ जीवोनी उत्पत्ति थई आवे छे" घी अने तेलना व्यापारमा पण दुर्ध्यानथी महा पाप लागे छे कदि बीजी रीते आ जीविका चाले तेम न होय तेथी घी तेल वचवा वडे आजीविका करवी पडे तो तेमा अशुभ ध्याननो त्याग करवो कह्यु छे के, "अभिप्रायना वशथी पापध्यान (दुर्ध्यान) थाय छे, काइ वस्तुना दर्शनथी थतु नथी आ विषय उपर विद्वानोए घृत तथा चर्मना व्यापारीनी कथा जाणी लेवी ते आ प्रमाणे छे—

घृत तथा चर्मना व्यापारीनी कथा

एकज नगरना रहेवासी कोइ बे वणिक आपाढ मासमा पोत पोताना व्यापारने अर्थे देशातर जता मार्गमा कोइ ग्रामे कोइ श्राविकाने घेर जमवा गया. श्राविकाए तेओने पुछ्यु के, तमे कइ कइ वस्तुनो व्यापार करो छो? तेओए कह्यु के, माता अमारामा एक घीनो व्यापारी छे अने बीजो चामडाना व्यापारी छे तेनी [illegible] जइए छीए ते सामळी श्राविकाए विचार्यु के, "घीनो [illegible] इच्छता हशे जेम के, "जो मेघ सारा वर्षे [illegible] घी सोंघु थाय" आवा शुभ परिणामनु [illegible] छे तेना मनमा अत्यारे पापी [illegible] वर्षे नही तो पशुओ घणा मरीजाय

एटले चामडां सोंघा थाय " -आवा परिणाम सारा नथी-आवु विचारी ते श्राविकाए घीना व्यापारीने घरमा ज्या चदरवो बाध्यो हतो, तेनी नीचे वेसारी जमाड्यो अने चर्मना व्यापारीने घरनी बहार उघाडा भागमा वेसारीने जमाड्यो. तेओ जमी रह्या पछी पोतपोताना काममा प्रवर्त्या तेओ पोतपोतानु कार्य करीने पाछा ते श्राविकाने घेर जमवा आव्या जमवाने अवसरे श्राविकाए तेमने प्रथम करता उलटी रीते वेसार्या एटले घीना व्यापारीने बहार अने चर्मना व्यापारीने घरनी अंदर बेसार्यो तेमणे श्राविकाने तेम करवानु कारण पुछ्यु घीना व्यापारीए कह्यु के, " हे माता ! प्रथम तमे जे हमारी बेठक करी हती ते योग्य हती, कारण के मने घीना व्यापारीने घरमा बेसार्यो हतो ते उत्तम व्यापारने लीधे योग्य हतु तो आ वखते आम उलटापणु केम कर्यु ? " चामडाना व्यापारीए कह्यु के, "माता ! आ वखते हु चामडानो अधम व्यापारी तेने घरमा बेसार्यो अने घीना उत्तम व्यापारीने बहार बेसार्यो-तेम विपरीतपणु करवानो शो हेतु छे ? " श्राविका बोली- " हे पुत्रो ! साभळो, जे घीना व्यापारी छे तेनी मनोवृत्ति हमणा अशुभ थइ छे, ते घी मोंघु थाय एम इच्छे छे घीनु मोंघापणु पशुओने उपद्रव थवाथीज थाय छे अने ते उपद्रव मेघ अने घास प्रमुखना अभावे थाय छे अने चर्मना व्यापारीनी मनोवृत्ति हाल सारी छे ते हाल चर्मने मोंघा थवाने इच्छे छे अने चर्मनु मोंघापणु पशुओना आरोग्यथी थाय छे हे भद्र ! आवो विचार करीने में तमारा बन्नेना आसननु विपरीतपणु करेलु छे कारण के, हु श्राविका छु गुणी विना बीजाने मान आपती नथी एथीज में ए प्रमाणे कर्यु छे " आ वृत्तात साभळी तेओ प्रतिबोध पाम्या अने पापव्यापार छोडीने शुभ व्यापारमा प्रवर्त्या-आ कथा साभळी गृहस्थोए रसवाणिज्यनो त्याग करवो आ आठमो कर्मादान सबधी अतिचार छे

४ चोथु केशवाणिज्य-एटले दासी दास विगेरे माणसोनो[1], अने गाय प्रमुख पशुओ तथा पक्षीओनो विक्रय करवो ते आ नवमो कर्मादान संबधी अतिचार छे

५ पाचमु विषवाणिज्य-एटले कोश, कोदाळी, अने लोढाना हळ विगेरेनो तथा अनेक प्रकारना शस्त्रोनो व्यापार आदि शब्दथी वच्छनाग, तथा सोमल विगेरे विषनु पण ग्रहण करवु शस्त्र अने विष प्रत्यक्षपणे जीवितने हणनारा जोवामा आवे छे तेथी तेनो व्यापार पापरूप छे अन्य मति पण विषादि वाणिज्यनो निषेध करे छे:—

---

१ गुलामी धधो

कन्या विक्रयिण श्चैव रस विक्रयिण स्तथा ।
विप विक्रयिण श्चैव नरा निरयगामिन. ॥ १ ॥

" कन्यानो विक्रय करनार, रस पदार्थनो विक्रय करनार, अने विषनो विक्रय करनार पुरुषो नरके जाय छे "

आ दशमो कर्मादान सबधी अतिचार जाणवो —

अगारकर्म प्रमुखानि पच, कर्माणि दतादिक विक्रयाणि ॥
विहाय शुद्ध व्यवसायकश्च, गृही प्रशस्यो जिनशासनेस्मिन् ॥१॥

" अगारकर्म विगेरे पाच कर्म अने दतवाणिज्य विगेरे पाच वाणिज्यने छोडी शुद्ध व्यवसाय (व्यापार) करनार गृहस्थ (श्रावक) आ जिनशासनमा प्रशसा करवा योग्य छे "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेश मयहाख्याया मुपदेशप्रासाद
वृत्तौ त्रयोविंशत्युत्तरशततम
प्रबध ॥ १२३ ॥

व्याख्यान १२४ मु

पनर कर्मादानमा छेल्ला पाच अतिचार कहे छे.

११ अग्यारमु यन्त्र पिलण कर्म—यन्त्रपीडा एटले शिला (ऊपर), खारणीओ, मुशल (साबेलु), घटी, रेंटीयो, निशातरो अने ककपत्र (काकसी) विगेरेनो विक्रय करवो—अथवा तेलनी घाणी चलाववी, शेलडीना वाढ करवा, गोळ जमाववो, सर्सव, अलसी, डोल, एरडी विगेरेने पीलवावडे तेल काढवु, जळयन्त्र (पाणि काढवाना रेंट) चलाववा—ते यन्त्रपीडा सबधी कर्ममा अनेक त्रस जीवोनो पण वध थाय छे तेज कारणथी कह्यु छे के, खाडणी, पेपणी (घटी) चुल्लो, जळकुभी (पाणीआरु) अने मार्जनी (सावरणी) ए पाच गृहस्थने हिसाना स्थान छे

वळी तेलनी घाणी विगेरे महा पापना हेतु छे ते विषे शिवपुराणमा पण कह्यु छे के, ' हे राजा, जे तेलनी घाणी चलावे छे तेने तेमा जेटला तलनी

सल्या पीलाय छे तेटला हजार वर्ष सुधी रौरव नर्कमा रधावु पडे छे " तेमज " जे तलनो व्यापार करे छे ते तलनी जेवा हलका थाय छे, तलनी जेवा क्षुद्र थाय छे अने तलनी जेम पीलाय छे " तेमा पण फाल्गुनमास पछी तल पीलाववा, तल खावा के तलनो व्यापार करवो तेमा मोटो दोष लागे छे कारण के, ते समये तेमा त्रस जीवनी उत्पत्तिनो संभव छे ते विषे कह्यु छे के, "फाल्गुनमास पछी तल के अलसी राखवी नहीं, तेमज गोळ तथा टोपरा विगेरे पण राखवा नहीं कारण के, वर्षाकाळमा तेमा जीवोत्पत्ति थवाथी घणा जीवोनी हिंसा थाय छे." तेथी ते समय उपरात तल राखवा नहीं तलनो व्यापार दु खदायक छे एम जणाववा माटे तलना व्यापारी तिलभट्टनी कथा कहे छेः—

तिलभट्टनी कथा.

पृथ्वीपुर नामना नगरमा गोविंद नामे एक ब्राह्मण रहेतो हतो ते हमेशा तलनो व्यापार करतो हतो तेथी तेनु तिलभट्ट एवु नाम प्रसिद्ध थयु हतु तेने एक स्वेच्छाचारी स्त्री हती तेणे तलनी वखारमाथी छानी रीते पाच मुडा तल वेची तेना पैसामाथी पोताने मनगमता भोजन, वस्त्र अने आभूषण मेळव्या अने दुर्व्यसन सेववा लागी.

एक वखत ते स्त्री विचारवा लागी के, जो मारो पति आ तल वेचवानी वात जाणशे तो मने हेरान करशे माटे प्रथमथीज तेनो काइक उपाय करी राखु. आ प्रमाणे विचारीने एक वखते ते तिलभट्ट रात्रे पोताना शालिना क्षेत्रनी रक्षा करवाने गयो हतो ते अवसर जोइने ते स्त्रीए नगरनी बहार जइ पिशाचणीनु रुप कर्यु ते दिवसे मुनिपति नामे राजर्षि मुनिनी बारमी प्रतिमा वहेवाने माटे हेमतऋतुमा तेज वनने विषे कायोत्सर्गे रह्या हता ते दिवसे सध्याकाळे गायो चारीने नगरमा आवता गोवाळो ते मुनिने जोइ तेमने शीत न लागे तेवा इरादाथी पोताना वस्त्र ते मुनिने ओढाडी पोतपोताने घेर गया हता पेली स्त्री ते मुनिनी आगळ आवी, मुख उपर काजळ लगाडी, काळा वस्त्रो पेहेरी, हाथमा उघाडु खड्ग लइ अने माथे बळती सगडी लइ भयकर शब्द करती करती शालिना क्षेत्रमा रहेला पोताना पति तिलभट्ट पासे गइ अने बोली के, " अरे तिलभट्ट! हु भुखी छु माटे तारु भक्षण करीश जो तारे जीववानी इच्छा होय तो तारी तलनी वखारो मने अर्पण कर " तिलभट्ट भयथी विह्वल थइ तेना पगमा पडीने बोल्यो के, " हे माता ! जाओ मारी वखारना बधा तल भक्षण करो "

आवु चरित्र करीने ते स्त्री पाछी ज्या मुनिपति मुनि काउसग्ग ध्याने रहेला हता त्या आवी तेणे विचार्यु के, मारु आ चरित्र आ मुनिए जोयु छे, तेथी ते नगरना लोकोनी आगळ कही देशे माटे ज्वळता अग्निथी तेने बाळी नाखु-आम चितवी मुनिना शरीर उपर रहेला वस्त्रो सळगावीने ते पोताने घेर गइ, अने असत्क्षेप धारण कर्यो मुनिपति मुनि तो प्रबळ आयुष्यने लीधे जीवता रह्या तेमणे अग्निना प्रबळ उपद्रवमा पण शुभ ध्यान छोड्यु नहीं ते वखते तेमणे चितव्यु के, अहो, आ अग्नि तो जड एवा शरीरना पुद्गळोने बाळे छे पोतानु घर दूर छता बीजानु घर बळतु जोइने तो मूढपुरुष शोक धरे छे हे चेतन ! तारु घर तो ज्ञानादि गुणरुप छे, तेने यत्नथी शमतारुप जळवडे सिंचन कर, के जेथी तेने क्रोधरुप अग्निनी ज्वाळा लागे नहीं आवा शुभध्यानमा तत्पर एवा ते मुनिना मुखनु अवलोकन करवा सूर्यनो उदय थयो सर्वत्र प्रात काळ थयो एटले पेला गोवाळीआओ त्या आव्या तेमणे मुनिनी तेवी स्थिति जोइने ते नगरना कुचिक नामना श्रेष्ठीने ते वात जणावी कुचिक शेठे अच्चकारी श्रावीकाने घेरथी लक्षपाक तेल लावीने तेवडे मुनिना देहने निरोगी कर्यु पेलो तिलभट्ट रात्रे घेर आवी सुइ गयो पण तेने भयथी ज्वर आव्यो अने विचारमा पड्यो के, अरेरे ! मारी तलनी चवी वसारी गइ हवे हु शु करीश आम विचारता तेनु हृदय फाटी जवाथी ते मृत्यु पाम्यो घणा भव सुधी ते तलमाज उत्पन्न थयो माटे करीने एम जाणवु के, जे आ भवमा यांत्री थइने तल पीलवानु काम करे छे ते मरीने तलमा उत्पन्न थाय छे अने तेणे तलपणे पीलेला जीवो तेने तिलयन्त्रमा पीले छे आम विचारी श्रावकोए तल पीलवानो व्यापार छोडी देवो इत्यादि यन्त्रपीलण कर्म ते अग्यारमो कर्मादान सबधी अतिचार जाणवो

१२ बारमु निलछण कर्म—ते गाय विगेरेना कान, काबल, शीगडा, अने पुछ छेदवा, तेने नाथवा, आकवा, नपुसक करवा (खासी करवा), बाळवा, तेमज उट प्रमुखनी पीठ गाळवी-ए नीलछनकर्म कहेवाय छ. ते प्रमाणे करवाथी गाय, बळद, अश्व अने उट विगेरेने घणी कदर्थना थाय छे तेथी तेनो त्याग करवो ए बारमो कर्मादान सबधी अतिचार जाणवो

१३ तेरमु दवदान कर्म—ते अरण्यमा एक भागनो दाह करवाथी वनचर प्राणीओ सुखे चरे अने जुनु घास बाळवाथी नवा अकुरानी पेदास वधे एटले गाय प्रमुखने घणो चारो थाय अथवा वृष्टि पडेला जो क्षेत्रमा दव मुक्यो होय तो पछी

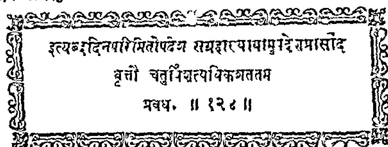
तेमां घणा धान्यनी निष्पत्ति थाय एवी इच्छाथी लोभ बुद्धिवडे ते प्रमाणे करे वळी भिक्षु प्रमुख पुण्यबुद्धिथी कहे छे के, अमारा श्रेयने अर्थे धर्मदीपोत्सवी करवी एटले डुंगर उपर दव सळगाववो तेम वळी कोइ कौतुकथी पण दव सळगावे छे तथा केटलाक हुताशणीमा मोटो अग्नि सळगाववाथी घणु पुण्य माने छे परंतु आवा दव लगाडवाथी कोटीगमे जीवोनो वध थाय छे पाचमा अग श्री भगवतीजीमा गणधर महाराजाए प्रभुने पुछ्यु छे के, " हे स्वामी ! जे माणस अग्निने वधारे सळगावे तेने वधारे पाप, के जे जळ के धूळवडे अग्निने बुझावे तेने वधारे पाप ? " प्रभुए कह्युं के, " हे गौतम ! जे अग्निने वधारे ते क्लिष्टकर्म बाधे अने जे बुझावे ते अक्लिष्टतर (घणा हळवा) कर्म बाधे-तेथी श्रावके दव मुकवा सबधी कर्म करवु नहीं आ तेरमो कर्मादान सबधी अतिचार जाणवो

१४ चौदमु शरशोषण कर्म-सरोवर विगेरेने शोषवामा जळचर प्राणी मत्स्य विगेरेनो तेमज छ 'जीवनिकायनो' वध थाय छे माटे ते कर्म पण त्यजी देवुं ए चौदमो कर्मादान सबधी अतिचार जाणवो

१५ पदरमु असतिपोषण कर्म-पैसा कमावाने माटे दु:शील दासीओ राखवी शुक, सारिका, मोर, मार्जार, कुकडा, माकडा, श्वान अने डुक्कर विगेरेनुं पोषण करवु- ए 'असतीपोषण' कहेवाय छे कारण के, एवा जीवो जो अशुभ अन्नपानथी पोषण पामवावडे पुष्ट थाय छे तो उदर, ससला विगेरे घणा जीवोनी हिंसा करी पोताने सुख करनारा थाय छे आतु विचारी तेमनु पोषण करवु नहीं तेमनु पोषण करवाथी पापनी वृद्धि थाय छे तोपण तेओने अभयदान तो आपवु ए पनरमो कर्मादान सवधी अतिचार जाणवो

आ प्रमाणे पनर कर्मादाननो त्याग करवो श्रीभगवतीजी अगमा श्रावकने पनर कर्मादाननो सर्वथा निषेध कहेलो छे, ते उत्सर्गिक जाणवो कह्यु छे के, " जे पुण्य धर्मने बाधा करनारु होय अने यश आपे तवु न होय तेवु पुण्य घणा लाभवाळु होय तोपण पुण्यार्थी पुरुषोए ग्रहण करवु नहीं " परतु कदि वीजो धधो थइ शके तेम न होय, अथवा दुष्काळ पडेलो होय अथवा राजानी आज्ञा थइ होय-इत्यादि कारणोथी जो ते निंदित व्यापारोनो सर्वथा त्याग थइ शके नहीं-तेमाथी कोइ कार्य करवु पडे तो श्रावक अपवादरुपे करे पण पोताना आत्मानी निंदा करतो सतो सशूगपणे करे महाराजा सिद्धराजे करेला सोरठदेशना स्वामी सज्जन दडनायके जेम ते देशनी पेदाशनु सर्व द्रव्य रेवताचलमा पुण्यरुपे वापर्यु हतु तेम

" आ प्रमाणे प्रथम कहेला पाच अतिचार परिभोगथी अने पनर कर्मादानथी-एम वीश अतिचार थायछे तेनु उपर प्रमाणे स्वरुप जाणी, सुज्ञ पुरुषोए आ सातमु व्रत आचरवु "



इत्यब्ददिनपरिमितोपदेश सग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ चतुर्विंशत्यधिकशततम
प्रबध. ॥ १२८ ॥

व्याख्यान १२९ मु

पूर्व पापव्यापारनो निषेध कह्यो त्यारे कया प्रकारे द्रव्यवृद्धि करवी ? ते कहे छे

जह्दित्वा खरकर्माणि, न्यायवृत्ति ममुचक ।
शुद्धेन व्यवसायेन, द्रव्यवृध्धिर्व्रजेत् गृहि ॥ १ ॥

" खरकर्मने तजीने, न्यायवृत्ति मुक्या शिवाय, शुद्ध व्यवसायवडे गृहस्थ द्रव्यवृद्धि करे " खरकर्म एटले निर्दयजनोने उचित एवा कोट्टवाळ, गुप्तिपाळ (जेलर) अने सीमपाळ विगेरेनी नोकरी—के जे अत्यन्त पापव्यापारवाळी छे ते श्रावके न करवी अने सज्जनोने स्तुति करवा योग्य एवी न्यायवृत्ति राखवी—शुद्ध निष्ठा राखवी कारण के परमार्थे तो द्रव्य उपार्जननु हेतु न्यायवृत्तिज छ कह्यु छे के:—

सुधिरर्थार्जने यत्न कुर्यान्न्याय परायण. ।
न्यायएवान पायेय मुपाय सपदा यत ॥

" डाह्या मनुष्यो न्यायपरायणपणेज द्रव्य उपार्जन करवानो यत्न करे छे कारण के सपदा मेळववानो कष्ट विनानो उपाय न्यायज छे " उपलक्षण थी देव, ज्ञान, पाखडी अने पासथ्थाना धनवडे, तेमज देश, काळ अने जाति विगेरेने अनुचित एवा व्यापार करवावडे जे द्रव्य मेळववु ते पण अन्यायवृत्ति छे

देवद्रव्य तो व्याजे लेवु ते पण महान् दोषने आपनार छे ते विषे लौकिकशास्त्र पण कह्यु छे के—

देवद्रव्येण या वृद्धि, गुरु द्रव्येन यध्धनं ।
तद्धन कुलनाशाय मृतोपि नरकं व्रजेत् ॥

"देवद्रव्यथी जे द्रव्यवृद्धि करवी अने गुरुद्रव्यथी जे धन मेळववु, ते धन कुळना नाशने अर्थे थाय छे, अने ते द्रव्यनो मेळवनार मृत्यु पामीने पण नरके जाय छे" आ विषे एक महाभारतमा दृष्टांत छे, ते आ प्रमाणे-पूर्वे श्रीरामचंद्रजी ना राज्यमा एक वखते कोइ श्वान राजमार्गमा बेठो हतो तेने कोइ ब्राह्मणे काकरा-वडे मार्यो एटले ते श्वान रोष करी पोताने निरपराधे मारनार ब्राह्मणना वस्त्रनो छेडो मजबुत पकडीने बोल्यो के-अरे विप्र! ते मने निरपराधीने केम मार्यो? ते समये ए कौतुक जोवाने घणा लोको एकत्र मळ्या अने तेमने न्यायसभामा लइ गया राजा रामचंद्रे श्वानना मुखथी बधी हकीकत सांभळी पेला ब्राह्मणने दंड करवा योग्य गणी श्वानने पुछ्यु के, 'आ तने मारनार ब्राह्मणनो शो दंड करु?' श्वान बोल्यो के-ते दुष्टने कोइ महादेवनो पूजारी करो राजाए पुछ्यु के, एवो दंड आपवानु शु कारण? श्वान बोल्यो-" महाराज, आजथी सातमे भवे हु कोइ महादेवनो पूजारी हतो हमेशा महादेवनी पूजा करी रखे देवद्रव्य खावामा आवे एवा भयथी हु हाथ धोइने भोजन करतो हतो एक वखते एवु बन्यु के, कोइ पर्व-नो दिवस आव्यो एटले महादेवनु लिंग दुध, दही अने घृतवडे पूरवामा आव्यु पछी महादेवनी पखाळ करता वखते जामी गयेलु घी मारा नखमा भराइ रह्यु भोजन करती वखते उष्णताने लीधे ते घी ओगळी गयु ते अजाणे मारा खावामा आवी गयु ते देवद्रव्य भक्षणना दुष्कृत्यथी हु सात भवथी श्वाननो अवतार पा-म्या करु छु आ भवे तमारा प्रभावथी जातिस्मरण थता मने मानुषीवाणी प्राप्त थइ छे " आ वात सांभळी ते ब्राह्मणे श्वानने प्रसन्न करी ते शिवाय कोइ बीजो दंड कराववा प्रार्थना करी

आवी रीते अजाणपणे पण जो देवद्रव्य खावामा आवे तो दु खनु कारण थाय छे, तेथी विवेकी पुरुषोए पोतानी शक्ति प्रमाणे देवद्रव्यनु रक्षण करवु आ वृत्तांत सांभळी अनेक रीते अन्यायवृत्ति छोडी देवी, यशोवर्मा राजानी जेम क्यारे पण नीति छोडवी नहीं

यशोवर्मा राजानी कथा.

कल्याणकटक नामे नगरमा यशोवर्मा नामे राजा राज्य करतो हतो ते न्याय आपवामा सदा तत्पर रहेतो लोकोने न्याय आपवाने माटे तेणे पोताना

गृहना द्वार उपर एक न्यायघंटा बांधी हती. एक वखते तेना राज्यनी अधिष्ठात्री देवी राजा यशोवर्मानी न्यायवृत्तिनी परीक्षा करवाने एक गायनुं रूप अने तेनी साथे एक तत्काल जन्मेला वाछडानुं रूप करीने राजमार्गमां बेठी. ते वखते यशोवर्मा राजानो पुत्र पोताना वाहनने वेगथी दोडावतो त्यां आव्यो. वेगने लीधे तेनी गाडी वाछडानी उपर थईने पसार थइ गइ, तेथी ते वत्स मृत्यु पाम्यो. ते जोइ गाय मोटे स्वरे रुदन करवा लागी अने अश्रुधारा छोडवा लागी. कोइए गायने सूचना करी के, राजद्वारे जइ फरीयाद करीने न्याय मेळव. एटले गाय त्यां गइ अने तेणीए शींगडाना अग्रभागथी पेली न्यायघंटा वगाडी. राजा यशोवर्मा ते वखते भोजन करवा बेठो हतो. तेणे घंटानो शब्द सांभळी सेवकोने कह्युं के, "कोण घंटा वगाडे छे? तपास करो." सेवकोए जोइने कह्युं के, "महाराज, कोइ नथी. आप भोजन करो त्यां." राजा बोल्यो-"निर्णय कर्या शिवाय केम भोजन थाय?" एम कही भोजननो थाळ छोडी राजद्वारनी देहलीए आवीने जोयुं तो त्यां बीजं कोइ जोवामां आव्युं नहीं पण एकली गायने दीठी. एटले कह्युं के, "हे धेनो! तारो कोइए पराभव कर्यो छे? कर्यो होय तो ते मने बताव." ते सांभळी गाय आगळ चाली. एटले तेनी पछवाडे राजा चाल्यो. गाये पेलो मृत्यु पामेलो पोतानो वाछडो ज्यां पड्यो हतो त्यां लइ गइ ते बताव्यो. ते जोइ राजाए सर्वेनी वच्चे कह्युं के, "जेणे आ वत्स उपर गाडी हांकी होय, ते मारी आगळ हाजर थइ जाओ." बधा ते वाक्य सांभळी रह्या पण काइ प्रगट थयुं नहीं. एटले राजाए प्रतिज्ञा करी के, ज्यारे आ वार्ता स्फुट थशे अर्थात् आनो गुन्हेगार मळशे त्यारे हुं भोजन करीश." राजाने एक लांघण थइ. एटले बीजे दिवसे प्रातःकाळे राजकुमारे आवीने जणाव्युं के, हे देव! तेमां हुं अपराधी छुं, तेथी जे योग्य लागे ते दंड करो. पछी राजाए नीतिशास्त्रने जाणनारा विद्वानोने एकठा करीने पुछ्युं के, आ राजकुमारने शो दंड आपवो जोइए?" नीतिवेत्ताओए कह्युं-"महाराजा, राज्यने योग्य आ एकज पुत्र छे, तेने शो दंड होय?" राजा बोल्यो-"राज्य कोनुं? अने पुत्र कोनो? मारे तो नीतिज प्रमाण छे. सोमनीति मां कह्युं छे के, पोतानो पुत्र होय तोपण तेने अपराध प्रमाणे दंड आपवो जोइए. तेथी जे तेने योग्य दंड होय ते कहो." आवां राजाना वचनो सांभळी ते विद्वानोमांथी एक बोल्यो के-नीतिमां एम कह्युं छे के, जे बीजाने जेवी व्यथा करे तेवी व्यथा तेने करवी. कारण के, "जे जेवुं करे तेने तेवुं करवुं जोइए." ते सांभळी राजाए पोतानी गाडी मगावी अने पुत्रने बोलावी कह्युं के, हे पुत्र! तुं अहीं सुइजा. ते विनित पुत्र तत्काळ

मुड गयो राजाए सेवकोने कह्यु के, आ कुमारनी उपरथी गाडी वेगवडे पसार करो. कोइ तेम करी शक्यु नहीं उलटा सर्वे राजाने वारवा लाग्या ते छता राजा तेमनुं नहीं मानीने पोते गाडी उपर बेसी पुत्रना चरण उपरथी जेवामा गाडीने पसार करवा जता हता, तेवामा देवीए प्रकट थइ राजानी उपर पुष्पनी वृष्टि करी अने गाय के वत्स काइ जोवामा आव्यु नहीं देवी बोली–हे राजन् ! में तारी परीक्षा करवा माटे वधी रचना करी हती प्राणप्रिय एवा एकनाएक पुत्रथी पण तने न्याय व्हालो छे, एम सिद्ध थयु छे माटे धन्य छे तने, तु निर्विघ्न राज्य कर्य.

आ प्रमाणे न्याय सबधी दृष्टात मनमा धारण करीने गृहस्थे–एटले श्रावके न्यायवृत्ति छोडवी नहीं शुद्ध व्यापारवडे द्रव्यनी वृद्धि करवी. ते शुद्ध व्यापार चार प्रकारनो छे १ यथार्थ बोल्वु २ वचना (ठगवा) वगरनी क्रिया करवी ३ अपायनु प्रकाश न करवु (चाडी न खावी) ४ सद्भाव (मैत्रीभाव) राखवो तेमा जे प्रथम ' यथार्थ बोलवु ते आ प्रमाणे–"धर्म तथा अधर्मने जाणनारा भावश्रेष्ठ पुरुषो बीजा ठगाय तेवु ' न बोले, हमेशा सत्य अने मधुर वचनज बोले छे. तेमा पण धर्मने पीडा करे तेवु तो कदिपण बोलेज नही, **कमळश्रेष्ठी** विगेरेनी जेम

बीजो प्रकार जे ' अवचिका क्रिया ' एटले जेथी बीजाने व्यसन–दु:ख थाय तेवा हेतुवाळी मन, वचन अने कायाना व्यापाररुप चेष्टा न करवी, ते अवचिका क्रिया जेम के, " जे शुद्ध धर्मनो अर्थी होय ते प्रतिरूप विधि वडे [1] तेमज खोटा त्राजवा, काटला विगेरेथी ओछु वधतु लेवा देवावडे बीजाने छेतरे नही "

त्रीजो प्रकार ' अपाय प्रकाश करवा नहीं ' एटले जे अशुद्ध व्यापार करवाथी भारी अनर्थ थाय, जेवा के, राजदड अने नरकमा पडवु विगेरे तेवा अशुद्ध व्यापारने प्रकाश करवा नही अर्थात् तेवी कोइनी चाडी खाइने पोताना धनने वधारवु नहीं

चोथो प्रकार ' मैत्रीपणानो भाव राखवो ' एटले सारा मित्रनी जेम निष्कपटपणे वर्त्तवु दभथी कोइने छेतरवु नहीं एवी रीते न वर्त्तता जे प्राणी गायना जेवा मुखवाळी अने वाघना जेवा आचरणवाळी वृत्तिथी व्यवहार करे छे ते कोइनो विश्वासपात्र थतो नथी अने पापनु भाजन थाय छे आ प्रमाणे जाणीने शुद्धवृत्तिथी द्रव्यनी वृद्धि करवी गृहस्थोने दरेक कार्यनी सिद्धि द्रव्यथी थाय छे, परतु धर्मथी अविरुद्ध व्यापारवडे वैभवनी वृद्धि करवी ए सर्वनो भावार्थ छे " देश, जाति,

[1] वेचवानी वस्तुमा भळी शके तेवी ओछी किमतना वस्तु मेळववी

अने कुळना धर्मनो नाश करनार कुबुद्धिने छोडी देवाथीज नीतिमा तत्पर थ छे अने तेवा नीतिवान्पणाथीज उत्तम उपासक– (श्रावक) शुभ संपत्तिने व्यापारनी शुद्धिने प्राप्त करे छे ”

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेश समहाख्याया मुपदेशप्रासाद वृत्तौ पचविंशत्युत्तरशततम प्रबंध ॥ १२५ ॥

व्याख्यान १२६ मु

शुद्ध व्यापार केवी रीते थाय ? ते कहे छे.

निंदायोग्यजनैः सार्द्धं कुर्यान्न क्रयविक्रयौ।
द्रव्यं कस्यापि नो देयं साक्षिणं भूषणं विना ॥ १ ॥

भावार्थः–

“ निंदा करवा योग्य लोकोनी साथे खरीदी के वेचाणनु काम करवु नहीं अने साक्षी राख्या विना के घराणा विना कोईने द्रव्य आपवु नहीं ”

विस्तरार्थ –

“ निंदा करवा योग्य लोको जेवा के, नट, धूतारा, वेश्या, कलाल, कसाई, माछी, वागुरिक (वाघरी), राजद्रोही अने गूर्जारा विगेरे, तेमनी साथे गृहस्थे क्रयविक्रय (खरीदी के वेचाण) न करवा तेमज शस्त्रधारी पुरुषोनी तथा राजा विगेरेनी साथे अल्प पण व्यवहार करवाथी प्राये काईपण गुण थतो नथी केमके जेने पोताने हाथे द्रव्य आपीने पाछु मागता भय उत्पन्न थाय तेनी साथे व्यवहार करवामा शु शुभ फळ थाय ? कह्यु छे के, “ ब्राह्मण साथे अने शस्त्रधारीनी साथे श्रेय इच्छनार वणिके कदिपण व्यवहार करवो नहीं ”

वळी जे जुगार अने धातुर्वाद प्रमुखथी द्रव्यनी ईच्छा करे छे, तेओ मेंसना कुचडाथी पोतानु घर धोळु करवाने ईच्छे छे कदि तेवा प्रकारथी के अशुद्ध व्यवहार करवाथी लाभ प्राप्त थाय तो ते लाभ लाबो काळ रहेतो नथी कह्यु छे के, “ खोटा माप अने खोटा तोलथी जे काई द्रव्य उपार्जन थाय छे ते तपेला पात्र उपर मूकेला जळना बिंदुनी जेम नाश पामतु जोवामा पण आवतु नथी ”

वळी घणा लोकोनी साक्षी वगर कोईने द्रव्य आपवु नहीं तेमज न दीठेलुं अने परीक्षा कर्या वगरनु करीयाणु लेवु करवु नहीं अने लेवु त्यारे पण घणा लोकोना समुदाय समक्ष लेवु के जेथी कदि बाधा विगेरे कष्ट पडे तो ते जोनारा साक्षीओ सहाय आपे. साक्षी राखीने आपेलु द्रव्य वा कोई वस्तु पुनः कालांतरे पण प्राप्त थाय छे ते उपर एक वणिकनु दृष्टांत कहेवाय छे, ते आ प्रमाणे –

धूर्त वणिकनुं दृष्टांत.

कोई धनाढ्य धूर्त्त वणिक विदेशे जतो हतो. मार्गे चालता एक अरण्य आव्यु तेमा चोरलोकोनी धाड मळी तेणे वणिकने जुहार करी तेनी पासेथी द्रव्य माग्यु वणिके कह्यु, कोई साक्षी राखीने बधु द्रव्य खुशीथी ल्यो. कोई अवसरे मने पाछु आपजो अने मने मारशो नहीं. चोरोए विचार्यु के, आ वणिक मुग्ध (भोळो) जणाय छे पछी तेमणे कोई बीलाडाने साक्षी राखी तेनु सर्व द्रव्य लईने तेने छोडी मुक्यो ते वणिक अनुक्रमे ते चोरलोकोना गामठाम विगेरे जाणी लईने पोताने गाम गयो केटलेक काळे ते चोरलोको घणी वस्तुओ लईने तेना गाममा आव्या वणिके तेमने ओळखीने पोते आपेलु द्रव्य माग्यु चोरोए आनाकानी करवा माडी एटले परस्पर कलह थई पड्यो छेवटे न्यायाधीश आगळ तेओ गया न्यायाधीशे पुछ्यु के आ वातमा कोई साक्षी छे ? एटले पेलो वणिक कोई काळा बीलाडाने लई आवी पोतानी काखमा राखीने बोल्यो के, आ बीलाडो साक्षी छे चोरलोकोए कह्यु के, अमारे ते साक्षी जोवो छे, के ते केवो साक्षी छे ? वणिके चोरोने ते बताव्यो एटले चोरलोको बोली उठ्या के–नहीं, आ तो काळो छे अने ते तो काबरो हतो आ प्रमाणेना तेना वचनो साभळी तेमना मुखनीज कबुलात जाणी न्यायाधीशे तेमनी पासेथी बळात्कारे सर्व द्रव्य लईने पेला वणिकने अपाव्यु आ दृष्टात उपरथी साक्षी राखवानु फळ जाणी कोईने साक्षी विना गुप्त रीते काईपण द्रव्य आपवु नहीं के मुकवु नहीं तेमज कोईने अलंकार (घराणु) लीधा विना अगाऊथी द्रव्य आपवु नहीं कारण के, तेम करवाथी कदिपण मूळ धननो नाश न थाय कह्यु छे के, "धननी रक्षा करवामा परायण एवा पुरुषे नटने, वेश्याने, जुगारीने अने जारपुरुषने ऊधारे द्रव्य आपवुं नहीं" तेमा पण मुख्य रीते गृहस्थोए वधारे किंमतनु घराणु राखीने द्रव्य आपवु योग्य छे नहींतो मागती वखते क्लेश, विरोध, धर्मनी हानि, लाघण, धरणु घालीने बेसवु अने सोगन खावा विगेरे अनेक अनर्थ करवा पडे छे तेमा कदि सोगन खावानो वखत आवे तोपण जेमतेम सोगन खावा नहीं तेमा पण विशेषे

करीने देव, गुरु, ज्ञान, धर्म अने तीर्थराना विगेरेना सोगन कदीपण खावा नहीं ते विषे पूर्वविद्वानो कहे छे–" जे मूढ पुरुषो खोटा के साचा चैत्यना सोगन ले छे, ते बोधि बीजनु वमन करे छे अने अनंत संसारी थाय छे "

वळी जो कदि लांघण करवाथी कार्यसिद्धि थाय तेम लागे तो पोते जाते लांघण करवी, पण बीजा बाल वृद्ध प्रमुखने लांघण करावबी नहीं कारण के, ढंढणऋषिए एक क्षणमात्र पनरसो बळदोने लांघण करावी हती, तेथी तमने छ मास सुधी आहार मळ्यो न हतो इत्यादि अनेक दोषनी उत्पत्ति पोतानी बुद्धिथी विचारीने वधारे किंमतनु घराणु राखी द्रव्य आपवु आ विषे हितशिक्षा माटे पूर्व मुनिओए एक दृष्टांत कहेलु छे, ते आ प्रमाणे —

पूर्व मुनीओए कहेलु दृष्टांत.

जिनदत्त नामना कोइ श्रेष्ठीने मुग्ध (भोळो) एवा नामे पुत्र हतो स्वभावे पण ते मुग्ध हतो पितानी पासे पुष्कळ द्रव्य होवाथी ते निश्चित रहेतो हतो. एक वखते जिनदत्तनो अंतकाळ आव्यो एटले तेणे पोताना पुत्रमा भोळापणानो गुण जोइ गूढार्थ वाक्योथी आ प्रमाण शिक्षा आपी –" हे वत्स ! १ घरनी आसपास दातनी वाड करवी २ बीजाने धन आप्या पछी मागवु नहीं ३ माथे जरा पण बोजो उपाडवो नहीं ४ हमेशा दिवसने सफळ करवो ५ स्त्रीने स्थंभ साथे बांधीने मारवी ६ मिष्टान्न भोजन करवु ७ सुखे शयन करवु ८ प्रत्येक गामे घर करवु ९ दुरवस्था आवे त्यारे गंगा अने यमुनानी वच्चे खोदवु जो ए बाबतमा काइ शंका पडे तो मारा मित्र सोमदत्त श्रेष्ठीने पुछवु अने १० प्रत्येक क्षेत्रे धन वाववु "

आ प्रमाणे कही श्रेष्ठी जिनदत्त मृत्यु पाम्यो त्यारपछी पितानी शिक्षाना गूढ अर्थथी अजाण एवो ते पुत्र ते प्रमाणे करवाथी निर्धन थइ गयो एटले मुझाइने पाटलीपुत्र नगरमा पोताना पिताना मित्र सोमदत्त श्रेष्ठीने घेर गयो श्रेष्ठीए तेने मुग्ध जाणी घणी वार खोटी करीने पछी चोळा प्रमुखनु भोजन पीरस्यु ते क्षुधा पीडित होवाथी सुखडीनी जेम खाइ गयो पछी मामु माडवा विगेरेमा घणी रात्रि निर्गमन करावी एटले ते मुग्ध बगासा खावा लाग्यो अने अंग मरडवा लाग्यो एटले तेने माकणवाळो माचो सुवा आप्यो जेमा ते तत्काळ निद्रावश थइ गयो श्रेष्ठीए ब्रह्ममुहूर्ते (चार घडी रात्रि बाकी होय त्यारे) तेने जगाड्यो मुग्धे प्रातःकाळे उठीने पिताए कहेली शिक्षानो भावार्थ पुछ्यो, एटले श्रेष्ठीए कह्युं–साभळ, " घरनी आसपास दातनी वाड करवी " एटले सर्वनी आगळ हितकारी अने प्रिय

वचन बोलवु, के जथी पोताना मुखमा रहेला दातनी पोतानी फरती वाड थाय छे. कह्यु छे के,

जीभ्रामें अमृत वसे, विषन्नी उनके पास;
एके बोल्ये कोडी गुण, एके कोडी विनाश ॥ १ ॥

जिव्हामा अमृत अने विष बने वसे छे. एक वचने कोडोगमे गुण थाय छे, अने एक वचने कोटीगमे विनाश थाय छे (इति प्रथम शिक्षार्थ) १

" बीजाने धन आप्या पछी मागवु नहीं " एटले सवायु के दोढु घराणुं राखीनेज द्रव्य आपवु के जेथी तेनी पासे मागवा जवु पडे नहीं ते पोतानी मेळेज देवा आवे आ प्रमाणे " द्रव्य आप्या पछी मागवु नहीं " एवी बीजी शिक्षानो भावार्थ छे २

" माथे बोजो उपाडवो नहीं ' ए शिक्षानो भावार्थ एवो छे के, माथापर करज सबधी भार राखवो नहीं ते विषे श्री जिनागममा कह्यु छे के, " जे प्रमाणे निर्वाह थई शके ते प्रमाणेज वचन बोलवु अने अर्धे मार्गे छाडवो पडे नहीं तेटलो भार उपाडवो " वळी करज कापवामा पण विलब करवो नही. कयो मूढपुरुष आ लोक अने परलोकना पराभवना कारणरूप ऋणने क्षणमात्र पण धारण करे कह्यु छे के, " धर्मना आरभमा, करज फीटाडवामा, कन्यादानमा, द्रव्यनी प्राप्तिमा, शत्रुनो घात करवामा, अग्निने बुझाववामा अने रोगने शमाववामा कालक्षेप करवो नहीं " तैलनुं मर्दन, करजनु फीटाडवु अने कन्यानु मृत्यु-ए तत्काळ तो दुःखरूप लागे छे पण परिणामे सुखरूप छे " आ भवमा जो करज आपे नही तो भवातरमा तेनो सेवक अथवा पाडो थईने अवतरवु पडे छे. वळी करज राखवाथी बनेने परस्पर भवातरे वैरवृद्धि प्रमुख पण थया करे छे

एवी एक कथा छे के, धावह श्रेष्टीने पूर्वना रुण सबधे एक पुत्र थयो हतो ते नठारा स्वप्नथी सुचवेलो अने मृत्युयोगमा उत्पन्न थयो हतो तेथी श्रेष्टीए तेने नदीना तीर उपर रहेला कोई वृक्ष नीचे छोडी दीधो ते वखते ते बाळक प्रथम रुदन करी पछी हसतो हसतो बोल्यो के, " हे श्रेष्टी ! हु तमारी पासे लाख सोनैया मागु छु, ते आपो, नहीं तो तमने अनर्थ प्राप्त थशे " एटले श्रेष्टीए तेने पाछो घरे लइ जइने तेना जन्मोत्सव विगेरेमा पुष्कळ द्रव्य खर्च्यु पछीने दिवसे लक्ष सोनैया पूरा खचाइ गया एटले ते मृत्यु पामी गयो एवी रीते बीजो पुत्र त्रण लाख पूरा खर्च करावी मृत्यु पाम्यो त्रीजो पुत्र सारा स्वप्नाथी सूचित आव्यो तेणे

कह्यु के, " मारे तमारा ओगणीश लाख सोनैया देवा छे. " ते पुत्रनु नाम जावड पाडयु तेणे माता पिताने निमित्ते धर्मकार्यमा तेटलु द्रव्य खर्चवानो निर्णय कर्या पछी काश्मीर देशमाथी नव लाख सोनैया खर्ची श्रीऋषभ, पुडरीक अने चक्रेश्वरीनी मूर्तिओ लइ आव्यो एक लाख सोनैया खर्ची तेनी प्रतिष्ठा (अजनशलाका) करावी ते पछी अढार वाहाणे करी असख्य द्रव्य उपार्जन कर्यु ते द्रव्यवडे शत्रुजय उपर लेप्यमय बिंब हता ते उत्थापी तेने स्थाने मणिमय बिंबनी प्रतिष्ठा करी

आ कथा साभळीने धर्मार्थी पुरुषे ते भवमाज ऋणनो सबध मुक्त करवो. पोतानो देवादार माणस जो करज आपवाने असमर्थ होय तो ' जो शक्ति थाय तो आपजे, नहीं तो मारे धर्मस्थाने हजो ' एम तेनी आगळ कही देवु, पण ऋणनो सबध चिरकाळ राखवो नहीं आ प्रमाणे बने जणे परस्पर विवेक करवो आ प्रमाणे प्रसगोपात कहेली वार्ताथी जाणवु के, ऋणनो भार माथापर राखवो नहीं. (इति तृतिय शिक्षार्थ.) ३

" दिवसने सफळ करवो " ए शिक्षानो भावार्थ एवो छे के, गृहस्थे दर रोज काईपण द्रव्य पेदा करवु केमके गृहस्थनो दिवस तेथी सफळ थाय छे. कह्यु छे के, " वणिक, वेश्या, कवि, भाट, चोर, जुगारी अने ब्राह्मण जे दिवसे नवा द्रव्यनो लाभ थाय नहीं, ते दिवसने निष्फळ माने छे " गीत, नृत्य अने निंदा विकथा विगेरे करवावडे दिवस गळाववाथी दिवस सफळ थतो नथी. (इति चतुर्थ शिक्षार्थ) ४

" स्त्रीने स्थभ साथे बाधीने मारवी " ए शिक्षानो भावार्थ एवो छे के, स्त्रीने छोकरावाळी थया पछीज शिक्षा करवी घटे तो करवी के जेथी ते पुत्रादिकना स्नेहरूप स्थभ साथे बधायेली होवाथी ताडन करवाथी पण काई विपरीत करी शकती नथी (इति पचम शिक्षार्थ) ५

" मिष्टान्न भोजन करवु " ए शिक्षानो भावार्थ एवो छे के, ज्यारे सारी पेठे क्षुधा लागे त्यारे खावु तेवे वखते जे काइ भोजन करीए ते सर्व मिष्ट लागे छे काइ पक्वान्न मिष्ट कहेवाता नथी गइकाले तें जे भोजन कर्यु ते हलकु भोजन हतु तोपण तने केवु मिष्ट लाग्यु हतु तेम हमेशा ज्यारे क्षुधा लागे त्यारेज भोजन लेवु श्रावकना पात्रीश गुणोना विवरणमा कह्यु छे के,

अजीर्णे भोजन त्यागी, काले भोक्ताच सात्म्यतः

" अजीर्ण होय त्यासुधी भोजननो त्याग करे अने वखतसर [illegible]ने अनुकूल भोजन करे " पूर्वे करेलु भोजन अपक्व [illegible] भो-

थणा रोग थाय छे वैद्यकशास्त्रमां कह्युं छे के, " मळमा अने वायुमा दुर्गंध छुटे, विष्टा अपच्या जेवी आवे, शरीर भारे लागे, अन्न उपर अरुचि थाय अने अशुद्ध ओद्कार आवे–ए ज अजीर्णना स्पष्ट चिन्हो छे " तेथी अजीर्ण सते भोजन छोडी देवु अने भुख लागे त्यारे वखतसर खावानी लोलुपता छोडीने भोजन करवु. कह्यु छे के,

कंठनादिमति क्रांतं, सर्वं तदशनं समं ।
क्षणमात्र सुखस्यार्थे, लौल्यं कुर्वीतनो बुधः ॥ १ ॥

" गळाथी नीचे उतर्या पछी वधु भोजन सरखुं छे माटे मात्र क्षणिक सुखने अर्थे प्राज्ञ पुरुषोए लोलता करवी नही "

जिव्हे प्रमाण जानिही, भोजने वचने तथा ।
अतिभुक्तमतिचोक्त, प्राणीना मरणप्रदं ॥ १ ॥

" हे जीव्हा ! तू भोजन अने वचनमा प्रमाण राखजे कारण के, अति करेलुं भोजन अने अति बोलेलुं वचन प्राणीओने मृत्युदायक थई पडे छे " क्षुधा लागी होय ते वखते खाधेलु विष पण अमृत जेवु थाय छे एवी एक वार्त्ता छे के, कोइ राजा वखतसर भोजन करतो हतो तेने रोगी करवाने माटे कोइ वैद्ये रसोइआने शिखडाव्यु के, तारे कांइ मिष करीने रसोइ करवाना वखतमा विलंब करी राजानो भोजन वखत उल्लंघन कराववो रसोइआए तेम कर्युं राजाए रसोइमां विलंब थशे एम जाणी भीनी कणिकमा घी गोळ मिश्र करी खाइ लीधु अने तेवी रीते भोजननो वखत साचवी लीधो तेथी ते खाधेलु राजाने पची गयु, अजीर्ण न थयु तेथी पेलो वैद्य विलखो थयो आ प्रमाणे प्रसगोपात जणावेली हकीकतथी जाणवु के ज्यारे क्षुधा लागे छे त्यारे गमे तेवु भोजन पण मिष्ट लागे छे ६

" सुखे शयन करवु " ए शिक्षानो भावार्थ एवो छे के, ज्यारे बराबर निद्रा आववा लागे त्यारेज सुवु, अन्यथा सुवु नही काले में जे माचो आप्यो तेमा तने केवी सुखे निद्रा आवी हती तेवी रीते महेनत करीने ज्यारे निद्रा आवे त्यारे सुवानी टेव पाडवी ७

" गामेगाम घर करवु " ए शिक्षानो भावार्थ एवो छे के, प्रत्येक ग्रामे मैत्री करवी के जेथी ज्या जइए त्या पोताना घरनी जेम सर्व भोजनादि साध्य थाय ८.

" दुरवस्था आवे त्यारे गगा अने यमुनानी वच्चे खोदवु " ते शिक्षानो भावार्थ एवो छे के, गगा यमुना नदी नहीं पण तारे घेर गंगा अने यमुना नामनी बे गायोनी कोढ छे, तेनी वच्चे खोदवु त्या तारा पिताए द्रव्य दाटेलु छे. ९.

" प्रत्येक क्षेत्रे धन वावत्रु " तेनो अर्थ एवो छे के, क्षेत्र एटले धर्मस्थान, तेमा धन वावर्दु के जेथी महत्फळ प्राप्त थाय लोकमा पण ' एक गणु दान अने स॰ हस्र गणु पुण्य ' एवी कहेवत छे खाडना ढगलावाळा क्षेत्रमां धन नाखवु, एम एनो अर्थ न समजवो वळी साधभोरुप क्षेत्रमा धन वावर्दु, एटले तेमनी साथे व्यवहार करवो ए योग्य छे, कारण के, कदि तेनी पासे द्रव्य रही जाय तोपण तेनो उप॰ योग धर्मकार्यमाज थाय पण नीचमाणसरुप क्षेत्रमा धन नाखी देवु नहीं. १०

आ प्रमाणे पिताए आपेली शिक्षानो गूढार्थ साभळी सशय रहीत थयेलो ते मुग्ध पुत्र ते प्रमाणे वर्त्तवाथी पाछो धनवान्, सुखी अने माननीय थयो एवी रीते यथायोग्य बीजाओए पण शिक्षा लइने शुद्ध व्यापार करवो

" एवी रीते मुग्ध पुत्र पिताए आपेली शिक्षानो गूढार्थ जाण्या वगर दु:खी थयो अने पाछळथी तेनो भावार्थ समजी शुद्ध व्यवहार करवाथी सुखी थयो, तम बीजाओए पण ते दृष्टातनो सार समजी शुद्ध व्यवहार करवो "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेश संग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ पदविंशत्युत्तरशततम प्रबधः ॥ १२६ ॥

व्याख्यान १२७ मु.

शुद्ध व्यवहार विषे बीजी विशेष हितशिक्षा कहे छे.

कार्पण्यमत्याशातिराटित्व न कुर्यादर्थ मर्जक ।
माया बुद्धि च सर्वत्र सत्यजे द्व्यवसायवान् ॥ १ ॥

भावार्थ—

" द्रव्यनी वृद्धि करवाने ईच्छनारा व्यापारीए कृपणपणु अने अति राडीयाप॰ पणु अथवा ककासीपणु करवु नहीं अने सर्व ठेकाणे कपटबुद्धिनो त्याग करवो "

विस्तरार्थ –

" द्रव्य उपार्जन करवाने ईच्छनारा पुरुष कृपणता करवी॰
रवाथी ज्ञवनज्ञानु केवलीना जीवे सोमदत्तना भवमा पो॰
नी पासे द्रव्य मागवा जता लावण करीने कोटी रत्न मीथ्या
पाच रत्नन माटे पाते अने तना मामानो पुत्र सात ॰
तेना मामानो पुत्र मृत्यु पामी गयो , ...

साथे व्यवहार करतु नहीं एक वखते ते पाचसो गाडा लइने वनमां काष्ट लेवा गयो त्यां एकाकी वृक्ष छेदतां कोई गुहामाथी व्याघ्र नीकळ्यो अने तेनु भक्षण करी गयो त्यां मरण पामीने ते एकेंद्रियपणाने प्राप्त थयो एवी रीते कृपणपणाथी ते सर्व दिशाओमां घणु भम्यो पण पुण्यथी अधिक द्रव्य तेने प्राप्त थयु नहीं, माटे गृहस्थे कृपणपणु छोडी देवु

अहीं कोई शंका करे के, द्रव्यने ज्यां त्यां वेरी नाखवाथी तेनी स्थिरता शी रीते थाय ? तेना उत्तरमा कहेवानु के, गृहस्थे औचित्य स्थळमां तेने राखवु पण अवसरे कृपणपणु करवु नहीं ते विषे एक वार्त्ता कहेवाय छे के, " कोई श्रेष्ठीने घेर नवी पुत्रवधू आवी ते एक वखते पोताना सासराने दीवा उपरथी पडेला तेलनो छांटो उपान उपर चोपडतां देखी विस्मय पामी अने विचारमां पडी के, आतो मारा सासरानु कृपणपणु हशे, के काई बीजो हेतु हशे ? आवो संदेह पडवाथी तेनी परीक्षा करवा माटे तेणीए खोटो मिष करीने कह्यु के, 'मारु माथ दु खे छे ' पछी सुई जईने घणो पोकार करवा लागी सासराए तेने माटे घणा उपाय करवा माड्या पण मट्यु नहीं एटले तेणीए कह्यु के, मने पेहेला आ प्रमाणे थतु त्यारे साचामोतीनु चूर्ण करी तेनो माथे लेप करवाथी मारी पीडा शमी जती ते साभळी सासरो खुशी थयो अने तत्काळ मोती मगावीने वटाववा माड्या. एटले ते पुत्रवधू हर्ष पामी बेठी थई, अने पोताने पडेला संदेहनी वात कही बतावी ते साभळी श्रेष्टीए कह्यु के, " जे कुमार्गे पडेली एक कोडीने पण एक हजार सोनामहोर जेवी गणी शोधे छे अने अवसरे कोटी द्रव्य वापरवामां पण छुटो हाथ मुके छे, तेनो संबध लक्ष्मी कदिपण छोडती नथी "

वळी द्रव्यना अर्थीए अति क्लेश के क्रोध करवो नहीं कारण के, क्षमागुण लक्ष्मीनी वृद्धि करनारो छे. कह्यु छे के,

होम मंत्र बलं विप्रे, नितिशास्त्र बलं नृपे ।
राजा बलमनाथाना, वणिग्पुत्रे क्षमाबलं ॥ १ ॥

ब्राह्मणोने होमने मंत्रनु बळ होयछे, राजाने नीतिशास्त्रनु बळ होयछे, अनाथ जनोने राजानु बळ होयछे अने वणिकने क्षमानु बळ होयछे " वळी कह्यु छे के, "अर्थनु मूळ प्रियवचन अने क्षमा छे, कामनु मूळ वित्त, शरीर अने वयछे धर्मनु मूळ दान, दया अने दम छे, अने मोक्षनु मूळ सर्व अर्थनी निवृत्ति छे "

एवी वार्त्ता छे के, एक वखते लक्ष्मी अने दारिद्रने परस्पर पोताने रेवा विषे विवाद थयो तेओ बने इन्द्रनी पासे गया. प्रथम दारिद्रे इन्द्रने कह्यु

के, आ लक्ष्मी माराथी नीहे छे, तेथी ते सर्व ठामे भम्या करे छे अने हु निर्भय छु, तेथी ज्या जउछु त्या स्थिरथइने रहुछु इन्द्रे लक्ष्मीने पुछ्यु के, तु क्या रहे छे ? लक्ष्मी बोली —

गुरवो यत्र पूज्यते, वित्त यत्र नयार्जितं ।

अदतकलहो यत्र, तत्र शक्रवसाम्यहं ॥

" ज्या गुरु-वडिलनी पूजा थाय छे, ज्या न्यायथी द्रव्य मेळवाय छे अने ज्या परस्पर कळह थतो नथी, त्या हु वसुछु. " पछी इन्द्रे दारिद्रने कह्यु, तु क्या रहे छे ? एटले ते बोल्युः—

द्युतपोषी निजद्वेषी, धातुर्वादी सदालसा ।

आयव्यय मनालोची, तत्र तिष्ठाम्यहं हरे ॥

" ज्या जुगारनु पोषण थाय, ज्या स्वजननो द्वेष थाय, ज्या धातुर्वाद थतो होय, ज्या सदा आळस रहेलु होय अने ज्या आवक तथा खर्चनी तपास थती न होय, त्या हु वसुछु " पछी इन्द्रे कह्यु के-ज्यां क्लेश-ककाश न होय त्या लक्ष्मीए रहेवु अने ते शिवाय बीजे स्थळे दारिद्रे रहेवु आ प्रमाणे ठराव करी आपीने तेमनो विवाद भागी नाख्यो

आ वार्ता साभळीन तेमाथी एटलो सार लेवो के उत्तम श्रावके शातिथीज कार्य साधवु, कारणके कह्यु छे के, जेओ घणा तीक्ष्ण अने घणा निष्ठुर होय-छे तेओ पण मदुता राखवाथी वश थायछे जुओ ! कठोर एवा दात दासनी जेम मृदुतावाळी जिव्हानी उपासना करे छे " कोइनी पास लेणु मागवु होय तो ते पण कोमळ अने धीरा वचनथी मागवु कठोर वचनवडे मागवाथी धर्म अने यशनी हानि थाय छे कदि जो कोइ मोटा माणस साथ द्रव्यनी लेवड-देवड थइ गइ होय तो तेनी साथे नरमाशवडेज कार्य सिद्ध करवु कळह विगेरे करवा नहीं कह्यु छे के, " उत्तमपाणस साथे प्रणिपातथी काम लेवु, शूरवीर साथे भेदथवडे काम लेवु, नीचनी साथे काइक आपीने काम लेवु अने सरखानी साथे पराक्रमथी काम लेवु "

वळी व्यापारीए सर्वत्र लेवड-देवडमा के परका ग्राहक (घराक) वाळवामा, नामामा विपरीत लखवु के खोच लेवी इत्यादि माया-कपट अने परवचना करवी नहीं कह्यु छे के, " जे प्राणी विविध उपायवडे माया रची बीजाने छेतरे छे, ते महामोहनो मित्र स्वर्ग तथा मोक्षना सुखथी पोताना आत्माने छेतरे छे " प्रायेकरीने माया-कपटरहितपणे कापड, सूतर, अने सोना, रुपा विगेरेनो वेपार करवो अर्थात् जेम बन तेम अल्प पाप थाय तेवी रीते वेपार करवो.

अहिं कोई शका करे के, साधारण स्थितिवाळा व्यापारीने माया–कपट कर्या विना केवळ शुद्ध व्यापारथी निर्वाह शी रीते थाय? उत्तरमा कहेवानु के, घणा कुडकपटथी जे द्रव्य उपार्जन कर्युं होय ते वर्ष–बे वर्ष पछी अने राजा, चोर, अग्नि, जळ के राजदड विगेरेथी हराइ जाय छे, चिरकाळ स्थायी रहेतु नथी तेम देहना उपभोगमा के धर्मकार्ये वापरवामा पण उपयोगी थतु नथी कह्यु छे के,

अन्यायोपार्जित वित्तं, दशवर्षाणि तिष्ठति ।
प्राप्ते चैकादशे वर्षे, समूल च विनश्यति ॥

"अन्यायथी मेळवेलु धन दश वर्ष सुधी रहे छे, ज्यारे अगीयारमु वर्ष प्राप्त थाय छे त्यारे ते समूळगु नाश पामे छे" ते प्रमाणे सागरश्रेष्ठी, पापबुद्धि, अने रकश्रेष्ठी विगेरेने बन्यु हतु तेथी जे माया–कपट रहितपणे वर्त्तवु ते आ लोकमा पण अनिष्टानु हेतु थायछे विहार, आहार अने व्यवहार ए त्रणे तपस्वीओना जोवायछे अने गृहस्थनो तो शुद्ध व्यवहारज जोवायछे वृद्धो पासेथी एवी पण एक वार्त्ता साभळी छे के, पुणिक नामे श्रेष्ठी मात्र पचवीश दाकडानो स्वामी हतो, अने ते हमेशा साडाबार दोकडा पेदा करी शुद्धवृत्तिथी गृहभार निर्वाह करतो हतो

अहिं कोई शका करे के, केटलाएक न्यायधर्मथी चालनारा दारिद्र प्रमुखना दुःखथी पीडाता जोवामा आवे छे, अने केटलाएक अधर्मथी व्यापार करनारा ऐश्वर्य अने समृद्धि विगेरेथी सुखी देखाय छे तो पछी शुद्ध व्यवहारनी प्रधानता क्या रही? तेना उत्तरमा कहेवानु के, तेमा पूर्व कर्मना विपाकनी मुख्यता छे आ भवना कर्मनी मुख्यता नथी

कर्म चार प्रकारनु छे ते विषे श्रीधर्मघोषसूरि कहेछे के, पुण्यानुबधी पुण्य, पापानुबधी पुण्य, पुण्यानुबधी पाप अने पापानुबधी पाप–एम चार प्रकारनु कर्म छे जिनधर्मनी सम्यक् प्रकारे आराधना करनार भरतचक्री जेवाओनु पुण्यानुबधी पुण्य, अज्ञान कष्टवडे कोणिकनी जेम समृद्धि पामवी ते पापानुबधी पुण्य, ते भवमा पापना उदयथी दरिद्री थयेला एवा द्रमकमुनिनी जेम बने ते पुण्यानुबधी पाप, अने काळकशौरिकादिकनी जेम थाय ते पापानुबधी पाप समजवु

कोई माणसने पापानुबधी पुण्यना उदयथी आ भवमा विपत्ति जोवामा आवती नथी तथापि परिणामे आगामी भवमा तेने अवश्य विपत्ति प्राप्त थवानी–एम समजवु ते विषे एक एवी वार्त्ता छे के, कोई श्रावक अने चोर बने पोत-

पोताना घरमांथी साथे नीकळेलो श्रावक चोरनी आगळ आगळ प्रभुना दर्शन करवा जतो हतो, त्यां मार्गे तेना पगमां कांटो वाग्यो अने पेला चोरने आगळ जतां एक रुपीओ जड्यो तेथी ते हर्ष पाम्यो आथी श्रावक विचारमां पड्यो के, अहो ! अधर्मीने सारु फळ अने धर्मीने दुःख-आ केवी वात ? आ संदेह तेणे गुरु पासे जईने पुछ्यो एटले गुरु बोल्या के, हे श्रावक ! तारु पाप पगमां कांटो वागवाथी नाश पाम्युं अने ते चोरने आगळ जातां राजाना सुभटो पकडीने शूळीए चडाववा क्षणवारमां तेमज बन्युं, अने ते पेला श्रावकना सांभळवामां आव्युं त्या रथी ते श्रावक निरंतर शुद्ध व्यापारमां तत्पर थयो

" आ प्रबंधने हृदयमां उतारी द्रव्यनी हानिना हेतुरूप कृपणता विगेरे दो षोने तजी दई हमेशां शुद्ध व्यवहार राखवा के जेथी द्रव्यनी वृद्धि थाय "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेश सग्रहाख्यायामुपदेशमासाद
वृत्तौ सप्तविंशत्युत्तरशततम
प्रबंध ॥ १२७ ॥

व्याख्यान १२८ मुं.

माया-कपट करवानुं अने न करवानु फळ कहे छे

कूटस्य जल्पनं मोच्य राज्ञा पुरो विशेषत ।
दम्भा त्कीर्तिश्रियो हानि तस्मात् श्राद्ध परित्यजेत् ॥ १ ॥

भावार्थ —

" कुड-कपटथी बोलवु नहीं, तेमां पण विशेषेकरीने राजानी आगळ तो बोलवुज नहीं दंभ करवाथी कीर्ति अने लक्ष्मीनी हानि थाय छे. तेथी गृहस्थे (श्रावके) तेनो त्याग करवो "

विशेषार्थ —

लेवड-देवड विगेरेमां कपटथी बोलवु नहीं तेमज कोईनुं गुह्य बीजानी आगळ प्रकाशित करवु नहीं कह्यु छे के, " पोतानां अने पोतानी स्त्रीनो आहार, सुख, द्रव्य, गुण, दुष्कर्म, मर्म अने मंत्र एटला-कोईनी आगळ प्रकाश करवां नहीं "

अहीं कोइ शंका करे के, आ श्लोकमा तो सत्यभाषण करवानो निषेध कर्यो. कारण के, उपरनी बाबतमा कोइ पुछे तो तेनी आगळ प्रकाश न करवाथी असत्यज बोलवु पडे तेथी तमे कूट–भाषण करवानो निषेध केम करो छो? तेना उत्तरमा कहेवानु के, कोइ आयुष्य, द्रव्य, अने घरनुं छिद्र विगेरे पुछे तो तेना उत्तरमा जुठुं बोलवु नहीं पण तेने 'आवा प्रश्नथी शु?' एम कही भाषासुमति (बोलवानी युक्ति) वडे प्रत्युत्तर आपवो तेमा वळी राजानी आगळ तो कूट वचननो विशेषपणे त्याग करवो उपलक्षणथी गुरु–वडिल प्रमुखनी आगळ पण जे यथार्थ होय तेज कहेवु कह्यु छे के, 'मित्रनी आगळ सत्य कहेवु, स्त्री पासे प्रिय कहेवुं, शत्रुनी आगळ मधुर अने खोटु कहेवु अने स्वामी आगळ अनुकूळ तथा सत्य होय ते कहेवु" ते उपर एक वार्त्ता कहेवाय छे, ते आ प्रमाणेः—

दिल्हीशेहेरमा **महणसिंह** नामे एक शाहुकार हतो ते सत्यवादी अने शुद्ध व्यवहारवाळो छे एवी तेनी प्रशंसा साभळी बादशाहे तेने बोलावीने पुछ्यु के, तारी पासे केटलुं धन छे? महणसिंहे जवाब आप्यो के, हु चोपडा जोई लेखु करीने आपने कहीश एम कही घेर आवी सारी रीते लेखु करी बादशाह पासे आवीने कह्यु के "साहेब! मारी पासे चोरासी हजार द्रव्य छे" बादशाहे विचार्यु के, में तेनी पासे थोडु द्रव्य छे एम साभळ्यु हतु अने आ शाहुकारे तो वधारे कह्युं, माटे ते बराबर सत्य कहे छे आथी खुशी थई राजाए महणसिंहने पोतानो कोशाध्यक्ष बनाव्यो तेथी जे सत्य होय तेज कहेवुं

असत्य कहेवाथी दंभ कर्यो कहेवायछे, अने तेथी कीर्त्ति अने लक्ष्मीनी हानि थायछे माटे श्रावके दंभ छोडी देवो आ उपर धर्मबुद्धिनी कथा छे ते आ प्रमाणे –

धर्मबुद्धि तथा पापबुद्धिनी कथा.

श्रीमपुर नामना नगरथी **पापबुद्धि** अने **धर्मबुद्धि** नामे बे मित्र द्रव्य कमावाने माटे देशातर गया हता त्या द्रव्य उपार्जन करी पाछा पोताने घेर त्वराथी आवता हता कह्यु छे के, "विद्या प्राप्त करीने घरे आवनारा शिष्योने अने देशातरथी द्रव्य पेदा करीने घरे आवनारा व्यवहारीओने एक कोश पण सो योजन जेटलु लागे छे" आ प्रमाणे उतावळे चालता पोताना गाम पासे आव्या एटले बोजो वधारे होवाथी तेओ केटलुक द्रव्य गामनी बहार डाटीने घेर आव्या कह्यु छे के, "प्राज्ञ पुरुषे कोईने अल्प द्रव्य पण बतावबु नहीं कारण के, द्रव्य जोवाथी मोटा मुनिनु मन पण चळित थाय छे" वळी कह्यु छे के, जेम जळमा मास

पडे तो मत्स्य खाई जायछे, पृथ्वीपर होय तो हिंसकप्राणी खाई जायछे अने आकाशमा होय तो गीध विगेरे पक्षीओ खाई जायछे तेम द्रव्यवान्ना द्रव्य विषे पण जाणी लेवु ”

एक वखते पेला बे मित्रमाथी पापबुद्धि रात्रे जइने डाटेलु द्रव्य काढी लइ ते खाडो काकराथी पूरी घेर आव्यो अन्यदा धर्मबुद्धिए पापबुद्धि पासे आवीने कह्यु के, हु द्रव्य विना दु:खी थाउछु, माटे चालो पेलु द्रव्य काढी लावीए पापबुद्धि बोल्यो–चालो जइए पछी बने द्रव्य लेवा गया त्या खाडो खोदीने जोता द्रव्य रहीत जोइ पेलो दांभिक पापबुद्धि कपटथी माथु कुटवा लाग्यो अने बोल्यो–“ अरे! धर्मबुद्धि! आमाथी तुज धन काढी गयो छे ” धर्मबुद्धिए कह्यु के, “ मे लीधु नथी पण तें लीधु छे, अने आ खोटी माथा करे छे, मे तो दंभवृत्ति करवाना पचखाण लीधा छे ” आ प्रमाणे वाद–विवाद करता बने राजद्वारमा फरीयादे गया बने परस्पर एक बीजाना दूषण कहेवा लाग्या ते साभळी न्यायाधिकारीओए कह्यु के, तमे बने दिव्य करी बतावो एटले पापबुद्धि बोल्यो के–‘ तमे अमारो न्याय बराबर कर्यो नहीं केमके न्यायमा प्रथम दिव्य होयज नहीं कह्यु छे के, “ प्रथम तो वाद–विवाद साभळीने न्याय आपवो, अने जो ते बराबर न जणाय तो पछी साक्षीओ लइने न्याय आपवो, अने जो साक्षीना अभाव होय तो पछी छेवटे दिव्य करावु–एम विद्वानो कहे छे ” आ वातमा तो अमारे ज्या द्रव्य हतु, ते वननी देवी साक्षी छे ते जे चोर हशे तेनु नाम आपशे ” अधिकारीओए कह्यु, ते वात सत्य छे कह्यु छे के, “ जो वाद–विवादमा एक चडाळ पण साक्षी मळे तो त्या दिव्य कराववु नहीं, तो ज्या देवता साक्षी होय त्या तो वातज शी करवी ” आ प्रमाणे न्यायाधिकारीओए मान्य करीने ठराव्यु के, ‘ काले सवारे त्या जइ वन देवताने पुछवु ’

पापबुद्धि घेर आव्यो अने रात्रे पोताना पिताने कोइ खीजडीना वृक्षना कोटरमा गोपव्यो पछी ते वृक्षनी आसपास सिंदूर अने तेल लगाव्यु तेणे पोताना पिताने शीखडाव्यु के, अहीं ज्यारे वनदेवीने पुछवामा आवे त्यारे तमारे स्वर बदलावीने कहेवु के, ‘ धर्मबुद्धि गोमुखो वाघ छे, तेणे आवीने धन काढी लीधु छे ’ आम शिखवीने ते चाल्यो गयो बीजे दिवसे धर्मबुद्धि, पापबुद्धि, राजा अने अधिकारी प्रमुख लोको वनमा गया पछी वनदेवीनी पूजा करीने पुछ्यु “ हे वनदेवता! आ द्रव्य कोणे लीधु छे, ते कहो ” एटले खीजडीना कोटरमाथी शब्द नीकल्यो के, “ गोमुखो वाघ धर्मबुद्धि द्रव्य लइ गयो छे ” ... अधि... धर्मबुद्धिने कहेवा तत्पर थया के, आ द्रव्य तें लीधु छे

समक्ष ते खीजडीना वृक्षने अग्नि लगाडयो जेथी ते वृक्ष बळवा माडयुं, एटले तेमाथी जेनु अर्धु अग दग्ध थयेलु छे अने जेनी आखो फुटी गइ छे तेवो पापबुद्धिनो पिता तेना कोटरमाथी नीकळ्यो ते जोइ अधिकारीओ आश्चर्य पामीने बोल्या के–" अरे ! श्रेष्ठि ! आ शु ! तें वृद्धावस्थामा आवु पाप केम कर्यु ? " श्रेष्ठी बोल्यो–" आ पाप मने पुत्रे कराव्यु " त्यारथी ते बने लोकमा धर्मबुद्धि अने पापबुद्धि एवा नामथी प्रसिद्ध थया राजाए दाभिक–पापबुद्धिनु सर्वस्व लुंटी लइने तेने पोताना देशमाथी काढी मुक्यो कह्यु छे के,

मायामविश्वासविलासमदिरं, दुराशयो यो कुरुते धनाशया ।
सोनर्थसार्थं न पतन्तमीक्षते, यथा बिडालो लकुटं पयः पिबन् ॥

" जे दुष्टहृदयवाळो मनुष्य धननी आशाथी अविश्वासना विलासनु मदिररुप माया आचरे छे, ते दूधनु पान करवा इच्छतो मार्जार जेम पोतानी उपर पडती लाकडीने जोतो नथी तेम पोतानी उपर आवी पडनारा अनर्थना समूहने जोतो नथी.

राजाए शुद्धधर्मी धर्मबुद्धिना घणा वखाण कर्या अने ते सुखी थयो

" आ बन मित्र (धर्मबुद्धि अने पापबुद्धि) नी वार्त्ता साभळीने गृहस्थ व्रतधारीओए दभ छोडीने व्यवहार करवो, जेथी सौभाग्य अने लक्ष्मी प्राप्त थाय "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेश सग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ अष्टाविंशत्युत्तरशततम
प्रबध. ॥ १२८ ॥

व्याख्यान १२९ मु.

शुद्धव्यापार विषे विशेष हितशिक्षा कहे छे

बाधा मिथस्त्रिवर्गस्य न कार्या ह्यास्तिकैर्नरैः ।
विश्वस्तघातकार्यं च सुवृत्त्या दूषणं मतम् ॥ १ ॥

भावार्थ.–

" आस्तिक पुरुषोए धर्म, अर्थ अने कामने परस्पर बाधा थाय तेम न करवु, अने विश्वासघातनु काम पण न करवु केमके ते सद्वृत्तिनु दूषण छे "

विशेषार्थ.—

त्रिवर्ग एटले धर्म, अर्थ अने काम-तेने परस्पर बाधा थाय तेम आस्तिक पुरुषोए करवु नहीं. ते त्रणमा नि श्रेयस (कल्याण) सुखने साधनार ते धर्म कहेवाय छे सर्व अर्थ (प्रयोजन) नी सिद्धि करे ते अर्थ कहेवाय छे अने शब्दादि पाच इन्द्रियोने प्रीति उपजावे ते काम कहेवाय छे ए त्रणमाथी कोई पण एकने आसक्तिवडे सेववाथी बीजाओने बाधा थाय छे अतिमुक्तकुमार तथा जबुस्वामीनी जेम कोई एकला धर्मनेज सेवे छे. अथवा म्लेच्छ कुळमा पण केटला एक लघुकर्मी थाय छे ते विषे एक एवी कथा छे के, अहम्मद बादशाह दर रोज सवामण पुष्पनी शय्यामा सूतो हतो. एक वखते कोई दासी कौतुकथी ते शय्यामा सूई गई तत्काळ ते निद्रावश थई गई तेवामा बादशाह अकस्मात् राजसभामाथी त्या आवी चड्यो, अने दासीने सुतेली जोइ एक चाबुक मारी दासी हसती हसती बेठी थई अने पृथ्वी उपर उभी रही बादशाहे आश्चर्यथी तेने हास्य करवानु कारण पुछ्यु एटले दासी बोली—"साहेब ' आवे मने एक प्रहार कर्यो तेथी फुलनी शय्यामा थोडीवार सुवानु मारु पाप तो नष्ट थईगयुं, पण आप हमेशा अनेक वृक्षोना फुलो मगावी तेनी शय्या करावीने तेपर निद्रा करोछो, ते पापनो दड केटलो थशे ? त विचारता मने हास्य आवे छे " दासीना आवा वचनो साभळीने बादशाहे ते दिवसथी पुष्पशय्यामा सुवानु छोडी दीधु

एक वखते तेज बादशाह चतुरग सेना लई उपवनमा जतो हतो. मार्गमा कोई उट मृत्यु पाम्यु तेथी सर्व सैन्य उभु थई रह्यु. ते जोई बादशाहे पुछ्यु के—सैन्य आगळ केम चाल्तु नथी ? अमात्ये आवाने उटना मृत्युनी वात कही बादशाह मृत्युना तत्व विषे काईपण जाणतो नहोतो तेथी पुछ्यु के, मृत्यु एटले शु ? अमात्योए कह्यु, स्वामी, काने साभळे नहीं, आखे देखे नहीं अने खाय पीवे नहीं ते मृत्यु राजा ते साभळी विस्मय पाम्यो अने मृत्यु पामेला उट पासे जइने कह्यु के—अरे पशु ' उठ, खान पान कर्य क्रोधथी आवी निद्रा न करीए त्यारे बीजाओए कह्यु के, साहब ' आतो निर्जीव थयु छे एम कही घणी युक्तिओथी मृत्युनु स्वरुप समजाव्यु, ते उपरथी बादशाह पोते विचार करवा लाग्यो के—अहो ' आयु मृत्यु अणचिंतव्यु आवशे त्यारे आपणी कोण रक्षा करशे एम विचारी तत्काळ सर्वनो त्याग करी पोतानी जातिनो श्रेष्ठ धर्म (फकीरी) स्वीकार कर्या. ते उपर लोकोमा पण आ प्रमाणे कहेवत छे —

दोहो.

सोल सहस्स साहेलिआ, तुरी अढारह लक्ख ।
साहेब तेरे कारणे, छोड्या सेहेर बुलख ॥

अन्य शास्त्रोक्त आ संबंध उपयोगी जाणीने अहीं कह्यो छे जेम ते बादशाहे अर्थ अने कामनो त्याग करी अहिंसा, सत्य विगेरे धर्म स्वीकार्यो एवी रीते बीजाओए पण यथायोग्य प्रवर्त्तन करवुं

कोई मम्मणश्रेष्ठीनी पेठे एकला अर्थनेज साधे छे पण ते अयोग्य छे. कारण के धर्म अने कामने उल्लंघन करीने उपार्जन करेला धननो उपभोग बीजाओ करे छे अने पापनु भाजन पोते थाय छे. जेम सिंह हाथीनो वध करनार पोते थाय छे अने तेना मौक्तिक अने दांत विगेरेनो स्वामी बीजो थाय छे कह्यु छे के,

किटिका संचित धान्यं, मक्षिका संचितं मधु ।
कृपणोपार्जिता लक्ष्मी., परैरेवोपभुज्यते ॥

" कीडीओनु संचय करेलु धान्य, माखीओनु संचेलु मध अने कृपणे उपार्जन करेली लक्ष्मी-तेनो उपभोग बीजाज करे छे "

वळी कोइक एकला कामनेज सेवे छे अर्थ अने धर्मने सेवता नथी विषयलुब्धना लुब्ध एवा ब्रह्मदत्तचक्री विगेरेनी जेम ते विषे लौकिकशास्त्रमा पण एक वार्त्ता छे के, सवालाख गामनो अधिपति अने दिल्लीनो स्वामी पृथुराज चहुवाण कामासक्त थवाथी राज्यभ्रष्ट थयो हतो. तेनी हकीकत एवी छे के, एक वखते पृथुराज पांगुराजाना अंतपुरमाथी तेनी पुत्री संयोगिताने छळथी हरी गयो अने पोताना नगरमा आव्या पछी अत्यंत कामासक्त अने राज्यचिंताथी रहित एवा ते राजानी वात कोई म्लेच्छ बादशाहना जाणवामा आवी. तेथी तत्काळ ते बादशाहे तेनापर चडाइ करीने सुखे सुखे तेनु राज्य लई लीधु अने तेनी बने आखोना पोपचा सोयदोराथी सीवी लई सोयदोरासहित लोढाना पांजरामा पुर्यो त्या ते महा दु.ख पाम्यो

श्रीजैन आगममा पण एकला कामसेवन उपर अनंगसेन सोनीनो संबंध छे शीलोपदेशमाळानी वृत्तिमा तेने स्त्रीनु दासत्व करनारो वर्णव्यो छे ते शिवाय रिपुमर्दन विगेरेना संबंध पण कामासक्ति उपर कहेला छे आ प्रमाणे धर्म, अर्थ अने काम सवरी एकमरोगी त्रण भागा थाय छे

हवे त्रिकसयोगी भागा बतावे छे एटले बेमा आसक्ति अने एकमा नहीं, एवी रीते पण त्रण भागा थाय छे ते आ प्रमाणे–कोइ धर्म अने अर्थमां आसक्त होय छे, पण काममा आसक्त होता नथी. कुमारपाळराजानी जेम कुमारपाळ धर्म प्राप्त थया पेहेला घणी राजकन्याओ परण्या हता. पण व्रत लेवा वखते अल्प आयुष्यने योगे बीजी राणीओ मरण पामी हती अने एक भूपछदेवीज जीवती हती. व्रत लीधा पछी ते पण केटलेक काळे मृत्यु पामी पछी तेमना वंतिर सामतादिक वर्ग घणी विनति करी के, हे प्रजापाळ महाराजा ! पुनः पाणिग्रहण करो त्यारे कुमारपाळे कह्यु के, हवे ससार वधारवाना उपायभूत पाणिग्रहणना आग्रहथी सर्यु मारे आजथी यावज्जीवित शीळव्रत हो, के जेथी कदी क्रियाओ सफळ थाय सिद्धातमा कयु छे के, "शीळथी व्रत, दान, तप अने नियम विगेरे भले प्रकारे आचरेला थायछे " सामतोए कह्यु, "राजन् ! पटराणी विना मागलिक उपचारो शी रीते थाय बीजा लोकोनी जेम राजाओ राणी वगरना क्याइ सामळ्या नथी, तेम जोया पण नथी " राजाए कह्युं, अरे ! श्रीगागेय (भीष्म पितामह) ने केम भुली जाओ छो ? जेमणे जन्मथीज पाणिग्रहण कर्यु नहोतुं पछी कुमारपाळे साम तादिकथी परवरेला गुरु पासे जइने तेमने मुखे ब्रह्मव्रत अगीकार कर्यु त्यारथी मत्रीओ राजधर्म सबधी मागळिक उपचारो–आरात्रिक अने मगळप्रदीप करवाने अवसरे राणी भूपछदेवीनी सुवर्णनी मूर्ति करावीने राजानी पडखे मुकता हता ब्रह्मचर्य ग्रहण कर्यु ते वखते गुरुए कुमारपाळने राजर्षिनु बिरुद आप्युं हतुं

आ प्रमाणे ते महापुरुषने युक्त छे, पण व्यवहारमा रहेला गृहस्थने केटलीक वखत कामपीडावडे परस्त्री विगेरेनो उपद्रव थाय छे.

कोइ धर्म अने कामनेज सेवे छे, अर्थने सेवता नथी अर्थात् द्रव्योपार्जन करवानी चिंता करता नथी पण एवी रीते धर्म अने कामनी सेवा करनारने करज वधे छे अने माननी हानि थाय छे तेथी गृहस्थे प्रयत्नथी धन उपार्जन करवु कह्यु छे के, " एवु कोइपण कार्य नथी के जे अर्थ विना सिद्ध थाय, तेथी मतिमान् पुरुषे यत्नथी अर्थने साधवो "

आ सबधमा एवी एक वार्ता छे के, एक धनदत्त नामे मिथ्यात्वी श्रेष्टी हतो ते धर्मबुद्धिथी ब्राह्मणोने दान आपतो अने वारवार ज्ञातिनु पोषण करतो वळी कन्यादान, गोदान इत्यादि दानो आपतो तेमा तेणे एक लाख द्रव्य खर्ची नाख्यु अने नवु धन उपार्ज्युं नहीं वळी कामनी लोलुपतामा पण तेनुं घणु धन गयु तेथी ते निर्धन थइगयो, अने अपमानने प्राप्त थयो पछी ते पोतानो धर्म वेचवाने

माटे साथवालुं भातुं लइने देशातर चाल्यो मार्गे कोई वनमा भोजन करवाने बेठो तेवामा,कोइ मासक्षपणी मुनि त्या पधार्या धनदत्ते तेने दान आप्यु पछी तेणे पोताना धारेला कोइ गृहस्थने घेर जइ पूर्वोक्त धर्मने वेचवा माग्यो ते गृहस्थे पोताना पूर्वजोना कहेवाथी धनदत्तने कयु के, जो पेला मुनिदर्शननु फळ मने आप्य तो हु तने मुखे माग्युं द्रव्य आपु ते साभळी धनदत्त तेनो जवाब पण न आपता तत्काळ पोताना घर तरफ चाली नीकळ्यो मार्गमा अरण्यनी अदर उवराना फळ पड्या हता, ते पोटकीमा बाधीने घेर आव्यो मुनिदानना पुण्यथी मुनिनी भक्ति करनार वनदेवताना प्रसादवडे ते सर्व स्वर्णमयी थइगया पछी ते श्रावक प्रमाणे खर्च करवा लाग्यो अने उत्तम श्रावक थयो आ वार्त्ता साभळीने गृहस्थे यथायोग्य आचरण स्वीकारवु

कोइ अर्थ अने कामनीज सेवा करे छे, धर्मने सेवता नथी. **सागर** श्रेष्टी अने धवळ श्रेष्टीनी जेम परतु अधर्मीनु परिणामे काइपण कल्याण थतुं नथी

कोइ धर्म, अर्थ अने काम ए त्रणेने सेवता नथी पण तेओ ए त्रणथी अतीत एवा-चोथा वर्ग(मोक्ष) ना आराधक होय छे तेथी तेवा मुनिमहाराजाने ए भागाना स्वामी पोतानी मेळे जाणीलेवा

कोई धर्म, अर्थ अने काम-ए त्रणेने सेवे छे. ए भागाना स्वामी **अभयकुमार** अने **सुलसा** विगेरेने जाणी लेवा

आ प्रमाणे साभळीने त्रण वर्गमाथी कोइने पण बाधा करवी ते गृहस्थने योग्य नथी कह्यु छे के, " जे गृहस्थना धर्म, अर्थ अने कामनी सेवा वगर शून्य दिवसो जाय छे ते लुहारनी धम्मणनी जेम श्वास लेय छे छता जीवता नथी एम समजवु "

जो दैवयोगे त्रण वर्गमा परस्पर प्रतिबध थवानो सभव लागे तो उत्तर उत्तरने पीडा थता पूर्व पूर्वनी बाधानो त्याग करवो जेमके, कामने बाधा थती होय तो धर्म अने अर्थने बाधा न थाय तेम करवु कारण के जो धर्म अने अर्थ होय तो काम प्राप्त थवो सेहेलो,छे अने काम अने अर्थने बाधा थती होय तो थवादईने पण धर्मने धारण करवो कह्यु छे के, "धर्म सिद्ध होय तो अर्थ अने काम पण सिद्ध थाय छे " नीतिशास्त्रमा पण कह्यु छे के, "आवकमाथी एक भाग भंडारमा राखवो, एक भाग वेपारमा रोकवो, एक भाग धर्ममा अने पोताना उपभोगमा वापरवो अने एक भागवडे सर्वनु भरण-पोषण करवु " वळी सिंदूरप्रकरणमा पण कह्यु छे के,

त्रिवर्गसंसाधनमंतरेण पशोरिवायुर्विफलं नरस्य ।
तत्रापि धर्मं प्रवरं वदंति न तं विना यद्भवतोऽर्थकामौ ॥

" धर्म, अर्थ अने कामना साधन वगर पशुनी जेम मनुष्यनुं आयुष्य निष्फळ छे, तेमा पण धर्मने सर्वथी श्रेष्ठ कहेलो छे कारण के, धर्म विना अर्थ तथा काम सिद्ध थतां नथी "

" आ प्रमाणे धर्म, अर्थ अने कामने परस्पर अबाधाथी शुद्धपणे आराधन करनार सुबुद्धिपुरुष अनुक्रमे स्वर्ग अने मोक्षनुं सुख प्राप्त करे छे "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेश संग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ एकोनविंशत्युत्तरशततम प्रबंध ॥ १२९ ॥

व्याख्यान १३० मुं.

उपरना व्याख्यानमां कहेला श्लोकना पाछला बे पदनी विशेष व्याख्या करे छे.

" विश्वस्त घातकार्य च सुगुप्त दूषण मतं "

" कोइनो विश्वासघात करवो ते शुद्धव्यवहारना दूषणरूप जाणवुं "

विश्वासीने छेतरवामा महापाप छे ते पाप बे प्रकारनुं छे गुप्त अने प्रकट गुप्तपाप पण बे प्रकारनुं छे– अल्प अने महत् खोटा तोला ने खोटा माप विगेरेनुं पाप ते अल्प अने विश्वासघात विगेरेनुं पाप ते महत्, प्रकटपाप बे प्रकारनु छे– कुळाचारथी अने निर्लज्जपणा विगेरेथी कुळाचारवडे गृहस्थोने आरंभ प्रमुखमा पाप थायछे अने म्लेच्छादिकने हिंसा प्रमुखमा पाप थायछे ते अने निर्लज्जपणा विगेरेथी यतिवेशमा हिंसादि पाप प्रगटपणे करवाथी अनत संसारीपणुं थायछे कारण के, ते प्रवचननी उड्डाह (निंदा) नु कारणभूत छे कुळाचारथी प्रकटपाप करवामा थोडो कर्मबंध छे अने गोप्यमां अति तीव्र कर्मबंध छ कारण के, ते असत्यमय होवाथी तेवी रीते बीजाने छेतरवामा मोटुं पाप लागे छे ते विषे विसेमिरानी कथा छे, ते आ प्रमाणे—

विसेमिरानी कथा.

विशाळानगरीमा नंद नामे राजा हतो तेने विजयपाळ नामे पुत्र, बहुश्रुत नामे अमात्य अने भानुमती नामे राणी हती राजा, राणी उपर एवो आसक्त हतो के तेने सभामा पर्ण पासे बेसारतो एक वखते मत्रीए विज्ञप्ति करी के, "' हे देव ! सभामा राणीने पासे राखीने बेमजु ते अनुचित छे कह्यु छे के, 'राजा, अग्नि, गुरु अने स्त्री जो अति पासे रह्या होय तो विनाश करेछे' अने अति दूर रह्या होय तो फळ आपता नथी तेथी तेमने मध्यम भावथी सेववा " तेम करता जो आपनी पासे राखवानी ईच्छाज होय तो राणीनु रूप चित्रावीने ते चित्र पासे राखो " राजाए मत्रीना वचनथी तेम कर्यु ते विषे किरातार्जुनीय काव्यमा कह्यु छे के, " जे पोताना स्वामीने सारी रीते साची शिखामण आपे नहीं, ते मित्र के मत्री शेनो ? अने जे पोताने अणगमतु साभळे पण नही, ते स्वामी पण शेनो ? तेथी जे राजा अने मत्री सदा परस्पर अनुकूळ होय, तेमनी साथेज सर्व सपत्तिओ प्रीति करे छे "

एकदा राजाए ते चित्र पोताना शारदानदन नामना गुरुने बताव्यु गुरुए पोतानु पाडित्य दर्शाववाने कह्यु के, ' राणीने डाबा साथळमा तिल छे, ते आ चित्रमा कर्यो नथी." ते साभळी नदराजाने शका थई के, आ मारी राणीनो जार हशे ते उपरथी तेणे मत्रीने आज्ञा करी के, आ गुरुने मारी नखावो प्रधान विचारीने काम करे तेवो हतो, तेथी तेणे शारदानदनने पोताने घेर गुप्तपणे राख्या

एक वखत राजकुमार शीकार करवाने माटे वनमा जता कोइ डुक्करनी पछवाडे दोड्यो ते घणे दूर चाल्यो गयो सायकाळ थइ जवाथी राजकुमार सरोवरमाथी जळपान करीने व्याघ्रादिकना भयथी कोइ वृक्ष उपर चडी गयो ते वृक्ष उपर एक वानर रहेतो हतो, तेना शरीरमा ते वृक्षनो निवासी कोइ व्यतर पेठो तेथी ते वानर मनुष्यवाणीथी बोल्यो के, ' हे कुमार ! नीचे व्याघ्र आवेलो छे, पण तु मारा उत्सगमा सुखे सुइजा ' कुमार विश्वास राखीने सुतो नीचे रहेला व्याघ्र तेनी घणी याचना करी तोपण वानरे तेने आप्यो नहीं थोडी वार पछी कुमार जाग्यो एटले वानर ते कुमारना उत्सगमा सुइगयो पेला वाघे कुमारने कह्यु के, ' अरे कुमार ! ए वानरनो विश्वास शु राखेछे ? कह्यु छे के, " नदी, नखवाळा प्राणी इत्यादिनो विश्वास करवो नहीं " वळी एम पण कहेवायछे के, " क्षणमा रुष्ट अने क्षणमा तुष्ट तेमज क्षणे क्षणे रुष्ट तुष्ट थनारा अने जेमनु चित्त स्थिर नथी तेवाओनो

१ गुरुमा विनाश तेमनो अविनय, अनादर थईजाय ते समजवो

प्रसाद पण भयंकरछे " माटे तु एने मुकी दे ' क्षुधातुर वाघना आवा वचनथी राजकुमारे ते कपिने पडतो मुक्यो वानर पडतो पडतो अतराळ भागे बीजी शाखा साथे वळगी पडीन बोल्यो के-अरे कुमार ! तु तारा करेला विश्वासघातरूप कर्मने जाणेछे ? आम कहीने ते वानरना शरीरमा रहेला व्यंतरे मात काळे तेने गाडो करी-दीधो एटले ते 'विसेमिरा, विसेमिरा' एम बोलतो वनमा चोतरफ भमवा लाग्यो तेनो घाडो भयथी त्रास पामी पोतानी मेळे शेहेरमा राजानी आगळ गयो. घोडाने एकलो आवेलो जोई राजाए कुमारनी शोध करावी अने तेने वनमाथी शोधीने घेरे लाव्या पछी तेनु घेलापणु मटाडवा राजाए घणा उपाय कर्या पण तेने कांई गुण थयो नहीं एटले राजा पोताना गुरु शारदानदनना गुण सभारी तेने मरावी नाखवा माटे पोताना आत्मानी निंदा करवा लाग्यो पछी राजाए कुमारने साजो कर-नारने अर्धु राज्य आपवानो पडो वगडाव्यो त्यारे मत्रीए कह्यु के, मारी पुत्री आ विषे काईक जाणेछे राजा पुत्रने लई तत्काळ मत्रीने घेर गयो त्या पडदानी अंदर रही शारदानदन गुरु आ प्रमाणे श्लोक बोल्या'—

विश्वासप्रतिपन्नाना, वचने का विदग्धता ।
अकमारुह्य सुप्ताना, हतुं किं नाम पौरुषम् ॥ १ ॥

भावार्थ.— " विश्वास पामेलाने छेतरवामा चतुराइ शानी ? अने खोळामां सुतेलाने मारवामा पराक्रम शानु ? " ए श्लोक साभळी कुमारे पेलो ' वि ' अ-क्षर मुकी ' सेमिरा, सेमिरा, ' एम बोलवामाड्यु गुरुए पछी पडदामाथी बीजो श्लोक कह्यो —

सेतु गत्वा समुद्रस्य गगासागरसगमे ।
ब्रह्महा मुच्यते पापैर्मित्रद्रोही न मुच्यते ॥ २ ॥

भावार्थ — " समुद्रना सेतु (किनारा) उपर अने गगासागरना सगम उपर जवाथी ब्रह्महत्या करनार पापमुक्त थाय पण मित्रद्रोही पापमुक्त न थाय "
आ श्लोक साभळी कुमारे बीजो अक्षर ' से ' मुकी ' मिरा , मिरा ' एटलु बोलवा माड्यु पछी पडदामाथी पाछो नीचेनो श्लोक कहेवामा आव्यो —

मित्रद्रोही कृतघ्नश्च, स्तेयी विश्वासघातकः ।
चत्वारो नरकं यान्ति, यावच्चन्द्रदिवाकरौ ॥ ३ ॥

भावार्थ—"मित्रद्रोही, कृतघ्नी, चोरी करनार अने विश्वासघाती ए चार जण ज्यासुधी सूर्य चद्र रहे त्यासुधी नरकमा रहे छे आ श्लोक साभळी कुमार

त्रीजो अक्षर 'मि' मुकी मात्र 'रा, रा' एटलुं कहेवा लाग्यो पछी पडदामाथी पाछो एक श्लोक कहेवामा आव्यो'—

राजंस्त्वं राजपुत्रस्य यदि कल्याणमिछसि ।
देहि दान सुपात्रेषु गृही दानेन शुध्यति ॥ ४ ॥

भावार्थ—"हे राजन् ! जो तु तारा पुत्रनु कल्याण इच्छतो हो तो सुपात्रमा दान आप्य कारण के, गृहस्थ दान आप्याथी शुद्ध थाय छे" आ श्लोक सांभळी राजकुमार तदन स्वस्थ थईगयो अने वनमा बनेलो सर्व वृत्तात तेणे कही बताव्यो ते साभळी पडदा तरफ जोईने राजा बोल्यो के, "हे पुत्री ! तु गाममा रहेछे छता आ वानर, वाघ अने मनुष्यनु वन सबधी वृत्तात तें केवी रीते जाण्यु ?" ते साभळी पडदामा गुप्त रहेला शारदानदने नीचेनो श्लोक कह्यो—

देवगुरुप्रसादेन जिव्हाग्रे मे सरस्वती ।
तेनाह नृप जानामि भानुमत्यास्तिलं यथा ॥ १ ॥

भावार्थ:— "देव गुरुना प्रसादथी मारी जिव्हाना अग्र उपर सरस्वती वसे छे तेथी हे राजा ! भानुमती राणीना तिलनी जेम हु बधु जाणी शकुछु"

आ श्लोकथी राजानो पूर्व सदेह दूर थयो, एटले राजा अने गुरु परस्पर हर्षथी मळ्या

आ वृत्तात साभळीने श्रावकोए स्वामी, विश्वासी, देव, गुरु, मित्र, वृद्ध अने बाळकनो द्रोह तथा थापण ओळववी इत्यादि महापाप सर्वथा विशेषपणे वर्जवा "एवी रीते श्रावके शुद्धव्यवहारमा लागता सर्व दूषणो तजी देवा के जेथी आ लोक अने परलोकमा निरतर यशस्वीपणुं प्राप्त थाय"

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेश सग्रहाख्यायामुपदेश प्रासाद वृत्तौ त्रिंशदुत्तरशततम प्रबंध. ॥ १३० ॥

व्याख्यान १३१ मुं.

उपरना प्रबंधोमा अतिचारोसहित बीजुं गुणव्रत कह्युं. हवे अनर्थदडपरिहार नामे त्रीजुं गुणव्रत कहे छे.

शरीराद्यर्थदण्डस्य प्रतिपक्षतया स्थित. ।
योऽनर्थदण्डस्तत्त्याग. तृतीय तु गुणव्रतम् ॥ १ ॥

वार प्रवृत्ति करवी ते वीजुं लिंग कुशास्त्र सांभळीने अथवा अज्ञानथी हिंसात्मक यज्ञ विगेरेमा धर्मबुद्धिथी प्रवर्त्तवु ते त्रीजु लिंग मरणात सुधी काळशौकरिक कसाईनी जेम हिंसादिक थकी निवृत्त न थवु ते चोथु लिंग अथवा विचारामृत संग्रह नामना ग्रंथमा कह्यु छे के, " रौद्रध्यानथी मृत्यु पामेलो तदुल[१] जातिना मत्स्य, इत्यादि दुष्कर्म कर्या विना पण असख्य दुष्कर्मवडे पराभव करनारा एवा दुरत नरकमा जाय छे " रौद्रध्यान ऊपर कुरुन्ड अने उकुरुन्ड नामना बे महाश्रमनी कथा छे ते आ प्रमाणे—

कुरुन्ड अने उकुरुन्ड मुनिनी कथा.

कुणाला नगरीना दरवाजानी खाळ पास कुरुड ने ऊकुरुड नामना बे मुनि कायोत्सर्गे रह्या हता तेमना प्रभावथी 'तेथाने जळनो उपसर्ग न थाय', तेम धारी मेघ नगरनी बहार वर्षतो हतो ते हकिकत जाणीने लोकोए एकठा थइ तेमने ऊपद्रव करवा माड्या अने कहेवा लाग्या के, " तमारा बंनेना महिमाथी नगरमा वरसाद थतो नथी तेथी अमने घणो परिताप रहे छे, अने ए अमारे मोटा अरिष्टविघ्नरुप छे माटे तमो अहींथी नीकळो " आ प्रमाणे वारंवार कहेवाथी ते बनेना ध्यानमा भग थयो अने ते लोकोनी उपर रौद्रध्यान उत्पन्न थयु तेथी ते बने आ प्रमाणेनो श्लोक बोल्या—

वर्ष मेघ कुणालायां, दिनानि दश पच च ।
निरय मुशलधाराभिर्यथा रात्रौ तथा दिने ॥

भावार्थ—"हे मेघ ! कुणालानगरीमा मुशळधाराए जेवो रात्रीए तेवोज दिवसे पदर दिवस सुधी वरष " आटलु कहेतामाज मेघ वरसवा लाग्यो ते एटलो वर्ष्यो के तेना जळ प्रवाहमा आखु नगर तणाईने समुद्रमा चाल्यु गयु तेमा ते बने मुनि पण अशुभ ध्यानमा वर्तता सता तणाई गया ए प्रमाणे ते बने मुनि द्रव्यथी अने भावथी दुषीने नरके गया

"आर्त्तादि अपध्यानथी मेघनी वृष्टि करावीने क्षमारहितपणे आखा नगरने तणावी ते बने मुनि अनर्थदडवडे नर्कगतिने प्राप्त थया

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेश सग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ एकत्रिंशदुत्तरशततम प्रबध ॥ १३१ ॥

१ तदुलमत्स्य सातमी नरके जाय छे.

व्याख्यान १३२ मुं.

अनर्थदंडना बीजा भेदो कहे छे.

अनर्थदंडनो बीजो भेद **पापकर्मनो उपदेश करवो** ते छे, जेमके, 'क्षेत्रमा खोदो, हळ विगेरे तैयार करो, बळदने पलोटो (दमो), शत्रुआने मारो, कन्यानो विवाह करो' इत्यादि बीजाने उपदेश देवो ते पापोपदेश छे. आगममा साभळ्यु छे के, **कृष्णवासुदेव** अने **चेडा** महाराजाने पोताना बाळकोनो विवाह करवानो पण नियम हतो.

अनर्थदंडनो त्रीजो भेद हिंसामा उपयोगी थाय तेवी वस्तुओ आपवी ते छे. हिंसामा उपयोगी उपकरणो जेवा के, गाडु, शस्त्र, घटी, सांबेलु, खारणीओ, दातरडु, करवत, छरी, काकसी, कोदाळी, रेचक औषध, प्रगना कृमिनो अने गर्भनो नाश करे तेवा मूळीया तथा क्षार विगेरे कोइने आपवा ते पापबंधना हेतु छे. ते विषे एक वार्ता छे के, द्वारिकानगरीमा **धन्वंतरि** अने **वेतरणी** नामे बे वैद्य हता. तेमा धन्वतरी घणा सावद्य कर्म करतो अने वेतरणी पण औषधादिमा घणी जीवहिंसा करतो, तथापि ते कोइपण रोगी मुनिने निर्दोष औषध आपतो. एक वखते कृष्णवासुदेवे **नेमिनाथ** प्रभुने पुछ्यु "हे स्वामी! वैद्योनी शी गति थाय? लोकमा कहेवत छे के,—

> कवी चीतारो पारधी, वळी विशेषे भट्ट,
> गाथी नरक सधावीआ, वैद्य देखाडे वट्ट ॥ १ ॥

'कवि, चित्रकार, पारधि, भट्ट, अने गाथी—ए नरके जाय छे अने तेमने वैद्य मार्ग बतावे छे" आ नगरीमा **धन्वतरि** अने **वेतरणि** नामे बे वैद्य रहे छे, तेमनी शी गति थशे?' प्रभु बोल्या—"राजन्! पहेलो सातमी नर्कना अप्रतिष्ठान पाथडे उत्पन्न थशे अने बीजो आरंभ करे छे पण ते करता मनमा काइक बीहे छे तेथी मरण पामीने वनमा वानर थशे त्या कोइ मुनिने पगे कांटो वागेलो जोइ, जातिस्मरण उत्पन्न थता शल्योध्धारिणी औषधीवडे तेमने साजा करशे पछी मुनि तेने धर्मोपदेश आपशे ते साभळी पूर्वना पापकृत्यने आळोवी त्रण दिवस सुधी अनशन करी सहस्रार देवलोकमा देवता थशे. पेलो धन्वंतरि वैद्य षट्काय जीवनी हिंसाथी वारवार अप्रतिष्ठानपाथडे उत्पन्न थशे अने वनस्पत्यादिकमा एक कोडीने अनंतमे भागे वेचाशे." आ प्रमाणे अनर्थदंडनो त्रीजो भेद जाणवो.

वियोग अने अनिष्ट संयोगथी थती वेदनावडे उत्पन्न थाय छे आ ध्यानथी तिर्यंचनी गति प्राप्त थाय छे.

श्रीआवश्यकसूत्रनी वृत्तिमा श्रीहरिभद्रसूरिए कह्युं छे के, "आर्तध्यानथी तिर्यंचगति प्राप्त थाय छे, रौद्रध्यानथी नर्कगति प्राप्त थाय छे, धर्मध्यानथी देवगति प्राप्त थाय छे अने शुक्लध्यानथी मोक्षगति प्राप्त थाय छे "

आर्त्तध्यानथी संजती नामे साध्वी गृहगोधा (घरोळी) थइ हती ए ध्यान देशविरति नामे पाचमा गुणठाणा सुधी होय छे ए ध्यानथी नंदमणिकार श्रेष्ठी मंडुक के० देडकापणुं पाम्यो हतो अने सुंदर श्रेष्ठी चंदनघो थयो हतो. एवी रीते आर्त्तध्याननुं फळ जाणवु

बीजु रौद्र नामनु अपध्यान आर्त्तध्यानथी विशेष क्रूर अध्यवसायवाळु छे ते पण चार प्रकारनु छे. एकेन्द्रियादि प्राणीओने ताडन करवु, वींधवु, बधन करवु, आकवु अने तेमना प्राणनो वियोग कराववो वळी खड्ग, शक्ति, भाला विगेरेथी, तेमज वीर, भूत, पिशाच के मूठ विगेरेना प्रयोगथी अने विष प्रयोगथी अथवा मत्र, तंत्र के यत्रादिकथी मनुष्यादिकने मारीनाखवानुं क्रोधथी चिंतवन करवु ते हिंसानुबंधि नामे रौद्रध्याननो प्रथम भेद छे

चाडी करवी, अघटतु वचन–चकार मकारादि बोलवुं, पोताना गुणनी अधिकता करी बीजाना दोष प्रगट करवा, तेमज पोताने इच्छित एवा राजानो जय साभळी बीजा राजाने माटे रौद्रबुद्धिथी कहेवु के "ठीक थयु, आपणा राजाना सद्भाग्ये जय छे, के जेना एक प्रहारवडे आटलाने मारी नाख्या " इत्यादि वारंवार बोलवुं अथवा तेवु चिंतवन करवु ते मृषानुबंधि नामे रौद्रध्याननो बीजो भेद छे.

तीव्ररोषथी द्रव्यना स्वामीओना मरणादिकवडे परद्रव्य हरण करवानी सगवडता थवा विगेरेनु चिंतवन करवु ते स्तेयानुबंधि नामे रौद्रध्याननो त्रीजो भेद छे.

पोताना द्रव्यनी रक्षा माटे सर्वत्र शका पामी शत्रु विगेरेने हणवा विगेरेना अध्यवसाय करवा ते संरक्षणानुबंधि नामे रौद्रध्याननो चोथो भेद छे

ध्यानशतकमा कह्यु छे के, करवु, करावvु, अनुमोदवु, अने तत्सबधी वारवार चिंतवन कर्याकरवु–एम चार प्रकारनु रौद्रध्यान छे अविरत–सम्यग्दृष्टि अने देशविरति श्रावकोए सेवेलु–चिंतवन करेलु एवु ते दुर्ध्यान अश्रेयकारी, पापरुप अने निंदवा योग्य छे एना चार लिंग (चिन्ह) छे ते आ प्रमाणे–पूर्वे बतावेल हिंसाप्रमुख चारेने विषे जे एक वार आदर करवो ते प्रथम लिंग ए चारेमा वारं-

भावार्थ.–

" शरीरादिने अर्थे थता ' अर्थदंड ' ना प्रतिपक्षी अनर्थदंडनो त्याग करवो ते त्रीजुं गुणव्रत कहेवाय छे "

विस्तरार्थ –

जेनाथी प्राणी अनर्थ एटले प्रयोजन विना पुण्यरूप धनना अपहारवडे दंडाय अने पापकर्मथी लेपाय ते अनर्थदंड कहेवाय छे तेना मुख्य चार प्रकार छे, ते आ प्रमाणे–" आर्त्त रौद्ररूप अपध्यान, पापकर्मनो उपदेश, हिंसामां उपकारी थाय तेवी वस्तुनुं दान अने प्रमादनुं आचरण

तेमां जे अपकृष्टक कहेता नठारु ध्यान ते अपध्यान कहेवाय छे ध्यान एटले अंतर्मुहूर्त्त सुधी मननी स्थिरता अथवा एकाग्रता श्री ठाणांग सूत्रमां कहेलुं छे के, "अंतरमुहूर्त्त पर्यंत चित्तनी एकाग्रता ते छद्मस्थनुं ध्यान अने योग निरोध ते केवळीनुं ध्यान " ते अपध्यान आर्त्त अने रौद्र एवा बे भेदवाळुं छे तेमां पण आर्त्तध्यान चार प्रकारनुं छे ते आ प्रमाणे—अनिष्ट एवा शब्द, रूप, रस अने गंधादि प्राप्त थवाथी त्रणे काळमां पण तेवा न मळे तो ठीक एवी तेना वियोगनी चिंता करवी ते आर्त्तध्याननो पहेलो भेद इच्छित शब्दादिक मेळवीने त्रणे काळ पण तेनो विच्छेद–वियोग न थाय एवुं चिंतवन ते आर्त्तध्याननो बीजो भेद रोगादिकनी वेदना प्राप्त थये ते क्यारे जशे एवी तेना वियोगनी चिंता ते आर्त्तध्याननो त्रीजो भेद अने भोगवेला कामभोगनुं स्मरण करवुं ते आर्त्तध्याननो चोथो भेद अथवा आवश्यक निर्युक्तिमां आपेला ध्यानशतकनी वृत्तिमां तो कह्युं छे के–इंद्र तथा चक्रवर्ती विगेरेना रूपादिक अने समृद्धि सांभळीने अथवा जोईने तेनी प्रार्थना करनारुं अधम निदान के० नियाणुं करवुं के, 'आ तपना अथवा दान विगेरेना प्रभावथी हुं देवेंद्रादि थाउं' ते आर्त्तध्याननो चोथो भेद जाणवो अहिं कोइ शंका करे के, ए ध्यान अधम केम कहेवाय ? तेना उत्तरमां कहेवानुं के, ते ध्यान अत्यंत अज्ञान मयपणाथी थायछे तेथी ते अधमध्यान कहेवाय छे केमके ज्ञानी शिवाय बीजाओनेज सांसारिक वैभवमां अभिलाष थायछे

ध्यान आत्मप्रवृत्तिवाळुं होवाथी अलक्ष्य छे पण ते लक्षणोथी जणायछे आर्त्त ध्यानना आ प्रमाण चार लिंग के० चिन्ह छे आक्रंदन एटले मोटा शब्दथी रुदन करवुं, शोचन एटले नेत्रमांथी आंसु पाडवां, परिदेवन एटले दीनता करी वारवार क्लिष्टभाषण करवुं अने ताडन एटले छाती कुटवी–आ चार लिंग इष्ट

व्याख्यान १३२ मुं.

अनर्थदंडना बीजा भेदो कहे छे.

अनर्थदंडनो बीजो भेद **पापकर्मनो उपदेश करवो** ते छे, जेमके, 'क्षेत्रमा खोदो, हळ विगेरे तैयार करो, बळदने पलोटो (दमो), शत्रुआने मारो, कन्यानो विवाह करो' इत्यादि बीजाने उपदेश देवो ते पापोपदेश छे. आगममा साभळ्यु छे के, **कृष्णवासुदेव** अने **चेडा** महाराजाने पोताना बाळकोनो विवाह करवानो पण नियम हतो

अनर्थदडनो त्रीजो भेद हिंसामा उपयोगी थाय तेवी वस्तुओ आपवी ते छे. हिंसामा उपयोगी उपकरणो जेवा के, गाडु, शस्त्र, घटी, सावेलु, खारणीओ, दातरडु, करवत, छरी, काकसी, कोदाळी, रेचक औषध, प्रणना कृमिनो अने गर्भनो नाश करे तेवा मूळीया तथा क्षार विगेरे कोइने आपवा ते पापबधना हेतु छे ते विषे एक वार्ता छे के, द्वारिकानगरीमा **धन्वतरि** अने **वेतरणी** नामे बे वैद्य हता तेमा धन्वतरी घणा सावद्य कर्म करतो अने वेतरणी पण औषधादिमा घणी जीवहिंसा करतो, तथापि ते कोइपण रोगी मुनिने निर्दोष औषध आपतो एक वखते कृष्णवासुदेवे **नेमिनाथ** प्रभुने पुछ्यु "हे स्वामी! वैद्योनी श्री गति थाय? लोकमा कहेवत छे के,—

> कवी चीतारो पारधी, वळी विशेषे भट्ट,
> गाथी नरक सधावीआ, वैद्य देखाडे वट्ट ॥ १ ॥

'कवि, चित्रकार, पारधि, भट्ट, अने गाथी-ए नरके जाय छे अने तेमने वैद्य मार्ग बतावे छे" आ नगरीमा **धन्वतरि** अने **वेतरणि** नामे बे वैद्य रहे छे, तेमनी शी गति थशे?' प्रभु बोल्या-" राजन्! पहेलो सातमी नर्कना अप्रतिष्ठान पाथडे उत्पन्न थशे अने बीजो आरभ करे छे पण ते करता मनमा काइक बीहे छे तेथी मरण पामीने वनमा वानर थशे त्या कोइ मुनिने पगे काटो वागेलो जोइ, जातिस्मरण उत्पन्न थता शल्योध्धारिणी औषधीवडे तेमने साजा करशे पछी मुनि तेने धर्मोपदेश आपशे ते साभळी पूर्वना पापकृत्यने आळोवी त्रण दिवस सुधी अनशन करी सहस्रार देवलोकमा देवता थशे पेलो धन्वतरि वैद्य पट्काय जीवनी हिंसाथी वारवार अप्रतिष्ठानपाथडे उत्पन्न थशे अने वनस्पत्यादिकमा एक कोडीने अनतमे भागे वेचाशे." आ प्रमाणे अनर्थदडनो त्रीजो भेद जाणवो.

धार मवृत्ति करवी ते बीजुं लिंग कुशास्त्र साभळीने अथवा अज्ञानथी हिंसात्मक यज्ञ विगेरेमा धर्मबुद्धिथी मवर्त्तवुं ते त्रीजुं लिंग. मरणात सुधी काळशौकरिक कसाईनी जेम हिंसादिक थकी निवृत्त न थवु ते चोथु लिंग अथवा विचारामृत संग्रह नामना ग्रंथमा कह्यु छे के, " रौद्रध्यानथी मृत्यु पामेलो तन्दुल[1] जातिना मत्स्य, हिंसादि दुष्कर्म कर्या विना पण असख्य दुष्कर्मवडे पराभव करनारा एवा दुरत नरकमा जाय छे. " रौद्रध्यान उपर कुरुट अने उत्कुरुट नामना बे महाऋपनी कथा छे ते आ प्रमाणे—

कुरुट अने उत्कुरुट मुनिनी कथा.

कुणाला नगरीना दरवाजानी खाळ पास कुरुड ने उकुरुड नामना बे मुनि कायोत्सर्गे रह्या हता तेमना प्रभावथी ' तेथाने जळनो उपसर्ग न थाय ' तेम धारी मेघ नगरनी बहार वर्षतो हतो ते हकीकत जाणीने लोकोए एकठा थई तेमने उपद्रव करवा माड्या अने कहेवा लाग्या के, " तमारा बंनेना महिमाथी नगरमा वरसाद थतो नथी तेथी अमने घणो परिताप रहे छे, अने ए अमारे मोटा अरिष्ट-विघ्नरुप छे माटे तमो अहींथी नीकळो " आ प्रमाणे वारंवार कहेवाथी ते बनेना ध्यानमा भग थयो अने ते लोकोनी उपर रौद्रध्यान उत्पन्न थयु तेथी ते बने आ प्रमाणेनो श्लोक बोल्या—

वर्ष मेघ कुणालाया, दिनानि दश पच च ।
निरंध मुशलधाराभिर्यथा रात्रौ तथा दिने ॥

भावार्थ—"हे मेघ ! कुणालानगरीमा मुशळधाराए जेवो रात्रीए तेवोज दिवसे पदर दिवस सुधी वरष " आटलु कहेतामाज मेघ वरसवा लाग्यो ते एटलो वर्ष्यो के तेना जळ प्रवाहमा आखुं नगर तणाईने समुद्रमा चाल्यु गयु तेमा ते बने मुनि पण अशुभ ध्यानमा वर्तता सता तणाई गया ए प्रमाणे ते बने मुनि द्रव्यथी अने भावथी डुबीने नरके गया

"आर्त्तादि अपध्यानथी मेघनी वृष्टि करावीने क्षमारहितपणे आखा नगरने तणावी ते बने मुनि अनर्थदडवडे नर्कगतिने प्राप्त थया

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेश सग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद वृत्तौ एकत्रिंशदुत्तरशततम प्रबध. ॥ १३१ ॥

---

१ तदुलमत्स्य सातमी नरके जाय छे.

व्याख्यान १३२ मुं.

अनर्थदंडना बीजा भेदो कहे छे.

अनर्थदंडनो बीजो भेद पापकर्मनो उपदेश करवो ते छे, जेमके, 'क्षेत्रमा खोदो, हळ विगेरे तैयार करो, बळदने पलोटो (दमो), शत्रुओने मारो, कन्यानो विवाह करो' इत्यादि बीजाने उपदेश देवो ते पापोपदेश छे आगममा साभळ्यु छे के, कृष्णवासुदेव अने चेडा महाराजाने पोताना बाळकोनो विवाह करवानो पण नियम हतो

अनर्थदंडनो त्रीजो भेद हिंसामा उपयोगी थाय तेवी वस्तुओ आपवी ते छे. हिंसामा उपयोगी उपकरणो जेवा के, गाडु, शस्त्र, घटी, सावेलु, खारणीओ, दातरडु, करवत, छरी, कोकसी, कोदाळी, रेचक औषध, व्रणना कृमिनो अने गर्भनो नाश करे तेवा मूळीया तथा क्षार विगेरे कोइने आपवा ते पापबंधना हेतु छे. ते विषे एक वार्ता छे के, द्वारिकानगरीमा धन्वंतरि अने वेतरणी नामे बे वैद्य हता तेमा धन्वंतरी घणा सावद्य कर्म करतो अने वेतरणी पण औषधादिमा घणी जीवहिंसा करतो, तथापि ते कोइपण रोगी मुनिने निर्दोष औषध आपतो. एक वखते कृष्णवासुदेवे नेमिनाथ प्रभुने पुछ्यु "हे स्वामी! वैद्योनी शी गति थाय? लोकमा कहेवत छे के,—

> कवी चीतारो पारधी, वळी विशेषे भट्ट;
> गाथी नरक सधावीआ, वैद्य देखाडे वट्ट ॥ १ ॥

'कवि, चित्रकार, पारधि, भट्ट, अने गाथी-ए नरके जाय छे अने तेमने वैद्य मार्ग बतावे छे" आ नगरीमा धन्वंतरि अने वेतरणि नामे बे वैद्य रहे छे, तेमनी शी गति थशे?' प्रभु बोल्या-"राजन्! पहेलो सातमी नर्कना अप्रतिष्ठान पाथडे उत्पन्न थशे अने बीजो आरंभ करे छे पण ते करता मनमा कांइक बीहे छे तेथी मरण पामीने वनमा वानर थशे त्या कोइ मुनिने पगे कांटो वागेलो जोइ, जातिस्मरण उत्पन्न थता शल्योध्धारिणी औषधीवडे तेमने साजा करशे पछी मुनि तेने धर्मोपदेश आपशे ते साभळी पूर्वना पापकृत्यने आलोवी त्रण दिवस सुधी अनशन करी सहस्रार देवलोकमा देवता थशे पेलो धन्वंतरि वैद्य षट्काय जीवनी हिंसाथी वारवार अप्रतिष्ठानपाथडे उत्पन्न थशे. अने वनस्पत्यादिकमा एक कोडीने अनंतमे भागे वेचाशे." आ प्रमाणे अनर्थदंडनो त्रीजो भेद जाणवो.

प्रमादनु आचरण ते अनर्थदंडनो चोथो भेद छे. प्रमाद–मद्यादि पाच प्रकारना छे तेने अंगीकार करवा ते अनर्थदंड छे ते विषे आगममा कह्यु छे के,—

मज्ज विसय कसाया, निद्दा विकहाय पचमी भणिया ।

एए पचपमाया, जीवं पाडंति संसारे ॥

" मद्य, विषय, कषाय, निद्रा अने विकथा–ए पाच प्रमाद जीवने संसारमा नाखेछे " मद्य एटले मदिरा–उपलक्षणथी आथो, मास, सुरको अने ताडी विगेरेनु ग्रहण करवु मद्य लौकीक अने लोकोत्तर बनेमा निंद्य छे कह्यु छे के, " मद्यथी मोहित थयेल बुद्धिवाळो पुरुष गायछे, भमेछे, यद्वातद्वा बोलेछे, रोवे छे, दोडेछे, जेने तेने पकडेछे, क्लेश करेछे, मारेछे, हसेछे, खेद पामेछे अने पोतानु हित समजतो नथी " वळी " सबोधसित्तरी "नी वृत्तिमा कह्यु छे के, " मद्यथी मदोन्मत्त थयेला कृष्णना पुत्रोना दोषथी एकसो ने बत्रीश कुळकोटी यादवोनो द्वारकानो दाह थवावडे क्षय थयो " तेमा छप्पन कुळकोटी यादवो नगरमा रहेता हता अने बोंतेर कुळकोटी यादवो नगरनी बहार रहेता हता तेओमा जेमणे चारित्र अंगीकार करवु कबुल कर्यु तेमने नेमिनाथ प्रभु पासे मुकीने बाकीनाओमा जेओ द्वारकाथी दूर गया हता, तेमने पण खेंची लावीने अग्निमा होमी दीधा हता कुळकोटीनी सख्या एवी रीते छे के, कोई एक यादवना घरमाथी एकसो आठ कुमार नीकळ एवा कुळने एक कुळकोटी कहेवाय, एम वृद्धो पासेथी साभळ्यु छे तत्व तो बहुश्रुत जाणे आ प्रमाणे पहेलो मद्य नामे प्रमाद जाणवो

विषय ते शब्दादिक पाच प्रकारे छे कह्यु छे के, "जेनु चित्त विषयथी व्याकुळ थायछे तेवो पुरुष, पोतानु हित के अहित जाणतो नथी, तेथी ए जीव अनुचित कर्म करीने आ दुःखथी भरेला संसाररूप अरण्यमा चिरकाळ भटकेछे " ए बीजो विषय नामे प्रमाद जाणवो

कष एटले ससार तेनो आय के० लाभ जेनाथी थाय ते कषाय कहेवाय. तेना चार प्रकार छे, तेनु विशेष स्वरुप आगळ कहेवामा आवशे आ कषाय नामे प्रमादनो त्रीजो भेद जाणवो

निद्रा एटले ऊंघ, ते पाच प्रकारनी छे जे निद्रामाथी सुखे जगाय ते निद्रा, जेमाथी दुःखे जगाय ते निद्रानिद्रा, उभाउभा आवे ते प्रचळा, चालताचालता आवे ते प्रचळाप्रचळा अने वासुदेवथी अर्द्ध बळवाळी के जेमा दिवसे चितवेलो अर्थ साधे छे ते स्त्यानर्द्धि ए प्रमाणे निद्राना पाच भेद छे.

स्त्यानर्द्धि निद्रानी पूर्व कथित व्याख्या कर्मग्रंथनी चूर्णीमां कहेली छे. पण तेटलु बळ वज्रऋषभनाराच संघयणनी अपेक्षाए समजवु ते शिवाय तो वर्तमानकाळना युवानोथी आठ गणु बळ होय एवो कर्मग्रंथन। वृत्तिनो अभिप्राय छे. जितकल्पनी वृत्तिमा एम लखे छे के, "स्त्यानर्द्धि निद्रानो उदय थाय त्यारे अति संक्लिष्ट परिणामथी दिवसे जोएला अर्थने उंघमा ने उंघमा उठीने साधे छे. अने तेनु वासुदेवथी अर्द्ध बळ होयछे. ते निद्रानो वियोग होय त्यारे पण ते मनुष्यमा बीजा पुरुषोथी त्रगणु के चोगणु बळ होयछ आ निद्रा नरकगामी जीवोनेज होयछे " आ निद्रा विषे महाभाष्यनी २३४ मी गाथामा घणा दृष्टांतो कहेला छे ते गाथामा कयु छे के–" थीणद्धीनिद्रा उपर मास, मोदक, हाथीदात, कुंभार, अने वडवृक्ष, एम पाच उदाहरणो जाणवा ते उदाहरणो आ प्रमाणे–

कोइ कणबी मासभक्षी हतो तेने कोइ स्थविर साधुए प्रतिबोध पमाडी दीक्षा आपी अन्यदा कोइ ठेकाण पाडानो वध थतो तेना जोवामा आव्यो तेथी तेनो अभिलाप करतो ते सुइगयो रात्रे तेने स्त्यानर्द्धि निद्रानो उदय थइ आव्यो तेथी तेणे उभा थइ कोइ ठेकाणे जइ बीजा पाडाने मारी तेनु मास भक्षण कर्यु अने बाकीनु जे वध्यु, त साथे लावी उपाश्रयमा मुकीने सुइ गयो प्रात काळे तेणे गुरुने कह्यु के, मे आवु स्वप्न जायु छ त्या तो पेलु मास बीजा साधुआना जोवामा आव्यु तेथी तेमणे जाण्यु के, आ साधुने रात्रीए स्त्यानर्द्धि निद्रानो उदय थयेलो जणाय छे पछी सर्वे मळी तेनी पासेथी ओघो मुहपत्ति विगेरे मुनिलिंग लइलीधु अने तेने विसर्जन करी दीधो

कोइएक साधु श्रावकने घेर मोदक के० लाडु जोइ तेनी अभिलाषा करतो सुइ गयो रात्रे तेने स्त्यानर्द्धि निद्रानो उदय थयो, एटले उठीने ते श्रावकने घेर गयो, अने तना कमाड भागी ते मोदक खाइ बाकीना उपाश्रये लावी पात्रामा नाखीने सूइगयो सवारे उठीने तेणे पण स्वप्न आव्यानुज गुरुने कह्यु, पण पात्रा पडिलेहता तेमा मोदक दीठा एटले गुरुए स्त्यानर्द्धि निद्रा आवेली जाणी विसर्जन करी दीधो.

कोइएक साधुने हाथीए बहु खेद पमाड्यो त्याथी कोइ प्रकारे नाशीने ते उपाश्रयमा आव्यो, अने ते हाथी उपर मनमा कोप करतो सुइगयो रात्रीए तेने स्त्यानर्द्धि निद्रानो उदय थता ते मुनि नगरना कमाड भागी, ते हाथीने मारी, तेना दात खेंची काढी पोताना स्थानमा लावीने सुइगयो प्रभाते ते हकीकत जाणवामा आवता तेने संयमने अयोग्य जाणी गुरुए काढी मुक्यो

कोइ कुंभारे मोटा गच्छमां दीक्षा लीधी एक वखते स्त्यानार्द्धि निद्रानो उदय थतां पूर्वे जेम माटीना पिंड तोडतो हतो तेम तेणे साधुओना शिर तोडीने कबंध (धड) नी साथे एकांतमां मुकी दीधा बीजा केटलाएक मुनिओ त्यांथी खसी गया ते बच्या प्रात:काळे ए देखाव जोइ सर्वे ते साधुने गच्छथी दूर कर्यो

कोइ साधुने जवा आववाना मार्गमां एक वडनुं वृक्ष बहु दु:खदायक लागतुं हतुं एकदा रात्रे स्त्यानर्द्धि निद्रा आवतां ते वडने ऊखेडी पोताना ऊपाश्रय पासे नाखीने ते सुइगयो सवारे एवुं स्वप्न दीठानुं आलोचतां बीजा मुनिना जाणवामां ते वृत्तांत आव्युं एटले तेना साधुचिन्हो छीनवी लइने सर्वे तेने गणनी बहार कर्यो आ शिवाय बीजां दृष्टांतो पण निशीथसूत्रमांथी जाणी लेवा

निद्रामां घणा दोषो छे निद्रा सर्व गुणनो घात करनारी, संसारने वधारनारी अने प्रमादने उत्पन्न करनारी छे मुनि अने धार्मिष्ट माणसने तो निद्रारहितपणुंज श्रेष्ट छे श्रीभगवतीसूत्रमां वीरप्रभुनी सच्यातरी अने मृगावती श्राविकानी नणंद जयंतीए प्रभुने प्रश्न कर्यो छे के, "हे भगवंत ! सुवुं सारूं के जागवुं सारूं?" प्रभुए कह्युं के, "केटलाएकने सुवुं सारूं छे अने केटलाएकने जागवुं सारूं छे. जे अधर्मी ने अधम मनुष्यो अधर्मवडेज आजीवीका करतां सतां विचरे छे, तेवा जीव सुता सारा छे केमके एवा जीव सुता सता घणा प्राणीओने, भुतोने, सत्वोने दु:ख दनारा थइ शकता नथी वळी एवा जीवो सुतां सतां पोताने, परने अने बनेने अधर्मना–हिंसादि कार्यमां प्रवर्त्तावी शकता नथी तथी तेओ सुता सारा छे वळी हे जयंति ! जे जीवो धर्मी छे अने धार्मिक प्रवत्तिनाज करनारा छे, एवा जीवो जागता सारा छे" इत्यादि जाणी लेवुं (एवा रीते बळवानपणुं, दुर्बळपणुं, चतुरपणुं अने आळसुपणुं इत्यादि विषे पण जाणी लेवुं) आ प्रमाणे निद्रा नामे प्रमादनो चोथो भेद जाणवो

"चौद पूर्वधर मुनि पण निद्रारूप प्रमादना योगथी पूर्वोनु विस्मरण पामी जइने घणा काळ सुधी निगोदमां जइने वसे छे तेथी निद्रारूप प्रमादनो अवश्य त्याग करवो"

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेश संग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ द्वात्रिंशदुत्तरशततम.
प्रबंध: ॥ १३२ ॥

व्याख्यान १३३ मुं.

हवे 'विकथा' नामे पांचमो प्रमाद कहेछे.

राज्ञां स्त्रीणां च देशानां, भक्तानां विविधाः कथाः ।
संग्रामरूपसद्वस्तुस्वादाद्या विकथाः स्मृताः ॥ १ ॥

भावार्थ.–

"राजाओना युद्धादिनी ते राजकथा, स्त्रीओना रुपादिकनी ते स्त्रीकथा, देशनी उत्तम वस्तुओनी ते देशकथा अने भोजनना स्वाद विगेरेनी ते भक्तकथा–ए प्रमाणेनी विविध कथाओ ते विकथा कहेवाय छे "

विस्तरार्थ.–

राजाओना युद्ध विगेरेनु वर्णन ते राजकथा जेमके, " आ राजा भीमनी जेम युद्ध करनारो छे ते चिरकाळ सुखी राज्य करो " अथवा "आ राजा दुष्ट छे ते मृत्यु पामो " इत्यादि स्त्रीनी कथा एटले तेना रुपनी निंदा अथवा प्रशंसा करवी ते जेम के,

द्विजराजमुखी गजराजगति, तरुराजविराजितजघतटी ।
यदि सा दयिता हृदये वसति, क जपः क तपः क समाधिरिति॥

"आ स्त्रीनु मुख चद्र जेवु छे, तेनी चाल गजेंद्रना जेवी छे, अने तेनी जघा कदळीना स्तभ जेवी छे, एवी स्त्री जो हृदयमा वसे तो पछी जप, तप अने समाधि शा कामनी छे ? " तेनी निंदा आ प्रमाणे–"आ स्त्रीनी गति उट जेवी छे, स्वर कागडा जेवो छे, पेट लाबु छे, नेत्र पीळा छे, माथा शीळपाळी छे, अने कटु भाषण करनारी छे तथा अभागिणी छे तेवी स्त्रीथी शु सुख मळे ? " वळी स्त्री सबधी देश, जाति, कुळ, रूप, नाम, पहेरवेश अने परिजननी कथा करवी ते पण स्त्रीकथा तेमा देश सबधी स्त्रीकथा आ प्रमाणे–" लाटदेशनी स्त्रीओ मधुरभाषी अने रतिक्रियामा निपुण होय छे " इत्यादी जाति सबधी स्त्रीकथा आ प्रमाणे–" विधवा थयेली ब्राह्मणनी स्त्रीओने धिक्कार छे, के जेओ जीवती मर्या जेवी छे, अने केटलीक बीजी जातिनी स्त्रीओने धन्य छे, के जे सदा अनिंदित रहे छे " इत्यादि कुळ सबधी स्त्रीकथा आ प्रमाणे–" अहो ! सोलकी राज्यवशनी पुत्रीओनु साहस जगतमा सर्वथी अधिक छे, जेओ पतिनी अणमानीती होय तोपण पति मृत्यु पाम्ये तेनी पाछळ

अग्निमां प्रवेश करे छे " इत्यादि रूप संबंधी स्त्रीकथा ते के जेमां स्त्रीना स्वरूपनु वर्णन करवामा आवे नाम संबंधी स्त्रीकथा आ प्रमाणे–"जेवुं स्त्रीनुं नाम त परिणाम" एम कहे नेपथ्य (वेश) संबंधी स्त्रीकथा आ प्रमाणे–" ते स्त्रीनु रूप, यौवन अने पहेरवेशने धिक्कार छे के जे युवान पुरुषोना नेत्रने आनंददायक थता नथी " परिजन संबंधी स्त्रीकथा आ प्रमाणे–" आ स्त्रीनो दास दासीनो परिवार डाह्यो अने विनीत छे–" इत्यादि स्त्रीकथानो त्याग करवो

देशकथा आ प्रमाणे–जेमके, " माळवदेश रमणीय छे, के जेमा सारा धान्य अने सुवर्ण थाय छे, अने त्यां कटिमेखळा पण सोनानी पेहेराय छे गुर्जरभूमि दुर्गम अने उग्र सुभटवाळी छे लाटदेश तो भीलुलोकोथी भरपूर छे काश्मीरमा मूर्खता घणु छे, अने कुंतलदेश सुखमां स्वर्ग जेवो छे " आ प्रमाणे देशकथा सद्बुद्धिवाळा पुरुषोए दुर्जनना संगनी जेम छोडी देवी

भक्तकथा—एटले भोजनना स्वाद विगेरेनी कथा, ते आ प्रमाणे–जेमके, "आ पुरुषे विवाहादि कार्यमा घणी उत्तम रसोइ करी हती तेमा जे शाक भाजी बनाव्या हता, तेनो स्वाद तो हजु दाढमाज छे " अथवा "आणे करेला पक्वान्न विगेरे तो पाळीदेवा जेवाज हता एक पापड विना बीजु बधु खराब कर्युं हतु " इत्यादि

आ प्रमाणे चार प्रकारनी विकथा जाणवी **सत्रोधसत्तरी** नामना प्रकरणनी वृत्तिमां सात प्रकारनी विकथा कहेली छे–तेमा उपर कहेली चार अने बीजी त्रण प्रकारनी विकथा आ प्रमाणे–श्रोताना हृदयने मृदु बनावी दे ते पेहेली मृदुी कथा, के जेमा पुत्रादि प्रजानी कथानु प्रधानपणु होवाथी ते करुणा उत्पन्न करे तेवी होयछे–जेमके–"हा पुत्र ! हा वत्स ! अमने मुकीने तु प्रज्वलित अग्निमा क्यां पड्यो " इत्यादि बीजी **दर्शनभेदिनी** कथा–जेमा कुतीर्थीओना ज्ञानादिकना अतिशयपणानी प्रशंसा करवामा आवे छे–जेमके, " बुद्धनु शासन सूक्ष्म अर्थने जणावनारु होवाथी श्रवण करवा योग्य छे " इत्यादि त्रीजी **चारित्रभेदिनी** कथा– जेमा व्रत ग्रहण करेला अथवा व्रत लेवाने तत्पर चारित्र संबंधी विचारनो भेद करवामा आवे छे जेमके, " केवळ कालमा चारित्रनो शुद्ध के अशुद्ध भाव कोण जाणे छे माटे वळी " आज तो चारित्र लइने मात्र देहने पीडा ! शिष्य उपरथी पडवु सहेलु छे पण चारित्र पाळवु !

काले पमायबहुले, दंसणनाणेहिं वट्टए तीथ्यं ।
वुच्छिण च चरित्त, तो गिहिधम्मो वरं काउ ॥ १ ॥

" बहु प्रमादवाळा आ काळमा दर्शन अने ज्ञानवडेज शासन प्रवर्त्ते छे, चारित्र तो विच्छेद पाम्यु छे, तेथी हाल तो गृहस्थनो धर्म अंगीकार करवो तेज श्रेष्ठ छे "

आ प्रमाणे पूर्वोक्त चारमा बीजी त्रण विकथा मेळववाथी सात प्रकारनी विकथा थाय छे पण अहिं प्रथाळाना श्लोकमा तो आवश्यकादि सूत्रमा प्रसिद्ध चार विकथा होवाथी चार प्रकारनीज कहेली छे. विकथा उपर एक रोहिणी नामनी स्त्रीनी कथा छे ते आ प्रमाणेः—

विकथा उपर रोहिणीनी कथा.

कुंडनपुरी नामनी नगरीमा सुभद्र नामे एक श्रेष्टी रहेतो हतो, तेने रोहिणी नामे एक बाळविधवा पुत्री हती तेणीए गुरु पासे अध्ययन करीने कम्मपयडी विगेरे ग्रंथो पोताना नामनी जेवा कंठे कर्या हता ते हमेशा त्रिकाळ जिन पूजा अने बे काळ आवश्यक करवा छोडती नहोती अने नित्य भणवाथी ते एक लाख करता विशेष स्वाध्यायनो पाठ करनारी थइ हती

अहिं अंतरंग एवु बन्यु के, चित्तरुप नगरमा रहेनारा मोहराजाने तेना कुबोध नामना दूते जणाव्यु के, ' महाराज, एक रोहिणी नामे स्त्री तमारा वारंवार अवगुण गायछे. अने तमारा पुत्र राग अने द्वेपनी, तमारा मिथ्यात्व नामना मंत्रीनी, अने अढार पापस्थानरूप सभासदोनी घणी निंदा करे छे. ' ते साभळी मोहराजा पोतानी सभा समक्ष रुदन करतो गद्‌गद्‌ वाणीए बोल्यो के, 'अरे ! मारी सभामा-मारा परिवारमा कोई एवो नथी ? के जे मारी आज्ञाने खंडन करनारी रोहिणी के जे मारा वैरी चारित्रधर्मने मळवाने उत्सुक छे तेने वश करीने मने सोंपी दे '

आ प्रमाणेना मोहराजाना वचनो साभळीने एक खुणे बेठेली मोहराजानी स्त्री कुदृष्टिनी सखी विकथा नामे योगिनी बोली—'हे स्वामी ! आवा स्वल्प काममा आपन खेद करवो योग्य नथी केमके तमारा एक एक सेवके सम्यक्त्व, व्रत अने श्रुतथी पूर्ण थयेला एवा जीवोने पण पोताना गुणोथी पाडी दीधा छे तेओ अद्यापि आपना चरणनी पासे रजनी जेम रझळे छे तेमनी सख्या पण कोइ जाणतु नथी ते विषे जीवानुशासननी वृत्तिमा कहेलु छे के, " मोहना प्रभावथी अनंता श्रुत केवळीओ पण पूर्वगत श्रुतने भूली जइ मृत्यु पामीने अनंतकायमा गयेला ने रहेला

अग्निमां प्रवेश करे छे " इत्यादि रुप मत्रधी स्त्रीकथा ते के जेमां स्त्रीना स्वरुपनु वर्णन करवामा आवे नाम सवधी स्त्रीकथा आ प्रमाणे–"जेवुं स्त्रीनुं नाम तेवु परिणाम" एम कहे नपथ्य (वेश) संबंधी स्त्रीकथा आ प्रमाणे–" ते स्त्रीना रुप, यौवन अने पहेरवेशने विकार छे के जे युवान पुरुषोना नेत्रने आनददायक थता नथी " परिजन सवधी स्त्रीकथा आ प्रमाणे–" आ स्त्रीनो दास दासीनो परिवार डाह्यो अने विनीत छे–" इत्यादि स्त्रीकथानो त्याग करवो.

देशकथा आ प्रमाणे–जेमके, " माळवदेश रमणीय छे, के जेमा सारा धान्य अने सुवर्ण थाय छे, अने ज्या कटिमेखळा पण सोनानी पेहेराय छे गुर्जरभूमि दुर्गम अने उग्र सुभटवाळी छे लाटदेश तो भीछलोकोथी भरपूर छे काश्मीरमा मूर्खता वहु छे, अने कुतलदेश सुखमा स्वर्ग जेवो छे " आ प्रमाणे देशकथा सद्बुद्धिवाळा पुरुषोए दुर्जनना सगनी जेम छोडी देवी

भक्तकथा—एटले भोजनना स्वाद विगेरेनी कथा, ते आ प्रमाणे–जेमके, "आ पुरुषे विवाहादि कार्यमा घणी उत्तम रसोइ करी हती तेमा जे शाक भाजी बनाव्या हता, तेनो स्वाद तो हजु दाढमाज छे " अथवा "आण करेला पक्वान्न विगेरे तो थाळीदेवा जेवाज हता एक पापड विना बीजु बधु खराब कर्युं हतु " इत्यादि

आ प्रमाणे चार प्रकारनी विकथा जाणवी सबोधसत्तरी नामना प्रकरणनी वृत्तिमा सात प्रकारनी विकथा कहेली छे–तेमा उपर कहेली चार अने वीजी त्रण प्रकारनी विकथा आ प्रमाणे–श्रोताना हृदयने मृदु बनावी दे ते पेहेली मृद्वीकथा, के जेमा पुत्रादि प्रजानी कथानु प्रधानपणु होवाथी ते करुणा उत्पन्न करे तेवी होयछे–जेमके–"हा पुत्र ! हा वत्स ! अमने मुकीने तु प्रज्वलित अग्निमा क्या पड्यो " इत्यादि. बीजी दर्शनभेदिनी कथा–जेमा कुतीर्थीओना ज्ञानादिकना अतिशयपणानी प्रशसा करवामा आवे छे–जेमके, " बुद्धनु शासन सूक्ष्म अर्थने जणावनारु होवाथी श्रवण करवा योग्य छे " इत्यादि त्रीजी चारित्रभेदिनी कथा– जेमा व्रत ग्रहण करेला अथवा व्रत लेवाने तत्पर थयेला पुरुषना चारित्र सवधी विचारनो भेद करवामा आवे छे जेमके, " केवळी विनाना आ काळमा चारित्रनो शुद्ध के अशुद्ध भाव कोण जाणे छे माटे चारित्र लेवु नकामु छे " वळी " आज तो चारित्र लइने मात्र देहने पीडा करवानी छे कारण के गिरिना शिखर उपरथी पडवु सहेलु छे पण चारित्र पाळवु सहेलु नथी " वळी एम कहे के,

काले पमायबहुले, दंसणनाणेहिं वट्टए तीथ्यं ।
वुच्छिण्ण च चरित्त, तो गिहिधम्मो वरं काउ ॥ १ ॥

" बहु प्रमादवाळा आ काळमा दर्शन अने ज्ञानवडेज शासन प्रवर्ते छे, चारित्र तो विच्छेद पाम्यु छे, तेथी हाल तो गृहस्थनो धर्म अंगीकार करवो तेज श्रेष्ठ छे "

आ प्रमाणे पूर्वोक्त चारमा बीजी त्रण विकथा मेळववाथी सात प्रकारनी विकथा थाय छे पण अहिं प्रथाळाना श्लोकमा तो आवश्यकादि सूत्रमा प्रसिद्ध चार विकथा होवाथी चार प्रकारनीज कहेली छे विकथा उपर एक रोहिणी नामनी स्त्रीनी कथा छे ते आ प्रमाणे—

विकथा उपर रोहिणीनी कथा.

कुडनपुरी नामनी नगरीमा सुभद्र नामे एक श्रेष्टी रहेतो हतो, तेने रोहिणी नामे एक बाळविधवा पुत्री हती तेणीए गुरु पासे अभ्यास करीने कम्मपयडी विगेरे ग्रंथो पोताना नामनी जेवा कंठे कर्या हता ते हमेशा त्रिकाळ जिन पूजा अने बे काळ आवश्यक करवा छोडती नहोती अने नित्य भणवाथी ते एक लाख करता विशेष स्वाध्यायनो पाठ करनारी थइ हती

अहिं अतरग एवु बन्यु के, चित्तरुप नगरमा रहेनारा मोहराजाने तेना कुबोध नामना दूते जणाव्यु के, ' महाराज, एक रोहिणी नामे स्त्री तमारा वारवार अवगुण गायछे अने तमारा पुत्र राग अने द्वेषनी, तमारा मिथ्यात्व नामना मत्रीनी, अने अढार पापस्थानरूप सभासदोनी घणी निंदा करे छे ' ते साभळी मोहराजा पोतानी सभा समक्ष रुदन करतो गद्‌गद् वाणीए बोल्यो के, 'अरे ! मारी सभामा–मारा परिवारमा कोई एवो नथी ? के जे मारी आज्ञाने खडन करनारी रोहिणी के जे मारा वैरी चारित्रधर्मने मळवाने उत्सुक छे तेने वश करीने मने सोंपी दे ' आ प्रमाणेना मोहराजाना वचनो साभळीने एक खुणे बेठेली मोहराजानी स्त्री कुदृष्टिनी सखी विकथा नामे योगिनी बोली—'हे स्वामी ! आवा स्वल्प काममा आपने खेद करवो योग्य नथी केमके तमारा एक एक सेवके सम्यकत्व, व्रत अने श्रुतथी पूर्ण थयेला एवा जीवोने पण पोताना गुणोथी पाडी दीधा छे तेओ अद्यापि आपना चरणनी पासे रजनी जेम रझळे छे तेमनी सख्या पण कोइ जाणतु नथी ते विषे जीवानुशासननी वृत्तिमा कहेलु छे के, " मोहना प्रभावथी अनंता श्रुत केवळीओ पण पूर्वगत श्रुतने भूली जइ मृत्यु पामीने अनतकायमा गयेला ने रहेला

छे " ते माटे हे राजा ! आ वीचारी रोहिणी तो कोणमात्र छे," आ प्रमाणे क
मोहराजाए आपली आशिष ग्रहण करीने विकथाए रोहिणीना मुखमा अने ि
समा प्रवेश कर्यो तेथी रोहिणी तत्काळ धर्मना सर्व कार्यमा विकथा करवा लाग
अने बीजानी पासे कराववा लागी एक वखते साधुओए अने साध्वीओए ते
शिक्षा आपी के, हे श्राविके, तने सुज्ञातने परनिंदा ने विकथा करवी योग्य नथी.
कह्यु छे के,

यदिच्छति वशीकर्तुं जगदेकेन कर्मणा ।

परापवाद सस्येभ्य-श्चरंति गा निवारय ॥

" जो एकज कर्मथी आ जगतने वश करवाने तु इच्छतो होतो परनिंदारुप धासने चरती एवी तारी वाणीरुप गायने, तेमाथी निवृत्त कर्य. " ते सांभळी रोहिणीने क्रोध चड्यो एटले हळवे हळवे मोहराजानुं सर्व सैन्य तेनी पासे आव्यु अने विकथानी प्रशसा करवा लाग्यु पछी तो रोहिणी विकथा करवामा एटली बधी मशगूल थइ गइ के, तेणीए सर्व पठन पाठनादि पण छोडी दीधु

एक वखते राजमार्ग जता रोहिणी राजानी राणीना दोष कहेती हती ते राणीनी दासीए सांभळ्या एटले तेणीए राजाने ते वात कही राजाए रोहिणीना पिताने बोलावीने पुछ्यु के, हे श्रेष्टी, तारी पुत्रीए मारी राणीनुं कुशीलपणु क्या जोयु अने शी रीते जाण्यु ? श्रेष्टी बोल्यो—हे स्वामी ! ए पुत्रीनो स्वभाव दुष्ट छे पछी कोप पामेला राजाए तेने नगरमांथी काढी मुकी अरण्यमा दु खनो अनुभव करीने ते मृत्यु पामी अने अपरिग्रहिता व्यतरदेवी थई त्या बीजा देवताओए करेलुं दु ख अनुभवी त्यांथी चवीने एकेंद्रियादिकमा अनतकाळ भमी छेवटे तेनो जीव भुवनभानु केवली थयो

" आ प्रमाणे विकथा करनारा प्राणीओने घणुं दुस्तर दु ख थायछे, तेने जाणीने भव्य प्राणीओए वैराग्यादिवडे बंधमुक्त करनारी सत्कथा हमेशा करवी. अने विकथाने छोडी देवी "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेश सग्रहाख्य ।मुपदेश प्रासाद
वृत्तौ त्रयस्त्रिंशदुत्तरशततम प्रबंध. ॥ १३३ ॥

व्याख्यान १३४ मु.

वळी सामान्यथी अनर्थदंडनो प्रमादाचरण नामनो चोथो भेदज विशेषे कहेछे.

जीवाकुलेषु स्थानेषु, मज्जनादि विधापनम् ।
रसदीपादिपात्राणि, आलस्यात् स्थग्यते नहि ॥ १ ॥
उल्लोचं नैव बध्नाति, स्थाने महानसादिके ।
सर्वमेतत्प्रमादस्या, चरणमभिधीयते ॥ २ ॥

भावार्थः-

"जीवथी भरपूर एवा स्थानमा स्नान विगेरे करे, रस पदार्थोना तथा दीपक विगेरेना पात्रोने आलसथी ढांके नहीं अने रसोडा विगेरे स्थानोमा चदरवा बांधे नहीं ए सर्व प्रमादनु आचरण कहेवाय छे "

विस्तरार्थः-

जीवथी भरपूर एवा स्थान एटले जेमा लील, फुल, कीडीओ, मंकोडा तथा कुंथुवा प्रमुख छकाय जीवोनी हिंसा थाय तेम होय तेवी भूमि विगेरेमा स्नान करवु योग्य नथी एकादशीपुराणमा कह्यु छे के,

गृहेचैवोत्तमस्नानं जलचैवसुशोधनात् ।
ततोत्वंपाण्डवश्रेष्ट गृहेस्नानंसमाचरत् ॥ १ ॥
कुपेह्रदेधमंस्नानं नद्यामेवचमध्यमं ।
वाप्याचवर्जयेत्स्नानं तटाकेनैवकारयेत् ॥ २ ॥
पीड्यंतेजतवोयत्र जलमध्येव्यवस्थिता· ।
स्नानेकृतेतत.पार्थ पुण्यंपापंसमंभवेत् ॥ ३ ॥

जल गळीने घरे स्नान करवु ते उत्तम स्नान छे तेथी हे पाडव श्रेष्ट ! तमारे घरे स्नान करवु १ कूवा, अने धरामा स्नान करवु ते अधम स्नान छे, नदीमा स्नान करवु ते मध्यम स्नान छे, अने वापी तथा तळावमा स्नान करवु त तो तदन योग्य नथी. २ ज्या स्नान करवाथी जळमा रहेला जतुओ पीडा पामे, त्या स्नान करव हे। हे पार्थ ! पुण्य अने पाप सरखु थायछे ३ वळी ब्रह्माण्डपुराणमा पण कह्यु छे के,

ज्ञानं तीर्थं धृतिस्तीर्थं, दानं तीर्थं मुदाहृतं,
तीर्थानामपियत्तीर्थं विशुद्धिर्मनसःपरा ॥ १ ॥

" ज्ञान तीर्थ छे, धैर्य तीर्थ छे, अने दान पण तीर्थ छे, परतु ते बधा
पण तीर्थ मननी उत्कृष्ट शुद्धि छे " विष्णुपुराणमा पण कह्यु छे के, "
स्वभावथी पवित्र छे तेने पण जो अग्निवडे उष्ण कर्यु होयतो तेनी पवित्र
वातज शी करवी तेथी पडितजनो उष्णजळवडे शुद्धि करवी तेने वखाणे
मनुस्मृतिमा कह्यु छे के, " अतर्गत दुष्टचित्त तीर्थस्नान करवाथी शुद्ध थतु
ते ता सेंकडोवार जळथी धोयेला मदिराना पात्रनी जेम अपवित्रज रहेछे १
शौच सत्य, बीजु शौच तप, त्रीजुं शौच इद्रियोनो निग्रह अने चोथु शौच सर्व
णी उपर दया करवी ते छे त्यार पछी पाचमु जळशौच छे २ " वळी नागर
रमा पण कह्यु छे के, " दृष्टिथी पवित्र (जोयेला) स्थाने पग मुकवो, वस्त्र
पवित्र (गळेलु) जळ पीवु, सत्यथी पवित्र (साचुं) वचन बोलवु अने मन
पवित्र आचरण करवु "

इ॰ गृहस्थे जो स्नान करवु होयतो दिवसे यतनापूर्वक करवु, रात्रे करवु नहीं
मूळश्लोकमा आदिशब्द छे तेथी पिशाब अने दस्त पण निर्जीव भूमिकाएज करवु
इत्यादि पोतानी बुद्धिथी समजी लेवु

वळी रसपदार्थ एटले घी, तेल, दुध, दही, छास, अने जळ विगेरेना पात्रो
तेमज दीवो अने आदि शब्दथी भोजन विगेरेना पात्रो आळसथी ढाके नहीं अर्थात्
ढाकणावडे जीवरक्षा करे नहीं ते प्रमादाचरण जाणवु

वळी महानस के॰ रसोडा विगेरे स्थान उपर उल्लोच के॰ चदरवो बाधे नहीं
ए पण प्रमादाचरण कहेवाय छे कारण के, गृहस्थे शयन, भोजन अने पाक कर-
वाना स्थान उपर तेमज जलना, तथा देव, गुरु अने धर्मना स्थान उपर अवश्य
उल्लोच बाधवा जोइए कारण के, रसोडा विगेरे स्थळे चदुवो बाधेल न होवाथी
जीव वधना बहु दोषनो सभव छे ते उपर एक दृष्टात छे ते आ प्रमाणे –

उल्लोच बाधवा उपर मृगसुदरीनी कथा.

श्रीपुर नामना नगरमा श्रीषेण नामे राजा हतो ने जाणे बीजो देव-
राज (इद्र) होय तेवो देवराज नामे एक पुत्र थयो ते कुमार दैवयोगे यौ-
वन वयमा दुष्टा थयो सात वर्ष सुधी घणा उपायो क पण ते रोग मट्यो नहीं.

थवे वैद्योए तेने तजी दीधो पछी राजाए गाममा एवो पडो वगडाव्यो के, "जे आ कुमारने नीरोगी करशे तेने हु मारु अर्धु राज्य आपीश" ते शहेरमा यशोवृत्त नामना एक श्रेष्टीने शीलादिमतमा आसक्त एक पुत्री हती, तेणीए पटहने निवारी पोताना हाथना स्पर्शमात्रथी राजकुमरनो कोढ मटाड्यो राजाए ते बनेनु पाणी ग्रहण कराव्युं, अने विवाह उत्सव करी, पुत्रने राज्य उपर बेसारीने पोते दीक्षा ग्रहण करी

एकदा ते नगरे पोट्टिलाचार्य पधार्या तेमने वदना करवा माटे राजा अने राणी गया देशना साभळीने तेमणे पोतानो पूर्वभव पुछ्यो गुरु बोल्या-" वसतपुर नगरमा देवदत्त नामे एक व्यापारी हतो तेने धनेश्वर विगेरे चार पुत्रो मिथ्यात्वी हता ते अरसामा मृगपुर नामना नगरमा जिनदत्त नामे श्रेष्टीने मृगसुंदरी नामेएक पुत्री हती तेणे त्रण अभिग्रह लीधा हता के, "जिनेश्वरनी पूजा करीने अने मुनिने दान आपीने जमवु अने रात्रे जमवु नहीं " एक वखते व्यापार करवाने माटे पेलो धनेश्वर श्रेष्टिपुत्र मृगपुरे आव्यो तेणे जिनदत्त श्रावकनी पुत्री मृगसुदरीने दीठी तेथी ते तेनी उपर रागवाळो थयो पण 'हु मिथ्यात्वी छु, तेथी आ कन्यानो पिता श्रावक मने ते कन्या आपश नहीं' एवु विचारीने ते कपट श्रावक थयो. अने कोइ रीते तेना पिताने समजावी ते कन्याने परणीने पोतान घेर लाव्यो.

त्या धर्मनी ईर्ष्याथी तेणे मृगसुंदरीने जिनपूजा करवाना निषेध कर्यो तेने जिनपूजा कर्या शिवाय जमवानो त्याग होवाथी त्रण उपवास थया तेणीए कोई मुनिमहाराजाने ते विषे पुछ्यु एटले गुरुए लाभालाभ विचारीने कह्यु के, "तु चुला उपर चद्रुवो बाध अन भावथी पचतीर्थनी स्तुति करी, पाच साधुने नित्य दान दे, के तेथी तने तारा अभिग्रह प्रमाणे फळ थशे " तेणीए ते प्रमाणे कर्यु परतु तेना सासरा विगेरेए चुला उपर चद्रुआ देखीने धनेश्वरने कह्यु के, आ तारी स्त्रीए काइक कामण करेलु छे ते साभळी धनेश्वरे तेणीए बाधेला उल्लेचने बाळी नाख्यो मृगसुदरीए पुन बीजो उल्लेच बाध्यो ते पण धनेश्वरे बाळी नाख्यो एवी रीते सात उल्लेच बाळी नाख्या पछी मृगसुदरीने तेना सासराए कह्यु के, "हे भद्रे ! शामाटे उल्लेच बाधवानो प्रयास करे छे ?" मृगसुदरीए कह्यु के 'जीवदया माटे.' त्यारे तेना सासराए क्रोधथी कह्यु के, 'चद्रुवा बाधवा होय तो तारा बापने घेर जा' ते बोली के-' तमे बधु कुटुब साथे आवीने मने मारे पियर मुकी जाओ.' पछी सर्वे तेने मुकवा चाल्या मार्गमा कोई गाम आव्यु त्या सासराना पक्षना कोई

समाए सर्वेनी मेहेमानगति करवा माटे तेमने जमाडवाने रात्रे रसोइ करी अवसरे मृगसुंदरीने घणुं कह्युं तोपण ते जमवा उठी नहीं एटले बीजाराण तेथी जेने घेर राध्धुं हतु तेना घरना बधा जम्या तेओ सर्वे रात्रीमा गया प्रातःकाळे मृत्युनुं कारण तपासता रांधवाना पात्रमा सर्प जोवाम सर्वेए विचार्युं के, रात्रे रांधवा माटे थयेला धुमाडाथी आकुळ व्याकुळ थ अन्नना पात्रमा पड्यो हशे पछी सर्वेए मृगसुंदरीने खमाव्यां मृगसुंदरी बे ' आ कारण माटेज में चुला उपर चदरवो बांध्यो हतो. अने रात्रे हु भोज नथी तेनुं कारण पण अहीं प्रत्यक्ष तमे जोयुं छे. ' ते सांभळी सर्वेने प्रतिबो पछी तेणीए सर्वेने जीवितदान आप्यु छे एम मानीने सर्व तेने कुळदेवीने मानवा लाग्या अने ते गामथी सर्वे पाछा पोताने घेर आव्या अनुक्रमे मृगसु धर्मेश्वर धर्मनी आराधना करीने स्वर्गे गया त्यांथी चवीने तमे राजा अने थयाछो " हे राजा ! तें पूर्वभवे सात चदरवा बाळी नाख्या हता तेथी आ सात वर्ष सुधी बने कोढनो व्याधि रह्यो हतो " आ प्रमाणे पोतानो पूर्वभव भळीने ते बनेने जातिस्मरण थयु. पछी पुत्रने राज्य सोंपी पोटिलाचार्य पासे द लइने ते बने स्वर्गे गया

" उपरनी कथा सांभळीने जे धार्मिक श्रावक शयनस्थाने, पाणीयारामा अ रसोडा विगेरेमा भावथी चदरवा बांधे ते उत्तम देवलोकने पामे छे "

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेश संग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ चतुस्त्रिंशदुत्तरशततम प्रबंध ॥ १३४ ॥

व्याख्यान १३५ मु.

वळी बीजां प्रमादाचरण दर्शावेछे.

अव्रतप्रत्ययी बंध, प्रत्याख्यानेन वारयेत् ।
सर्वप्रयत्नत कार्यं, तथा द्यूतादिसेवनम् ॥ १ ॥
कुतूहलान्नृत्यप्रेक्षा, कामग्रंथस्य शिक्षणम् ।
सुधी प्रमादाचरण, एवमादि परित्यजेत् ॥ २ ॥

भावार्थ –

"व्रत लीधा विना अविरतिपणाथी जे कर्मनो बंध पडे छे तेने पच्चख्खाण लेवा-नेवारवो सर्व कार्य यतनाथी करवु अने जुगटा विगेरेनु रमवु, कुतूहलथी जोवु, अने कामग्रंथनु शिखवु इत्यादि प्रमादाचरण सद्बुद्धिवाळा मनुष्योए । देवु."

विस्तरार्थ –

अविरतिवडे थतो कर्मनो बंध पच्चखाण करीने निवारवो देव, मनुष्य, ति- अने नारकी– ए चार गतिरूप आ अपार संसारने विषे भ्रमण करता प्राणी- जे जे देह, आयुष्य भोगवीने अस्थि, लोह अथवा काष्ट रूप पूर्वे छोड्या छे, ोरवडे ज्यारे ज्यारे बीजा जीवोना वधरूप अनर्थ थाय, त्यारे त्यारे प्रथम मु- : देहनो स्वामी जे जीव तेणे अन्य भवने प्राप्त कर्या छता पण तेनी सत्तानो । कर्यो नथी एटले ते देहने वोसराव्या नथी तेथी त्या सुधी तेनावडे थता थता ी लिप्त थाय छे एटले ज्या ते गयो होय त्या ते पाप अविरतिवडे आवे छे. त्वार्थ छे ते विषे श्रीभगवती सूत्रना पाचमा शतकना छठ्ठा उद्देशामा कह्यु ;, "हे भगवत ! कोई मनुष्य धनुष्यमाथी बाण छोडे अने तेनावडे जीव हणाय ो पुरुषने केटली क्रियाओ लागे ? भगवत उत्तर आपे छे के–हे गौतम ! जे : धनुष्यवडे बाण छोडे छे तेने पाच क्रियाओ लागे छे कायिकी, अधिकरण- प्रद्वेषकी, परितापकी अने प्राणातिपातिकी अने जे जीवना देहथी ते धनुष्य रे निपज्या होय छे ते जीवने पण ते पाच क्रियाथी स्पर्श थयेला कहेवाय छे"

अहिं कोइ शका करे के, "जेणे बाण मुक्यु, तेने तो ते क्रियाओ लागु पडे बीजा जीवोने शी रीते लागु पडे ? केमके ते तो मात्र कायरुप छे अने तेनुं तनपणु छे. वळी जो एम कहेशोके मात्र शरीरथी पण क्रिया लागे तो सिद्ध थएला तेने पण प्रथम मुकेला देहने लीधे बळात्कारे बंध थवो जोइए कारण के, सिद्ध ा जीवनो देहपण कोइ ठेकाणे जीव घातनो हेतु होय वळी जेम धनुष्य विगेरे ना कारणो छे तेम ते जीवना देहथी थयेला पात्रदड विगेरे जीव रक्षाना पण छे तो ते पुण्यना कारण होवाथी तेनु पुण्य पण ते जीवने लागवु जोइए एवी बरोबर न्याय थवो जोइए" तेना उत्तरमा कहे छे के, "अहिं तो अविरति-ना मात्रथी बंध थाय छे अने सिद्ध थयेला जीवोने तो सर्व संवर होवाथी विरति तेथी तेमने बंध थवानो संभवज नथी तथा पात्रादि जेना देहथी थयेला छे ते ोने ते संबंधी विवेकादिकनो अभाव छे माटे तेने पुण्यनो बंध थतो नथी अ-

यवा श्रीभगवतना वचन होवाथी सर्व सत्य छे; एम जाणवु " तेथी अग्न शस्त्रादिरुप थयेला देहनु पण अधिकरणपणुं छे एम जाणीने अवश्य त्याग थइ शके तेम होय तेना तेना प्रत्याख्यान करवा ए भावार्थ छे

वळी यत्नथी सर्व क्रियाने छोडी दवी एटले के पोताना कार्यने म होय पण कार्य समाप्त थये वळतु इधणु पछी बुझावी नाखवु अहिं कोइ के, ' अग्निने बुझाववामा पण दोष छे तेथी केम बुझावाय ? ' ए वात खरी अग्नि दश मोढावाळु शस्त्र होवाथी तेनावडे बीजा त्रसादि जीवोनो वध था न थवा माटे तेने बुझाववु जोइए

वळी शोभ्यागरना ... ... , रान्य अने पाणीनु वापरवु, मार्गम स्काय के० लीला ... उपर चालवुं, नकामा पुष्प अने पात्रा विगेरे त भींत माहेथी खेंचवानी भूगल करवी, यतना वगर कमाडे अर्गला आपवी, अ क लवण के० काचु मीठु वापरवु, नकामा त्रसनी शाखा तथा मृत्तिका चो चस्त्रमा रहेला जू विगेरे जीवोने जोयावगर गेरवीने आपरा अने श्लेष्म-गळफा विगेरे नाख्या पछी धूलि के राखथी न ढाकवा इत्यादि सर्व क्रिया प्रमादा छे तेथी ते सघळी क्रिया यतनावगर करवी नहीं गळफा विगेरेमा एक मूहूर्त घणा जीवोनी उत्पत्ति थाय छे श्रीलोकप्रकाश ग्रथमा कह्यु छे के,,—

पुरिषेचप्रश्रवणे, श्लेष्मसिंघाणयोरपि ।
वातेपित्तेशोणितेच, शुक्रेमृतकलेवरे ॥ १ ॥
पुंपेस्त्रीपुंससयोगे, शुक्रपुद्गलविच्युतौ ।
पुरनिर्द्धमनेसर्वेष्व पवित्रस्थलेषुच ॥ २ ॥

" १ विष्टामा, २ पिशाबमा, ३ श्लेष्म-गलफामां, ४ लींटमा, ५ वमनमा ६ पित्तमा, ७ रुधिरमा, ८ वीर्यमा, ९ मुडदामा, १० परुमा, ११ स्त्रीपुरुषना संयो गमा, १२ वीर्यस्खलित थयेलामा, १३ नगरनी खाळमा अने १ बीजा सर्व अपवित्र स्थळोमा-गर्भज मनुष्य सबधी ए वस्तुओने विषे ... , अत मुहूर्त्तना आयुष्यवाळा, एक आगुळना ... भाग ... अने सात के आठ प्राणने धारण करनारा असख्या ... हि णीनी टीकामा 'नव प्राण' ...
पन्नवणासूत्रमा श्यामाचा...
रने यतनार्थी ढाकवा

वळी जुगार विगेरेनु रमवु—आदि शब्दथी सोगठावाजी, गजीफा, सेत्रंज विगेरेनु रमवु अथवा आदिशब्दथी सात दुर्व्यसन सेववा ते प्रमादाचरण छे तेथी तेने तजी देवा. कह्यु छे के—" जुगार, मांसभक्षण, सुरापान, वेश्यासंग, सीकार, चोरी अने परस्त्री सेवा—आ सात दुर्व्यसन कहेवाय छे ते प्राणीने घोरातिघोर नरकमां लइ जायछे " जुगार विगेरेना व्यसनथी प्राणीने पगले पगले विपत्ति प्राप्त थायछे. जुगार विषे एक कथा छे—ते आ प्रमाणे—

जुगार विषे पुरंदरराजानी कथा.

सिद्धपुर नामना नगरमा पुरंदर नामे राजा हतो ते सुंदर नामना कोई जुगारी साथे जुगार रमवा लाग्यो. ते जोइ एक वखते तेनी राणीए अमृत समान वाणीथी राजाने कह्यु के, 'हे स्वामी! जुगारथी नळराजा अने पांडवो पगले पगले निंदाने प्राप्त थइ दुःखी थया छे, तेथी सर्प जेम कांचळीने छोडी दे तेम तमे जुगारने छोडी द्यो इत्यादि वचनोवडे बहु निवार्यो तोपण राजाए जुगार छोड्यो नहीं एक वखते राजा तेना नाना भाई साथे जुगार रमता राज्य हार्यो राज्यपाट हारवाथी अनुज बंधुए तेने नगरनी बहार काढी मुक्यो

राजा, राणी अने एक कुमारने लइने अरण्यमा चाली नीकळ्यो मार्गे जतां कोई भीलनी साथे एवु पण कर्यु के, 'जो हु जितु तो तारी स्त्री लउं अने हारु तो मारी आपु' आवु पण करी जुगार रम्यो. तेमा राजा जित्यो. एटले जाणे काजळथी बनावी होय तेवी काळी अने दुर्भाग्यथी निर्माण करेली होय तेवी कुरूपा भीलडीने लइने राजा आगळ चाल्यो मार्गे चालता नीच भीलडीने विचार थयो के, 'आ राणी मारी सपत्नी (शोक्य) होवाथी मारी वैरिणी छे माटे तेने मारी नाखु तो सुख थाय' एवो विचार करी जळ भरवानो मिष करी राणीने कुवा पासे लइ जइ कुवामा नाखी दीधी अने पुरंदरराजा पासे आवीने कह्यु के, तमारी राणी तो कोई बीजा पुरुषने लईने चाली गई राजा तेना वियोगथी घणो खेद पाम्यो पछी भीलडी अने कुमारने लईने मार्गे चाल्यो मार्गमा एक मोटी नदी आवी भीलडी अने कुमार बनेने एक साथे नदी ऊतारवाने असमर्थ होवाथी प्रथम भीलडीने लईने राजा नदीमा पेठो त्यां कोई मघर राजाने गळी गयो, अने भीलडी नदीमा तणाई जवाथी मृत्यु पामी गई. राजाना भारथी मगर बराबर चाली शक्यो नहीं एटले कांठा उपर आवीने पड्यो ढीमर लोकोए तेने पकडीने चीर्यो, एटले तेना उदरमांथी राजा नीकळ्यो तेने शीतळ पवननी संज्ञा आवी. एटले धीवर लोकोए तेने पोताने घेर दास करीने राख्यो एक वखते राजा मत्स्य लेवाने नदीमा पेठो, त्या नदीना पूरमा तणाई जवाथी मृत्यु पाम्यो

अहिं राणी कुवामा पडी हती तेने कोई मुसाफरोए कुवामांथी काढी. ते मुसाफरोना सार्थपतिए तेने ते कोण छे? एम पुछ्यु एटले तेणीए पोतानं वृत्तांत

यथार्थ हतु ते कही बताव्यु तेथी तेणे पोतानी पासे तेने चेन करीने राखी नदीने काठे जे राजकुमार रह्यो हतो तेने कोई विद्याधरी वैताढ्य पर्वत उपर गई अने तेने घणी विद्याओनो पात्र करीने अनुक्रमे तेना पिताना राज्य उपर नेम एक वखते पेलो सार्थवाह सिद्धपुर नगरमा आव्यो राणी पोतानु जाणी पुरुषनो वेष पेहेरी सार्थपतिनी साथे सभामा गई त्या पोताना पुत्रने ईने हर्ष पामी राजाए ते पुरुषवेषी स्त्रीने जोईने सार्थपतिने ते कोण छे ? पुछ्यु एटले सार्थवाहे तेनु बधु वृत्तात कही सभळाव्यु कुमारे हर्ष पामी पोता सभाजनोनी समक्ष तेना चरणमा प्रणाम कर्यो अने पोतानी माताने सुखरिला मय करी दीधी पछी राजाए नगरमा जुगार विगेरे दुर्व्यसन बध करवानो प वगडाव्यो अने पोते पण अनर्थदडथी विराम पामी स्वर्गे गयो

"सर्पक्रीडा जेवी द्यूतक्रीडाने कयो पुरुष करे, के जेने लीधे पुरदरराजा पग पगले विपत्तिने पाम्यो हतो." जुगार रमवाथी हास्य, वाचाटता (वाचाळपणु) अ कठोर भाषण विगेरे दुर्गुणो अवश्य प्राप्त थायछे अने तेथी वेरनी वृद्धि पण थायछ पूर्वे कुमारपाळना प्रसगमा द्यूतक्रीडा करता तेनो वनेवी "मारमुडाने" एम हास्यम बोलवाथी मोटा अनर्थने पाम्यानु वर्णन आ प्रथमाज करेलु छे तेथी जुगार विगेरे व्यसनो घणा दु खने आपनारा छे अने प्रमादाचरण छे एम जाणी तेने त्यजी देवा.

वळी कौतुकथी नृत्य जोवु नहीं उपलक्षणथी गीत, वेश्या विगेरेनो नाच, भा-डभवाई अने इद्रजाळ विगेरे पण जोवा नहीं. केमके ते पापने उत्पन्न करनारा छ तेमज कामग्रथ जे कोकशास्त्र विगेरे तेना अदर कहेला आसन, मत्र, औषध अने कामोद्दीपन प्रयोग ते शीखवा नहीं ईत्यादि प्रमादाचरणने धर्मज्ञ पुरुषे छोडी देवा ए बीजा श्लोकनो अर्थ पूर्ण थयो

अनर्थदडोऽपविचिंतनादिकश्चतुर्विधोऽत्र ग्रथित सदागमे ।
तत. प्रमादो गुणहानिहेतुको विशेषमुच्यश्चरमे गुणव्रते ॥ १ ॥

भावार्थ –

"उत्तम एवा जिनागममा अपध्यान विगेरे चारप्रकारनो अनर्थदड कहेलो छे तेमा प्रमाद गुणनी हानि करवामा हेतुरूप छे तेथी छेल्ला गुणव्रतने विषे तेनो विशेषे त्याग करवा"

इत्यब्ददिनपरिमितोपदेश सग्रहाख्यायामुपदेशप्रासाद
वृत्तौ पचत्रिंशदुत्तरशततम प्रबध. ॥ १३५ ॥

इति नवम स्तभ समाप्त ।

भाग बीजो सपूर्ण